# पूजा-विधानम्

## Colophon

This document was typeset using  $X_1 \bowtie_E X$ , and uses the Siddhanta font extensively. It also uses several  $\bowtie_E X$  macros designed by H. L. Prasād. Practically all the encoding was done with the help of Ajit Krishnan's mudgala IME (http://www.aupasana.com/).

#### Acknowledgements

Very grateful to <a href="https:\archive.org">https:\archive.org</a> for hosting and providing numerous ancient texts.

See also http://stotrasamhita.github.io/about/

FOR PERSONAL USE ONLY
NOT FOR COMMERCIAL PRINTING/DISTRIBUTION

# अनुऋमणिका

0 3 3 11 3	т.																					
१ व्रतपूज	;																					1
लघु-पञ्चायतन	ा-पूजा																					2
•	— पञ्चायतनपूर	ना																				2
षोडशोपचार	-पूजाे																					5
	τ																					15
ब्रह्मपारस्तोत्र																						20
एकादशीव्रतम	् — श्री-महा	विष	गु	पूज	ना																	22
पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्	वर-पूजा																					22
	— एकादशीपू <b>ज</b>	Π.																				24
षोडशोपचार	-पूजां																					27
विष्णुसहस्रन	गमाविलः																					31
	रातनामावलिः																					51
	τ																					53
पञ्चाङ्ग-पूजा																						59
पूर्वाङ्ग-विघ्नेश	वर-पूजा																					59
प्रधान-पूजा	— पञ्चाङ्ग-पूजा																					61
लघु-पञ्चोङ्ग-	पठन-पद्धतिः																					67
निम्बकुसुमभ	क्षणम्																					68
	म्																					68
प्रार्थना-मन्त्रा	:																					70
श्री-रामनवमी																						74
पूर्वाङ्ग-विघ्नेश																						74
	- १०॥ — श्रीराम-पूजा		•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	76
त्रवास-रूजा षोद्धशोपचार		•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	80

अनुक्रमणिका	i
रामाष्टोत्तरशतनामावितः	
रामाष्टोत्तरशतनामावितः	
सीताष्टोत्तरशतनामावलिः	
सीताष्टोत्तरशतनामावलिः	3
हनुमदृष्टोत्तरशतनामावलिः	5
हर्नुमदृष्टोत्तरशतनामावलिः	3
प्रार्थेना	3
हनुमत्कृतं श्री-सीता-राम-स्तोत्रम्	}
	,
पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा	
प्रधान-पूजा — श्री-शङ्कर-भगवत्पाद-पूजा	
षोडशोपचार-पूजा	
श्री-शङ्कर-चतुर्विंशति-नामावल्या अङ्ग-पूजा	
आदिशृङ्कराचार्याष्टोत्तर्शतनामाविलः	
आचार्यपरम्परानामावलिः	
स्वस्ति-वचनम् / गुरुवन्दनम्	
त्रोटकाष्टकम्	
श्री- <b>शङ्कर-भगवत्पाद-प्रशस्ति-सङ्ग्रहः</b>	
देव-वन्दनम्	
गुरुपरम्परावन्दनम्	
गुरु-पादुका-पञ्चकम्	
भगवत्पादकृतं गुरु-वन्दनम्	
वेदान्ताचार्यवन्दना	
मार्कण्डेय-संहितायां भगवत्पाद-प्रशंसा	
तोटकाष्टकम्	)
भगवत्पाद-शिष्यैः कृताः गुरु-स्तुतयः	)
सद्॥शवश्रह्मन्द्रावराचताया जगद्गुरुरत्नमालाया भगवत्पाद-चारतम् 138	
कामकोट्टि-परम्परागतैः आचार्यैः कृताः स्तुतयः	
शङ्कर-चरित्र-ग्रन्थेषु	)

अनुऋमणिका	iii
अन्यैः वेदान्ताचार्यैः कृताः स्तुतयः	42
शङ्कर-वाङ्महिमा	49
जय-घोषः	50
श्री-लक्ष्मी-नृसिंह-जयन्ती-पूजा 1!	54
पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा . ू	54
प्रधान-पूजा — श्री-लक्ष्मी-नृसिंहपूजा	56
षोडशोपचार-पूजा	59
श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाष्टोत्तरशतनामाविलः	62
उत्तराङ्ग-पूजा	65
लक्ष्मी-नृसिंह-करुणारस-स्तोत्रम्	67
श्री-लक्ष्मी-नृसिंह-पञ्चरत्न-स्तोत्रम्	70
	71
श्रीमद्भागवते महापुराणे सप्तमस्कन्धे नवमोऽध्यायः	80
श्री-वरमहालक्ष्मी-पूजा <sub>19</sub>	
• •	92
पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा	92
प्रधान-पूजा — श्रीमहालक्ष्मी-पूजा	
षोडशोपचार-पूजा	
• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	01
	03
दोर्ग्र्यन्थि-पूजा	
	07
	07
	11
अपराध-क्षमापनम्	12
श्री-सङ्कष्टचतुर्थीव्रत-सिद्धिविनायक-पूजा	13
	13
पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा	
ا ا ا ا ا ا ا ا ا ا ا ا ا ا ا ا ا ا ا	. 0

अनुक्रमणिका	iv
गणपत्यष्टोत्तरशेतनामावलिः	220 225 235
<del></del>	236
<u> </u>	
	237
प्रधान-पूजा — श्रीकृष्ण-पूजा	239
	242
	247
उत्तराङ्ग-पूजा	250
श्री-सिद्धिविनायक-पूजा	258
	258
`	260
षोडशोपचार-पूजा ू	264
गण्पत्यष्टोत्तरशतनामावलिः	_
<i>t</i>	281
•	281
	282
	284
	305
<u> </u>	307
	307 309
त्रवान-पूजा — श्रा-सरस्वता-पूजा	
S)	312
दुर्गाष्टोत्तरशतनामावलिः	316
लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामावलिः	318
सरस्वत्यष्टोत्तरशतनामावलिः	
उत्तराङ्ग-पूजा	323

प्रार्थना       325         उपायनदानम्       326         अपराध-क्षमापनम्       327         श्री-धन्वन्तिरं-पूजा       342         पूर्वाङ्ग-विग्नेश्वर-पूजा       342         प्रधान-पूजा       344         षोडशोपचार-पूजा       347         धन्वन्तर्यष्टोत्तरशतनामाविठः       351         उत्तराङ्ग-पूजा       354         धन्वन्तरि-स्तोत्रम् (मत्स्य पुराणान्तर्गतम्)       357         श्री-लक्ष्मी-कुवेर-पूजा       360         पूर्वाङ्ग-विग्नेश्वर-पूजा       360         प्रधान-पूजा       365         नवग्रहपूजा       365         नवग्रहपूजा       366         लोकपाल-पूजा       371         पोडशोपचार-पूजा       373         लक्ष्म्यप्रोत्तरातनामाविठः       377         उत्तराङ्ग-पूजा       380         ईशानादि पूजा       381         कुवेर पूजा       382         कुवेराप्टोत्तरशतनामाविठः       383         प्रार्थन       386         अपराध-क्षमापनम्       386         कार्तिक्तोनिक्तोमापनम्       386         कार्तिकत्तेसोमवारार्घ्यम्       387         कार्तिकरोनमापनम्       387	अनुऋमणिका	V
उपायनदानम्325अपराध-क्षमापनम्326सरस्वती-सहस्रनाम-स्तोत्रम्327श्री-धन्वन्तिर-पूजा342पूर्वाङ्ग-विघ्नेथर-पूजा344पोडशोपचार-पूजा347धन्वन्तर्यष्टोत्तरशतनामावितः351उत्तराङ्ग-पूजा354धन्वन्तरि-स्तोत्रम् (मत्स्य पुराणान्तर्गतम)357श्री-लक्ष्मी-कुबेर-पूजा360पूर्वाङ्ग-विघ्नेथर-पूजा360प्रधान-पूजा365नवग्रहपूजा365नवग्रहपूजा366लोकपाल-पूजा371षोडशोपचार-पूजा373लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामावितः377उत्तराङ्ग-पूजा380ईशानादि पूजा381कुबेर पूजा382कुबेराप्टोत्तरशतनामावितः383प्रार्थना382कुबेराप्टोत्तरशतनामावितः383प्रार्थना386अपराध-क्षमापनम्386कपराध-क्षमापनम्386कपराध-क्षमापनम्386कार्त्तिकसोमवाराध्यम्387	प्रार्थना	325
अपराध-क्षमापनम् 326 सरस्वती-सहस्रनाम-स्तोत्रम् 327  श्री-धन्वन्तरि-पूजा 342 पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा 344 षोडशोपचार-पूजा 347 धन्वन्तर्यष्टोत्तरशतनामाविठः 351 उत्तराङ्ग-पूजा 354 धन्वन्तरि-स्तोत्रम् (मत्स्य पुराणान्तर्गतम्) 357  श्री-लक्ष्मी-कुबेर-पूजा 360 पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा 360 प्रधान-पूजा 360 प्रधान-पूजा 360 प्रधान-पूजा 362 मातृगण-पूजा 365 नवग्रहपूजा 365 नवग्रहपूजा 366 लोकपाल-पूजा 371 षोडशोपचार-पूजा 373 लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामाविठः 377 उत्तराङ्ग-पूजा 380 ईशानादि पूजा 381 कुबेर पूजा 382 कुबेराष्टोत्तरशतनामाविठः 383 प्रार्थना 386 अपराध-क्षमापनम् 386  कार्त्तिकसोमवारार्घ्यम्		325
सरस्वती-सहस्रनाम-स्तोत्रम्327श्री-धन्वन्तारि-पूजा342पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा344षोडशोपचार-पूजा347धन्वन्तर्यप्टोत्तरशतनामावितः351उत्तराङ्ग-पूजा354धन्वन्तरि-स्तोत्रम् (मत्स्य पुराणान्तर्गतम)357श्री-लक्ष्मी-कुबेर-पूजा360पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा360प्रधान-पूजा365नवयहपूजा365नवयहपूजा366लोकपाल-पूजा371षोडशोपचार-पूजा373लक्ष्म्यप्टोत्तरशतनामावितः377उत्तराङ्ग-पूजा380ईशानादि पूजा381कुबेर पूजा382कुबेराप्टोत्तरशतनामावितः383प्रार्थना386अपराध-क्षमापनम्386काराधना386काराधना386काराधना386काराधना386काराधना386काराधना386काराधना386काराधना386काराधना386काराधना386काराधना386काराधना386काराधना386	अपराध-क्षमापनम्	
पूर्वाङ्ग-विद्रोश्वर-पूजा       342         प्रधान-पूजा       344         पोडशोपचार-पूजा       347         धन्वन्तर्यष्टोत्तरशतनामाविलः       351         उत्तराङ्ग-पूजा       354         धन्वन्तरि-स्तोत्रम् (मत्स्य पुराणान्तर्गतम्)       357         श्री-लक्ष्मी-कुबेर-पूजा       360         पूर्वाङ्ग-विद्रोश्वर-पूजा       360         प्रधान-पूजा       365         नवग्रहपूजा       365         नवग्रहपूजा       366         लोकपाल-पूजा       371         पोडशोपचार-पूजा       373         लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामाविलः       377         उत्तराङ्ग-पूजा       380         ईशानादि पूजा       381         कुबेर पूजा       382         कुबेराप्टोत्तरशतनामाविलः       383         प्रार्थन       386         अपराध-क्षमापनम्       386         कार्त्तिकसोमवारार्घ्यम्       387		
पूर्वाङ्ग-विद्रोश्वर-पूजा       342         प्रधान-पूजा       344         पोडशोपचार-पूजा       347         धन्वन्तर्यष्टोत्तरशतनामाविलः       351         उत्तराङ्ग-पूजा       354         धन्वन्तरि-स्तोत्रम् (मत्स्य पुराणान्तर्गतम्)       357         श्री-लक्ष्मी-कुबेर-पूजा       360         पूर्वाङ्ग-विद्रोश्वर-पूजा       360         प्रधान-पूजा       365         नवग्रहपूजा       365         नवग्रहपूजा       366         लोकपाल-पूजा       371         पोडशोपचार-पूजा       373         लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामाविलः       377         उत्तराङ्ग-पूजा       380         ईशानादि पूजा       381         कुबेर पूजा       382         कुबेराप्टोत्तरशतनामाविलः       383         प्रार्थन       386         अपराध-क्षमापनम्       386         कार्त्तिकसोमवारार्घ्यम्       387	ਅੰ ਪੜ੍ਹੇ ਜੀ ਸਤ	242
प्रधान-पूजा       344         षोडशोपचार-पूजा       347         धन्वन्तर्यष्टोत्तरशतनामावितः       351         उत्तराङ्ग-पूजा       354         धन्वन्तिर-स्तोत्रम् (मत्स्य पुराणान्तर्गतम)       357         श्री-लक्ष्मी-कुबेर-पूजा       360         पूर्वाङ्ग-विद्रोश्वर-पूजा       362         मातृगण-पूजा       365         नवग्रहपूजा       366         लोकपाल-पूजा       371         षोडशोपचार-पूजा       373         लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामावितः       377         उत्तराङ्ग-पूजा       380         ईशानादि पूजा       381         कुबेर पूजा       382         कुबेराप्टोत्तरशतनामावितः       383         प्रार्थन       386         अपराध-क्षमापनम्       386         कार्त्तिकसोमवारार्घ्यम्       387	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	·
पोडशोपचार-पूजा347धन्वन्तर्यष्टोत्तरशतनामावितः351उत्तराङ्ग-पूजा354धन्वन्तिर-स्तोत्रम् (मत्स्य पुराणान्तर्गतम)357श्री-लक्ष्मी-कुवेर-पूजा360पूर्वाङ्ग-विन्नेश्वर-पूजा362मातृगण-पूजा365नवग्रहपूजा365लेकपाल-पूजा371पोडशोपचार-पूजा373लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामावितः377उत्तराङ्ग-पूजा380ईशानािद् पूजा381कुवेर पूजा382कुवेराष्टोत्तरशतनामावितः383प्रार्थना386अपराध-क्षमापनम्386कार्त्तिकसोमवारार्घ्यम्386		_
धन्वन्तर्यष्टोत्तरशतनामावितः	प्रधान-पूजा — धन्वन्तारपूजा	344
उत्तराङ्ग-पूजा354धन्वन्तरि-स्तोत्रम् (मत्स्य पुराणान्तर्गतम)357श्री-लक्ष्मी-कुबेर-पूजा360पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा362मातृगण-पूजा365नवग्रहपूजा366लोकपाल-पूजा371षोडशोपचार-पूजा373लक्ष्य्यप्टोत्तरशतनामावलिः377उत्तराङ्ग-पूजा380ईशानादि पूजा381कुबेर पूजा382कुबेराप्टोत्तरशतनामावलिः383प्रार्थना386अपराध-क्षमापनम्386कार्त्तिकसोमवारार्घ्यम्387	षाडशापचार-पूजा	347
धन्वन्तरि-स्तोत्रम् (मत्स्य पुराणान्तर्गतम्) 357  श्री-लक्ष्मी—कुबेर-पूजा 360 पूर्वाङ्ग-विद्येश्वर-पूजा 362 प्रधान-पूजा श्रीमहालक्ष्मी-पूजा 365 नवग्रहपूजा 366 लोकपाल-पूजा 371 षोडशोपचार-पूजा 373 लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामावलिः 377 उत्तराङ्ग-पूजा 380 ईशानादि पूजा 381 कुबेर पूजा 382 कुबेराष्टोत्तरशतनामावलिः 383 प्रार्थना 386 अपराध-क्षमापनम् 386 कर्तिकसोमवारार्घ्यम् 387	धन्वन्तयेष्टोत्तरशतनामार्वालेः	351
श्री-लक्ष्मी-कुबेर-पूजा 360 पूर्वाङ्ग-विग्नेश्वर-पूजा 360 प्रधान-पूजा श्रीमहालक्ष्मी-पूजा 362 मातृगण-पूजा 365 नवग्रहपूजा 366 लोकपाल-पूजा 371 षोडशोपचार-पूजा 373 लक्ष्म्यप्टोत्तरशतनामाविलः 377 उत्तराङ्ग-पूजा 380 ईशानादि पूजा 381 कुबेर पूजा 382 कुबेराप्टोत्तरशतनामाविलः 383 प्रार्थना 386 अपराध-क्षमापनम् 386	उत्तराङ्ग-पूजा <sub>.</sub>	354
पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा360प्रधान-पूजा — श्रीमहालक्ष्मी-पूजा362मातृगण-पूजा365नवग्रहपूजा366लोकपाल-पूजा371षोडशोपचार-पूजा373लक्ष्म्यप्टोत्तरशतनामाविलः377उत्तराङ्ग-पूजा380ईशानादि पूजा381कुबेर पूजा382कुबेराप्टोत्तरशतनामाविलः383प्रार्थना386अपराध-क्षमापनम्386कपराध-क्षमापनम्386कपराध-क्षमापनम्387	धन्वन्तरि-स्तोत्रम् (मत्स्य पुराणान्तर्गतम्)	357
पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा360प्रधान-पूजा — श्रीमहालक्ष्मी-पूजा362मातृगण-पूजा365नवग्रहपूजा366लोकपाल-पूजा371षोडशोपचार-पूजा373लक्ष्म्यप्टोत्तरशतनामाविलः377उत्तराङ्ग-पूजा380ईशानादि पूजा381कुबेर पूजा382कुबेराप्टोत्तरशतनामाविलः383प्रार्थना386अपराध-क्षमापनम्386कपराध-क्षमापनम्386कपराध-क्षमापनम्387	श्री-लक्ष्मी कतेर प्रचा	260
प्रधान-पूजा — श्रीमहालक्ष्मी-पूजा 362 मातृगण-पूजा 365 नवग्रहपूजा 366 लोकपाल-पूजा 371 षोडशोपचार-पूजा 373 लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामाविलः 377 उत्तराङ्ग-पूजा 380 ईशानािद पूजा 381 कुबेर पूजा 382 कुबेराष्टोत्तरशतनामाविलः 383 प्रार्थना 386 अपराध-क्षमापनम् 386 कार्त्तिकसोमवारार्घ्यम्		
मातृगण-पूजा	पूर्वाञ्चनवस्थर-पूजा	
नवग्रहपूजा366लोकपाल-पूजा371षोडशोपचार-पूजा373लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामाविलः377उत्तराङ्ग-पूजा380ईशानािद पूजा381कुबेर पूजा382कुबेराष्टोत्तरशतनामाविलः383प्रार्थना386अपराध-क्षमापनम्386कार्त्तिकसोमवारार्घ्यम्387	प्रयान-पूजा — श्रामहालक्ष्मा-पूजा	362
लोकपाल-पूजा371षोडशोपचार-पूजा373लक्ष्म्यप्टोत्तरशतनामाविलः377उत्तराङ्ग-पूजा380ईशानािद पूजा381कुबेर पूजा382कुबेराप्टोत्तरशतनामाविलः383प्रार्थना386अपराध-क्षमापनम्386कार्त्तिकसोमवारार्घ्यम्387		
षोडशोपचार-पूजा		
लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामावितः377उत्तराङ्ग-पूजा380ईशानािद पूजा381कुवेर पूजा382कुवेराष्टोत्तरशतनामावितः383प्रार्थना386अपराध-क्षमापनम्386कार्त्तिकसोमवारार्घ्यम्387	लाकपाल-पूजा	3/1
उत्तराङ्ग-पूजा380ईशानादि पूजा381कुबेर पूजा382कुबेराष्टोत्तरशतनामावितः383प्रार्थना386अपराध-क्षमापनम्386कार्त्तिकसोमवारार्घ्यम्387	षाडशापचार-पूजा	3/3
ईशानादि पूजा       381         कुबेर पूजा       382         कुबेराष्ट्रोत्तरशतनामावितः       383         प्रार्थना       386         अपराध-क्षमापनम्       386         कार्त्तिकसोमवारार्घ्यम्       387	लक्ष्म्यशत्तरशतनामावालः	
कुबेर पूजा       382         कुबेराष्ट्रोत्तरशतनामावितः       383         प्रार्थना       386         अपराध-क्षमापनम       386         कार्त्तिकसोमवारार्घ्यम्       387		
कुबेराष्टोत्तरशतनामावितः       383         प्रार्थना       386         अपराध-क्षमापनम्       386         कार्त्तिकसोमवारार्घ्यम्       387		
प्रार्थना       386         अपराध-क्षमापनम्       386         कार्त्तिकसोमवारार्घ्यम्       387		
अपराध-क्षमापनम्	कुब्राष्टात्तरशतनामावालः	383
कार्त्तिकसोमवारार्घ्यम् 387		
	अपराध-क्षमापनम्	386
	कार्त्तिकसोमवारार्घ्यम	387
307		
		507

अनुक्रमणिका vi
श्री-स्कन्द्-षष्ठी-पूजा 389
पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा
प्रधान-पूजा — स्कन्द-पूजा
षोडशोपचार-पूजा
षण्मुखसहस्रनामावलिः
सुब्रह्मण्याष्टोत्तरशतनामावलिः
वह्री अप्टोत्तरशतनामाविलः
देवसेना अष्टोत्तरशतनामावलिः
बृन्दावनपूजा (श्री-तुलसी–विष्णु-पूजा) 430
पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा
प्रधान-पूजा — तुलसी-पूजा
षोडशोपचार-पूजा
अङ्ग-पूजा
तुर्लस्यष्टोत्तरशतनामावलिः
तुलसीविवाहविधिः
श्रीसूर्य-नमस्कारः 446
पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा
प्रधान-पूजा — श्री-सूर्यनारायण-पूजा
त्रवान-पूजा — त्रा-सूचनाराचण-पूजा
कुम्भे वरुण-सूर्य-नारायण-पूजा
सूर्याष्ट्रोत्तरशतनामावलिः
<u> </u>
नवग्रहसूक्तम्
आदित्यहृद्यम्
द्वादशार्यासूर्यस्तुतिः
शिवरात्रि-पूजा — याम-चतुष्टय-पूजा 497
व्रत-सङ्कल्पः

क्रमणिका	vi
पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा	498
प्रधान-पूजा — साम्ब-परमेश्वर-पूजा (प्रथम-यामः)	500
षोडशोपचार-पूजा	
शिवाष्टोत्तरशतनामाविलः	505
उत्तराङ्ग-पूजा	508
उत्तराङ्ग-पूजा	51 <sup>-</sup>
षोडशोपचार-पूजा	
महान्यासः	513
महान्यासः	513
पञ्चाङ्गमुखन्यासः रावणोक्ता पञ्चमुखप्रार्थना-सहितम्	515
केशादिपादान्त (प्रथमो) न्यासः	516
मूर्घादिपादान्त देशाक्षरी दशाङ्ग (द्वितीयो) न्यासः	522
पादादिमूर्धान्त पञ्चाङ्ग (तृतीयो) न्यासः	522
हंसगायत्री	523
दिक् सम्पुटन्यासः	
षोडशाङ्गरौद्रीकरणम्	527
गुह्यादि मस्तकान्तं षडङ्ग (चतुर्थी) न्यासः	530
आत्मरक्षा	
शिवसङ्कल्पः	
पुरुषसूक्तम्	
उत्तरनोरायणम्	
अप्रतिरथम्	
प्रतिपूरुषम् (सं०)	540
प्रतिपूरुषम् (ब्रा॰)	
शतरुद्रीयम् (सं०)	
शतरुद्रीयम् (बा॰)	544
पञ्चाङ्गम्	
अष्टाङ्ग-नमस्काराः	545
लघुन्यासे श्री-रुद्रध्यानम्	
लघुन्यासे देवता-स्थापनम्	

ऋमणिका		 
आत्मपूजा .		
कलशेषु साम्ब	परमेश्वर ध्यानम्	 
प्रदक्षिणम् .		 
नमस्काराः .		 
चमकानुवाकैः	प्रार्थना	 
प्रार्थना		 
श्रीरुद्रजपः .		 
ध्यानम्		 
रुद्रप्रश्नः		 
श्रीरुद्रनाम त्रि	शती	 
शिवाष्टोत्तरश	ानामावलिः	 
उत्तराङ्ग-पूजा		 
प्रधान-पूजा -	– साम्ब-परमेश्वर-पूजा (तृतीय-यामः)	 
षोडशोपचार-	पूजा	 
शिवाष्टोत्तरश	ननामाविलः	 
उत्तराङ्ग-पूजा		 
प्रधान-पूजां -	– साम्ब-परमेश्वर-पूजा (चतुर्थ-यामः)	 
षोडशोपचार-	पूजा	 
शिवाष्टोत्तरश	नामावलिः	 

અક્ષ-પૂર્ણા ૄ ૄ	. 610
श्री कामाक्ष्यप्टोत्तर्शतनामाविलः	. 611
श्री-कामाक्षी-चूर्णिका	. 615
सङ्क्रमण-पुण्यकाल-स्नान-सङ्कल्पः	617
२ उपाङ्गाः	620
संवत्सर-नामानि संवत्सर-श्लोका देवताश्च	<b>621</b> . 623

603

631

632

633

श्री-सावित्री-व्रतम् — कामाक्षी-पूजा

नक्षत्र-नामानि

योग-नामानि

करण-नामानि

विभागः १

व्रतपूजाः

# ॥ लघु-पञ्चायतन-पूजा ॥

# ॥ प्रधान-पूजा — पञ्चायतनपूजा ॥

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवस्सुवरोम्।

#### ॥सङ्कल्पः॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते अद्य ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिके प्रभवादि षष्टिसंवत्सराणां मध्ये ( ) नाम संवत्सरे उत्तरायणे / दक्षिणायने (ग्रीष्म / वर्ष / शरद् / हेमन्त / शिशिर / वसन्त) ऋतौ (मेष / वृषभ / मिथुन / कर्कटक / सिंह / कन्या / तुला / वृश्चिक / धनुर् / मकर / कुम्भ / मीन) मासे (शुक्न / कृष्ण) पक्षे (एकादश्यां / द्वादश्यां) शुभितथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर / भानु) वासरयुक्तायाम् ( ) नक्षत्र ( ) नाम योग ( ) करण युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् ( शुभितथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय-आयुरारोग्य-ऐश्वर्याभिवृद्धर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्धर्थं पुत्रपौत्राभि-वृद्धर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्धर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय-व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां

<sup>ै</sup>पृष्टं ६२१ पश्यताम्

<sup>&</sup>lt;sup>२</sup>पृष्टं ६३१ पश्यताम्

<sup>&</sup>lt;sup>३</sup>पृष्टं ६३२ पश्यताम्

प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्य अपनोदनद्वारा सकल पापक्षयार्थं श्री-महागणपित-प्रीत्यर्थं श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-प्रीत्यर्थं श्री-लक्ष्मीनारायण-प्रीत्यर्थं श्री-महालक्ष्मीसमेतं श्री-सन्तानगोपाल-प्रीत्यर्थं श्री-गौरीदेवी-प्रीत्यर्थं श्री-साम्बपरमेश्वर-प्रीत्यर्थं श्री-निद्धकेश्वर-प्रीत्यर्थं श्री-विद्यतेष्वसेनासमेत-श्री-सुब्रह्मण्य-प्रीत्यर्थं श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनूमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-प्रीत्यर्थं यावच्छक्ति ध्यानावाहनादि षोडशोपचार-पूजां पश्चायतनपूजां क्षीराभिषेकं च करिष्ये। तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये। श्रीविद्येश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। (गणपित-प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

#### ॥ आसन-पूजा॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चासनं कुरु॥

#### ॥ घण्टा-पूजा॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्। घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

#### ॥ कलश-पूजा॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः।

ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्) आपो वा इद सर्वं विश्वां भूतान्यापः प्राणा वा आपः पृशव् आपोऽन्नमापोऽमृत्मापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापृश्छन्दा्र्स्यापो ज्योती्र्ष्यापो यज्र्र्ष्यापे स्त्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भुवः सुवराप ओम्॥

> कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः। अङ्गेश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च ह्रदा नदाः। आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥ ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवेः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

## ॥ आत्म-पूजा॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

१. ॐ आत्मने नमः ४. ॐ जीवात्मने नमः

२. ॐ अन्तरात्मने नमः ५. ॐ परमात्मने नमः

३. ॐ योगात्मने नमः ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः

# समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः। त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

# ॥ पीठ-पूजा ॥

१. ॐ आधारशक्त्ये नमः ८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः

२. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः

३. ॐ आदिकुर्माय नमः १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः

४. ॐ आदिवराहाय नमः ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः

५. ॐ अनन्ताय नमः १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः

६. ॐ पृथिव्ये नमः १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः

७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः १४. ॐ योगपीठासनाय नमः

#### ॥ गुरु-ध्यानम्॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

# ॥ षोडशोपचार-पूजा॥

ॐ गुणानां त्वा गुणपंति १ हवामहे कविं केवीनामुंपुमश्रंवस्तमम्। ज्येष्ट्रराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत् आ नेः शृण्वन्नूतिभिः सीद् सादेनम्॥ ॐ महागणपतये नमः॥

अस्मिन् बिम्बे श्री-महागणपितं ध्यायामि। आवाहयामि॥ आ सत्येन रजंसा वर्तमानो निवेशयंत्रमृतं मर्त्यं च। हिर्ण्ययेन सिवता रथेनाऽदेवो यांति भुवंना विपश्यन्। अस्मिन् बिम्बे श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायणं ध्यायामि। आवाहयामि॥

> सहस्रंशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रंपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वा। अत्यंतिष्ठदृशाङ्गुलम्॥

> हिरंण्यवर्णां हरिंणीं सुवर्णरंजतुस्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मेयीं लक्ष्मीं जातंवेदो म आवह॥

अस्मिन् बिम्बे श्री-लक्ष्मीनारायणं ध्यायामि। अस्मिन् बिम्बे श्री-महालक्ष्मीसमेतं श्री-सन्तानगोपालं ध्यायामि।

> त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धेनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतांत्॥

गौरी मिंमाय सलिलानि तक्षती। एकंपदी द्विपदी सा चतुंष्पदी। अष्टापंदी नवंपदी बभूवुषीं। सहस्राक्षरा पर्मे व्योमन्।

अस्मिन् बिम्बे श्री-सपरिवार-साम्बपरमेश्वरं ध्यायामि। आवाहयामि॥ अस्मिन् बिम्बे श्री-गौरीदेवीं ध्यायामि। आवाहयामि॥ अस्मिन् बिम्बे श्री-साम्बपरमेश्वरं ध्यायामि। आवाहयामि॥

तत्पुरुषाय विदाहें चऋतुण्डायं धीमहि। तन्नों नन्दिः प्रचोदयाँत्। अस्मिन् बिम्बे श्री-नन्दिकेश्वरं ध्यायामि। आवाहयामि॥ तत्पुरुषाय विद्महें महासेनायं धीमहि। तन्नंः षण्मुखः प्रचोदयाँत्॥

अस्मिन् बिम्बे श्री-वल्लीदेवसेनासमेत-श्री-सुब्रह्मण्यस्वामिनं ध्यायामि।

कल्पद्रुमं प्रणमतां कमलारुणभं स्कन्दं भुजद्वयमनामयमेकवऋम्। कात्यायनी-प्रियसुतं कटिबद्धवामं कौपीन-दण्डधर-दक्षिणहस्तमीडे॥

आवाहयामि॥

वैदेहीसहितं सुरद्रुमतले हैमे महामण्डपे मध्ये पुष्पकमासने मणिमये वीरासने सुस्थितम्। अग्रे वाचयति प्रभञ्जनसुते तत्त्वं मुनिभ्यः परं व्याख्यान्तं भरतादिभिः परिवृतं रामं भजे श्यामलम्॥

अस्मिन् बिम्बे श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनूमत्-समेत-श्री-रामचन्द्रं ध्यायामि।

वामे भूमिसुता पुरश्च हनुमान् पश्चात् सुमित्रासुतः शत्रुघ्नो भरतश्च पार्श्वदलयोर्वाय्वादिकोणेषु च। सुग्रीवश्च विभीषणश्च युवराट् तारासुतो जाम्बवान् मध्ये नीलसरोजकोमलरुचिं रामं भजे श्यामलम्॥

आवाहयामि॥

आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो-देवताभ्यो नमः।

आसनं समर्पयामि।

पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

#### ॥ अभिषेकः ॥

ॐ गृणानां त्वा गृणपंति र हवामहे कृविं केवीनामुंप्मश्रंवस्तमम्। ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत् आ नेः शृण्वन्नूतिभिः सीद् सादेनम्॥ ॐ महागणपतये नमः॥

ॐ आ सत्येन रजंसा वर्तमानो निवेशयंत्रमृतं मर्त्यं च। हिर्ण्ययेन सविता रथेनाऽदेवो यांति भुवना विपश्यन्।

ॐ सहस्रंशीर्षा पुर्रुषः। सहस्राक्षः सहस्रंपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वा। अत्यंतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥

ॐ हिरंण्यवर्णां हरिंणीं सुवर्णरंजतस्त्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मेयीं लक्ष्मीं जातवेदो म् आवह॥

गौरी मिंमाय सलिलानि तक्षती। एकंपदी द्विपदी सा चतुंष्पदी। अष्टापंदी नवंपदी बभूवुषीं। सहस्राक्षरा पर्मे व्योमन्।

तत्पुरुषाय विदाहें चऋतुण्डायं धीमहि। तन्नों नन्दिः प्रचोदयाँत्।

तत्पुरुंषाय विदाहें महासेनायं धीमहि। तन्नः षण्मुखः प्रचोदयाँत्॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥ रुद्रप्रश्न-चमकप्रश्न-पुरुषषुक्तैः अभिषेकम् कृत्वा।

अभिषेकानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि। वस्त्रार्थम् अक्षतान् समर्पयामि। यज्ञोपवीताभरणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

दिव्यपरिमलगन्थान् धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

# ॥ महागणपति-अर्चना ॥

१. ॐ सुमुखाय नमः १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः

२. ॐ एकदन्ताय नमः ११. ॐ फालचन्द्राय नमः

३. ॐ कपिलाय नमः १२. ॐ गजाननाय नमः

४. ॐ गजकर्णकाय नमः १३. ॐ वऋतुण्डाय नमः

५. ॐ लम्बोदराय नमः १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः

६. ॐ विकटाय नमः १५. ॐ हेरम्बाय नमः

७. ॐ विघ्नराजाय नमः १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः

८. ॐ विनायकाय नमः १७. ॐ सिद्धिविनायकाय नमः

९. ॐ धूमकेतवे नमः १८. ॐ विघ्नेश्वराय नमः

🕉 श्री-महागणपतये नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

# ॥ आदित्य-अर्चना॥

१. ॐ मित्राय नमः ७. ॐ हिरण्यगर्भाय नमः

२. ॐ रवये नमः ८. ॐ मरीचये नमः

३. ॐ सूर्याय नमः ९. ॐ आदित्याय नमः

४. ॐ भानवे नमः १०. ॐ सवित्रे नमः

५. ॐ खगाय नमः ११. ॐ अर्काय नमः

६. ॐ पृष्णे नमः १२. ॐ भास्कराय नमः

ॐ श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-परब्रह्मणे नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

# ॥ लक्ष्मीनारायण-अर्चना॥

- १. ॐ केशवाय नमः
- २. ॐ नारायणाय नमः
- ३. ॐ माधवाय नमः
- ४. ॐ गोविन्दाय नमः
- ५. ॐ विष्णवे नमः
- ६. ॐ मधुसूदनाय नमः
- ७. ॐ त्रिविक्रमाय नमः
- ८. ॐ वामनाय नमः
- ९. ॐ श्रीधराय नमः
- १०. ॐ हृषीकेशाय नमः
- ११. ॐ पद्मनाभाय नमः
- १२. ॐ दामोदराय नमः
  - १. ॐ आदिलक्ष्म्यै नमः
  - २. ॐ धान्यलक्ष्म्ये नमः
  - ३. ॐ धेर्यलक्ष्म्ये नमः
  - ४. ॐ गजलक्ष्म्ये नमः
  - ५. ॐ सन्तानलक्ष्म्यै नमः

- १३. ॐ सङ्कर्षणाय नमः
- १४. ॐ वास्देवाय नमः
- १५. ॐ प्रद्युम्नाय नमः
- १६. ॐ अनिरुद्धाय नमः
- १७. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः
- १८. ॐ अधोक्षजाय नमः
- १९. ॐ नृसिंहाय नमः
- २०. ॐ अच्युताय नमः
- २१. ॐ जनार्दनाय नमः
- २२. ॐ उपेन्द्राय नमः
- २३. ॐ हरये नमः
- २४. ॐ श्रीकृष्णाय नमः
  - ६. ॐ विजयलक्ष्म्यै नमः
  - ७. ॐ विद्यालक्ष्म्यै नमः
  - ८. ॐ धनलक्ष्म्यै नमः
  - ९. ॐ वरलक्ष्म्ये नमः
- १०. ॐ महालक्ष्म्ये नमः
- ॐ श्री-लक्ष्मीनारायणाय नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

# ॥ महालक्ष्मी-समेत-श्री-सन्तानगोपाल-अर्चना॥

- १. ॐ केशवाय नमः
- २. ॐ नारायणाय नमः
- ३. ॐ माधवाय नमः
- ४. ॐ गोविन्दाय नमः
- ५. ॐ विष्णवे नमः
- ६. ॐ मधुसूदनाय नमः
- ७. ॐ त्रिविक्रमाय नमः
- ८. ॐ वामनाय नमः
- ९. ॐ श्रीधराय नमः
- १०. ॐ हृषीकेशाय नमः
- ११. ॐ पद्मनाभाय नमः
- १२. ॐ दामोदराय नमः
  - १. ॐ आदिलक्ष्म्यै नमः
  - २. ॐ धान्यलक्ष्म्यै नमः
  - ३. ॐ धेर्यलक्ष्म्ये नमः
  - ४. ॐ गजलक्ष्म्ये नमः
  - ५. ॐ सन्तानलक्ष्म्यै नमः

- १३. ॐ सङ्कर्षणाय नमः
- १४. ॐ वासुदेवाय नमः
- १५. ॐ प्रद्युम्नाय नमः
- १६. ॐ अनिरुद्धाय नमः
- १७. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः
- १८. ॐ अधोक्षजाय नमः
- १९. ॐ नृसिंहाय नमः
- २०. ॐ अच्युताय नमः
- २१. ॐ जनार्दनाय नमः
- २२. ॐ उपेन्द्राय नमः
- २३. ॐ हरये नमः
- २४. ॐ श्रीकृष्णाय नमः
  - ६. ॐ विजयलक्ष्म्यै नमः
  - ७. ॐ विद्यालक्ष्म्यै नमः
  - ८. ॐ धनलक्ष्म्यै नमः
  - ९. ॐ वरलक्ष्म्यै नमः
- १०. ॐ महालक्ष्म्ये नमः

ॐ श्री-महालक्ष्मीसमेत-श्री-सन्तानगोपाल-स्वामिने नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

# ॥श्री-साम्बपरमेश्वर-अर्चना॥

१. ॐ भवाय देवाय नमः ५. ॐ रुद्राय देवाय नमः

२. ॐ शर्वाय देवाय नमः ६. ॐ उग्राय देवाय नमः

३. ॐ ईशानाय देवाय नमः ७. ॐ भीमाय देवाय नमः

४. ॐ पशुपतये देवाय नमः ८. ॐ महते देवाय नमः

ॐ श्री-साम्बपरमेश्वराय नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि। ॐ नन्दिकेश्वराय नमः।

# ॥ गौरी-अर्चना॥

१. ॐ भवस्य देवस्य पत्र्ये नमः

२. ॐ शर्वस्य देवस्य पत्र्ये नमः

३. ॐ ईशानस्य देवस्य पत्यै नमः

४. ॐ पश्पतेर्देवस्य पत्यै नमः

५. ॐ रुद्रस्य देवस्य पत्ये नमः

६. ॐ उग्रस्य देवस्य पत्यै नमः

७. ॐ भीमस्य देवस्य पत्र्ये नमः

८. ॐ महतो देवस्य पल्यै नमः

🕉 श्री-गौरी-देव्यै नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

# ॥ श्री-वल्लीदेवसेनासमेत-सुब्रह्मण्यस्वामी-अर्चना ॥

१. ॐ ज्ञानशक्त्यात्मने नमः ६. ॐ शरवणोद्भवाय नमः

२. ॐ स्कन्दाय नमः ७. ॐ कार्त्तिकेयाय नमः

३. ॐ अग्निभुवे नमः ८. ॐ कुमाराय नमः

४. ॐ बाह्लेयाय नमः ९. ॐ षण्मुखाय नमः

५. ॐ गाङ्गेयाय नमः १०. ॐ कुक्कुटध्वजाय नमः

११. ॐ शक्तिधराय नमः

१४. ॐ षण्मात्राय नमः १५. ॐ ऋौश्वभित्रे नमः १२. ॐ गुहाय नमः

१६. ॐ शिखिवाहनाय नमः १३. ॐ ब्रह्मचारिणे नमः

> ॐ श्री-वल्लीदेवसेनासमेत-श्री-सुब्रह्मण्यस्वामिने नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

# ॥श्री-राम-अर्चना॥

१. ॐ श्रीरामाय नमः १३. ॐ परमात्मने नमः

१४. ॐ परस्मै ब्रह्मणे नमः २. ॐ रामभद्राय नमः

१५. ॐ सिचदानन्दविग्रहाय ३. ॐ रामचन्द्राय नमः

१६. ॐ परस्मै ज्योतिषे नमः ४. ॐ शाश्वताय नमः

५. ॐ राजीवलोचनाय नमः १७. ॐ परस्मै धाम्ने नमः

६. ॐ श्रीमते नमः १८. ॐ पराकाशाय नमः

७. ॐ राजेन्द्राय नमः १९. ॐ परात्पराय नमः

८. ॐ रघुपुङ्गवाय नमः २०. ॐ परेशाय नमः

९. ॐ जानकीवल्लभाय नमः २१. ॐ पारगाय नमः

१०. ॐ जैत्राय नमः २२. ॐ पाराय नमः

११. ॐ जितामित्राय नमः २३. ॐ सर्वदेवात्मकाय नमः

१२. ॐ जनार्दनाय नमः २४. ॐ पराय नमः

# ॥श्री-सीता-अर्चना॥

१. ॐ श्रीसीतायै नमः ३. ॐ देव्यै नमः

२ ॐ जानको नमः ४. ॐ वैदेह्ये नमः ५. ॐ राघवप्रियायै नमः

९. ॐ राक्षसान्तप्रकारिण्यै

६. ॐ रमायै नमः

१०. ॐ रत्नगुप्तायै नमः

७. ॐ अवनिस्तायै नमः

११. ॐ मातुलुङ्गी नमः

८. ॐ रामायै नमः

१२. ॐ मैथिल्ये नमः

# ॥श्री-हनूमदु-अर्चना॥

१. ॐ हनुमते नमः

२. ॐ अञ्जनासूनवे नमः

३. ॐ वायुपुत्राय नमः

४. ॐ महाबलाय नमः

५. ॐ कपीन्द्राय नमः

६. ॐ पिङ्गलाक्षाय नमः

७. ॐ लङ्काद्वीपभयङ्कराय नमः

८. ॐ प्रभञ्जनसुताय नमः

९. ॐ वीराय नमः

१०. ॐ सीताशोकविनाशकाय नमः

११. ॐ अक्षहन्त्रे नमः

१२. ॐ रामसखाय नमः

१३. ॐ रामकार्यधुरन्धराय नमः

१४. ॐ महौषधगिरेधारिणे नमः

१५. ॐ वानरप्राणदायकाय नमः

१६. ॐ वारीशतारकाय नमः

१७. ॐ मैनाकगिरिभञ्जनाय नमः

१८. ॐ निरञ्जनाय नमः

१९ ॐ जितक्रोधाय नमः

- २०. ॐ कदलीवनसंवृताय नमः
- २१. ॐ ऊर्ध्वरेतसे नमः
- २२. ॐ महासत्त्वाय नमः
- २३. ॐ सर्वमन्त्रप्रवर्तकाय नमः
- २४. ॐ महालिङ्गप्रतिष्ठात्रे नमः
- २५. ॐ बाष्पकुञ्जपतान्तराय नमः
- २६. ॐ नित्यं शिवध्यानपराय नमः
- २७. ॐ शिवपूजापरायणाय नमः
- ॐ श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनूमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-परब्रह्मणे नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

# ॥ उत्तराङ्ग-पूजा॥

#### धूपमाघ्रापयामि।

पश्चेहूतो ह् वै नामैषः। तं वा पृतं पश्चेहूत्र सन्तम्।
पश्चेहोतेत्याचेक्षते प्रोक्षेण। प्रोक्षेप्रिया इव हि देवाः॥
पश्चहारतीदीपं दर्शयामि। दीपानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।
गायत्रीदीपं दर्शयामि। दीपानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

उद्दींप्यस्व जातवेदोऽपुघ्निर्ऋतिं ममं।
पुशू श्रृश्च मह्ममावंह जीवंनं च दिशों दिश॥
मा नो हि सीज्ञातवेदो गामश्वं पुरुषं जर्गत्।
अविभूदग्च आगंहि श्रिया मा परिपातय॥
एकहारतीदीपं दर्शयामि।

# दीपानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

## नैवेद्यं कृत्वा।

श्री महागणपतये नमः श्री छाया-सुवर्चलाम्बा-समेतश्री सूर्यनारायण-परब्रह्मणे नमः लक्ष्मी-नारायणाय नमः

श्री-महालक्ष्मी-समेत-श्री-सन्तानगोपाल-स्वामिने नमः श्री-साम्बपरमेश्वराय नमः नन्दिकेश्वराय नमः श्री वल्लीदेवसेनासमेत-श्री-सुब्रह्मण्यस्वामिने नमः श्री सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनूमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

> ( ) महानैवेद्यं निवेदयामि। मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि। अमृतापिधानमसि। हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। पादप्रक्षालनं समर्पयामि। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

> > पूगीफलसमायुक्तं नागवक्षीदलैर्युतम्। कर्पूरचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥ कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि।

सोमो वा एतस्यं राज्यमादंत्ते। यो राजा सन्नाज्यो वा सोमेन यजंते। देवसुवामेतानि ह्वीर्षे भवन्ति। एतावंन्तो वै देवानारं स्वाः। त एवास्में स्वान्प्रयंच्छन्ति। त एनं पुनंः सुवन्ते राज्यायं। देवसू राजां भवति॥ न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः। तमेव भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति॥

श्री महागणपतये नमः श्री छाया-सुवर्चलाम्बा-समेतश्री सूर्यनारायण-परब्रह्मणे नमः लक्ष्मी-नारायणाय नमः

श्री-महालक्ष्मी-समेत-श्री-सन्तानगोपाल-स्वामिने नमः श्री-साम्बपरमेश्वराय नमः नन्दिकेश्वराय नमः श्री वहीदेवसेनासमेत-श्री-सुब्रह्मण्यस्वामिने नमः श्री सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनूमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र परब्रह्मणे नमः समस्त-अपराध-क्षमापनार्थं कर्पूरनीराजनं दर्शयामि। कर्पूरनीरजनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

योऽपां पुष्पं वेदे। पुष्पंवान् प्रजावाँन् पशुमान् भंवति। चन्द्रमा वा अपां पुष्पम्। पुष्पंवान् प्रजावाँन् पशुमान् भंवति। य एवं वेदे। योऽपामायतेनं वेदे। आयतेनवान् भवति।

> औं तद्धृह्म। औं तद्घायुः। औं तदात्मा। ओं तथ्सत्यम्। ओं तथ्सर्वम्। ओं तत्पुरोर्नमः॥

अन्तश्चरितं भूतेषु गुहायां विश्वमूर्तिषु। त्वं यज्ञस्त्वं वषद्कारस्त्वमिन्द्रस्त्वः रुद्रस्त्वं विष्णुस्त्वं ब्रह्म त्वं प्रजापितः। त्वं तदाप आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः सुवरोम्॥

यो वेदादौ स्वरः प्रोक्तो वेदान्ते च प्रतिष्ठितः। तस्य प्रकृतिलीनस्य यः परः स महेश्वरः॥

आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो-देवताभ्यो नमः वेदोक्तमन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

स्वर्णपुष्पं समर्पयामि।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण-पदे पदे॥

# प्रदक्षिणं कृत्वा।

नमः शिवाय साम्बाय सगणाय ससूनवे। सनन्दिने सगङ्गाय सवृषाय नमो नमः॥ नमः शिवाभ्यां नवयौवनाभ्यां परस्पराश्लिष्टवपुर्धराभ्याम् । नगेन्द्रकन्यावृषकेतनाभ्यां नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम्॥

#### ॥ नमस्कारमन्त्राः॥

नमो हिरण्यबाहवे हिरण्यवर्णाय हिरण्यरूपाय हिरण्यपतयेऽम्बिकापतय उमापतये पशुपतये नमो नमः॥

> ऋत र स्त्यं पंरं ब्रह्म पुरुषं कृष्णपिङ्गंलम्। ऊर्ध्वरेतं विरूपाक्षं विश्वरूपाय वै नमो नमः॥

सर्वो वै रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु। पुरुषो वै रुद्रः सन्महो नमो नमः।

विश्वं भूतं भुवेनं चित्रं बंहुधा जातं जायंमानं च यत्। सर्वो ह्यंष रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु॥

कद्रुद्राय प्रचेतसे मीुढुष्टंमाय तव्यंसे।

वो चेम् शन्तंम र हृदे। सर्वो ह्यंष रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु॥ अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि। नमस्कारान् कृत्वा।

छत्र-चामर-नृत्त-गीत-वाद्य-समस्त-राजोपचारान् समर्पयामि।

बाण-रावण-चण्डेश-नन्दि-भृङ्गि-रिटादयः। महादेवप्रसादोऽयं सर्वे गृह्णन्तु शाम्भवाः॥

नन्दिकेश्वराय नमः बलिं निवेदयामि। ॐ हर। ॐ हर। ॐ हर।

शङ्खमध्ये स्थितं तोयं भ्रामितं शङ्करोपरि। अङ्गलग्नं मनुष्याणां ब्रह्महत्यायुतं दहेत्॥

## शङ्खजलेन प्रोक्ष्य।

सालग्रामशिलावारि पापहारि शरीरिणाम्। आजन्मकृतपापानां प्रायश्चित्तं दिने दिने॥

अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिनिवारणम्। सर्वपापक्षयकरं शिवपादोदकं शुभम्॥

इति अभिषेकतीर्थं प्राश्य।

साधु वाऽसाधु वा कर्म यद्यदाचरितं मया। तत्सर्वं कृपया देव गृहाणाऽऽराधनं मम॥

हृद्वचकर्णिका-मध्यमुमया सह शङ्कर। प्रविश त्वं महादेव सर्वेरावरणैः सह॥

सम्पूजकानां परिपालकानां यतेन्द्रियानां च तपोधनानाम्। देशस्य राष्ट्रस्य कुलस्य राज्ञां करोतु शान्तिं भगवान् कुलेशः॥

अनया पूजया सपरिवार-साम्ब-परमेश्वरः प्रीयताम्।

### ॥ उद्वासनम्॥

निर्याणमुद्रया पुष्पाण्यादाय आघ्राय हृदये स्थापयित्वा उद्वासयेत्। निर्माल्यं शिरसि धारयेत्।

# ॥ ब्रह्मपारस्तोत्रम्॥

# प्रचेतस ऊचुः

ब्रह्मपारं मुने श्रोतुमिच्छामः परमं स्तवम्। जपता कण्डुना देवो येनाऽऽराध्यत केशवः॥५४॥

#### सोम उवाच

पारं परं विष्णुरपारपारः परः परेभ्यः परमार्थरूपी।

स ब्रह्मपारः परपारभूतः

परः पराणामपि पारपारः॥५५॥

स कारणं कारणतस्ततोऽपि तस्यापि हेतुः परहेतुहेतुः। कार्येषु चैवं सह कर्मकर्तृ-रूपैरशेषैरवतीह सर्वम्॥५६॥

ब्रह्म प्रभुर्ब्रह्म स सर्वभूतो ब्रह्म प्रजानां पतिरच्युतोऽसौ। ब्रह्माव्ययं नित्यमजं स विष्णुः अपक्षयाद्यैरखिलैरसङ्गिः ॥५७॥

ब्रह्माक्षरमजं नित्यं यथाऽसौ पुरुषोत्तमः। तथा रागादयो दोषाः प्रयान्तु प्रशमं मम॥५८॥

एतद्ब्रह्मपराख्यं वै संस्तवं परमं जपन्। अवाप परमां सिद्धिं समाराध्य स केशवम्॥५९॥

इमं स्तवं यः पठित शृणुयाद्वाऽपि नित्यशः। स कामदोषैरखिलैर्मुक्तः प्राप्नोति वाञ्छितम्॥

॥इति श्रीविष्णुपुराणे प्रथमें ऽशे पश्चदशो ऽध्याये ब्रह्मपारस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्। करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्बह्मार्पणमस्तु।

आचामेत्।



# ॥ एकादशीव्रतम् – श्री-महाविष्णुपूजा ॥

# ॥ पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा॥

(आचम्य)

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवणं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुव्रोम्। (अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा) ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः अविघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गुणपंति हवामहे कविं केवीनामुंपमश्रंवस्तमम्। ज्येष्ठराजुं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत् आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद् सादेनम्॥ अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि। पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि। वस्नार्थमक्षतान् समर्पयामि। यज्ञोपवीताभरणार्थे अक्षतान् समर्पयामि। दिव्यपरिमलगन्थान् धारयामि। गन्थस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि। पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

## ॥ अर्चना ॥

१. ॐ सुमुखाय नमः ९. ॐ धूमकेतवे नमः

२. ॐ एकदन्ताय नमः १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः

३. ॐ कपिलाय नमः ११. ॐ फालचन्द्राय नमः

४. ॐ गजकर्णकाय नमः १२. ॐ गजाननाय नमः

५. ॐ लम्बोदराय नमः १३. ॐ वऋतुण्डाय नमः

६. ॐ विकटाय नमः १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः

७. ॐ विघ्नराजाय नमः १५. ॐ हेरम्बाय नमः

८. ॐ विनायकाय नमः १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाघ्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वऋतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ। अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि। छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

# ॥ प्रधान-पूजा — एकादशीपूजा॥

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवणं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

### ॥ सङ्कल्पः ॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते अद्य ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिके प्रभवादि षष्टिसंवत्सराणां मध्ये ( ) नाम संवत्सरे उत्तरायणे / दक्षिणायने (ग्रीष्म / वर्ष / शरद् / हेमन्त / शिशिर / वसन्त) ऋतौ (मेष / वृषभ / मिथुन / कर्कटक / सिंह / कन्या / तुला / वृश्चिक / धनुर् / मकर / कुम्भ / मीन) मासे (शुक्त / कृष्ण) पक्षे (एकादश्यां / द्वादश्यां) शुभतिथौ (इन्द् / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर / भानु) वासरयुक्तायाम् ( ) नक्षत्र () वाम योग () करण युक्तायां च एवंगुणविशेषणविशिष्टायाम् अस्याम् (एकादश्यां / द्वादश्यां) शुभितथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय-आयुरारोग्य-ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् धर्मार्थकाममोक्ष-चतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्धार्थं पुत्रपौत्राभिवृद्धार्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्धार्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहा-पातकचतुष्टय-व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां

<sup>&</sup>lt;sup>४</sup>पृष्टं ६२१ पश्यताम्

<sup>&#</sup>x27;पृष्टं ६३१ पश्यताम्

<sup>&</sup>lt;sup>६</sup>पृष्टं ६३२ पश्यताम्

सद्य अपनोदनद्वारा सकल-पापक्षयार्थं श्री-भूमि-नीला-समेत-श्री-महाविष्णु-प्रीत्यर्थं यावच्छक्ति ध्यानावाहनादि षोडशोपचार-पूजां करिष्ये तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। (गणपति-प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

#### ॥ आसन-पूजा॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चासनं कुरु॥

#### ॥ घण्टा-पूजा॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्। घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

#### ॥ कलश-पूजा॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः। ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्) आपो वा इद॰ सर्वं विश्वां भूतान्यापंः प्राणा वा आपंः पृशव् आपोऽन्नमापोऽमृंतमापंः सम्राडापों विराडापंः स्वराडापृश्छन्दाः स्यापो ज्योतीः ष्ट्रापो यजू ष्ट्रापंः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भुवः सुवराप ओम्॥

> कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः। अङ्गेश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च ह्रदा नदाः। आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥ ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवेः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

#### ॥ आत्म-पूजा॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

१. ॐ आत्मने नमः ४.

४. ॐ जीवात्मने नमः

२. ॐ अन्तरात्मने नमः ५. ॐ परमात्मने नमः

३. ॐ योगात्मने नमः ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः

#### समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः। त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

## ॥ पीठ-पूजा॥

१. ॐ आधारशक्त्यै नमः ८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः

२. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः

३. ॐ आदिकूर्माय नमः १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः

४. ॐ आदिवराहाय नमः ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः

५. ॐ अनन्ताय नमः १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः

६. ॐ पृथिव्ये नमः १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः

७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः १४. ॐ योगपीठासनाय नमः

#### ॥गुरु-ध्यानम्॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

# ॥ षोडशोपचार-पूजा॥

ध्यायेत् चतुर्भुजं देवं शङ्खचऋगदाधरम्। पीताम्बरयुगोपेतं लक्ष्मीयुक्तं विभूषितम्। लसत्कौस्तुभशोभाढ्यं मेघश्यामं सुलोचनम्॥

## अस्मिन् बिम्बे श्री-भूमि-नीला-समेतं महाविष्णुं ध्यायामि।

सहस्रंशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रंपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वा। अत्यंतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥

## अस्मिन् बिम्बे श्री-भूमि-नीला-समेतं महाविष्णुम् आवाहयामि।

पुरुष एवेद सर्वम्। यद्भूतं यच् भव्यम्। उतामृतत्वस्येशांनः। यदन्नेनातिरोहंति॥

## श्री-भूमि-नीला-समेत-महा-विष्णवे नमः, आसनं समर्पयामि।

पुतार्वानस्य मिहुमा। अतो ज्यायाईश्च पूर्रुषः। पादौंऽस्य विश्वां भूतानिं। त्रिपादंस्यामृतंं दिवि॥ श्री-भूमि-नीला-समेत-महा-विष्णवे नमः, पाद्यं समर्पयामि।

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः। पादौँ ऽस्येहाऽऽभंवात्पुनः। ततो विश्वङ्कांक्रामत्। साशनानशने अभि॥ श्री-भूमि-नीला-समेत-महा-विष्णवे नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।

> तस्माँद्विरार्डजायत। विराजो अधि पूर्रुषः। स जातो अत्यंरिच्यत। पृश्चाद्भूमिमथो पुरः॥

श्री-भूमि-नीला-समेत-महा-विष्णवे नमः, आचमनीयं समर्पयामि।

यत्पुरुंषेण ह्विषां। देवा यज्ञमतंन्वत। वसन्तो अस्याऽऽसीदाज्यम्। ग्रीष्म इध्मः श्ररद्धविः॥

श्री-भूमि-नीला-समेत-महा-विष्णवे नमः, मधुपर्कं समर्पयामि।

स्प्रास्यांऽऽसन् परिधयः। त्रिः स्प्रा स्मिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वानाः। अबंध्रन् पुरुषं पृशुम्॥

श्री-भूमि-नीला-समेत-महा-विष्णवे नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

> तं युज्ञं बहिषि प्रौक्षन्ं। पुरुषं जातमंग्रतः। तेनं देवा अयेजन्त। साध्या ऋषंयश्च ये॥

श्री-भूमि-नीला-समेत-महा-विष्णवे नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

तस्मौद्यज्ञार्थ्सर्वहुतः। सम्भृतं पृषदाज्यम्। पृशू इस्ता इश्चेके वायव्यान्। आरुण्यान्ग्राम्याश्च ये॥

## श्री-भूमि-नीला-समेत-महा-विष्णवे नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

तस्मौद्यज्ञाथ्संर्वहृतंः। ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दार्शसे जज्ञिरे तस्मौत्। यजुस्तस्मादजायत॥

श्री-भूमि-नीला-समेत-महा-विष्णवे नमः, दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

> तस्मादश्वां अजायन्त। ये के चोंभयादेतः। गावों ह जिज्ञेरे तस्मात्। तस्मांज्ञाता अजावयः॥

श्री-भूमि-नीला-समेत-महा-विष्णवे नमः, पुष्पाणि समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

### ॥ अङ्ग-पूजा॥

- १. ॐ वराहाय नमः पादौ पूजयामि
- २. सङ्कर्षणाय नमः गुल्फौ पूजयामि
- ३. कालात्मने नमः जानुनी पूजयामि
- ४. विश्वरूपाय नमः जङ्घे पूजयामि
- ५. क्रोढाय नमः ऊरू पूजयामि
- ६. भोक्रे नमः कटिं पूजयामि
- ७. विष्णवे नमः मेढ्रं पूजयामि
- ८. हिरण्यगर्भाय नमः नाभिं पूजयामि
- ९. श्रीवत्सधारिणे नमः कुक्षिं पूजयामि
- १०. परमात्मने नमः हृदयं पूजयामि

- ११. सर्वास्त्रधारिणे नमः वक्षः पूजयामि
- १२. वनमालिने नमः कण्ठं पूजयामि
- १३. सर्वात्मने नमः मुखं पूजयामि
- १४. सहस्राक्षाय नमः नेत्राणि पूजयामि
- १५. सुप्रभाय नमः ललाटं पूजयामि
- १६. चम्पकनासिकाय नमः नासिकां पूजयामि
- १७. सर्वेशाय नमः कर्णौ पूजयामि
- १८. सहस्रशिरसे नमः शिरः पूजयामि
- १९. नीलमेघनिभाय नमः केशान् पूजयामि
- २०. महापुरुषाय नमः सर्वाणि अङ्गानि पूजयामि

## ॥ चतुर्विंशति नामपूजा॥

- १. ॐ केशवाय नमः
- २. ॐ नारायणाय नमः
- ३. ॐ माधवाय नमः
- ४. ॐ गोविन्दाय नमः
- ५. ॐ विष्णवे नमः
- ६. ॐ मधुसूदनाय नमः
- ७. ॐ त्रिविक्रमाय नमः
- ८. ॐ वामनाय नमः
- ९. ॐ श्रीधराय नमः
- १०. ॐ हृषीकेशाय नमः
- ११. ॐ पद्मनाभाय नमः
- १२. ॐ दामोदराय नमः

- १३. ॐ सङ्कर्षणाय नमः
- १४. ॐ वास्देवाय नमः
- १५. ॐ प्रद्युम्नाय नमः
- १६. ॐ अनिरुद्धाय नमः
- १७. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः
- १८. ॐ अधोक्षजाय नमः
- १९. ॐ नृसिंहाय नमः
- २०. ॐ अच्युताय नमः
- २१. ॐ जनार्दनाय नमः
- २२. ॐ उपेन्द्राय नमः
- २३. ॐ हरये नमः
- २४. ॐ श्रीकृष्णाय नमः

# ॥ विष्णुसहस्रनामाविलः॥

विश्वस्मै नमः		पुरुषोत्तमाय नमः	
विष्णवे नमः		सर्वस्मै नमः	
वषद्वाराय नमः		शर्वाय नमः	
भूतभव्यभवत्प्रभवे नमः		शिवाय नमः	
भूतकृते नमः		स्थाणवे नमः	
भूतभृते नमः		भूतादये नमः	
भावाय नमः		निधयेऽव्ययाय नमः	3 o
भूतात्मने नमः		सम्भवाय नमः	
भूतभावनाय नमः		भावनाय नमः	
पूतात्मने नमः	१०	भर्त्रे नमः	
परमात्मने नमः		प्रभवाय नमः	
मुक्तानां परमायै गतये नमः		प्रभवे नमः	
अव्ययाय नमः		ईश्वराय नमः	
पुरुषाय नमः		स्वयम्भुवे नमः	
साक्षिणे नमः		शम्भवे नमः	
क्षेत्रज्ञाय नमः		आदित्याय नमः	
अक्षराय नमः		पुष्कराक्षाय नमः	४०
योगाय नमः		महास्वनाय नमः	
योगविदां नेत्रे नमः		अनादिनिधनाय नमः	
प्रधानपुरुषेश्वराय नमः	२०	धात्रे नमः	
नारसिंहवपुषे नमः		विधात्रे नमः	
श्रीमते नमः		धातव उत्तमाय नमः	
केशवाय नमः		अप्रमेयाय नमः	

हृषीकेशाय नमः		माधवाय नमः	
पद्मनाभाय नमः		मधुसूदनाय नमः	
अमरप्रभवे नमः		ईश्वराय नमः	
विश्वकर्मणे नमः	५०	विक्रमिणे नमः	
मनवे नमः		धन्विने नमः	
त्वष्टे नमः		मेधाविने नमः	
स्थविष्ठाय नमः		विक्रमाय नमः	
स्थविराय ध्रुवाय नमः		ऋमाय नमः	
अग्राह्माय नमः		अनुत्तमाय नमः	८०
शाश्वताय नमः		दुराधर्षाय नमः	
कृष्णाय नमः		कृतज्ञाय नमः	
लोहिताक्षाय नमः		कृतये नमः	
प्रतर्दनाय नमः		आत्मवते नमः	
प्रभूताय नमः	६०	सुरेशाय नमः	
त्रिककुष्याम्ने नमः		शरणाय नमः	
पवित्राय नमः		शर्मणे नमः	
मङ्गलाय परस्मै नमः		विश्वरेतसे नमः	
ईशानाय नमः		प्रजाभवाय नमः	
प्राणदाय नमः		अह्ने नमः	९०
प्राणाय नमः		संवत्सराय नमः	
ज्येष्ठाय नमः		व्यालाय नमः	
श्रेष्ठाय नमः		प्रत्ययाय नमः	
प्रजापतये नमः		सर्वदर्शनाय नमः	
हिरण्यगर्भाय नमः	00	अजाय नमः	
भूगर्भाय नमः		सर्वेश्वराय नमः	
	ı		

सिद्धाय नमः		महातपसे नमः	
सिद्धये नमः		सर्वगाय नमः	
सर्वादये नमः		सर्वविद्धानवे नमः	
अच्युताय नमः	१००	विष्वक्सेनाय नमः	
वृषाकपये नमः		जनार्दनाय नमः	
अमेयात्मने नमः		वेदाय नमः	
सर्वयोगविनिस्सृताय नमः		वेदविदे नमः	
वसवे नमः		अव्यङ्गाय नमः	
वसुमनसे नमः		वेदाङ्गाय नमः	१३०
सत्याय नमः		वेदविदे नमः	
समात्मने नमः		कवये नमः	
असम्मिताय नमः		लोकाध्यक्षाय नमः	
समाय नमः		सुराध्यक्षाय नमः	
अमोघाय नमः	११०	धर्माध्यक्षाय नमः	
पुण्डरीकाक्षाय नमः		कृताकृताय नमः	
वृषकर्मणे नमः		चतुरात्मने नमः	
वृषाकृतये नमः		चतुर्व्यूहाय नमः	
रुद्राय नमः		चतुर्दंष्ट्राय नमः	
बहुशिरसे नमः		चतुर्भुजाय नमः	१४०
बभ्रवे नमः		भ्राजिष्णवे नमः	
विश्वयोनये नमः		भोजनाय नमः	
शुचिश्रवसे नमः		भोक्रे नमः	
अमृताय नमः		सहिष्णवे नमः	
शाश्वतस्याणवे नमः	१२०	जगदादिजाय नमः	
वरारोहाय नमः		अनघाय नमः	
		•	

१८०
१९०

1पञ्चासहस्रमामापालः			
प्रजापतये नमः		नेत्रे नमः	
अमृत्यवे नमः		समीरणाय नमः	
सर्वदृशे नमः		सहस्रमूर्ध्ने नमः	
सिंहाय नमः	२००	विश्वात्मने नमः	
सन्धात्रे नमः		सहस्राक्षाय नमः	
सन्धिमते नमः		सहस्रपदे नमः	
स्थिराय नमः		आवर्तनाय नमः	
अजाय नमः		निवृत्तात्मने नमः	
दुर्मर्षणाय नमः		संवृताय नमः	२३०
शास्त्रे नमः		सम्प्रमर्दनाय नमः	
विश्रुतात्मने नमः		अहःसंवर्तकाय नमः	
सुरारिघ्ने नमः		वह्रये नमः	
गुरवे नमः		अनिलाय नमः	
गुरुतमाय नमः	२१०	धरणीधराय नमः	
धाम्ने नमः		सुप्रसादाय नमः	
सत्याय नमः		प्रसन्नात्मने नमः	
सत्यपराऋमाय नमः		विश्वधृषे नमः	
निमिषाय नमः		विश्वभुजे नमः	
अनिमिषाय नमः		विभवे नमः	२४०
स्रग्विणे नमः		सत्कर्त्रे नमः	
वाचस्पतये उदारिधये नमः		सत्कृताय नमः	
अग्रण्ये नमः		साधवे नमः	
ग्रामण्ये नमः		जह्नवे नमः	
श्रीमते नमः	२२०	नारायणाय नमः	
न्यायाय नमः		नराय नमः	
		•	

विष्णुसहस्रनामाविलेः			36
असङ्ख्याय नमः		बृहद्रूपाय नमः	
अप्रमेयात्मने नमः		शिपिविष्टाय नमः	
विशिष्टाय नमः		प्रकाशनाय नमः	
शिष्टकृते नमः	२५०	ओजस्तेजोद्युतिधराय नमः	
शुचये नमः		प्रकाशात्मने नमः	
सिद्धार्थाय नमः		प्रतापनाय नमः	
सिद्धसङ्कल्पाय नमः		ऋद्धाय नमः	
सिद्धिदाय नमः		स्पष्टाक्षराय नमः	
सिद्धिसाधनाय नमः		मन्त्राय नमः	२८०
वृषाहिणे नमः		चन्द्रांशवे नमः	
वृषभाय नमः		भास्करद्युतये नमः	
विष्णवे नमः		अमृतांशूद्भवाय नमः	
वृषपर्वणे नमः		भानवे नमः	
वृषोदराय नमः	२६०	शशबिन्दवे नमः	
वर्धनाय नमः		सुरेश्वराय नमः	
वर्धमानाय नमः		औषधाय नमः	
विविक्ताय नमः		जगतस्सेतवे नमः	
श्रुतिसागराय नमः		सत्यधर्मपराऋमाय नमः	
सुभुजाय नमः		भूतभव्यभवन्नाथाय नमः	२९०
दुर्धराय नमः		पवनाय नमः	
वाग्मिने नमः		पावनाय नमः	
महेन्द्राय नमः		अनलाय नमः	
वसुदाय नमः		कामघ्ने नमः	
वसवे नमः	२७०	कामकृते नमः	
नैकरूपाय नमः		कान्ताय नमः	
		•	

विष्णुसहस्रनामाविः			37
कामाय नमः		वासवानुजाय नमः	
कामप्रदाय नमः		अपान्निधये नमः	
प्रभवे नमः		अधिष्ठानाय नमः	
युगादिकृते नमः	300	अप्रमत्ताय नमः	
युगावर्ताय नमः		प्रतिष्ठिताय नमः	
नैकमायाय नमः		स्कन्दाय नमः	
महाशनाय नमः		स्कन्दधराय नमः	
अदृश्याय नमः		धुर्याय नमः	
व्यक्तरूपाय नमः		वरदाय नमः	३३०
सहस्रजिते नमः		वायुवाहनाय नमः	
अनन्तजिते नमः		वासुदेवाय नमः	
इष्टाय नमः		बृहद्भानवे नमः	
अविशिष्टाय नमः		आदिदेवाय नमः	
शिष्टेष्टाय नमः	३१०	पुरन्दराय नमः	
शिखण्डिने नमः		अशोकाय नमः	
नहुषाय नमः		तारणाय नमः	
वृषाय नमः		ताराय नमः	
ऋोधघ्ने नमः		शूराय नमः	
क्रोधकृत्कर्त्रे नमः		शौरये नमः	३४०
विश्वबाहवे नमः		जनेश्वराय नमः	
महीधराय नमः		अनुकूलाय नमः	
अच्युताय नमः		शतावर्ताय नमः	
प्रथिताय नमः		पद्मिने नमः	
प्राणाय नमः	३२०	पद्मनिभेक्षणाय नमः	
प्राणदाय नमः		पद्मनाभाय नमः	

<u> विष्णुसहस्रनामावालः</u>			38
अरविन्दाक्षाय नमः		अमिताशनाय नमः	
पद्मगर्भाय नमः		उद्भवाय नमः	
शरीरभृते नमः		क्षोभणाय नमः	
महर्द्धये नमः	३५०	देवाय नमः	
ऋद्धाय नमः		श्रीगर्भाय नमः	
वृद्धात्मने नमः		परमेश्वराय नमः	
महाक्षाय नमः		करणाय नमः	
गरुडध्वजाय नमः		कारणाय नमः	
अतुलाय नमः		कर्त्रे नमः	३८०
शरभाय नमः		विकर्त्रे नमः	
भीमाय नमः		गहनाय नमः	
समयज्ञाय नमः		गुहाय नमः	
हविर्हरये नमः		व्यवसायाय नमः	
सर्वलक्षणलक्षण्याय नमः	३६०	व्यवस्थानाय नमः	
लक्ष्मीवते नमः		संस्थानाय नमः	
समिति अयाय नमः		स्थानदाय नमः	
विक्षराय नमः		ध्रुवाय नमः	
रोहिताय नमः		परर्द्धये नमः	
मार्गाय नमः		परमस्पष्टाय नमः	३९०
हेतवे नमः		तुष्टाय नमः	
दामोदराय नमः		पुष्टाय नमः	
सहाय नमः		शुभेक्षणाय नमः	
महीधराय नमः		रामाय नमः	
महाभागाय नमः	३७०	विरामाय नमः	
वेगवते नमः		विरताय नमः	
		•	

3			
मार्गाय नमः		संवत्सराय नमः	
नेयाय नमः		दक्षाय नमः	
नयाय नमः		विश्रामाय नमः	
अनयाय नमः	४००	विश्वदक्षिणाय नमः	
वीराय नमः		विस्ताराय नमः	
शक्तिमतां श्रेष्ठाय नमः		स्थावरस्थाणवे नमः	
धर्माय नमः		प्रमाणाय नमः	
धर्मविदुत्तमाय नमः		बीजायाव्ययाय नमः	
वैकुण्ठाय नमः		अर्थाय नमः	०६४
पुरुषाय नमः		अनर्थाय नमः	
प्राणाय नमः		महाकोशाय नमः	
प्राणदाय नमः		महाभोगाय नमः	
प्रणवाय नमः		महाधनाय नमः	
पृथवे नमः	४१०	अनिर्विण्णाय नमः	
हिरण्यगर्भाय नमः		स्थविष्ठाय नमः	
शत्रुघ्नाय नमः		अभुवे नमः	
व्याप्ताय नमः		धर्मयूपाय नमः	
वायवे नमः		महामखाय नमः	
अधोक्षजाय नमः		नक्षत्रनेमये नमः	४४०
ऋतवे नमः		नक्षत्रिणे नमः	
सुदर्शनाय नमः		क्षमाय नमः	
कालाय नमः		क्षामाय नमः	
परमेष्ठिने नमः		समीहनाय नमः	
परिग्रहाय नमः	४२०	यज्ञाय नमः	
उग्राय नमः		इज्याय नमः	
		•	

विष्णुसहस्रनामाविलेः			40
महेज्याय नमः		वित्सने नमः	
ऋतवे नमः		रत्नगर्भाय नमः	
सत्राय नमः		धनेश्वराय नमः	
सताङ्गतये नमः	४५०	धर्मगुपे नमः	
सर्वदर्शिने नमः		धर्मकृते नमः	
विमुक्तात्मने नमः		धर्मिणे नमः	
सर्वज्ञाय नमः		सते नमः	
ज्ञानाय उत्तमाय नमः		असते नमः	
सुव्रताय नमः		क्षराय नमः	०ऽ४
सुमुखाय नमः		अक्षराय नमः	
सूक्ष्माय नमः		अविज्ञात्रे नमः	
सुघोषाय नमः		सहस्रांशवे नमः	
सुखदाय नमः		विधात्रे नमः	
सुहृदे नमः	४६०	कृतलक्षणाय नमः	
मनोहराय नमः		गभस्तिनेमये नमः	
जितकोधाय नमः		सत्त्वस्थाय नमः	
वीरबाहवे नमः		सिंहाय नमः	
विदारणाय नमः		भूतमहेश्वराय नमः	
स्वापनाय नमः		आदिदेवाय नमः	४९०
स्ववशाय नमः		महादेवाय नमः	
व्यापिने नमः		देवेशाय नमः	
नैकात्मने नमः		देवभृद्गुरवे नमः	
नैककर्मकृते नमः		उत्तराय नमः	
वत्सराय नमः	०७४	गोपतये नमः	
वत्सलाय नमः		गोन्ने नमः	
		•	

<u> </u>			41
ज्ञानगम्याय नमः		महार्हाय नमः	
पुरातनाय नमः		स्वाभाव्याय नमः	
शरीरभूतभृते नमः		जितामित्राय नमः	
भोक्रे नमः	५००	प्रमोदनाय नमः	
कपीन्द्राय नमः		आनन्दाय नमः	
भूरिदक्षिणाय नमः		नन्दनाय नमः	
सोमपाय नमः		नन्दाय नमः	
अमृतपाय नमः		सत्यधर्मणे नमः	
सोमाय नमः		त्रिविक्रमाय नमः	५३०
पुरुजिते नमः		महर्षये कपिलाचार्याय नमः	
पुरुसत्तमाय नमः		कृतज्ञाय नमः	
विनयाय नमः		मेदिनीपतये नमः	
जयाय नमः		त्रिपदाय नमः	
सत्यसन्धाय नमः	५१०	त्रिदशाध्यक्षाय नमः	
दाशार्हाय नमः		महाशृङ्गाय नमः	
सात्त्वतां पतये नमः		कृतान्तकृते नमः	
जीवाय नमः		महावराहाय नमः	
विनयितासाक्षिणे नमः		गोविन्दाय नमः	
मुकुन्दाय नमः		सुषेणाय नमः	५४०
अमितविक्रमाय नमः		कनकाङ्गदिने नमः	
अम्भोनिधये नमः		ग्ह्याय नमः	
अनन्तात्मने नमः		गभीराय नमः	
महोदधिशयाय नमः		गहनाय नमः	
अन्तकाय नमः	५२०		
अजाय नमः		चक्रगदाधराय नमः	
		I	

वेधसे नमः		सर्वदृग्व्यासाय नमः	
स्वाङ्गाय नमः		वाचस्पतयेऽयोनिजाय नमः	
अजिताय नमः		त्रिसाम्ने नमः	
कृष्णाय नमः	५५०	सामगाय नमः	
दृढाय नमः		साम्ने नमः	
सङ्कर्षणायाच्युताय नमः		निर्वाणाय नमः	
वरुणाय नमः		भेषजाय नमः	
वारुणाय नमः		भिषजे नमः	
वृक्षाय नमः		सन्यासकृते नमः	५८०
पुष्कराक्षाय नमः		शमाय नमः	
महामनसे नमः		शान्ताय नमः	
भगवते नमः		निष्टायै नमः	
भगघ्ने नमः		शान्त्यै नमः	
आनन्दिने नमः	५६०	परायणाय नमः	
वनमालिने नमः		शुभाङ्गाय नमः	
हलायुधाय नमः		शान्तिदाय नमः	
आदित्याय नमः		स्रष्ट्रे नमः	
ज्योतिरादित्याय नमः		कुमुदाय नमः	
सहिष्णवे नमः		कुवलेशयाय नमः	५९०
गतिसत्तमाय नमः		गोहिताय नमः	
सुधन्वने नमः		गोपतये नमः	
खण्डपरशवे नमः		गोन्ने नमः	
दारुणाय नमः		वृषभाक्षाय नमः	
द्रविणप्रदाय नमः	400	वृषप्रियाय नमः	
दिवस्पृशे नमः		अनिवर्तिने नमः	

विष्णुसहस्रनामावालः			43
निवृत्तात्मने नमः		सत्कीर्तये नमः	
सङ्केन्त्रे नमः		छिन्नसंशयाय नमः	
क्षेमकृते नमः		उदीर्णाय नमः	
शिवाय नमः	६००	सर्वतश्चक्षुषे नमः	
श्रीवत्सवक्षसे नमः		अनीशाय नमः	
श्रीवासाय नमः		शाश्वतस्स्थिराय नमः	
श्रीपतये नमः		भूशयाय नमः	
श्रीमतां वराय नमः		भूषणाय नमः	
श्रीदाय नमः		भूतये नमः	६३०
श्रीशाय नमः		विशोकाय नमः	
श्रीनिवासाय नमः		शोकनाशनाय नमः	
श्रीनिधये नमः		अर्चिष्मते नमः	
श्रीविभावनाय नमः		अर्चिताय नमः	
श्रीधराय नमः	६१०	कुम्भाय नमः	
श्रीकराय नमः		विशुद्धात्मने नमः	
श्रेयसे नमः		विशोधनाय नमः	
श्रीमते नमः		अनिरुद्धाय नमः	
लोकत्रयाश्रयाय नमः		अप्रतिरथाय नमः	
स्वक्षाय नमः		प्रद्युम्नाय नमः	६४०
स्वङ्गाय नमः		अमितविक्रमाय नमः	
शतानन्दाय नमः		कालनेमिनिघ्ने नमः	
नन्दये नमः		वीराय नमः	
ज्योतिर्गणेश्वराय नमः		शौरये नमः	
विजितात्मने नमः	६२०	शूरजनेश्वराय नमः	
अविधेयात्मने नमः		त्रिलोकात्मने नमः	
		•	

		महाकर्मणे नमः	
केशवाय नमः		महातेजसे नमः	
केशिघ्ने नमः		महोरगाय नमः	
हरये नमः	६५०	महाऋतवे नमः	
कामदेवाय नमः		महायज्वने नमः	
कामपालाय नमः		महायज्ञाय नमः	
कामिने नमः		महाहविषे नमः	
कान्ताय नमः		स्तव्याय नमः	
कृतागमाय नमः		स्तवप्रियाय नमः	६८०
अनिर्देश्यवपुषे नमः		स्तोत्राय नमः	
विष्णवे नमः		स्तुतये नमः	
वीराय नमः		स्तोत्रे नमः	
अनन्ताय नमः		रणप्रियाय नमः	
धनञ्जयाय नमः	६६०	पूर्णाय नमः	
ब्रह्मण्याय नमः		पूरियत्रे नमः	
ब्रह्मकृते नमः		पुण्याय नमः	
ब्रह्मणे नमः		पुण्यकीर्तये नमः	
ब्रह्मणे नमः		अनामयाय नमः	
ब्रह्मविवर्धनाय नमः		मनोजवाय नमः	६९०
ब्रह्मविदे नमः		तीर्थकराय नमः	
ब्राह्मणाय नमः		वसुरेतसे नमः	
ब्रह्मिणे नमः		वसुप्रदाय नमः	
ब्रह्मज्ञाय नमः		वसुप्रदाय नमः	
ब्राह्मणप्रियाय नमः	०७३	वासुदेवाय नमः	
महाऋमाय नमः		वसुवे नमः	
	'	•	

		45
	अव्यक्ताय नमः	
	शतमूर्तये नमः	
	शताननाय नमः	
000	एकस्मै नमः	
	नैकस्मै नमः	
	सवाय नमः	
	काय नमः	
	कस्मै नमः	
	यस्मै नमः	७३०
	तस्मै नमः	
	पदायानुत्तमाय नमः	
	लोकबन्धवे नमः	
	लोकनाथाय नमः	
७१०	माधवाय नमः	
	भक्तवत्सलाय नमः	
	सुवर्णवर्णाय नमः	
	हेमाङ्गाय नमः	
	वराङ्गाय नमः	
	चन्दनाङ्गदिने नमः	७४०
	वीरघ्ने नमः	
	विषमाय नमः	
	शून्याय नमः	
	घृताशिषे नमः	
७२०	अचलाय नमः	
	चलाय नमः	
	1	
	७१०	शतमूर्तये नमः शताननाय नमः एकस्मै नमः नेकस्मै नमः सवाय नमः काय नमः कस्मै नमः यस्मै नमः पदायानुत्तमाय नमः लोकनाथाय नमः लोकनाथाय नमः माधवाय नमः भक्तवत्सलाय नमः स्वर्णवर्णाय नमः स्वर्णवर्णाय नमः वराङ्गाय नमः वराङ्गाय नमः वराङ्गाय नमः विषमाय नमः शून्याय नमः शून्याय नमः शून्याय नमः घृताशिषे नमः अचलाय नमः

3			
अमानिने नमः		एकपदे नमः	
मानदाय नमः		समावर्ताय नमः	
मान्याय नमः		अनिवृत्तात्मने नमः	
लोकस्वामिने नमः	७५०	दुर्जयाय नमः	
त्रिलोकधृषे नमः		दुरतिऋमाय नमः	
सुमेधसे नमः		दुर्लभाय नमः	
मेधजाय नमः		दुर्गमाय नमः	
धन्याय नमः		दुर्गाय नमः	
सत्यमेधसे नमः		दुरावासाय नमः	७८०
धराधराय नमः		दुरारिघ्ने नमः	
तेजोवृषाय नमः		शुभाङ्गाय नमः	
द्युतिधराय नमः		लोकसारङ्गाय नमः	
सर्वशस्त्रभृतां वराय नमः		सुतन्तवे नमः	
प्रग्रहाय नमः	०३७	तन्तुवर्धनाय नमः	
निग्रहाय नमः		इन्द्रकर्मणे नमः	
व्यग्राय नमः		महाकर्मणे नमः	
नैकशृङ्गाय नमः		कृतकर्मणे नमः	
गदाग्रजाय नमः		कृतागमाय नमः	
चतुर्मूर्तये नमः		उद्भवाय नमः	७९०
चतुर्बाहवे नमः		सुन्दराय नमः	
चतुर्व्यूहाय नमः		सुन्दाय नमः	
चतुर्गतये नमः		रत्ननाभाय नमः	
चतुरात्मने नमः		सुलोचनाय नमः	
चतुर्भावाय नमः	०७०	अर्काय नमः	
चतुर्वेदविदे नमः		वाजसनाय नमः	
		1	

विष्णुसहस्रनामावलिः			47
शृङ्गिणे नमः		न्यग्रोधाय नमः	
जयन्ताय नमः		उदुम्बराय नमः	
सर्वविज्ञयिने नमः		अश्वत्थाय नमः	
सुवर्णबिन्दवे नमः	८००	चाणूरान्ध्रनिषूदनाय नमः	
अक्षोभ्याय नमः		सहस्रार्चिषे नमः	
सर्ववागीश्वरेश्वराय नमः		सप्तजिह्वाय नमः	
महाह्रदाय नमः		सप्तैधसे नमः	
महागर्ताय नमः		सप्तवाहनाय नमः	
महाभूताय नमः		अमूर्तये नमः	८३०
महानिधये नमः		अनघाय नमः	
कुमुदाय नमः		अचिन्त्याय नमः	
कुन्दराय नमः		भयकृते नमः	
कुन्दाय नमः		भयनाशनाय नमः	
पर्जन्याय नमः	८१०	अणवे नमः	
पावनाय नमः		बृहते नमः	
अनिलाय नमः		कृशाय नमः	
अमृताशाय नमः		स्थूलाय नमः	
अमृतवपुषे नमः		गुणभृते नमः	
सर्वज्ञाय नमः		निर्गुणाय नमः	८४०
सर्वतोमुखाय नमः		महते नमः	
सुलभाय नमः		अधृताय नमः	
सुव्रताय नमः		स्वधृताय नमः	
सिद्धाय नमः		स्वास्याय नमः	
शत्रुजिते नमः	८२०	प्राग्वंशाय नमः	
शत्रुतापनाय नमः		वंशवर्धनाय नमः	

—————————————————————————————————————		प्रियार्हाय नमः	
कथिताय नमः		अर्हाय नमः	
योगिने नमः		प्रियकृते नमः	
योगीशाय नमः	८५०	प्रीतिवर्धनाय नमः	
सर्वकामदाय नमः		विहायसगतये नमः	
आश्रमाय नमः		ज्योतिषे नमः	
श्रमणाय नमः		सुरुचये नमः	
क्षामाय नमः		हुतभुजे नमः	
सुपर्णाय नमः		विभवे नमः	८८०
वायुवाहनाय नमः		रवये नमः	
धनुर्धराय नमः		विरोचनाय नमः	
धनुर्वेदाय नमः		सूर्याय नमः	
दण्डाय नमः		सवित्रे नमः	
दमयित्रे नमः	८६०	रविलोचनाय नमः	
दमाय नमः		अनन्ताय नमः	
अपराजिताय नमः		हुतभुजे नमः	
सर्वसहाय नमः		भोक्रे नमः	
नियन्ने नमः		सुखदाय नमः	
अनियमाय नमः		नैकजाय नमः	८९०
अयमाय नमः		अग्रजाय नमः	
सत्त्ववते नमः		अनिर्विण्णाय नमः	
सात्त्विकाय नमः		सदामर्षिणे नमः	
सत्याय नमः		लोकाधिष्ठानाय नमः	
सत्यधर्मपरायणाय नमः	०७ऽ	अद्भुताय नमः	
अभिप्रायाय नमः		सनाते नमः	

सनातनतमाय नमः		पुण्यश्रवणकीर्तनाय नमः	
कपिलाय नमः		उत्तारणाय नमः	
कपये नमः		दुष्कृतिघ्ने नमः	
अव्ययाय नमः	९००	पुण्याय नमः	
स्वस्तिदाय नमः		दुस्स्वप्ननाशनाय नमः	
स्वस्तिकृते नमः		वीरघ्ने नमः	
स्वस्तये नमः		रक्षणाय नमः	
स्वस्तिभुजे नमः		सद्धो नमः	
स्वस्तिदक्षिणाय नमः		जीवनाय नमः	९३०
अरौद्राय नमः		पर्यवस्थिताय नमः	
कुण्डलिने नमः		अनन्तरूपाय नमः	
चिक्रणे नमः		अनन्तश्रिये नमः	
विक्रमिणे नमः		जितमन्यवे नमः	
ऊर्जितशासनाय नमः	९१०	भयापहाय नमः	
शब्दातिगाय नमः		चतुरश्राय नमः	
शब्दसहाय नमः		गभीरात्मने नमः	
शिशिराय नमः		विदिशाय नमः	
शर्वरीकराय नमः		व्यादिशाय नमः	
अकूराय नमः		दिशाय नमः	९४०
पेशलाय नमः		अनादये नमः	
दक्षाय नमः		भुवो भुवे नमः	
दक्षिणाय नमः		लक्ष्म्यै नमः	
क्षमिणां वराय नमः		सुवीराय नमः	
विद्वत्तमाय नमः	९२०	रुचिराङ्गदाय नमः	
वीतभयाय नमः		जननाय नमः	
	ļ		

विश्वासहस्रमामापालः			50
जनजन्मादये नमः		यज्ञपतये नमः	
भीमाय नमः		यज्वने नमः	
भीमपराऋमाय नमः		यज्ञाङ्गाय नमः	
आधारनिलयाय नमः	९५०	यज्ञवाहनाय नमः	
अधात्रे नमः		यज्ञभृते नमः	
पुष्पहासाय नमः		यज्ञकृते नमः	
प्रजागराय नमः		यज्ञिने नमः	
ऊर्ध्वगाय नमः		यज्ञभुजे नमः	
सत्पथाचाराय नमः		यज्ञसाधनाय नमः	९८०
प्राणदाय नमः		यज्ञान्तकृते नमः	
प्रणवाय नमः		यज्ञगुह्याय नमः	
पणाय नमः		अन्नाय नमः	
प्रमाणाय नमः		अन्नादाय नमः	
प्राणनिलयाय नमः	९६०	आत्मयोनये नमः	
प्राणभृते नमः		स्वयञ्जाताय नमः	
प्राणजीवनाय नमः		वेखानाय नमः	
तत्त्वाय नमः		सामगायनाय नमः	
तत्त्वविदे नमः		देवकीनन्दनाय नमः	
एकात्मने नमः		स्रष्ट्रे नमः	९९०
जन्ममृत्युजरातिगाय नमः		क्षितीशाय नमः	
भूर्भुवस्स्वस्तरवे नमः		पापनाशनाय नमः	
ताराय नमः		शङ्खभृते नमः	
सवित्रे नमः		नन्दिकने नमः	
प्रपितामहाय नमः	९७०	चिक्रणे नमः	
यज्ञाय नमः		शार्ङ्गधन्वने नमः	

गदाधराय नमः रथाङ्गपाणये नमः

अक्षोभ्याय नमः

सर्वप्रहरणायुधाय नमः

१०००

30

॥इति श्रीविष्णुसहस्रनामावलिः सम्पूर्णा॥

## ॥ कृष्णाष्टोत्तरशतनामाविलः॥

श्रीकृष्णाय नमः कमलानाथाय नमः वास्देवाय नमः सनातनाय नमः वसुदेवात्मजाय नमः पुण्याय नमः लीलामानुषविग्रहाय नमः श्रीवत्सकौस्तुभधराय नमः यशोदावत्सलाय नमः हरये नमः 80 चतुर्भुजात्तचक्रासि-गदाशङ्खाम्बुजायुधाय नमः देवकीनन्दनाय नमः श्रीशाय नमः नन्दगोपप्रियात्मजाय नमः यम्नावेगसंहारिणे नमः बलभद्रप्रियानुजाय नमः पूतनाजीवितहराय नमः

शकटास्रभञ्जनाय नमः नन्दव्रजजनानन्दिने नमः सचिदानन्दविग्रहाय नमः नवनीतविलिप्ताङ्गाय नमः नवनीतनटाय नमः अनघाय नमः नवनीतनवाहाराय नमः मुचुकुन्दप्रसादकाय नमः षोडशस्त्रीसहस्रेशाय नमः त्रिभङ्गीमधुराकृतये नमः शुकवागमृताब्धीन्दवे नमः गोविन्दाय नमः योगिनां पतये नमः वत्सवाटचराय नमः अनन्ताय नमः धेनुकासुरमर्दनाय नमः तृणीकृततृणावर्ताय नमः यमलार्जुनभञ्जनाय नमः

उत्तालतालभेत्रे नमः		स्यमन्तकमणेर्हर्त्रे नमः	
तमालश्यामलाकृतये नमः		नरनारायणात्मकाय नमः	
गोपगोपीश्वराय नमः		कुङ्जाकृष्णाम्बरधराय नमः	
योगिने नमः		मायिने नमः	
कोटिसूर्यसमप्रभाय नमः	४०	परमपूरुषाय नमः	
इलापतये नमः		मुष्टिकासुरचाणूरमल्लयुद्ध-	
परस्मै ज्योतिषे नमः		विशारदाय नमः	
यादवेन्द्राय नमः		संसारवैरिणे नमः	
यदूद्वहाय नमः		कंसारये नमः	
वनमालिने नमः		मुरारये नमः	
पीतवाससे नमः		नरकान्तकाय नमः	७०
पारिजातापहारकाय नमः		अनादिब्रह्मचारिणे नमः	
गोवर्धनाचलोद्धर्त्रे नमः		कृष्णाव्यसनकर्षकाय नमः	
गोपालाय नमः		शिशुपालशिरश्छेत्रे नमः	
सर्वपालकाय नमः	५०	दुर्योधनकुलान्तकाय नमः	
अजाय नमः		विदुराक्रूरवरदाय नमः	
निरञ्जनाय नमः		विश्वरूपप्रदर्शकाय नमः	
कामजनकाय नमः		सत्यवाचे नमः	
कञ्जलोचनाय नमः		सत्यसङ्कल्पाय नमः	
मधुघ्ने नमः		सत्यभामारताय नमः	
मथुरानाथाय नमः		जयिने नमः	८०
द्वारकानायकाय नमः		सुभद्रापूर्वजाय नमः	
बलिने नमः		विष्णवे नमः	
बृन्दावनान्तसञ्चारिणे नमः		भीष्ममुक्तिप्रदायकाय नमः	
तुलसीदामभूषणाय नमः	६०	जगद्गुरवे नमः	
		· · ·	

800

जगन्नाथाय नमः वेणुनादविशारदाय नमः

वृषभासुरविध्वंसिने नमः

बाणासुरकरान्तकाय नमः

युधिष्ठिरप्रतिष्ठात्रे नमः

बर्हिबर्हावतंसकाय नमः ९०

पार्थसारथये नमः

अव्यक्ताय नमः

गीतामृतमहोदधये नमः

कालीयफणिमाणिक्यरञ्जितश्री-

पदाम्बुजाय नमः

दामोदराय नमः

यज्ञभोक्रे नमः

दानवेन्द्रविनाशकाय नमः

नारायणाय नमः

परब्रह्मणे नमः

पन्नगाशनवाहनाय नमः

जलकीडासमासक्तगोपी-

वस्त्रापहारकाय नमः

पुण्यश्लोकाय नमः

तीर्थपादाय नमः

वेदवेद्याय नमः

दयानिधये नमः

सर्वतीर्थात्मकाय नमः

सर्वग्रहरूपिणे नमः

परात्पराय नमः

॥इति श्री-ब्रह्माण्डमहापुराणे वायुप्रोक्ते श्री-कृष्णाष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा॥



## ॥ उत्तराङ्ग-पूजा ॥

यत्पुरुषं व्यंदधुः। कृतिधा व्यंकल्पयन्। मुखं किमंस्य कौ बाहू। कावूरू पादांवुच्येते॥ श्री-भूमि-नीला-समेत-महा-विष्णवे नमः, धूपमाघ्रापयामि।

ब्राह्मणौऽस्य मुखंमासीत्। बाहू रांजन्यः कृतः। ऊरू तदंस्य यद्वैश्यः। पुद्धाः शूद्रो अंजायत॥ उद्दींप्यस्व जातवेदोऽपृघ्नन्निर्ऋतिं ममे।
पृश्क्ष्यं मह्यमावंह जीवंनं च दिशों दिश॥
मा नों हिश्सीज्ञातवेदो गामश्वं पुरुषं जगंत्।
अविंश्रदग्र आगंहि श्रिया मा परिपातय॥
श्री-भूमि-नीला-समेत-महा-विष्णवे नमः, अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

ॐ भूर्भुवः सुवंः। + ब्रह्मणे स्वाहाँ।

चन्द्रमा मनंसो जातः। चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रेश्चाग्निश्चे। प्राणाद्वायुरंजायत॥

श्री-भूमि-नीला-समेत-महा-विष्णवे नमः, ( ) निवेदयामि। अमृतापिधानमसि। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

नाभ्यां आसीद्न्तिरिक्षम्। शीर्ष्णो द्यौः समेवर्तत। पुद्धां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्। तथा लोकार अंकल्पयन्॥ पूर्गीफलसमायुक्तं नागवल्लीदलैर्युतम्। कर्पूरचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री-भूमि-नीला-समेत-महा-विष्णवे नमः, कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि।

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवंर्णं तमंस्सतु पारे। सर्वाणि रूपाणिं विचित्य धीरंः। नामांनि कृत्वाऽभिवदन् यदास्ते॥

श्री-भूमि-नीला-समेत-महा-विष्णवे नमः, समस्त-अपराध-क्षमापनार्थं कर्पूरनीराजनं दर्शयामि।

कर्पूरनीरजनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

धाता पुरस्ताद्यमुंदाज्हारं। श्रकः प्रविद्वान् प्रदिश्रश्चतंस्रः। तमेवं विद्वानमृतं इह भवति। नान्यः पन्था अयनाय विद्यते॥ योऽपां पुष्पं वेदे। पुष्पंवान् प्रजावाँन् पशुमान् भंवति। चन्द्रमा वा अपां पुष्पम्। पुष्पंवान् प्रजावाँन् पशुमान् भंवति। य एवं वेदे। योऽपामायतेनं वेदे। आयतेनवान् भवति।

> ओं तद्वृह्म। ओं तद्वायुः। ओं तदात्मा। ओं तथ्मत्यम्। ओं तथ्मर्वम्। ओं तत्पुरोर्नमः॥

अन्तश्चरितं भूतेषु गुहायां विश्वमूर्तिषु।
त्वं यज्ञस्त्वं वषद्कारस्त्वमिन्द्रस्त्वः
रुद्रस्त्वं विष्णुस्त्वं ब्रह्म त्वं प्रजापितः।
त्वं तंदाप आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः सुवरोम्॥
श्री-भूमि-नीला-समेत-महा-विष्णवे नमः, वेदोक्तमन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

सुवर्णरजतैर्युक्तं चामीकरविनिर्मितम्। स्वर्णपुष्पं प्रदास्यामि गृह्यतां मधुसूदन॥ श्री-भूमि-नीला-समेत-महा-विष्णवे नमः, स्वर्णपुष्पं समर्पयामि।

> प्रदक्षिणं करोम्यद्य पापानि नुत माधव। मयार्पितान्यशेषाणि परिगृह्य कृपां कुरु॥

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण-पदे पदे॥

#### प्रदक्षिणं कृत्वा।

नमस्ते देवदेवेश नमस्ते भक्तवत्सल। नमस्ते पुण्डरीकाक्ष वासुदेवाय ते नमः॥ नमः सर्वहितार्थाय जगदाधाररूपिणे। साष्टाङ्गोऽयं प्रणामोऽस्तु जगन्नाथ मया कृतः॥

### श्री-भूमि-नीला-समेत-महा-विष्णवे नमः, अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

युज्ञेनं युज्ञमंयजन्त देवाः। तानि धर्माणि प्रथमान्यांसन्।
ते ह् नाकं मिह्मानंः सचन्ते। यत्र पूर्वे साध्याः सन्तिं देवाः॥
श्री-भूमि-नीला-समेत-महा-विष्णवे नमः, छत्रचामरादिसमस्तोपचारान्
समर्पयामि।

### ॥ अर्घ्यप्रदानम्॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम् एकादशीपुण्यकाले महाविष्णुपूजान्ते क्षीरार्घ्यप्रदानं करिष्ये॥

> एकादश्यामुपोष्यैव पारणात् पूर्वकालतः। इदमर्घ्यं प्रदास्यामि गृहाण सुरवन्दित॥ महाविष्णवे नमः इदमर्घ्यमिदमर्घ्यमिदमर्घ्यम्॥

नमोऽस्तु केशवादिभ्यः सर्वलोकैकवन्दिताः। इदमर्घ्यं प्रदास्यामि सुप्रीतो भव सर्वदा॥

केशवादिभ्यः इदमर्घ्यमिदमर्घ्यमिदमर्घ्यम्।

कूर्मरूपाय देवाय मत्स्यरूप नमोऽस्तुते। नीलमेघस्वरूपाय अर्घ्यं दत्तं मया प्रभो॥

विष्णवे नमः इदमर्घ्यमिदमर्घ्यमिदमर्घ्यम्॥

क्षीरोद्भवे महालक्ष्मि सुप्रसन्ने सुरेश्वरि। सर्वप्रदे जगद्बन्द्ये गृह्णीदार्घ्यमिदं रमे॥

महालक्ष्म्यै नमः इदमर्घ्यमिदमर्घ्यमिदमर्घ्यम्। अनेन अर्घ्यप्रदानेन भगवान् सर्वात्मकः श्री-भूमि-नीला-समेतः श्री-महाविष्णुः प्रीयताम्।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अनन्तपुण्यफलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥ एकादशीपुण्यकाले अस्मिन् मया क्रियमाण महाविष्णुपूजायां यद्देयमुपायनदानं तत्प्रत्याम्नायार्थं हिरण्यं श्री-भूमि-नीला-समेत-श्री-महाविष्णु-प्रीतिं कामयमानः मनसोद्दिष्टाय ब्राह्मणाय सम्प्रददे नमः न मम। अनया पूजया श्री-भूमि-नीला-समेतः श्री-महाविष्णुः प्रीयताम्।

### ॥ विसर्जनम्॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपः-पूजा-क्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

इदं व्रतं मया देव कृतं प्रीत्यै तव प्रभो। न्यूनं सम्पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादाञ्जनाईन॥

अस्मात् बिम्बात् श्री-भूमि-नीला-समेत-श्री-महाविष्णुं यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि (अक्षतानर्पित्वा देवमुत्सर्जयेत्।) अनया पूजया श्री-भूमि-नीला-समेतः श्री-महाविष्णुः प्रीयताम्। कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्। करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्बह्मार्पणमस्तु।

सालग्रामशिलावारि पापहारि शरीरिणाम्। आजन्मकृतपापानां प्रायश्चित्तं दिने दिने॥ अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिनिवारणम्। सर्वपापक्षयकरं विष्णुपादोदकं शुभम्॥ इति तीर्थं पीत्वा शिरसि प्रसादं धारयेत्।

#### ॥ उत्तरस्मिन् दिने पारणम्॥

अज्ञानतिमिरान्धस्य व्रतेनानेन केशव। प्रसीद सुमुखो नाथ ज्ञानदृष्टिप्रदो भव॥

# ॥ पञ्चाङ्ग-पूजा ॥

# ॥ पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा॥

(आचम्य)

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवणं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुव्रोम्। (अप उपस्पृश्य, पृष्पाक्षतान् गृहीत्वा) ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः अविघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गृणानां त्वा गृणपंति हवामहे कविं केवीनामुंपमश्रंवस्तमम्। ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत् आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद् सादनम्॥ अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि। पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरध्यं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि। वस्नार्थमक्षतान् समर्पयामि। यज्ञोपवीताभरणार्थे अक्षतान् समर्पयामि। दिव्यपरिमलगन्थान् धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि। पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

#### ॥ अर्चना ॥

१. ॐ स्मुखाय नमः ९. ॐ धूमकेतवे नमः

२. ॐ एकदन्ताय नमः १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः

३. ॐ कपिलाय नमः ११. ॐ फालचन्द्राय नमः

४. ॐ गजकर्णकाय नमः १२. ॐ गजाननाय नमः

५. ॐ लम्बोदराय नमः १३. ॐ वऋतुण्डाय नमः

६. ॐ विकटाय नमः १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः

७. ॐ विघ्नराजाय नमः १५. ॐ हेरम्बाय नमः

८. ॐ विनायकाय नमः १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाघ्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वऋतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ। अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि। छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

### ॥ प्रधान-पूजा — पञ्चाङ्ग-पूजा॥

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवणं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुव्रोम्।

#### ॥सङ्कल्पः॥

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते अद्य ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कितयुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकाणां प्रभवादि-षष्टिसंवत्सराणां मध्ये ( ) "- नाम-संवत्सरे उत्तरायणे वसन्त-ऋतौ

#### चान्द्रमान-संवत्सरारम्भः

चैत्र-मासे शुक्ल-पक्षे प्रथमायां शुभितिथौ () वासरयुक्तायां ()-नक्षत्र-युक्तायां ()-योगयुक्तायां बव-करण (१२:४९; बालव-करण)युक्तायाम् एवं-गुण-विशेषण-विशिष्टायाम् अस्यां ()

#### सौरमान-संवत्सरारम्भः

मेष-चैत्र-मासे ( )-पक्षे प्रथमायां शुभितथो ( )वासरयुक्तायां ( )-नक्षत्रयुक्तायां ( )-करणयुक्तायाम् एवं-गुण-विशेषण-विशिष्टायाम् अस्यां ( )

<sup>&</sup>lt;sup>७</sup>पृष्टं ६२१ पश्यताम्

अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय-आयुर्-आरोग्य-ऐश्वर्याभि-वृद्धर्थं धर्मार्थकाममोक्ष-चतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्धर्थं सत्सन्तानाभिवृद्धर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्धर्थम्

महागणपत्यादि-त्रयस्त्रिंशत्-कोटि-देवता-प्रीत्यर्थं संवत्सर-अयन-ऋतु-मास-पक्ष-तिथि-वार-

नक्षत्र-योग-करण-देवता-प्रीत्यर्थम् आदित्यादि-नवग्रह-देवता-प्रीत्यर्थं च यावच्छक्ति-ध्यान-आवाहनादि-षोडशोपचारपूजां करिष्ये। तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। (गणपति-प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

#### ॥ आसन-पूजा॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छुन्दः। कूर्मो देवता॥
पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चासनं कुरु॥

#### ॥ घण्टा-पूजा॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्। घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

#### ॥ कलश-पूजा॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः। ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्) आपो वा इदः सर्वं विश्वां भूतान्यापः प्राणा वा आपः पृशव् आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापृश्छन्दाः स्यापो ज्योतीः इष्यापो यज् इष्यापः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भुवः सुवराप ओम्॥

> कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः। अङ्गश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च ह्रदा नदाः। आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥ ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवंः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

#### ॥ आत्म-पूजा॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

१. ॐ आत्मने नमः ४. ॐ जीवात्मने नमः

२. ॐ अन्तरात्मने नमः ५. ॐ परमात्मने नमः

३. ॐ योगात्मने नमः ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः

#### समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः। त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

## ॥ पीठ-पूजा॥

१. ॐ आधारशक्त्ये नमः ८. ॐ रत्नवेदिकाये नमः

२. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः

३. ॐ आदिकुर्माय नमः १०. ॐ श्वेतच्छन्नाय नमः

४. ॐ आदिवराहाय नमः ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः

५. ॐ अनन्ताय नमः १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः

६. ॐ पृथिव्यै नमः १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः

७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः १४. ॐ योगपीठासनाय नमः

#### ॥ गुरु-ध्यानम्॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

#### ध्यान-श्लोकः<sup>८</sup>

८पृष्टं ६२१ पश्यताम्

अस्मिन् पञ्चाङ्ग-पुस्तके ( )-संवत्सर-देवतां ( ) ध्यायामि। ( ) आवाहयामि।

उत्तरायण-देवतां ध्यायामि। उत्तरायण-देवताम् आवाहयामि। दक्षिणायन-देवतां ध्यायामि। दक्षिणायन-देवताम् आवाहयामि। वसन्तादि-ऋतु-देवताः ध्यायामि। वसन्तादि-ऋतु-देवताः आवाहयामि। मेषादि-मास-देवताः ध्यायामि। मेषादि-मास-देवताः आवाहयामि। शुक्ल-पक्ष-देवताम् इन्दुं ध्यायामि। शुक्ल-पक्ष-देवताम् इन्दुम् आवाहयामि। कृष्ण-पक्ष-देवतां सूर्यं ध्यायामि। कृष्ण-पक्ष-देवतां सूर्यम् आवाहयामि।

तिथि-देवताः ध्यायामि। तिथि-देवताः आवाहयामि।

वार-देवताः ध्यायामि। वार-देवताः आवाहयामि। कृत्तिकादि-अष्टाविंशति-कृत्तिकादि-अष्टाविंशति-नक्षत्र-देवताः ध्यायामि। कृत्तिकादि-अष्टाविंशति-

नक्षत्र-देवताः आवाहयामि।

विष्कम्भादि-योग-देवताः ध्यायामि। विष्कम्भादि-योग-देवताः आवाहयामि। बवादि-करण-देवताः ध्यायामि। बवादि-करण-देवताः आवाहयामि।

> आदित्याय च सोमाय मङ्गलाय बुधाय च। गुरु-शुक्र-शनिभ्यश्च राहवे केतवे नमः॥

आदित्यादि-नवग्रह-देवताः ध्यायामि। आदित्यादि-नवग्रह-देवताः आवाहयामि।

- ( )-समस्त-देवताभ्यो नमः, आसनं समर्पयामि।
- ( )-समस्त-देवताभ्यो नमः, पाद्यं समर्पयामि।
- ( )-समस्त-देवताभ्यो नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।
- ( )-समस्त-देवताभ्यो नमः, आचमनीयं समर्पयामि।
- ( )-समस्त-देवताभ्यो नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

)-समस्त-देवताभ्यो नमः, स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि। )-समस्त-देवताभ्यो नमः, वस्त्रार्थम् अक्षतान् समर्पयामि। )-समस्त-देवताभ्यो नमः, यज्ञोपवीताभरणार्थे अक्षतान् समर्पयामि। )-समस्त-देवताभ्यो नमः, दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कमं समर्पयामि। )-समस्त-देवताभ्यो नमः, अक्षतान् समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि। १. ( )-संवत्सर-देवतायै ११. विष्कम्भादि-योग-देवताभ्यो ) नमः नमः २. उत्तरायण-देवतायै नमः १२. बवादि-करण-देवताभ्यो नमः १३. आदित्याय नमः ३. दक्षिणायन-देवतायै नमः ४. वसन्तादि-ऋतु-देवताभ्यो नमः १४. सोमाय नमः ५. मेषादि-मास-देवताभ्यो नमः १५. मङ्गलाय नमः ६. शुक्र-पक्ष-देवतायै इन्दवे नमः १६. बुधाय नमः १७. गुरवे नमः ७. कृष्ण-पक्ष-देवताये सूर्याय १८. शुक्राय नमः नमः १९. शनैश्चराय नमः ८. तिथि-देवताभ्यो नमः ९. वार-देवताभ्यो नमः २०. राहवे नमः १०. कृत्तिकादि-अष्टाविंशति-नक्षत्र-२१ केतवे नमः देवताभ्यो नमः )-समस्त-देवताभ्यो नमः, नानाविध-परिमल-पत्र-पुष्पाणि समर्पयामि। )-समस्त-देवताभ्यो नमः, धूपमाघ्रापयामि। )-समस्त-देवताभ्यो नमः, दीपं दर्शयामि।

नैवेद्यम्। ()-समस्त-देवताभ्यो नमः, निम्बकुसुमभक्षणं कदलीफलं च निवेदयामि। आचमनीयं समर्पयामि। ()-समस्त-देवताभ्यो नमः, कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि। ()-समस्त-देवताभ्यो नमः, कर्पूरनीराजनं दर्शयामि। ()-समस्त-देवताभ्यो नमः, समस्तोपचारान् समर्पयामि।

( )-समस्त-देवताभ्यो नमः, प्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

प्रार्थनाः समर्पयामि।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्। करोमि यद्यत् सकलं परस्मे नारायणायेति समर्पयामि॥

अनेन पूजनेन अग्र्यादयः प्रीयन्ताम्।

ॐ तत्सद्बह्मार्पणमस्त्।

## ॥ लघु-पञ्चाङ्ग-पठन-पद्धतिः॥

वागीशाद्याः सुमनसः सर्वार्थानामुपऋमे। यं नत्वा कृतकृत्याः स्युस्तं नमामि गजाननम्॥

तिथेश्च श्रियमाप्नोति वारादायुष्यवर्धनम्। नक्षत्राद्धरते पापं योगाद्रोगनिवारणम्॥

करणात् कार्यसिद्धिः स्यात् पश्चाङ्गफलमुत्तमम्। एतेषां श्रवणान्नित्यं गङ्गास्नानफलं भवेत्॥ During the Panchanga reading, the following should be read: The year's Navanayaka phalam, Makara Sankranti phalam, Kandhaaya phalam, Rashi phalam, Grahanas, and details on the Udaya and Astamana of the Grahas. Then, the Chithirai 1st date Panchanga should be read twice.

These details will be given in every Panchanga in different places. One should note them down the previous day and read them after the Panchanga Puja, while others listen.

मङ्गलं कोसलेन्द्राय महनीयगुणात्मने। चऋवर्तितनूजाय सार्वभौमाय मङ्गलम्॥



## ॥ निम्बकुसुमभक्षणम्॥

Shloka for partaking the Nimba Kusuma Bhakshanam

शतायुर्वज्रदेहाय सर्वसम्पत्कराय च। सर्वानिष्टविनाशाय निम्बकन्दलभक्षणम्॥

## ॥ नवग्रहस्तोत्रम्॥

जपाकुसुमसङ्काशं काश्यपेयं महाद्युतिम्। तमोरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥१॥

(सूर्यः)

दिधशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्। नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्॥२॥ नवग्रहस्तोत्रम् 69

> धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्। कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गलं प्रणमाम्यहम्॥३॥

प्रियङ्गुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्। सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्॥४॥

(बुधः)

(अङ्गारकः)

(चन्द्रः)

देवानां च ऋषीणां च गुरुं काश्चनसन्निभम्। बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्॥५॥

(बृहस्पतिः)

सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्॥६॥

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।

(शुक्रः)

नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्। छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्॥७॥

(शनैश्चरः)

अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्। सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्॥८॥

(राहुः)

पलाशपुष्पसङ्काशं तारकाग्रहमस्तकम्।

(केतुः)

रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्॥९॥

इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः। दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति॥१०॥ नरनारीनृपाणां च भवेद्दुःस्वप्ननाशनम्।

ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्॥११॥

ग्रहनक्षत्रजाः पीडास्तस्कराग्निसमुद्भवाः। ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः॥१२॥ ॥इति श्रीव्यासविरचितं नवग्रहस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

## ॥प्रार्थना-मन्त्राः॥

ॐ नमो ब्रह्मणे तुभ्यं कामाय च महात्मने। नमस्तेऽस्तु निमेषाय त्रुटये च नमोऽस्तु ते॥१॥

लवाय च नमस्तुभ्यं नमस्तेऽस्तु क्षणाय च। नमो नमस्ते काष्ठायै कलायै ते नमोऽस्तु ते॥२॥

नाडिकायै सुसूक्ष्मायै मुहूर्ताय नमो नमः। नमो निशाभ्यः पुण्येभ्यो दिवसेभ्यश्च नित्यशः॥३॥

पक्षाभ्यां चाथ मासेभ्य ऋतुभ्यः षड्य एव च। अयनाभ्यां च पश्चभ्यो वत्सरेभ्यश्च सर्वदा॥४॥

नमः कृतयुगादिभ्यो ग्रहेभ्यश्च नमो नमः। अष्टाविंशतिसङ्ख्योभ्यो नक्षत्रेभ्यो नमो नमः॥५॥

राशिभ्यः करणेभ्यश्च व्यतीपातेभ्य एव च। प्रतिवर्षाधिपेभ्यश्च विज्ञातेभ्यो नमः सदा॥६॥

नमोऽस्तु कुलनागेभ्यः सानुयात्रेभ्य<sup>९</sup> एव च। नमोऽस्तु सर्वदिग्भ्यश्च दिक्पालेभ्यो नमो नमः॥७॥

<sup>&</sup>lt;sup>९</sup>सानुचरेभ्यः

नमश्चतुर्दशभ्यश्च मनुभ्यस्तु नमो नमः। नमः पुरन्दरेभ्यश्च तत्सङ्ख्योभ्यो नमो नमः॥८॥

पश्चाशते नमो नित्यं दक्षकन्याभ्य एव च। नमोऽदित्ये सुभद्राये जयाये चाथ सर्वदा॥९॥

सुशास्त्राय नमस्तुभ्यं सर्वास्त्रजनकाय च। नमस्ते बहुपुत्राय पत्नीभिः सहिताय च॥१०॥

नमो बुद्धौ तथा वृद्धौ निद्रायै धनदाय च। नमः कुबेरपुत्राय<sup>१०</sup> गुह्यकस्वामिने नमः॥११॥

नमोऽस्तु शङ्खपद्माभ्यां निदिभ्यामथ नित्यशः। भद्रकाल्ये नमस्तुभ्यं सुरभ्ये च नमो नमः॥१२॥

वेदवेदाङ्गवेदान्तविद्यासंस्थेभ्य एव च। नागयक्षसुपर्णेभ्यो नमोऽस्तु गरुडाय च॥१३॥

सप्तभ्यश्च समुद्रेभ्यः सागरेभ्यश्च सर्वदा। उत्तरेभ्यः कुरुभ्यश्च नमो मेरुगताय<sup>११</sup> च॥१४॥

भद्राश्वकेतुमालाभ्यां नमः सर्वत्र सर्वदा। इलावृत्ताय च नमो हरिवर्षाय चैव हि॥१५॥

नमः किम्पुरुषेभ्यश्च भारताय नमो नमः। नमो भारतभेदेभ्यो<sup>१२</sup> महन्द्राश्चाथ सर्वदा॥१६॥

पातालेभ्यश्च सप्तभ्यो नरकेभ्यो नमो नमः। कालाग्निरुद्रशैवाभ्यां हरये ऋोडरूपिणे॥१७॥

<sup>&</sup>lt;sup>१°</sup>नलकूबरयक्षाय

<sup>&</sup>lt;sup>११</sup>हैरण्वताय

<sup>&</sup>lt;sup>१२</sup>नवभ्य इति च पाठः

सप्तभ्यस्त्वथ लोकेभ्यो महाभूतेभ्य एव च। नमः सम्बुद्धये चैव नमः प्रकृतये तथा॥१८॥

पुरुषायाभिमानाय नमस्त्वव्यक्तमूर्तये। पौराणीभ्यश्च गङ्गाभ्यः सप्तभ्यश्च नमो नमः॥१९॥

नमोऽस्त्वादिमुनिभ्यश्च सप्तभ्यश्चाथ सर्वदा। नमोऽस्तु पुष्करादिभ्यस्तीर्थेभ्यश्च पुनः पुनः॥२०॥

निम्नगाभ्यो नमो नित्यं वितस्तादिभ्य एव च। चतुर्दशभ्यो दीर्घाभ्यो धरणीभ्यो नमो नमः॥२१॥

नमो धात्रे विधात्रे च छन्दोभ्यश्च नमो नमः। सुरभ्यैरावणाभ्यां च नमो भूयो नमो नमः॥२२॥

नमस्तथोचैःश्रवसे ध्रुवाय च नमो नमः। नमोऽस्तु धन्वन्तराये शस्त्रास्त्राभ्यां नमो नमः॥२३॥

विनायककुमाराभ्यां विघ्नेभ्यश्च नमः सदा। शाखाय च विशाखाय नैगमेयाय वै नमः॥२४॥

नमः स्कन्दग्रहेभ्यश्चस्कन्दमातृभ्य एव च। ज्वराय रोगपतये भस्मप्रहरणाय च॥२५॥

ऋषिभ्यो वालखिल्येभ्यः केशवाय नमः सदा। अगस्तये नारदाय व्यासादिभ्यो नमो नमः॥२६॥ अप्सरोभ्यः सोमपेभ्यो देवेभ्यश्च नमो नमः। असोमपेभ्यश्च नमस्तुषितेभ्यो नमः सदा॥२७॥

आदित्येभ्यो नमो नित्यं द्वादशभ्यश्च सर्वदा। एकादशभ्यो रुद्रेभ्यस्तपस्विभ्यो नमो नमः॥२८॥ नमो नासत्यदस्रायामिश्वभ्यां नित्यमेव हि। साध्येभ्यो द्वादशभ्यश्च पौराणेभ्यो नमः सदा॥२९॥ एकोनपश्चशते च मरुद्धश्च नमो नमः। शिल्पाचार्याय देवाय नमस्ते विश्वकर्मणे॥३०॥ अष्टभ्यो लोकपालेभ्यः सानुगेभ्यश्च सर्वदा। आयुधेभ्यो वाहनेभ्यो वर्मभ्यश्च नमः सदा॥३१॥ आसनेभ्यो दुन्दुभिभ्यो देवेभ्यश्च नमः सदा। दैत्यराक्षसगन्धर्वपिशाचेभ्यश्च नित्यशः॥३२॥ पितृभ्यः सप्तभेदेभ्यः प्रेतेभ्यश्च नमः सदा। सुसूक्ष्मेभ्यश्च देवेभ्यो भावगम्येभ्य एव च॥३३॥ नमस्ते बहुरूपाय विष्णवे परमात्मने। अथ किं बहुनोक्तेन मन्नेणानेन वाऽर्चयेत्। प्राङ्गखोदङ्गुखो विप्रान् देवानुद्दिश्य पूर्ववत्॥३४॥



# ॥ श्री-रामनवमी-पूजा ॥

## ॥ पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा॥

(आचम्य)

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवणं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुव्रोम्। (अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा) ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः अविघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गृणानां त्वा गृणपंति हवामहे कविं केवीनामुंपमश्रंवस्तमम्। ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत् आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद् सादनम्॥ अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि। पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि। वस्नार्थमक्षतान् समर्पयामि। यज्ञोपवीताभरणार्थे अक्षतान् समर्पयामि। दिव्यपरिमलगन्थान् धारयामि। गन्थस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि। पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

#### ॥ अर्चना ॥

१. ॐ सुमुखाय नमः ९. ॐ धूमकेतवे नमः

२. ॐ एकदन्ताय नमः १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः

३. ॐ कपिलाय नमः ११. ॐ फालचन्द्राय नमः

४. ॐ गजकर्णकाय नमः १२. ॐ गजाननाय नमः

५. ॐ लम्बोदराय नमः १३. ॐ वऋतुण्डाय नमः

६. ॐ विकटाय नमः १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः

७. ॐ विघ्नराजाय नमः १५. ॐ हेरम्बाय नमः

८. ॐ विनायकाय नमः १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाघ्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वऋतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ। अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि। छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

## ॥ प्रधान-पूजा — श्रीराम-पूजा॥

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुव्रोम्।

#### ॥ सङ्कल्पः॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते अद्य ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे किलयुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकाणां प्रभवादीनां षष्ट्याः संवत्सराणां मध्ये () नाम संवत्सरे उत्तरायणे वसन्त-ऋतौ (मेष/मीन) मासे शुक्लपक्षे नवम्यां शुभितिथौ (इन्दु/भौम/बुध/गुरु/भृगु/स्थिर/भानु) वासरयुक्तायाम् (आर्द्रा/पुनर्वसू/पुष्य) नक्षत्रयुक्तायां ()-योग ()-करण-युक्तायां च एवं गुण-विशेषण-विशिष्टायाम् अस्याम् नवम्यां शुभितिथौ

- भारतीयस्य वैदिकस्य अस्माकं सनातन-धर्मस्य सर्वत्र विजय-सिद्धर्थं
- तद्-अवलम्बनेन भारतीयानां महाजनानां विघ्न-निवृत्ति-पूर्वक-सत्कार्य-प्रवृत्ति-द्वारा सर्वविध-ऐहिक-आमुष्मिक-योग-क्षेम-अभिवृद्धर्थं, असत्कार्येभ्यः निवृत्त्यर्थं
- सनातन-धर्मस्य विरोधिनाम् उपशमनार्थं
- भारतीय-सत्-सन्तान-समृद्धर्थं, भारतीयानां सन्ततेः अपि अस्मिन् सनातन-धर्म-सम्प्रदाये श्रद्धा-भक्त्योः अभिवृद्धर्थं
- विभिन्न-सम्प्रदाय-स्थानां सनातन-धर्मावलम्बिनां परस्परं समन्वयेन अविरोधेन साधन-अनुष्ठानेन फल-सिद्धार्थम्

- सर्वत्र भूमण्डले विशेषतः भारते च राम-नाम-महिम्नः प्रसारार्थं राम-राज्यस्य सिद्धार्थं
- अयोध्यायां भगवतः श्रीरामस्य जन्म-भूमि-मन्दिरस्य मूल-स्थानं परितः महतः मन्दिर-परिसरस्य सम्यग् अभिवृद्ध्यर्थम्
- अस्माकं सह-कुटुम्बानां क्षेम-स्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय-आयुः-आरोग्य-ऐश्वर्याणाम् अभिवृद्धर्थं धर्मार्थ-काम-मोक्ष-चतुर्विध-पुरुषार्थ-सिद्धर्थं
- मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहा-पातकचतुष्टय-व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्य अपनोदनद्वारा सकल-पापक्षयार्थं
- श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-प्रीत्यर्थम्

श्रीरामनवमीपुण्यकाले कल्पोक्तप्रकारेण यथाशक्ति श्रीरामचन्द्रपूजां करिष्ये। तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। (गणपति-प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

#### ॥ आसन-पूजा॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चासनं कुरु॥

#### ॥ घण्टा-पूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्। घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

#### ॥ कलश-पूजा॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः। ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्) आपो वा इदः सर्वं विश्वां भूतान्यापः प्राणा वा आपः पृशव् आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापृश्छन्दाः स्यापो ज्योतीः इष्यापो यज् इष्यापः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भुवः सुवराप ओम्॥

> कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः। अङ्गेश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च ह्रदा नदाः। आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥ ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवेः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

#### ॥ आत्म-पूजा॥

#### ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

१. ॐ आत्मने नमः ४. ॐ जीवात्मने नमः

२. ॐ अन्तरात्मने नमः ५. ॐ परमात्मने नमः

३. ॐ योगात्मने नमः ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः

#### समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः। त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

## ॥ पीठ-पूजा॥

१. ॐ आधारशक्त्ये नमः ८. ॐ रत्नवेदिकाये नमः

२. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः

३. ॐ आदिकूर्माय नमः १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः

४. ॐ आदिवराहाय नमः ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः

५. ॐ अनन्ताय नमः १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः

६. ॐ पृथिव्यै नमः १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः

७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः १४. ॐ योगपीठासनाय नमः

#### ॥ गुरु-ध्यानम्॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

## ॥ षोडशोपचार-पूजा॥

वैदेही-सहितं सुर-द्रुम-तले हैमे महामण्डपे मध्येपुष्पकमासने मणिमये वीरासने सुस्थितम्। अग्रे वाचयति प्रभञ्जन-सुते तत्त्वं मुनिभ्यः परं व्याख्यान्तं भरतादिभिः परिवृतं रामं भजे श्यामलम्॥

वामे भूमि-सुता पुरश्च हनुमान् पश्चात् सुमित्रा-सुतः शत्रुघ्नो भरतश्च पार्श्व-दलयोर्वाय्वादि-कोणेषु च। सुग्रीवश्च विभीषणश्च युवराट् तारा-सुतो जाम्बवान् मध्ये नील-सरोज-कोमल-रुचिं रामं भजे श्यामलम्॥

श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्रं ध्यायामि। (अथ प्राणप्रतिष्ठा)

> आवाहयामि विश्वेशं वैदेही-वल्लभं विभुम्। कौसल्या-तनयं विष्णुं श्री-रामं प्रकृतेः परम्॥ श्रीरामाय नमः – आवाहयामि।

वामे सीताम् आवाहयामि। पुरस्तात् हनुमन्तम् आवाहयामि । पश्चात् लक्ष्मणम् आवाहयामि। उत्तरस्यां शत्रुघ्नमवाहयामि । दक्षिणस्यां दिशि भरतम् आवाहयामि । वायव्यायां सुग्रीवम् आवाहयामि । ऐशान्यां विभीषणम् आवाहयामि । आग्नेय्याम् अङ्गदम् आवाहयामि । नैर्ऋत्यां जाम्बवन्तम् आवाहयामि ॥

> रत्न-सिंहासनारूढ सर्व-भूपाल-वन्दित। आसनं ते मया दत्तं प्रीतिं जनयतु प्रभो॥

सपरिवाराय श्रीरामाय नमः, आसनं समर्पयामि। पादाङ्गुष्ठ-समुद्भूत-गङ्गा-पावित-विष्टप । पाद्यार्थमुदकं राम ददामि परिगृह्यताम्॥ सपरिवाराय श्रीरामाय नमः, पाद्यं समर्पयामि।

वालखिल्यादिभिर्विप्रैस्निसन्ध्यं प्रयतात्मभिः। अर्घ्येराराधित विभो ममार्घ्यं राम गृह्यताम्॥

सपरिवाराय श्रीरामाय नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।

आचान्ताम्भोधिना राम मुनिना परिसेवित। मया दत्तेन तोयेन कुर्वाचमनमीश्वर॥

सपरिवाराय श्रीरामाय नमः, आचमनीयं समर्पयामि।

नमः श्री-वासुदेवाय तत्त्व-ज्ञान-स्वरूपिणे । मधुपर्कं गृहाणेमं जानकीपतये नमः॥

सपरिवाराय श्रीरामाय नमः, मधुपर्कं समर्पयामि।

कामधेनु-समुद्भूत-क्षीरेणेन्द्रेण राघव। अभिषिक्त अखिलार्थास्यै स्नाहि मद्-दत्त-दुग्धतः॥

सपरिवाराय श्रीरामाय नमः, क्षीराभिषेकं समर्पयामि।

हनूमता मधुवनोद्भूतेन मधुना प्रभो। प्रीत्याऽभिषेचित-तनो मधुना स्नाहि मेऽद्य भोः॥

सपरिवाराय श्रीरामाय नमः, मध्वभिषेकं समर्पयामि।

त्रैलोक्य-ताप-हरण-नाम-कीर्तन राघव। मधूत्थ-ताप-शान्त्यर्थं स्नाहि क्षीरेण वै पुनः॥

सपरिवाराय श्रीरामाय नमः, मध्वभिषेकान्ते पुनः क्षीराभिषेकं समर्पयामि।

नदी-नद-समुद्रादि-तोयैर्मन्नाभिसंस्कृतैः । पट्टाभिषिक्त राजेन्द्र स्नाहि शुद्ध-जलेन मे॥

सपरिवाराय श्रीरामाय नमः, शुद्धोदक-स्नानं समर्पयामि। स्नानोत्तरम् आचमनीयं समर्पयामि। हित्वा पीताम्बरं चीर-कृष्णाजिन-धराच्युत। परिधत्स्वाद्य मे वस्त्रं स्वर्ण-सूत्र-विनिर्मितम्॥ सपरिवाराय श्रीरामाय नमः, वस्त्रं समर्पयामि। राजर्षि-वंश-तिलक रामचन्द्र नमोऽस्तु ते। यज्ञोपवीतं विधिना निर्मितं धत्स्व मे प्रभो॥ सपरिवाराय श्रीरामाय नमः, उपवीतं समर्पयामि। किरीटादीनि राजेन्द्र हंसकान्तानि राघव। विभूषणानि धृत्वाऽद्य शोभस्व सह सीतया॥

सपरिवाराय श्रीरामाय नमः, आभरणम् समर्पयामि।

सन्थ्या-समान-रुचिना नीलाभ्र-सम-विग्रह। लिम्पामि तेऽङ्गकं राम चन्दनेन मुदा हृदि॥

सपरिवाराय श्रीरामाय नमः, गन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्रा-कुङ्कमं समर्पयमि।

अक्षतान् कुङ्कुमोन्मिश्रान् अक्षय्य-फल-दायक। अर्पये तव पादाज्ञे शालि-तण्डुल-सम्भवान्॥

सपरिवाराय श्रीरामाय नमः, अक्षतान् समर्पयामि। चम्पकाशोक-पुन्नागैर्जलजैस्तुलसी-दलैः । पूजयामि रघूत्तंस पूज्यं त्वां सनकादिभिः॥

सपरिवाराय श्रीरामाय नमः, पुष्पाणि समर्पयामि।
॥अङ्ग-गुण-पूजा॥

अहल्या-उद्धारकाय नमः पाद-रजः पूजयामि शरणागत-रक्षकाय नमः पाद-कान्तिं पूजयामि गङ्गा-नदी-प्रवर्तन-पराय नमः सीता-संवाहित-पदाय नमः दुन्दुभि-काय-विक्षेपकाय नमः विनत-कल्प-द्रुमाय नमः दण्डकारण्य-गमन-जङ्घालाय नमः जानु-न्यस्त-कराम्बुजाय नमः वीरासन-अध्यासिने नमः पीताम्बर-अलङ्कृताय नमः आकाश-मध्यगाय नमः अरि-निग्रह-पराय नमः अब्धि-मेखला-पतये नमः

उदर-स्थित-ब्रह्माण्डाय नमः जगत्-त्रय-गुरवे नमः सीतानुलेपित-काश्मीर-चन्दनाय नमः अभय-प्रदान-शौण्डाय नमः वितरण-जित-कल्पद्रुमाय नमः आशर-निरसन-पराय नमः ज्ञान-विज्ञान-भासकाय नमः मृनि-सङ्घार्पित-दिव्य-पदाय नमः दशानन-काल-रूपिणे नमः

पाद-नखान् पूजयामि पाद-तलं पूजयामि पादाङ्गष्ठं पूजयामि गुल्फौ पूजयामि जङ्घे पूजयामि जानुनी पूजयामि ऊरू पूजयामि कटिं पूजयामि मध्यं पूजयामि कटि-लम्बितम् असिं पूजयामि मध्य-लम्बित-मेखला-दाम पुजयामि उदरं पूजयामि विल-त्रयं पूजयामि वक्षः पूजयामि दक्षिण-बाहु-दण्डं पूजयामि दक्षिण-कर-तलं पूजयामि दक्षिण-कर-स्थित-शरं पूजयामि चिन्मुद्रां पूजयामि वाम-भुज-दण्डं पूजयामि वाम-हस्त-स्थित-कोदण्डं पूजयामि

तिरस्कृत-लङ्केश्वराय नमः

अंसौ पूजयामि शत-मख-दत्त-शत-पुष्कर-स्रजे नमः कृत्त-दशानन-किरीट-कूटाय नमः अंस-लम्बित-निषङ्ग-द्वयं पूजयामि सीता-बाहु-लतालिङ्गिताय नमः कण्ठं पूजयामि स्मित-भाषिणे नमः स्मितं पुजयामि मुख-प्रसादं पूजयामि नित्य-प्रसन्नाय नमः वाचं पूजयामि सत्य-वाचे नमः कपालि-पूजिताय नमः कपोलौ पूजयामि चक्षुःश्रवः-प्रभु-पूजिताय नमः श्रोत्रे पूजयामि अनासादित-पाप-गन्धाय नमः घ्राणं पूजयामि अक्षिणी पूजयामि प्ण्डरीकाक्षाय नमः अपाङ्ग-स्यन्दि-करुणाय नमः अरुणापाङ्ग-द्वयं पूजयामि अनाथ-रक्षक-कटाक्षं पूजयामि विना-कृत-रुषे नमः कस्त्री-तिलकाङ्किताय नमः फालं पुजयामि किरीटं पूजयामि राजाधिराज-वेषाय नमः मुनि-मण्डल-पूजिताय नमः जटा-मण्डलं पूजयामि मोहित-मुनि-जनाय नमः पुंसां मोहनं रूपं पूजयामि जानकी-व्यजन-वीजिताय नमः विद्युद्-विद्योतित-कालाभ्र-सदश-कान्तिं पूजयामि करुणारस-उद्वेल्लित-कटाक्ष-धारां हनुमदर्पित-चूडामणये नमः पुजयामि तेजोमयरूपं पूजयामि सुमन्नानुग्रह-पराय नमः कम्पिताम्भोधये नमः आहार्य-कोपं पूजयामि

धैर्यं पुजयामि

वन्दित-जनकाय नमः

सम्मानित-त्रिजटाय नमः अतिमानुष-सौलभ्यं पूजयामि गन्धर्व-राज-प्रतिमाय नमः लोकोत्तर-सौन्दर्यं पूजयामि पराक्रमं पूजयामि असहाय-हत-खर-दूषणादि-चतुर्दश-सहस्र-राक्षसाय नमः आलिङ्गित-आञ्जनेयाय नमः भक्त-वात्सल्यं पूजयामि लब्ध-राज्य-परित्यक्रे नमः धर्मं पुजयामि दर्भ-शायिने नमः लोकानुवर्तनं पूजयामि सर्वाण्यङ्गानि सर्वांश्च सर्वेश्वराय नमः गुणान् पुजयामि ॥ रामाष्टोत्तरशतनामावलिः॥ श्रीरामाय नमः विश्वामित्रप्रियाय नमः रामभद्राय नमः दान्ताय नमः शरणत्राणतत्पराय नमः वालिप्रमथनाय नमः वाग्मिने नमः

विनयं पूजयामि

रामचन्द्राय नमः शाश्वताय नमः राजीवलोचनाय नमः श्रीमते नमः सत्यवाचे नमः सत्यविक्रमाय नमः राजेन्द्राय नमः रघुपुङ्गवाय नमः सत्यव्रताय नमः २० जानकीवल्लभाय नमः व्रतधराय नमः सदा हनुमदाश्रिताय नमः जैत्राय नमः 80 जितामित्राय नमः कौसलेयाय नमः खरध्वंसिने नमः जनार्दनाय नमः

सर्वयज्ञाधिपाय नमः स्मितवऋाय नमः मितभाषिणे नमः यज्विने नमः पूर्वभाषिणे नमः जरामरणवर्जिताय नमः शिवलिङ्गप्रतिष्ठात्रे नमः राघवाय नमः सर्वापगुणवर्जिताय नमः अनन्तगुणगम्भीराय नमः परमात्मने नमः धीरोदात्तगुणोत्तमाय नमः ८० मायामानुषचारित्राय नमः परस्मै ब्रह्मणे नमः महादेवादिपूजिताय नमः सचिदानन्दविग्रहाय नमः परस्मै ज्योतिषे नमः सेतुकृते नमः १०० जितवारीशाय नमः परस्मै धाम्ने नमः सर्वतीर्थमयाय नमः पराकाशाय नमः हरये नमः परात्पराय नमः श्यामाङ्गाय नमः परेशाय नमः सुन्दराय नमः पारगाय नमः श्राय नमः पाराय नमः

पीतवाससे नमः

धनुर्धराय नमः

सर्वदेवात्मकाय नमः पराय नमः

॥इति श्री-पद्मपुराणे उत्तरखण्डे श्री-रामाष्टोत्तरशतनामाविलः सम्पूर्णा॥

## ॥ रामाष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

रामाय नमः रावण-संहार-कृत-मानुष-विग्रहाय नमः

कौसल्या-सुकृत-व्रात-फलाय नमः दशरथात्मजाय नमः लक्ष्मणार्चित-पादाज्ञाय नमः

सर्व-लोक-प्रियङ्कराय नमः साकेत-वासि-नेत्राज्ज-सम्प्रीणन-दिवाकराय नमः विश्वामित्र-प्रियाय नमः शान्ताय नमः ताटका-ध्वान्त-भास्कराय नमः सुबाहु-राक्षस-रिपवे नमः कौशिकाध्वर-पालकाय नमः अहल्या-पाप-संहर्त्रे नमः जनकेन्द्र-प्रियातिथये नमः प्रारि-चाप-दलनाय नमः वीर-लक्ष्मी-समाश्रयाय नमः सीता-वरण-माल्याढ्याय नमः जामदग्य-मदापहाय नमः वैदेही-कृत-शृङ्गाराय नमः पितृ-प्रीति-विवर्धनाय नमः २० ताताज्ञोत्सृष्ट-हस्त-स्थ-राज्याय नमः सत्य-प्रतिश्रवाय नमः तमसा-तीर-संवासिने नमः गुहानुग्रह-तत्पराय नमः स्मन्न-सेवित-पदाय नमः भरद्वाज-प्रियातिथये नमः चित्रकूट-प्रिय-स्थानाय नमः पादुका-न्यस्त-भू-भराय नमः अनस्या-अङ्गरागाङ्क-सीता-

साहित्य-शोभिताय नमः दण्डकारण्य-सश्चारिणे नमः 30 विराध-स्वर्ग-दायकाय नमः रक्षः-कालान्तकाय नमः सर्व-म्नि-सङ्घ-मुदावहाय नमः प्रतिज्ञात-आशर-वधाय नमः शरभङ्ग-गति-प्रदाय नमः अगस्त्यार्पित-बाणास-खङ्ग-तूणीर-मण्डिताय नमः प्राप्त-पश्चवटी-वासाय नमः गृध्रराज-सहायवते नमः कामि-शूर्पणखा-कर्ण-नास-च्छेद-नियामकाय नमः खरादि-राक्षस-त्रातखण्डनावितसञ्जनाय नमः सीता-संश्लिष्ट-कायाभा-जित-विद्युद्-युताम्बुदाय नमः मारीच-हन्ने नमः मायाढ्याय नमः जटायुर्-मोक्ष-दायकाय नमः कबन्ध-बाहु-लवनाय नमः शबरी-प्रार्थितातिथये नमः हनुमद्-वन्दित-पदाय नमः स्ग्रीव-स्हदेऽव्ययाय नमः दैत्य-कङ्काल-विक्षेपिणे नमः

सप्त-साल-प्रभेदकाय नमः 40 एकेषु-हत-वालिने नमः तारा-संस्तुत-सद्गुणाय नमः कपीन्द्री-कृत-सुग्रीवाय नमः सर्व-वानर-पूजिताय नमः वायु-सूनु-समानीत-सीता-सन्देश-नन्दिताय नमः जैत्र-यात्रोद्यताय नमः जिष्णवे नमः विष्णु-रूपाय नमः निराकृतये नमः कम्पिताम्भोनिधये नमः & o सम्पत्-प्रदाय नमः सेत्-निबन्धनाय नमः लङ्का-विभेदन-पटवे नमः निशाचर-विनाशकाय नमः क्म्भकर्णाख्य-कुम्भीन्द्र-मृगराज-पराऋमाय नमः मेघनाद-वधोद्युक्त-लक्ष्मणास्त्र-बलप्रदाय नमः दशग्रीवान्धतामिस्र-प्रमापण-प्रभाकराय नमः इन्द्रादि-देवता-स्तुत्याय नमः चन्द्राभ-मुख-मण्डलाय नमः विभीषणार्पित-निशाचर-

राज्याय नमः 00 वृष-प्रियाय नमः वैश्वानर-स्तृत-गुणावनिपुत्री-समागताय नमः पुष्पक-स्थान-स्भगाय नमः पुण्यवत्-प्राप्य-दर्शनाय नमः राज्याभिषिक्ताय नमः राजेन्द्राय नमः राजीव-सदृशेक्षणाय नमः लोक-तापापहर्त्रे नमः धर्म-संस्थापनोद्यताय नमः शरण्याय नमः 60 कीर्तिमते नमः नित्याय वदान्याय नमः करुणार्णवाय नमः संसार-सिन्धु-सम्मग्न-तारकाख्या-महोञ्चलाय नमः मधुराय नमः मधुरोक्तये नमः मधुरा-नायकाग्रजाय नमः शम्बूक-दत्त-स्वर्लोकाय नमः शम्बराराति-सुन्दराय नमः अश्वमेध-महायाजिने नमः वाल्मीकि-प्रीतिमते नमः वशिने नमः

१०८

२०

स्वयं रामायण-श्रोत्रे नमः
पुत्र-प्राप्ति-प्रमोदिताय नमः
ब्रह्मादि-स्तुत-माहात्म्याय नमः
ब्रह्मार्ष-गण-पूजिताय नमः
वर्णाश्रम-रताय नमः
वर्णाश्रम-धर्म-नियामकाय नमः
रक्षा-पराय नमः
राज-वंश-प्रतिष्ठापन-तत्पराय नमः

१००
गन्धर्व-हिंसा-संहारिणे नमः
धृतिमते नमः
दीन-वत्सलाय नमः
ज्ञानोपदेष्ट्रे नमः
वेदान्त-वेद्याय नमः

भक्त-प्रियङ्कराय नमः वैकुण्ठ-वासिने नमः

चराचर-विमुक्ति-दाय नमः

॥इति ब्रह्मयामले रामरहस्ये प्रोक्ता श्री-राम-अष्टोत्तरशत-नामावलिः सम्पूर्णा॥

## ॥ सीताष्टोत्तरशतनामाविलः॥

सीताये नमः
सीर-ध्वज-सुताये नमः
सीमातीत-गुणोञ्चलाये नमः
सौन्दर्य-सार-सर्वस्व-भूताये नमः
सौभाग्य-दायिन्ये नमः
देव्ये नमः
देवार्चित-पदाये नमः
दिव्याये नमः
दशरथ-स्रुषाये नमः
रामाये नमः

राम-प्रियाये नमः
रम्याये नमः
राकेन्दु-वदनोञ्चलाये नमः
वीर्य-शुल्काये नमः
वीर-पत्ये नमः
वियन्मध्याये नमः
वर-प्रदाये नमः
पति-व्रताये नमः
पङ्कि-कण्ठ-नाशिन्ये नमः
पावन-स्मृतये नमः

वन्दारु-वत्सलायै नमः		साध्यै नमः	
वीर-मात्रे नमः		सरमा-प्रियायै नमः	
वृत-रघूत्तमायै नमः		त्रिलोक-वन्द्यायै नमः	
सम्पत्-कर्यै नमः		त्रिजटा-सेव्यायै नमः	
सदा-तुष्टायै नमः		त्रिपथ-गार्चिन्यै नमः	40
साक्षिण्ये नमः		त्राण-प्रदायै नमः	
साधु-सम्मतायै नमः		त्रात-काकायै नमः	
नित्यायै नमः		तृणी-कृत-दशाननायै नमः	
नियत-संस्थानायै नमः		अनसूया-अङ्गरागाङ्कायै नमः	
नित्यानन्दायै नमः	३०	अनसूयायै नमः	
नुति-प्रियायै नमः		सूरि-वन्दितायै नमः	
पृथ्यै नमः		अशोक-वनिका-स्थानायै नमः	
पृथ्वी-सुतायै नमः		अशोकायै नमः	
पुत्र-दायिन्यै नमः		शोक-विनाशिन्यै नमः	
प्रकृत्यै परस्यै नमः		सूर्य-वंश-स्रुषायै नमः	६०
हनूमत्-स्वामिन्यै नमः		सूर्य-मण्डलान्तस्स्थ-वल्लभायै न	मः
हृद्याये नमः		श्रुत-मात्राघ-हरणायै नमः	
हृदय-स्थायै नमः		श्रुति-सन्निहितेक्षणायै नमः	
हताशुभायै नमः		पुष्प-प्रियायै नमः	
हंस-युक्तायै नमः	४०	पुष्पक-स्थायै नमः	
हंस-गतये नमः		पुण्य-लभ्यायै नमः	
हर्ष-युक्तायै नमः		पुरातन्यै नमः	
हताशरायै नमः		पुरुषार्थ-प्रदायै नमः	
सार-रूपायै नमः		पूज्यायै नमः	
सार-वचसे नमः		पूत-नाम्ने नमः	90
	l	<del>-</del> ·	

१००

परन्तपायै नमः पद्म-प्रियायै नमः

पद्म-हस्तायै नमः

पद्माये नमः

पद्म-मुख्ये नमः

शुभायै नमः

जन-शोक-हरायै नमः

जन्म-मृत्यु-शोक-विनाशिन्यै नमः

जगद्-रूपायै नमः

जगद्-वन्द्यायै नमः ८०

जय-दायै नमः

जनकात्मजायै नमः

नाथनीय-कटाक्षायै नमः

नाथायै नमः

नाथैक-तत्परायै नमः

नक्षत्र-नाथ-वदनायै नमः

नष्ट-दोषायै नमः

नयावहायै नमः

वह्नि-पाप-हरायै नमः

वह्नि-शैत्य-कृते नमः

वृद्धि-दायिन्यै नमः

वाल्मीकि-गीत-विभवायै नमः

वचोतीतायै नमः

वराङ्गनायै नमः

भक्ति-गम्यायै नमः

भव्य-गुणायै नमः

भात्र्ये नमः

भरत-वन्दितायै नमः

सुवर्णाङ्गी नमः

सुखकर्ये नमः

सुग्रीवाङ्गद-सेवितायै नमः वैदेह्यै नमः

पद्ख ननः

विनताघौघ-नाशिन्यै नमः

विधि-वन्दितायै नमः लोक-मात्रे नमः

लोचनान्त-स्थित-कारुण्य-

सागरायै नमः

सागराय नमः

कृताकृत-जगद्धेतवे नमः

कृत-राज्याभिषेककायै नमः

इदम् अष्टोत्तर-शतं सीता-नाम्नां तु या वधूः। भक्ति-युक्ता पठेत् सा तु पुत्र-पौत्रादि-नन्दिता॥

धन-धान्य-समृद्धा च दीर्घ-सौभाग्य-दर्शिनी। पुंसाम् अपि स्तोत्रम् इदं पठनात् सर्व-सिद्धि-दम्॥

₹0

80

## ॥इति ब्रह्मयामले रामरहस्ये प्रोक्ता श्री-सीता-अष्टोत्तरशत-नामावलिः सम्पूर्णा॥

## ॥ सीताष्टोत्तरशतनामावलिः॥

मुक्तिदायै नमः श्रीसीतायै नमः जानको नमः कामपूरण्यै नमः नृपात्मजायै नमः देव्यै नमः हेमवर्णायै नमः वैदेह्ये नमः राघवप्रियायै नमः मृदुलाङ्गी नमः रमायै नमः स्भाषिण्यै नमः अवनिसुतायै नमः कुशाम्बिकायै नमः रामायै नमः दिव्यदाये नमः राक्षसान्तप्रकारिण्ये नमः लवमात्रे नमः रत्नगुप्तायै नमः मनोहरायै नमः १० हनुमद्वन्दितपदायै नमः मात्लुङ्गी नमः मुग्धायै नमः मैथिल्ये नमः केयूरधारिण्यै नमः भक्ततोषदायै नमः पद्माक्षजाये नमः अशोकवनमध्यस्थायै नमः रावणादिकमोहिन्यै नमः कञ्जनेत्रायै नमः विमानसंस्थितायै नमः स्मितास्याये नमः नूपुरस्वनायै नमः सुभुवे नमः वैकुण्ठनिलयायै नमः सुकेश्यै नमः रशनान्वितायै नमः मायै नमः रजोरूपायै नमः श्रियै नमः

सत्त्वरूपायै नमः		गौर्ये नमः	
तामस्यै नमः		प्रभायै नमः	
वह्निवासिन्यै नमः		अयोध्यानिवासिन्यै नमः	
हेममृगासक्तचित्तायै नमः		वसन्तशीतलायै नमः	
वाल्मीक्याश्रमवासिन्यै नमः		गौर्ये नमः	90
पतिव्रतायै नमः		स्नानसन्तुष्टमानसायै नमः	
महामायायै नमः		रमानामभद्रसंस्थायै नमः	
पीतकौशेयवासिन्यै नमः		हेमकुम्भपयोधरायै नमः	
मृगनेत्रायै नमः		सुरार्चितायै नमः	
बिम्बोष्ठ्ये नमः	५०	धृत्यै नमः	
धनुर्विद्याविशारदायै नमः		कान्त्यै नमः	
सौम्यरूपायै नमः		स्मृत्यै नमः	
दशरथस्रुषायै नमः		मेधायै नमः	
चामरवीजितायै नमः		विभावर्ये नमः	
सुमेधादुहित्रे नमः		लघूदरायै नमः	८०
दिव्यरूपायै नमः		वरारोहायै नमः	
त्रैलोक्यपालिन्यै नमः		हेमकङ्कणमण्डितायै नमः	
अन्नपूर्णायै नमः		द्विजपत्यर्पितनिजभूषायै नमः	
महालक्ष्म्यै नमः		राघवतोषिण्यै नमः	
धियै नमः	६०	श्रीरामसेवानिरतायै नमः	
लञ्जायै नमः		रत्नताटङ्कधारिण्यै नमः	
सरस्वत्यै नमः		रामवामाङ्गसंस्थायै नमः	
शान्त्यै नमः		रामचन्द्रैकरञ्जन्यै नमः	
पुष्ट्ये नमः		सरयूजलसङ्गीडाकारिण्यै नमः	
क्षमायै नमः		राममोहिन्यै नमः	९०
		ı	

११०

सुवर्णतुलितायै नमः पुण्यायै नमः

पुण्यकीर्त्ये नमः कलावत्ये नमः

कलकण्ठायै नमः

कम्बुकण्ठायै नमः

रम्भोरुवे नमः

गजगामिन्यै नमः

रामार्पितमनायै नमः

रामवन्दितायै नमः

रामवल्लभाये नमः

श्रीरामपदचिह्नाङ्कायै नमः

रामरामेतिभाषिण्यै नमः

रामपर्यङ्कशयनायै नमः

रामाङ्किक्षालिन्यै नमः

वरायै नमः

कामधेन्वन्नसन्तुष्टायै नमः

मातुलुङ्गकरे धृतायै नमः

दिव्यचन्दनसंस्थायै नमः

श्रियै नमः

मूलकासुरमर्दिन्यै नमः

॥इति श्री-आनन्दरामायणे श्री-सीताष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा॥

## ॥ हनुमद्ष्टोत्तरशतनामाविलः ॥

आञ्जनेयाय नमः

महावीराय नमः

हनूमते नमः

मारुतात्मजाय नमः

तत्त्वज्ञानप्रदाय नमः

सीतादेवीमुद्राप्रदायकाय नमः

अशोकवनिकाच्छेत्रे नमः

सर्वमायाविभञ्जनाय नमः

सर्वबन्धविमोक्रे नमः

रक्षोविध्वंसकारकाय नमः परविद्यापरीहर्त्रे नमः

परशौर्यविनाशनाय नमः

परमन्त्रनिराकर्त्रे नमः

परयन्त्रप्रभेदकाय नमः

सर्वग्रहविनाशिने नमः

भीमसेनसहायकृते नमः

सर्वदुःखहराय नमः

सर्वलोकचारिणे नमः

हनुमदष्टोत्तरशतनामावलिः			96
मनोजवाय नमः		वानराय नमः	
पारिजातद्रुमूलस्थाय नमः	२०	केसरीसुताय नमः	
सर्वमन्त्रस्वरूपवते नमः		सीताशोकनिवारणाय नमः	
सर्वतत्रस्वरूपिणे नमः		अञ्जनागर्भसम्भूताय नमः	
सर्वयत्रात्मकाय नमः		बालार्कसदृशाननाय नमः	
कपीश्वराय नमः		विभीषणप्रियकराय नमः	
महाकायाय नमः		दशग्रीवकुलान्तकाय नमः	
सर्वरोगहराय नमः		लक्ष्मणप्राणदात्रे नमः	५०
प्रभवे नमः		वज्रकायाय नमः	
बलसिद्धिकराय नमः		महाद्युतये नमः	
सर्वविद्यासम्पत्प्रदायकाय नमः		चिरञ्जीविने नमः	
कपिसेनानायकाय नमः	३०	रामभक्ताय नमः	
भविष्यचतुराननाय नमः		दैत्यकार्यविघातकाय नमः	
कुमारब्रह्मचारिणे नमः		अक्षहन्त्रे नमः	
रत्नकुण्डलदीप्तिमते नमः		काश्चनाभाय नमः	
चश्रलद्वालसन्नद्ध-		पश्चवऋाय नमः	
लम्बमानशिखोञ्चलाय नमः		महातपसे नमः	
गन्धर्वविद्यातत्त्वज्ञाय नमः		लङ्किणीभञ्जनाय नमः	६०
महाबलपराऋमाय नमः		श्रीमते नमः	
कारागृहविमोक्रे नमः		सिंहिकाप्राणभञ्जनाय नमः	
शृङ्खलाबन्धमोचकाय नमः		गन्धमादनशैलस्थाय नमः	
सागरोत्तारकाय नमः		लङ्कापुरविदाहकाय नमः	
प्राज्ञाय नमः	४०	सुग्रीवसचिवाय नमः	
रामदूताय नमः		धीराय नमः	
प्रतापवते नमः		शूराय नमः	

॥इति श्री-हनुमदष्टोत्तरशतनामाविलः सम्पूर्णा॥

श्चये नमः

वाग्मिने नमः

जाम्बवत्प्रीतिवर्धनाय नमः

पादसेवाधुरन्धराय नमः

सीतासमेतश्रीराम-

## ॥ हनुमद्ष्टोत्तरशतनामाविलः॥

हनुमते नमः अञ्जना-सूनवे नमः धीमते नमः केसरि-नन्दनाय नमः वातात्मजाय नमः वर-गुणाय नमः वानरेन्द्राय नमः विरोचनाय नमः सुग्रीव-सचिवाय नमः श्रीमते नमः १० सूर्य-शिष्याय नमः स्ख-प्रदाय नमः ब्रह्म-दत्त-वराय नमः ब्रह्म-भूताय नमः ब्रह्मर्षि-सन्नुताय नमः जितेन्द्रियाय नमः जितारातये नमः राम-दूताय नमः रणोत्कटाय नमः सञ्जीवनी-समाहर्त्रे नमः २० सर्व-सैन्य-प्रहर्षकाय नमः रावणाकम्प्य-सौमित्रि-नयन-स्फुट-भक्तिमते नमः

अशोक-वनिका-च्छेदिने नमः सीता-वात्सल्य-भाजनाय नमः विषीदद्-भूमि-तनयार्पित-रामाङ्गलीयकाय नमः चूडामणि-समानेत्रे नमः राम-दुःखापहारकाय नमः अक्ष-हन्ने नमः विक्षतारये नमः तृणीकृत-दशाननाय नमः कुल्या-कल्प-महाम्भोधये नमः सिंहिका-प्राण-नाशनाय नमः सुरसा-विजयोपाय-वेत्रे नमः सुर-वरार्चिताय नमः जाम्बवन्नुत-माहात्म्याय नमः जीविताहत-लक्ष्मणाय नमः जम्बुमालि-रिपवे नमः जम्भ-वैरि-साध्वस-नाशनाय नमः अस्रावध्याय नमः राक्षसारये नमः ४० सेनापति-विनाशनाय नमः लङ्कापुर-प्रदग्धे नमः वालानल-सुशीतलाय नमः वानर-प्राण-सन्दात्रे नमः

हनुमदष्टोत्तरशतनामावलिः			99
वालि-सूनु-प्रियङ्कराय नमः		अन्नदाय नमः	90
महारूप-धराय नमः		वसुदाय नमः	
मान्याय नमः		वाग्मिने नमः	
भीमाय नमः		ज्ञान-दाय नमः	
भीम-पराऋमाय नमः		वत्सलाय नमः	
भीम-दर्प-हराय नमः	५०	विशने नमः	
भक्त-वत्सलाय नमः		वशीकृताखिल-जगते नमः	
भर्त्सिताशराय नमः		वरदाय नमः	
रघु-वंश-प्रिय-कराय नमः		वानराकृतये नमः	
रण-धीराय नमः		भिक्षु-रूप-प्रतिच्छन्नाय नमः	
रयाकराय नमः		अभीति-दाय नमः	८०
भरतार्पित-सन्देशाय नमः		भीति-वर्जिताय नमः	
भगवच्छ्रिष्ट-विग्रहाय नमः		भूमी-धर-हराय नमः	
अर्जुन-ध्वज-वासिने नमः		भूति-दायकाय नमः	
तर्जिताशर-नायकाय नमः		भूत-सन्नुताय नमः	
महते नमः	६०	भुक्ति-मुक्ति-प्रदाय नमः	
महा-मधुर-वाचे नमः		भूम्रे नमः	
महात्मने नमः		भुज-निर्जित-राक्षसाय नमः	
मातरिश्व-जाय नमः		वाल्मीकि-स्तुत-माहात्म्याय नम	<b>:</b>
मरुनुताय नमः		विभीषण-सुहृदे नमः	
महोदार-गुणाय नमः		विभवे नमः	९०
मधु-वन-प्रियाय नमः		अनुकम्पा-निधये नमः	
महा-धैर्याय नमः		पम्पा-तीर-चारिणे नमः	
महा-वीर्याय नमः		प्रतापवते नमः	
मिहिराधिक-कान्तिमते नमः		ब्रह्मास्त्र-हत-रामादि-जीवनाय न	मः

ब्रह्म-वत्सलाय नमः जय-वार्ताहराय नमः जेत्रे नमः जानकी-शोक-नाशनाय नमः जानकी-राम-साहित्य-कारिणे नमः जन-सुख-प्रदाय नमः १०० बहु-योजन-गन्ने नमः बल-वीर्य-गुणाधिकाय नमः रावणालय-मर्दिने नमः राम-पादाज्ज-वाहकाय नमः राम-नाम-लसद्-वक्राय नमः रामायण-कथादताय नमः राम-स्वरूप-विलसन्मानसाय नमः राम-वल्लभाय नमः

इत्थम् अष्टोत्तर-शतं नाम्नां वातात्मजस्य यः। अनुसन्थ्यं पठेत् तस्य मारुतिः सम्प्रसीदति। प्रसन्ने मारुतौ रामो भुक्ति-मुक्ती प्रयच्छति॥

॥इति ब्रह्मयामले रामरहस्ये प्रोक्ता श्री-हनुमद्-अष्टोत्तरशत-नामावलिः सम्पूर्णा॥

#### ॥ उत्तराङ्ग-पूजा॥

वनस्पति-रसोद्भूतो गन्धाढ्यो धूप उत्तमः। रामचन्द्र महीपाल धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

# श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-परब्रह्मणे नमः धूपम् आघ्रापयामि।

ज्योतिषां पतये तुभ्यं नमो रामाय वेधसे। गृहाण मङ्गलं दीपं त्रैलोक्य-तिमिरापहम्॥

## श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-परब्रह्मणे नमः अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

ओं भूर्भुवस्सुवः + ब्रह्मणे स्वाहा।

इदं दिव्यान्नम् अमृतं रसैः षङ्गिः समन्वितम्। रामचन्द्रेश नैवेद्यं सीतेश प्रतिगृह्यताम्॥

श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-परब्रह्मणे नमः नैवेद्यं निवेदयामि। मध्ये मध्ये पानीयं समर्पयामि। निवेदनोत्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

> नागवल्ली-दलैर्युक्तं पूगी-फल-समन्वितम्। ताम्बूलं गृह्यतां राम कर्पूरादि-समन्वितम्॥

श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-परब्रह्मणे नमः कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि।

मङ्गलार्थं महीपाल नीराजनमिदं हरे। सङ्गहाण जगन्नाथ रामचन्द्र नमोऽस्तु ते॥

श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-परब्रह्मणे नमः समस्त-अपराध-क्षमापणार्थं समस्त-दुरित-उपशान्त्यर्थं समस्त-सन्मङ्गल-अवास्यर्थं कर्पूर-नीराजनं दर्शयामि। रक्षां धारयामि।

> कल्पवृक्ष-समुद्भूतैः पुरुहूतादिभिः सुमैः। पुष्पाञ्जलिं ददाम्यद्य पूजिताय आशर-द्विषे॥

योऽपां पुष्पं वेदं। पुष्पंवान् प्रजावाँन् पशुमान् भंवति। चन्द्रमा वा अपां पुष्पम्। पुष्पंवान् प्रजावाँन् पशुमान् भंवति। य एवं वेदं। योऽपामायतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति।

> ओं तद्वह्म। ओं तद्वायुः। ओं तदात्मा। ओं तथ्सत्यम्। ओं तथ्सर्वम्। ओं तत्पुरोर्नमः॥

> > अन्तश्चरतिं भूतेषु गुहायां विश्वमूर्तिषु।

त्वं यज्ञस्त्वं वषद्कारस्त्वमिन्द्रस्त्वः रुद्रस्त्वं विष्णुस्त्वं ब्रह्म त्वं प्रजापतिः। त्वं तंदाप आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः सुवरोम्॥

## श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-परब्रह्मणे नमः वेदोक्तमन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

मन्दाकिनी-समुद्भूत-काश्चनाज्ज-स्रजा विभो। सम्मानिताय शक्रेण स्वर्ण-पुष्पं ददामि ते॥

# श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-परब्रह्मणे नमः स्वर्ण-पुष्पम् समर्पयामि।

चराचरं व्याप्नुवन्तम् अपि त्वां रघु-नन्दन। प्रदक्षिणं करोम्यद्य मदग्रे मूर्ति-संयुतम्॥

# श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-परब्रह्मणे नमः प्रदक्षिणं करोमि।

ध्येयं सदा परिभव-घ्रम् अभीष्ट-दोहं तीर्थास्पदं शिव-विरिश्चि-नुतं शरण्यम्। भृत्यार्ति-हं प्रणत-पाल-भवाब्धि-पोतं वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्॥

त्यक्का सुदुस्त्यज-सुरेप्सित-राज्य-लक्ष्मीं धर्मिष्ठ आर्य-वचसा यदगाद् अरण्यम्। माया-मृगं दियतयेप्सितम् अन्वधावत् वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्॥

साङ्गोपाङ्गाय साराय जगतां सनकादिभिः। वन्दिताय वरेण्याय राघवाय नमो नमः ॥

## श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-परब्रह्मणे नमः नमस्कारान् समर्पयामि।

## ॥ प्रार्थना ॥

त्वमक्षरोऽसि भगवन् व्यक्ताव्यक्त-स्वरूप-धृत्। यथा त्वं रावणं हत्वा यज्ञ-विघ्न-करं खलम्। लोकान् रक्षितवान् राम तथा मन्मानसाश्रयम्॥१॥

रजस्तमश्च निर्हत्य त्वत्पूजालस्य-कारकम्। सत्त्वम् उद्रेचय विभो त्वत्पूजादर-सिद्धये॥२॥

विभूतिं वर्षय गृहे पुत्रपौत्राभिवृद्धिकृत्। कल्याणं कुरु मे नित्यं कैवल्यं दिश चान्ततः॥३॥

विधितोऽविधितो वाऽपि या पूजा क्रियते मया। तां त्वं सन्तुष्टहृदयो यथावद् विहितामिव॥४॥

स्वीकृत्य परमेशान मात्रा मे सह सीतया। लक्ष्मणादिभिरप्यत्र प्रसादं कुरु मे सदा॥५॥

प्रार्थनाः समर्पयामि॥

## हनुमत्कृतं श्री-सीता-राम-स्तोत्रम्

अयोध्या-पुर-नेतारं मिथिला-पुर-नायिकाम्। इक्ष्वाकूणाम् अलङ्कारं वैदेहानाम् अलङ्कियाम्॥१॥

रघूणां कुल-दीपं च निमीनां कुल-दीपिकाम्। सूर्य-वंश-समुद्भृतं सोम-वंश-समुद्भवाम्॥२॥

पुत्रं दशरथस्यापि पुत्रीं जनक-भूपतेः। वसिष्ठ-अनुमताचारं शतानन्द-मतानुगाम्॥३॥ कौसल्या-गर्भ-सम्भूतं वेदि-गर्भोदितां स्वयम्। पुण्डरीक-विशालाक्षं स्फुरद्-इन्दीवरेक्षणाम्॥४॥

चन्द्र-कान्त-आननाम्भोजं चन्द्रबिम्ब-उपमाननाम्। मत्त-मातङ्ग-गमनं मत्त-सारस-गामिनीम्॥५॥

चन्दनार्द्र-भुजा-मध्यं कुङ्कुमाक्त-कुच-स्थलीम्। चापालङ्कृत-हस्ताङ्गं पद्मालङ्कृत-पाणिकाम्॥६॥

शरणागतगोप्तारं प्रणिपातप्रसादिकाम्। ताली-दल-श्यामलाङ्गं तप्त-चामीकर-प्रभाम्॥७॥

दिव्य-सिंहासनारूढं दिव्य-स्नग्-वस्न-भूषणाम्। अनुक्षणं कटाक्षाभ्याम् अन्योन्य-ईक्षण-काङ्किणौ॥८॥

अन्योन्य-सदशाकारौ त्रैलोक्य-गृह-दम्पती। इमौ युवां प्रणम्याहं भजाम्यद्य कृतार्थताम्॥९॥

अनया स्तोति यः स्तुत्या रामं सीतां च भक्तितः। तस्य तौ तनुतां प्रीतौ सम्पदः सकला अपि॥१०॥

इतीदं रामचन्द्रस्य जानक्याश्च विशेषतः। कृतं हनुमता पुण्यं स्तोत्रं सद्यो विमुक्ति-दम्। यः पठेत्प्रातरुत्थाय सर्वान् कामानवाप्नुयात्॥११॥ ॥इति श्री-हनूमत्कृतं श्री-सीतारामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

एकातपत्रच्छायायां शासिताशेषभूमिक। मम छत्रमिदं रत्नजालकं राम गृह्यताम्॥

छत्रम् समर्पयामि।

रक्षोराजानुजाभ्यां ते कृतं चामरसेवया। वीजयेऽहं कराभ्यां ते चामरद्वयमादरात्॥

#### चामरम् वीजयामि।

रामायणं साधु गीतं सुताभ्यां श्रुतवानसि। मयाऽपि गीयमानं ते स्तोत्रं चित्ताय रोचताम्॥

#### गीतम् गायामि।

वीणावेणुमृदङ्गादिवाद्यैस्त्वां प्रीणयाम्यहम्। मददम्भाहङ्कृतीनां नाशको भव राघव॥

#### वाद्यम् घोषयामि।

आरुह्य सीतया सार्धं दत्तामान्दोलिकां मया। विभाहि भूषितो राम मत्कृते पूजनोत्सवे॥

#### आन्दोलिकां समर्पयामि।

मया कल्पितपल्याणं महान्तं मम घोटकम्। मदंसे चरणं न्यस्य मुदाऽऽरोह रघूत्तम॥

#### अश्वान् आरोहयामि।

गजेन महताऽऽयान्तमाकाङ्कान्ति स्म नागराः। द्रष्टुं त्वां मगजे भाहि दृष्ट्वा नन्देयमप्यहम्॥

#### गजान् आरोहयामि।

#### समस्तराजोपचारदेवोपचारपूजाः समर्पयामि।

मनसा वचसा कायेनागसां शतमन्वहम्। धियाऽधिया च रचये क्षमस्व सहजक्षम॥

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्। पूजाविधिं न जानामि क्षमस्व पुरुषोत्तम॥

## ॥ अर्घ्य-प्रदानम्॥

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवणं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविद्रोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुव्रोम्।

ममोपात्त + प्रीत्यर्थम् अद्य पूर्वोक्त + शुभितथौ श्रीरामचन्द्रपूजान्ते अर्घ्यप्रदानं करिष्ये (इति सङ्कल्प्य)।

राम रात्रिश्चराराते क्षीरमध्वाज्यकल्पितम्। पूजान्तेऽर्घ्यं मया दत्तं स्वीकृत्य वरदो भव॥

श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-परब्रह्मणे नमः इदमर्घ्यं इदमर्घ्यं इदमर्घ्यम्॥

अनेनार्ध्यप्रदानेन श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्रः प्रीयताम्।

> हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अनन्तपुण्यफलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

श्री-रामनवमी-पुण्यकाले अस्मिन् मया क्रियमाण-श्रीरामपूजायां यद्देयमुपायनदानं तत्प्रतिनिधित्वेन हिरण्यं

श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-प्रीतिं कामयमानः मनसोद्दिष्टाय ब्राह्मणाय सम्प्रददे नमः न मम।

अनया पूजया श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्रः प्रीयताम्।

## ॥ विसर्जनम्॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपः-पूजा-क्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

इदं व्रतं मया देव कृतं प्रीत्ये तव प्रभो। न्यूनं सम्पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादाञ्जनाईन॥

अस्मात् बिम्बात् श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्रं यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। (अक्षतानर्पित्वा देवमुत्सर्जयेत्।)

> कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्। करोमि यद्यत् सकलं परस्मे नारायणायेति समर्पयामि॥

अनया पूजया श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्रः प्रीयताम्। ॐ तत्सद्बह्मार्पणमस्तु।



## ॥ श्री-शङ्कर-भगवत्पाद-पूजा॥

## ॥ पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा॥

(आचम्य)

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवणं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुव्रोम्। (अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा) ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः अविघ्रेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्रेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गृणानां त्वा गृणपंति १ हवामहे कविं कवीनाम्प्रमश्रवस्तमम्। ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत् आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद् सादेनम्॥

अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।
ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।
पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरघ्यं समर्पयामि।
आचमनीयं समर्पयामि।
ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।
स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।
वस्नार्थमक्षतान् समर्पयामि।
यज्ञोपवीताभरणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।
दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।
गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

## पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

#### ॥ अर्चना ॥

१. ॐ सुमुखाय नमः

९. ॐ धूमकेतवे नमः

२. ॐ एकदन्ताय नमः

१०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः

३. ॐ कपिलाय नमः

११. ॐ फालचन्द्राय नमः

४. ॐ गजकर्णकाय नमः

१२. ॐ गजाननाय नमः

५. ॐ लम्बोदराय नमः

१३. ॐ वऋतुण्डाय नमः

६. ॐ विकटाय नमः

१४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः

७. ॐ विघ्नराजाय नमः १५. ॐ हेरम्बाय नमः

८. ॐ विनायकाय नमः

१६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाघ्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्प्रनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वऋतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ। अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि। छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

## ॥ प्रधान-पूजा — श्री-शङ्कर-भगवत्पाद-पूजा॥

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

#### ॥सङ्कल्पः॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते अद्य ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे किलयुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकाणां प्रभवादीनां षष्ट्याः संवत्सराणां मध्ये () । विशेष नाम संवत्सरे उत्तरायणे वसन्तऋतौ मेष/वृषभ-वैशाख-मासे शुक्लपक्षे पश्चम्यां शुभितथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर / भानु) वासरयुक्तायाम् (आर्द्रा/?) । करण-युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्यां पश्चम्यां शुभितिथौ श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम्

- उत्तराषाढा-नक्षत्रे धनूराशौ आविर्भूतानां श्रीमत्-शङ्कर-विजयेन्द्र-सरस्वती-श्रीपादानां, शतिभेषङ्-नक्षत्रे कुम्भ-राशौ आविर्भूतानां श्रीमत्-सत्य-चन्द्रशेखरेन्द्र-सरस्वती-श्रीपादानाम् अस्माकं जगद्गुरूणां दीर्घ-आयु:-आरोग्य-सिद्धार्थं,
- तैः सङ्कल्पितानां सर्वेषां लोक-क्षेमार्थ-कार्याणां वेद-शास्त्रादि-सम्प्रदाय-पोषण-कार्याणां विविध-क्षेत्र-यात्रायाश्च अविघ्नतया सम्पूर्त्यर्थं
- कामकोटि-गुरु-परम्परायां कामकोटि-भक्त-जनानाम् अचश्रल-भावशुद्ध-दृढतर-भक्ति-सिद्धार्थं, परस्पर-ऐकमत्य-सिद्धार्थं

<sup>&</sup>lt;sup>१३</sup>पृष्टं ६२१ पश्यताम्

१४ पृष्टं ६३१ पश्यताम्

१५पृष्टं ६३२ पश्यताम्

- भारतीयानां महाजनानां विघ्न-निवृत्ति-पूर्वक-सत्कार्य-प्रवृत्ति-द्वारा ऐहिक-आमुष्मिक-अभ्युदय-प्राप्त्यर्थम्, असत्कार्येभ्यः निवृत्त्यर्थं
- भारतीयानां सन्ततेः सनातन-सम्प्रदाये श्रद्धा-भक्त्योः अभिवृद्ध्यर्थं
- सर्वेषां द्विपदां चतुष्पदाम् अन्येषां च प्राणि-वर्गाणाम् आरोग्य-युक्त-सुख-जीवन-अवाह्यर्थम्
- अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय-आयुरारोग्य-ऐश्वर्याभिवृद्धर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्धर्थं पुत्रपौत्राभि-वृद्धर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्धर्थं विवेक-वैराग्य-सिद्धर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय-व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्य अपनोदनद्वारा सकल-पापक्षयार्थं

श्रीमत्-शङ्करभगवत्पाद-प्रीत्यर्थं श्री-शङ्कर-जयन्ती-महोत्सवे यथाशक्ति-ध्यान-आवाहनादि-षोडशोपचारैः श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्य-पूजां करिष्ये। तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। (गणपति-प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

#### ॥ आसन-पूजा॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चासनं कुरु॥

#### ॥ घण्टा-पूजा॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्। घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥ ओम्॥

#### ॥ कलश-पूजा॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः। ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि। (अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्) आपो वा इद सर्वृ विश्वां भूतान्यापः प्राणा वा आपः पृशव् आपोऽन्नमापोऽमृत्मापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापृश्छन्दा्र्स्यापो ज्योती्र्थ्यापो यज्र्थ्थ्यापः स्त्यमापः सर्वां देवता आपो भूर्भुवः सुवराप

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः। अङ्गेश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च ह्रदा नदाः। आयान्तु श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्याःपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥ ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवंः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

#### ॥ आत्म-पूजा॥

#### ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

१. ॐ आत्मने नमः ४. ॐ जीवात्मने नमः

२. ॐ अन्तरात्मने नमः ५. ॐ परमात्मने नमः

३. ॐ योगात्मने नमः ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः

#### समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः। त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

## ॥ पीठ-पूजा॥

१. ॐ आधारशक्त्ये नमः ८. ॐ रत्नवेदिकाये नमः

२. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः

३. ॐ आदिकूर्माय नमः १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः

४. ॐ आदिवराहाय नमः ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः

५. ॐ अनन्ताय नमः १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः

६. ॐ पृथिव्यै नमः १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः

७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः १४. ॐ योगपीठासनाय नमः

#### ॥ गुरु-ध्यानम्॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

## ॥ षोडशोपचार-पूजा॥ ॥ प्रधान-पूजा॥

श्रुति-स्मृति-पुराणानाम् आलयं करुणालयम्। नमामि भगवत्पाद-शङ्करं लोक-शङ्करम्॥ श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्यान् ध्यायामि।

अज्ञानान्तर्गहन-पतितान् आत्म-विद्योपदेशैः त्रातुं लोकान् भव-दव-शिखा-ताप-पापच्यमानान्। मुक्का मौनं वट-विटपिनो मूलतो निष्पतन्ती शम्भोमूर्तिश्चरति भुवने शङ्कराचार्य-रूपा॥

नर्मस्ते रुद्र मृन्यवं उतो त् इषंवे नर्मः। नर्मस्ते अस्तु धन्वंने बाहुभ्यांमुत ते नर्मः॥

ॐ हीं नुमः शिवायं। सुद्योजातं प्रंपद्यामि।

यमाश्रिता गिरां देवी नन्दयत्यात्म-संश्रितान्। तमाश्रये श्रिया जुष्टं शङ्करं करुणा-निधिम्॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्यान् आवाहयामि।

या त इषुंः शिवतंमा शिवं बुभूवं ते धनुंः। शिवा शर्य्यां या तव तयां नो रुद्र मृडय॥

ॐ हीं नमः शिवायं। सद्योजाताय वै नमो नमंः।

श्री-गुरुं भगवत्पादं शरण्यं भक्त-वत्सलम्। शिवं शिव-करं शुद्धम् अप्रमेयं नमाम्यहम्॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, आसनं समर्पयामि।

नित्यं शुद्धं निराकारं निराभासं निरञ्जनम्। नित्य-बोधं चिदानन्दं गुरुं ब्रह्म नमाम्यहम्॥ श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, स्वागतं व्याहरामि। पूर्ण-कुम्भं समर्पयामि।

या तें रुद्र शिवा तुनूरघोराऽपांपकाशिनी। तयां नस्तुनुवा शन्तंमया गिरिंशन्ताभिचांकशीहि॥

ॐ हीं नुमः शिवायं। भवे भवे नाति भवे भवस्व माम्।

सर्व-तन्न-स्व-तन्नाय सदात्माद्वैत-रूपिणे। श्रीमते शङ्करार्याय वेदान्त-गुरवे नमः॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, पाद्यं समर्पयामि।

यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभुर्घ्यस्तंवे। शिवां गिरित्र तां कुंरु मा हिर्सीः पुरुषं जगत्॥

ॐ हीं नुमः शिवायं। भ्वोद्भवाय नर्मः॥

वेदान्तार्थाभिधानेन सर्वानुग्रह-कारिणम्। यति-रूप-धरं वन्दे शङ्करं लोक-शङ्करम्॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, अर्घ्यं समर्पयामि। शिवेन वर्चसा त्वा गिरिशाच्छांवदामसि। यथां नः सर्वृमिञ्जगंदयक्ष्म र सुमना असंत्॥

ॐ हीं नुमः शिवायं। वामुदेवाय नर्मः।

संसाराब्धि-निषण्णाज्ञ-निकर-प्रोद्दिधीर्षया। कृत-संहननं वन्दे भगवत्पाद-शङ्करम्॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, आचमनीयं समर्पयामि। श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, मधुपर्कं समर्पयामि। अध्यंवोचदिधवृक्ता प्रंथमो दैव्यो भिषक्। अही ईश्च सर्वांश्चम्भय्-स्थार्वांश्च यातुधान्यः॥ ॐ हीं नुमः शिवाये। ज्येष्ठाय नर्मः।

यत्-पाद-पङ्कज-ध्यानात् तोटकाद्या यतीश्वराः। बभूवुस्तादृशं वन्दे शङ्करं षण्मतेश्वरम्॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, स्नपयामि।

(श्रीरुद्र-चमक-पुरुषसूक्त-उपनिषद्भिः स्नापयित्वा) स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

असौ यस्ताम्रो अंरुण उत बुभुः सुंमुङ्गलंः। ये चेमा॰ रुद्रा अभितों दिक्षु श्रिताः संहस्रशोऽवैषा॰ हेर्ड ईमहे॥ ॐ हीं नमः शिवार्य। श्रेष्ठाय नमंः।

> नमः श्री-शङ्कराचार्य-गुरवे शङ्करात्मने। शरीरिणां शङ्कराय शङ्कर-ज्ञान-हेतवे॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, वस्त्रं समर्पयामि। असौ योऽवसर्पति नीलंग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा अंदशृत्रदंशन्नुदहार्यः। उतैनं विश्वां भूतानि स दृष्टो मृंडयाति नः॥ ॐ हीं नमः शिवायं। रुद्राय नमंः।

> हर-लीलावताराय शङ्कराय वरौजसे। कैवल्य-कलना-कल्प-तरवे गुरवे नमः॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि। प्रचार्यं सर्व-लोकेषु सञ्चार्यं हृदयाम्बुजे। विचार्यं सर्व-वेदान्तैः आचार्यं शङ्करं भजे॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, भस्मोद्धूलनं रुद्राक्ष-मालिकां च समर्पयामि। नमों अस्तु नीलंग्रीवाय सहस्राक्षायं मीढुषें। अथो ये अस्य सत्वांनोऽहं तेभ्योंऽकरं नमंः॥

ॐ हीं नुमः शिवाये। कालाय नर्मः।

याऽनुभूतिः स्वयं-ज्योतिः आदित्येशान-विग्रहा। शङ्कराख्या च तं नौमि सुरेश्वर-गुरुं परम्॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, दिव्य-परिमल-गन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्रा-कुङ्कमं समर्पयामि।

> आनन्द-घनमद्बन्द्वं निर्विकारं निरञ्जनम्। भजेऽहं भगवत्पादं भजतामभय-प्रदम्॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, दण्डं समर्पयामि। प्र मुंश्च धन्वंनुस्त्वमुभयोरार्ह्नियोर्ज्याम्। याश्चं ते हस्त इषंवः परा ता भंगवो वप॥

> ॐ हीं नुमः शिवायं। कलंविकरणाय नर्मः। तं वन्दे शङ्कराचार्यं लोक-त्रितय-शङ्करम्। सत्-तर्क-नखरोद्गीर्ण-वावदूक-मतङ्गजम्॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

अवतत्य धनुस्त्व सहंस्राक्ष शतंषुधे। निशीर्य श्रल्यानां मुखां शिवो नंः

सुमनां भव॥

ॐ हीं नुमः शिवायं। बलंविकरणायु नर्मः।

नमामि शङ्कराचार्य-गुरु-पाद-सरोरुहम्। यस्य प्रसादान्मूढोऽपि सर्व-ज्ञो भवति स्वयम्॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, पुष्प-मालां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

## श्री-शङ्कर-चतुर्विंशति-नामावल्या अङ्ग-पूजा

अष्ट-वर्ष-चतुर्वेदिने नमः የ. द्वादशाखिल-शास्त्र-विदे नमः २. सर्व-लोक-ख्यात-शीलाय नमः ₹. प्रस्थान-त्रय-भाष्य-कृते नमः 8. पद्मपादादि-सच्छिष्याय नमः ٤. पाषण्ड-ध्वान्त-भास्कराय नमः €. अद्वैत-स्थापनाचार्याय नमः 6 द्वैतादि-द्विप-केसरिणे नमः ۷. व्यास-नन्दित-सिद्धान्ताय नमः वाद-निर्जित-मण्डनाय नमः १०. षण्मत-स्थापनाचार्याय नमः 88. षड्-गुणैश्वर्य-मण्डिताय नमः १२. सर्व-लोकानुग्रह-कृते नमः १३. सर्व-ज्ञ-त्वादि-भूषणाय नमः १४. श्रुति-स्मृति-पुराणार्थाय नमः १५. श्रुत्येक-शरण-प्रियाय नमः १६. सकृत्-स्मरण-सन्तुष्टाय नमः .08 १८. शरणागत-वत्सलाय नमः निर्व्याज-करुणा-मूर्तये नमः 89. निरहम्भाव-गोचराय नमः २०. संशान्त-भक्त-हृत्-तापाय नमः २१. सर्व-ज्ञान-फल-प्रदाय नमः २२. सदसद्-वस्तु-विमुखाय नमः

सत्ता-सामान्य-विग्रहाय नमः

२३.

२४.

पादौ पूजयामि गुल्फो पूजयामि जङ्घे पूजयामि जानुनी पूजयामि ऊरू पूजयामि कटिं पूजयामि गुह्यं पूजयामि नाभिं पूजयामि उदरं पूजयामि वक्षःस्थलं पूजयामि हृदयं पूजयामि कण्ठं पूजयामि स्कन्धौ पूजयामि हस्तौ पूजयामि वऋं पूजयामि चिबुकं पूजयामि ओष्ठौ पूजयामि कपोलौ पूजयामि नासिकां पूजयामि नेत्रे पूजयामि कर्णी पूजयामि ललाटं पूजयामि शिरः पूजयामि सर्वाण्यङ्गानि पूजयामि

## ॥ आदिशङ्कराचार्याष्टोत्तरशतनामाविलः॥

२०

श्रीशङ्कराचार्यवर्याय नमः ब्रह्मज्ञानप्रदायकाय नमः अज्ञानतिमिरादित्याय नमः स्ज्ञानाम्बुधिचन्द्रमसे नमः वर्णाश्रमप्रतिष्ठात्रे नमः श्रीमते नमः मुक्तिप्रदायकाय नमः शिष्योपदेशनिरताय नमः भक्ताभीष्टप्रदायकाय नमः सूक्ष्मतत्त्वरहस्यज्ञाय नमः१० कार्याकार्यप्रबोधकाय नमः ज्ञानमुद्राश्चितकराय नमः शिष्य-हृत्ताप-हारकाय नमः परिव्राज्याश्रमोद्धर्त्रे नमः सर्वतत्रस्वतत्रधिये नमः अद्वेतस्थापनाचार्याय नमः साक्षाच्छङ्कररूपभृते नमः षण्मतस्थापनाचार्याय नमः त्रयीमार्गप्रकाशकाय नमः वेदवेदान्ततत्त्वज्ञाय नमः दुर्वादिमतखण्डनाय नमः वैराग्यनिरताय नमः शान्ताय नमः

संसारार्णवतारकाय नमः प्रसन्नवदनाम्भोजाय नमः परमार्थप्रकाशकाय नमः पुराणस्मृतिसारज्ञाय नमः नित्यतृप्ताय नमः महते नमः श्चये नमः 30 नित्यानन्दाय नमः निरातङ्काय नमः निःसङ्गाय नमः निर्मलात्मकाय नमः निर्ममाय नमः निरहङ्काराय नमः विश्ववन्द्यपदाम्बुजाय नमः सत्त्वप्रधानाय नमः सद्भावाय नमः सङ्ख्यातीतगुणोञ्चलाय नमः 80 अनघाय नमः सारहृदयाय नमः स्धिये नमः सारस्वतप्रदाय नमः सत्यात्मने नमः पुण्यशीलाय नमः

साङ्ख्ययोगविचक्षणाय नमः		विश्वरञ्जकाय नमः
तपोराशये नमः		स्वप्रकाशाय नमः
महातेजसे नमः		सदाधाराय नमः
गुणत्रयविभागविदे नमः	५०	विश्वबन्धवे नमः
कलिघ्नाय नमः		शुभोदयाय नमः
कालधर्मज्ञाय नमः		विशालकीर्तये नमः
तमोगुणनिवारकाय नमः		वागीशाय नमः
भगवते नमः		सर्वलोकहितोत्सुकाय नमः
भारतीजेत्रे नमः		कैलासयात्रा-सम्प्राप्तचन्द्रमौलि-
शारदाह्वानपण्डिताय नमः		प्रपूजकाय नमः ८०
धर्माधर्मविभागज्ञाय नमः		काञ्चां श्रीचऋराजाख्य-यत्रस्थापन-
लक्ष्यभेदप्रदर्शकाय नमः		दीक्षिताय नमः
नादबिन्दुकलाभिज्ञाय नमः		श्रीचऋात्मक-ताटङ्क-पोषिताम्बा-
योगिहृत्पद्मभास्कराय नमः	६०	मनोरथाय नमः
अतीन्द्रिय-ज्ञाननिधये नमः		श्रीब्रह्मसूत्रोपनिषद्भाष्यादिग्रन्थ-
नित्यानित्यविवेकवते नमः		कल्पकाय नमः
चिदानन्दाय नमः		चतुर्दिक्रतुराम्नायप्रतिष्ठात्रे नमः
चिन्मयात्मने नमः		महामतये नमः
परकायप्रवेशकृते नमः		द्विसप्ततिमतोच्छेत्रे नमः
अमानुष-चरित्राढ्याय नमः		सर्वदिग्विजयप्रभवे नमः
क्षेमदायिने नमः		काषायवसनोपेताय नमः
क्षमाकराय नमः		भस्मोद्धूलितविग्रहाय नमः
भवाय नमः		ज्ञानात्मकैकदण्डाढ्याय नमः ९०
भद्रप्रदाय नमः	90	कमण्डलुलसत्कराय नमः
भूरिमहिम्ने नमः		व्याससन्दर्शनप्रीताय नमः
		•

भगवत्पादसंज्ञकाय नमः चतुःषष्टिकलाभिज्ञाय नमः ब्रह्मराक्षस-मोक्षदाय नमः सौन्दर्यलहरीमुख्यबहुस्तोत्रविधाय-काय नमः श्रीमन्मण्डनमिश्राख्यस्वयम्भूजय-सन्नुताय नमः तोटकाचार्यसम्पूज्याय नमः पद्मपादार्चिताङ्किकाय नमः हस्तामलकयोगीन्द्रब्रह्मज्ञान-प्रदायकाय नमः सुरेश्वरादि-सच्छिष्य-सन्न्यासाश्रम-दायकाय नमः निर्व्याजकरुणामूर्तये नमः जगत्पूज्याय नमः जगद्गुरवे नमः भेरीपटहवाद्यादिराजलक्षण-लक्षिताय नमः सकृत्स्मरणसन्तुष्टाय नमः सर्वज्ञाय नमः ज्ञानदायकाय नमः १०८ श्रीशङ्करभगवत्पादाचार्येभ्यो नमः

॥इति श्री-आदिशङ्कराचार्याष्टोत्तरशतनामाविलः सम्पूर्णा॥

## आचार्यपरम्परानामाविलः

## ॥ पूर्वाचार्याः ॥

- १. श्रीमते दक्षिणामूर्तये नमः
- २. श्रीमते विष्णवे नमः
- ३. श्रीमते ब्रह्मणे नमः
- ४. श्रीमते वसिष्ठाय नमः
- ५. श्रीमते शक्तये नमः
- ६. श्रीमते पराशराय नमः
- ७. श्रीमते व्यासाय नमः
- ८. श्रीमते शुकाय नमः
- ९. श्रीमते गौडपादाय नमः

- १०. श्रीमते गोविन्द-भगवत्पादाय नमः
- ११. श्रीमते शङ्कर-भगवत्पादाय नमः

#### ॥ भगवत्पादशिष्याः ॥

- १. श्रीमते पद्मपादाचार्याय नमः
- २. श्रीमते सुरेश्वराचार्याय नमः
- ३. श्रीमते हस्तामलकाचार्याय नमः
- ४. श्रीमते तोटकाचार्याय नमः
- ५. श्रीमते पृथिवीधवाचार्याय नमः
- ६. श्रीमते सर्वज्ञात्म-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ७. अन्येभ्यः भगवत्पाद-शिष्येभ्यो नमः

#### ॥ कामकोटि-आचार्याः ॥

- १. श्रीमते शङ्कर-भगवत्पादाय नमः
- २. श्रीमते सुरेश्वराचार्याय नमः
- ३. श्रीमते सर्वज्ञात्म-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ४. श्रीमते सत्यबोध-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ५. श्रीमते ज्ञानानन्द-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ६. श्रीमते शृद्धानन्द-इन्द्रसरस्वत्ये नमः
- ७. श्रीमते आनन्दज्ञान-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ८. श्रीमते कैवल्यानन्द-इन्द्रसरस्वत्ये नमः
- ९. श्रीमते कृपाशङ्कर-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- १०. श्रीमते विश्वरूप-सुरेश्वर-इन्द्रसरस्वत्ये नमः
- ११. श्रीमते शिवानन्द-चिद्धन-इन्द्रसरस्वत्ये नमः
- १२. श्रीमते सार्वभौम-चन्द्रशेखर-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- १३. श्रीमते काष्ठमौन-सचिद्धन-इन्द्रसरस्वत्ये नमः

- १४. श्रीमते भैरवजिद्-विद्याघन-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- १५. श्रीमते गीष्पति-गङ्गाधर-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- १६. श्रीमते उज्ज्वलशङ्कर-इन्द्रसरस्वत्ये नमः
- १७. श्रीमते गौड-सदाशिव-इन्द्रसरस्वत्ये नमः
- १८. श्रीमते सुर-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- १९. श्रीमते मार्तण्ड-विद्याघन-इन्द्रसरस्वत्ये नमः
- २०. श्रीमते मूकशङ्कर-इन्द्रसरस्वत्ये नमः
- २१. श्रीमते जाह्नवी-चन्द्रचूड-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- २२. श्रीमते परिपूर्णबोध-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- २३. श्रीमते सचित्सुख-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- २४. श्रीमते कोङ्कण-चित्सुख-इन्द्रसरस्वत्ये नमः
- २५. श्रीमते सचिदानन्दघन-इन्द्रसरस्वत्ये नमः
- २६. श्रीमते प्रज्ञाघन-इन्द्रसरस्वत्ये नमः
- २७. श्रीमते चिद्विलास-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- २८. श्रीमते महादेव-इन्द्रसरस्वत्ये नमः
- २९. श्रीमते पूर्णबोध-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ३०. श्रीमते भक्तियोग-बोध-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ३१. श्रीमते शीलनिधि-ब्रह्मानन्दघन-इन्द्रसरस्वत्ये नमः
- ३२. श्रीमते चिदानन्दघन-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ३३. श्रीमते भाषापरमेष्ठि-सचिदानन्दघन-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ३४. श्रीमते चन्द्रशेखर-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ३५. श्रीमते बह्रूप-चित्सुख-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ३६. श्रीमते चित्सुखानन्द-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ३७. श्रीमते विद्याघन-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ३८. श्रीमते धीरशङ्कर-इन्द्रसरस्वत्यै नमः

- ३९. श्रीमते सचिद्विलास-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ४०. श्रीमते शोभन-महादेव-इन्द्रसरस्वत्ये नमः
- ४१. श्रीमते गङ्गाधर-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ४२. श्रीमते ब्रह्मानन्दघन-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ४३. श्रीमते आनन्दघन-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ४४. श्रीमते पूर्णबोध-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ४५. श्रीमते परमशिव-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ४६. श्रीमते सान्द्रानन्द-बोध-इन्द्रसरस्वत्ये नमः
- ४७. श्रीमते चन्द्रशेखर-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ४८. श्रीमते अद्वैतानन्दबोध-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ४९. श्रीमते महादेव-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ५०. श्रीमते चन्द्रचूड-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ५१. श्रीमते विद्यातीर्थ-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ५२. श्रीमते शङ्करानन्द-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
  - श्रीमते अद्वैतब्रह्मानन्दाय नमः
  - श्रीमते विद्यारण्याय नमः
  - अन्येभ्यः विद्यातीर्थ-शङ्करानन्द-शिष्येभ्यो नमः
- ५३. श्रीमते पूर्णानन्द-सदाशिव-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ५४. श्रीमते व्यासाचल-महादेव-इन्द्रसरस्वत्ये नमः
- ५५. श्रीमते चन्द्रचूड-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ५६. श्रीमते सदाशिवबोध-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ५७. श्रीमते परमशिव-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
  - श्रीमते सदाशिवब्रह्म-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ५८. श्रीमते विश्वाधिक-आत्मबोध-इन्द्रसरस्वत्ये नमः
- ५९. श्रीमते भगवन्नाम-बोध-इन्द्रसरस्वत्यै नमः

- ६०. श्रीमते अद्वैतात्मप्रकाश-इन्द्रसरस्वत्ये नमः
- ६१. श्रीमते महादेव-इन्द्रसरस्वत्ये नमः
- ६२. श्रीमते शिवगीतिमाला-चन्द्रशेखर-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ६३. श्रीमते महादेव-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ६४. श्रीमते चन्द्रशेखर-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ६५. श्रीमते सुदर्शन-महादेव-इन्द्रसरस्वत्ये नमः
- ६६. श्रीमते चन्द्रशेखर-इन्द्रसरस्वत्ये नमः
- ६७. श्रीमते महादेव-इन्द्रसरस्वत्ये नमः
- ६८. श्रीमते चन्द्रशेखर-इन्द्रसरस्वत्ये नमः
- ६९. श्रीमते जयेन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ७०. श्रीमते शङ्करविजयेन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ७१. श्रीमते सत्य-चन्द्रशेखरेन्द्रसरस्वत्यै नमः

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, नानाविध-परिमल-पत्र-पुष्पाणि समर्पयामि।

विज्यं धर्नुः कप्रदिनो विशंल्यो बाणंवा उत्। अनेशन्नस्येषंव आभुरंस्य निषुङ्गिधेः॥

🕉 ह्रीं नमः शिवायं। बलाय नर्मः।

संसार-सागरं घोरम् अनन्त-क्लेश-भाजनम्। त्वामेव शरणं प्राप्य निस्तरन्ति मनीषिणः॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, धूपम् आघ्रापयामि। या ते हेतिर्मीढुष्टम् हस्ते बुभूवं ते धनुः। तयाऽस्मान् विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिञ्जुज॥

ॐ हीं नमः शिवायं। बलंप्रमथनाय नर्मः।

नमस्तस्मै भगवते शङ्कराचार्य-रूपिणे। येन वेदान्त-विद्येयम् उद्धृता वेद-सागरात्॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, दीपं दर्शयामि। ॐ भूर्भुवः सुवंः। + ब्रह्मणे स्वाहाँ। नमंस्ते अस्त्वायुधायानांतताय धृष्णवेँ। उभाभ्यांमुत ते नमों बाहुभ्यां तव धन्वने॥ ॐ हीं नमः शिवायं। सर्वभूतदमनाय नमंः। भगवत्पाद-पादाज्ज-पांसवः सन्तु सन्ततम्।

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, अमृतं महानैवेद्यं पानीयं च निवेदयामि। मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि। अमृतापिधानमसि। हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। पादप्रक्षालनं समर्पयामि। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

अपारासार-संसार-सागरोत्तार-सेतवः

परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्त विश्वतः। अथो य इंषुधिस्तवाऽऽरे अस्मन्नि धेहि तम्॥

ॐ हीं नुमः शिवायं। मुनोन्मनाय नर्मः।

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, ताम्बूलं समर्पयामि। नमस्ते अस्तु भगवन् विश्वेश्वरायं महादेवायं त्र्यम्बकायं त्रिपुरान्तकायं त्रिकाग्निकालायं कालाग्निरुद्रायं नीलकुण्ठायं मृत्युञ्जयायं सर्वेश्वरायं सदाशिवायं श्रीमन्महादेवाय नमः॥

> अज्ञान-तिमिरान्थस्य ज्ञानाञ्जन-शलाकया। चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, नीराजनं दर्शयामि। नीराजनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि। श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, समस्तोपचारान् समर्पयामि। यानि कानि च पापानि जन्मान्तर-कृतानि च। तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण-पदे पदे॥ प्रदक्षिणं कृत्वा।

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, प्रदक्षिणं करोमि। आचार्यान् भगवत्पादान् षण्मत-स्थापकान् हितान्। परहंसान् नुमोऽद्वैत-स्थापकान् जगतो गुरून्॥ श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, नमस्कारान् समर्पयामि। गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुरेव परं ब्रह्म तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

> अखण्ड-मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्। तत्-पदं दर्शितं येन तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

अनेक-जन्म-सम्प्राप्त-कर्म-बन्ध-विदाहिने। आत्म-ज्ञान-प्रदानेन तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

विशुद्ध-विज्ञान-घनं शुचिं हार्द-तमोनुदम्। दया-सिन्धुं लोक-बन्धुं शङ्करं नौमि सद्-गुरुम्॥

देह-बुद्धा तु दासोऽस्मि जीव-बुद्धा त्वदंशकः। आत्म-बुद्धा त्वमेवाहमिति मे निश्चिता मतिः॥

एकः शाखी शङ्कराख्यश्चतुर्धा स्थानं भेजे ताप-शान्त्यै जनानाम्। शिष्य-स्कन्धेः शिष्य-शाखैर्महद्भिः ज्ञानं पुष्पं यत्र मोक्षः प्रसूतिः॥ गामाऋम्य पदेऽधिकाश्चि निबिडं स्कन्धैश्चतुर्भिस्तथा व्यावृण्वन् भुवनान्तरं परिहरंस्तापं स-मोह-ज्वरम्। यः शाखी द्विज-संस्तुतः फलित तत् स्वाद्यं रसाख्यं फलं तस्मै शङ्कर-पादपाय महते तन्मस्त्रि-सन्ध्यं नमः॥ श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, स्तोत्रं समर्पयामि। प्रार्थनाः समर्पयामि।

गुरु-पादोदक-प्राशनम्—

अविद्या-मूल-नाशाय जन्म-कर्म-निवृत्तये। ज्ञान-वैराग्य-सिद्धर्थं गुरु-पादोदकं शुभम्॥



## ॥स्वस्ति-वचनम्/गुरुवन्दनम्॥

॥ॐ श्री-गुरुभ्यो नमः॥ ॥श्री-महात्रिपुरसुन्दरी-समेत-श्री-चन्द्रमौलीश्वराय नमः॥ ॥श्री-काश्ची-कामकोटि-पीठाधिपति-जगद्गुरु-श्री-शङ्कराचार्य-श्री-चरणयोः प्रणामाः॥

#### स्वस्ति

श्रीमद्-अखिल-भूमण्डलालङ्कार-त्रयस्त्रिंशत्-कोटि-देवता-सेवित-श्री-कामाक्षी-देवी-सनाथ-श्रीमद्-एकाम्रनाथ-श्री-महादेवी-सनाथ-श्री-हस्तिगिरिनाथ-साक्षात्कार-परमाधिष्ठान-सत्यव्रत-नामाङ्कित-काश्री-दिव्य-क्षेत्रे, शारदामठ-सुस्थितानाम्, अतुलित-सुधारस-माधुर्य-कमलासन-कामिनी-धम्मिल्ल-सम्फुल्ल-मिल्लका-मालिका-निःष्यन्द-मकरन्द-झरी-सौवस्तिक-वाङ्गिगुम्फ-विजृम्भणानन्द-तुन्दिलित-मनीषि-मण्डलानाम्, अनवरताद्वैत-विद्या-विनोद-रसिकानां निरन्तरालङ्कृतीकृत-शान्ति-दान्ति-भूम्नाम्,
सकल-भुवन-चक्र-प्रतिष्ठापक-श्रीचक्र-प्रतिष्ठा-विख्यात-यशोऽलङ्कृतानाम्,
निखिल-पाषण्ड-षण्ड-कण्टकोत्पाटनेन
विशदीकृत-वेद-वेदान्त-मार्ग-षण्मत-प्रतिष्ठापकाचार्याणाम्,
परमहंस-परिव्राजकाचार्यवर्य-जगद्गुरु-श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादा-चार्याणाम्,
अधिष्ठाने सिंहासनाभिषिक्त-श्रीमद्-जयेन्द्र-सरस्वती-श्रीपादानाम्,
अन्ते-वासि-वर्य-श्रीमत्-शङ्कर-विजयेन्द्र-सरस्वती-श्रीपादानां,
तदन्तेवासि-वर्य-श्रीमत्-सत्य-चन्द्रशेखरेन्द्र-सरस्वती-श्रीपादानां च
चरण-नलिनयोः स-प्रश्रयं साञ्जलि-बन्धं च नमस्कुर्मः॥

## ॥ तोटकाष्टकम्॥

शङ्करं शङ्कराचार्यं केशवं बादरायणम्। सूत्रभाष्यकृतौ वन्दे भगवन्तौ पुनः पुनः॥

नारायणं पद्मभुवं विसष्ठं शक्तिं च तत्पुत्रपराशरं च व्यासं शुकं गौडपदं महान्तं गोविन्दयोगीन्द्रमथास्य शिष्यम्। श्री-शङ्कराचार्यमथास्य पद्मपादं च हस्तामलकं च शिष्यं तं तोटकं वार्तिककारमन्यानस्मद्गुरून् सन्ततमानतोऽस्मि॥

विदिताखिल-शास्त्र-सुधा-जलधे महितोपनिषत्-कथितार्थ-निधे। हृदये कलये विमलं चरणं भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥१॥

करुणा-वरुणालय पालय मां भव-सागर-दुःख-विदून-हृदम्। रचयाखिल-दर्शन-तत्त्व-विदं भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥२॥

भवता जनता सुहिता भविता निज-बोध-विचारण-चारु-मते। कलयेश्वर-जीव-विवेक-विदं भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥३॥ भव एव भवानिति मे नितरां समजायत चेतिस कौतुकिता। मम वारय मोह-महा-जलिधं भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥४॥

सुकृतेऽधिकृते बहुधा भवतो भविता सम-दर्शन-लालसता। अतिदीनमिमं परिपालय मां भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥५॥

जगतीमवितुं कलिताकृतयो विचरन्ति महा-महसश्छलतः। अहिमांशुरिवात्र विभासि पुरो भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥६॥

गुरु-पुङ्गव पुङ्गव-केतन ते समतामयतां न हि कोऽपि सुधीः। शरणागत-वत्सल तत्त्व-निधे भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥७॥

विदिता न मया विशदैक-कला न च किश्चन काश्चनमस्ति गुरो। द्रुतमेव विधेहि कृपां सहजां भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥८॥ ॥इति श्री-तोटकाचार्यविरचितं श्री-तोटकाष्टकं सम्पूर्णम्॥

## ॥श्री-शङ्कर-भगवत्पाद-प्रशस्ति-सङ्ग्रहः॥ देव-वन्दनम्

सदा बाल-रूपाऽपि विघ्नाद्रि-हन्नी महा-दन्ति-वन्नाऽपि पश्चास्य-मान्या। विधीन्द्रादि-मृग्या गणेशाभिधा मे विधत्तां श्रियं काऽपि कल्याण-मूर्तिः॥१॥

—गणेशस्तुतिः - सुब्रह्मण्यभुजङ्गं शङ्करभगवत्पादकृतम् - १

पुस्तक-जप-वट-हस्ते वरदाभय-चिह्न-चारु-बाहु-लते। कर्पूरामल-देहे वागीश्वरि शोधयाशु मम चेतः॥२॥

—प्रपश्चसारः शङ्करभगवत्पादकृतः ८/७०

#### गुरुपरम्परावन्दनम्

नारायणः पद्म-भवो वसिष्ठः शक्तिश्च तत्-पुत्र-पराशरश्च। व्यासः शुको गौड-पदो यतीन्द्रो गोविन्द-योगीति गुरु-ऋमोऽयम्॥१॥

> आद्यः श्री-शङ्कराचार्यो भगवत्पाद-संज्ञकः। अवतीर्णः शम्भुरिति प्रथितः कालटी-पदे॥२॥

सुरेश्वरः पद्मपदो हस्तामलक-तोटकौ। सर्वज्ञश्चेति तच्छिष्याः प्रथिता गुरु-सन्निभाः॥३॥

शङ्करः कामकोट्याख्यं पीठं काश्र्यां व्यराजयत्। प्रत्यस्थापयदद्वैतं पीठे सर्वज्ञके स्थितः॥४॥

आत्मानमनु सर्वज्ञं सुरेश्वर-मते स्थितम्। गोप्तारं कामकोट्याख्य-पीठस्य व्यदधाद् गुरुः॥५॥

तदाद्येन्द्र-सरस्वत्याख्याऽविच्छिन्ना परम्परा। पाति नो गुरु-वर्याणां शारदा-मठ-सुस्थिता॥६॥

श्री-शङ्करार्यमपरं श्री-शिवा-शिव-रूपिणम्। पूज्य-श्री-कामकोट्याख्य-पीठ-गं तं दया-निधिम्॥७॥

अपार-करुणा-सिन्धुं ज्ञान-दं शान्त-रूपिणम्। श्री-चन्द्रशेखर-गुरुं प्रणमामि मुदाऽन्वहम्॥८॥ देवे देहे च देशे च भक्त्यारोग्य-सुख-प्रदम्।

बुध-पामर-सेव्यं तं श्री-जयेन्द्रं नमाम्यहम्॥९॥ नमामः शङ्करान्वाख्य-विजयेन्द्र-सरस्वतीम्।

श्री-गुरुं शिष्ट-मार्गानुनेतारं सन्मति-प्रदम्॥१०॥

#### गुरु-पादुका-पश्चकम्

जगञ्जनि-स्थेम-लयालयाभ्याम् अगण्य-पुण्योदय-भाविताभ्याम्। त्रयी-शिरोजात-निवेदिताभ्यां नमो नमः श्री-गुरु-पादुकाभ्याम्॥१॥

विपत्-तमः-स्तोम-विकर्तनाभ्यां विशिष्ट-सम्पत्ति-विवर्धनाभ्याम्। नमञ्जनाशेष-विशेष-दाभ्यां नमो नमः श्री-गुरु-पादुकाभ्याम्॥२॥

समस्त-दुस्तर्क-कलङ्क-पङ्कापनोदन-प्रौढ-जलाशयाभ्याम् । निराश्रयाभ्यां निखिलाश्रयाभ्यां नमो नमः श्री-गुरु-पादुकाभ्याम्॥३॥

ताप-त्रयादित्य-करार्दितानां छाया-मयीभ्यामति-शीतलाभ्याम्। आपन्न-संरक्षण-दीक्षिताभ्यां नमो नमः श्री-गुरु-पादुकाभ्याम्॥४॥

यतो गिरोऽप्राप्य धिया समस्ता ह्रिया निवृत्ताः सममेव नित्याः। ताभ्यामजेशाच्युत-भाविताभ्यां नमो नमः श्री-गुरु-पादुकाभ्याम्॥५॥

ये पादुका-पञ्चकमादरेण पठन्ति नित्यं प्रयताः प्रभाते। तेषां गृहे नित्य-निवास-शीला श्री-देशिकेन्द्रस्य कटाक्ष-लक्ष्मीः॥६॥

## भगवत्पादकृतं गुरु-वन्दनम्

प्रज्ञा-वैशाख-वेध-क्षुभित-जल-निधेर्वेद-नाम्नोऽन्तर-स्थं भूतान्यालोक्य मग्नान्यविरत-जनन-ग्राह-घोरे समुद्रे। कारुण्यादुद्दधारामृतमिदममरैर्दुर्लभं भूत-हेतोः यस्तं पूज्याभिपूज्यं परम-गुरुममुं पाद-पातैर्नतोऽस्मि॥१॥

यत्-प्रज्ञालोक-भासा प्रतिहतिमगमत् स्वान्त-मोहान्धकारो मञ्जोन्मञ्जं च घोरे ह्यसकृदुपजनोदन्वति त्रासने मे। यत्-पादावाश्रितानां श्रुति-शम-विनय-प्राप्तिरग्र्या ह्यमोघा तत्-पादौ पावनीयौ भव-भय-विनुदौ सर्व-भावैर्नमस्ये॥२॥ यैरिमे गुरुभिः पूर्वं पद-वाक्य-प्रमाणतः। व्याख्याताः सर्व-वेदान्ताः तान् नित्यं प्रणतोऽस्म्यहम्॥३॥

—तैत्तिरीयोपनिषद्भाष्यम्

विमथ्य वेदोदधितः समुद्धृतं सुरैर्महाब्धेस्तु महात्मभिर्यथा। तथाऽमृतं ज्ञानमिदं हि यैः पुरा नमो गुरुभ्यः परमीक्षितं च यैः॥४॥

—उपदेशसाहस्र्याम्

सर्व-वेदान्त-सिद्धान्त-गोचरं तमगोचरम्। गोविन्दं परमानन्दं सद्गुरुं प्रणतोऽस्म्यहम्॥५॥

अखण्डानन्द-सम्बोधो वन्दनाद् यस्य जायते। गोविन्दं तमहं वन्दे चिदानन्द-तनुं गुरुम्॥६॥

> नमो नमस्ते गुरवे महात्मने विमुक्त-सङ्गाय सद्त्तमाय। नित्याद्वयानन्द-रस-स्वरूपिणे भूम्ने सदाऽपार-दयाम्बु-धाम्ने॥७॥

स्वाराज्य-साम्राज्य-विभूतिरेषा भवत्-कृपा-श्री-महिम-प्रसादात्। प्राप्ता मया श्री-गुरवे महात्मने नमो नमस्तेऽस्तु पुनर्नमोऽस्तु॥८॥

स्वामिन् नमस्ते नत-लोक-बन्धो कारुण्य-सिन्धो पतितं भवाब्धौ। मामुद्धरात्मीय-कटाक्ष-दृष्ट्या ऋज्याऽतिकारुण्य-सुधाभिवृष्ट्या॥९॥

<sup>—</sup>विवेकचूडामणिः

वन्दे गुरूणां चरणारविन्दे सन्दर्शित-स्वात्म-सुखावबोधे। जनस्य ये जाङ्गलिकायमाने संसार-हालाहल-मोह-शान्त्यै॥१०॥

—योगताराविः १

श्री-गुरु-चरण-द्वन्द्वं वन्देऽहं मथित-दुस्सह-द्वन्द्वम्। भ्रान्ति-ग्रहोपशान्तिं पांसु-मयं यस्य भसितमातनुते॥११॥

—स्वात्मनिरूपणम् १/१

#### वेदान्ताचार्यवन्दना

आदौ शिवस्ततो विष्णुः ततो ब्रह्मा ततः परम्। विसष्ठश्च ततः शक्तिः ततः षष्ठः पराशरः॥१॥ ततो व्यासः शुकः पश्चाद् गौडपादाभिधस्ततः। गोविन्दार्य-गुरुस्तस्माच्छङ्कराचार्य-संज्ञकः ॥२॥

पद्मपादः सुरेशश्च हस्तामलक-तोटकौ। वेदान्त-शिक्षा-गुरव आचार्याः पान्तु मां सदा॥३॥

—हल्स्ब्-कोशतः

सदाशिव-समारम्भां शङ्कराचार्य-मध्यमाम्। अस्मदाचार्य-पर्यन्तां वन्दे गुरु-परम्पराम्॥४॥

नारायणं पद्म-भुवं वसिष्ठं शक्तिश्च तत्-पुत्र-पराशरं च। व्यासं शुकं गौड-पदं महान्तं गोविन्द-योगीन्द्रमथास्य शिष्यम्॥५॥ श्री-शङ्कराचार्यमथास्य पद्म-पादं च हस्तामलकं च शिष्यम्। तं तोटकं वार्तिक-कारमन्यान् अस्मद्-गुरून् सन्ततमानतोऽस्मि॥६॥

—साम्प्रदायिकश्लोकाः

### मार्कण्डेय-संहितायां भगवत्पाद-प्रशंसा

श्री-शङ्कर-गुरु-चरण-स्मरणम् अभीष्टार्थ-करणमखिलानाम्। सम्भवतु सर्वदा मम सम-रस-सुख-भाग्य-दान-निपुणतरम्॥१॥

श्री-शङ्कराचार्य-पदारविन्द-सेवा हि सर्वेप्सित-कल्प-वल्ली। लभ्येत जन्मान्तर-पुण्य-योगात् सुजन्मभिः शुद्ध-मनोभिषङ्गैः॥२॥

शङ्कर-गुरु-चरणाम्बुजम् अखिल-जगन्मङ्गलं मनस्यनिशम्। कलयामि कलि-मलापहम् अमित-सुखाधायकं बुधेन्द्राणाम्॥३॥

लोकानुग्रह-तत्परः पर-शिवः सम्प्रार्थितो ब्रह्मणा चार्वाकादि-मत-प्रभेद-निपुणां बुद्धिं सदा धारयन्। कालट्याख्य-पुरोत्तमे शिव-गुरुर्विद्याधिनाथश्च यः तत्-पत्र्यां शिव-तारके समुदितः श्री-शङ्कराख्यां वहन्॥४॥

महात्रिपुरसुन्दरी-रमण-चन्द्रमौलीश्वर-प्रसाद-परिलब्ध-वाङ्मय-विभूषिताशान्तरम्। निरन्तरमुपास्महे निरुपमात्म-विद्या-नदी-नदी-नद-पति-प्रभं मनसि शङ्करार्यं गुरुम्॥५॥

### तोटकाष्टकम्

विदिताखिल-शास्त्र-सुधा-जलधे महितोपनिषत्-कथितार्थ-निधे। हृदये कलये विमलं चरणं भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥१॥ करुणा-वरुणालय पालय मां भव-सागर-दुःख-विदून-हृदम्। रचयाखिल-दर्शन-तत्त्व-विदं भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥२॥

भवता जनता सुहिता भविता निज-बोध-विचारण-चारु-मते। कलयेश्वर-जीव-विवेक-विदं भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥३॥

भव एव भवानिति मे नितरां समजायत चेतिस कौतुकिता। मम वारय मोह-महा-जलिधं भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥४॥

सुकृतेऽधिकृते बहुधा भवतो भविता सम-दर्शन-लालसता। अतिदीनमिमं परिपालय मां भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥५॥

जगतीमवितुं कलिताकृतयो विचरन्ति महामहसश्छलतः। अहिमांशुरिवात्र विभासि पुरो\* भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥६॥

गुरु-पुङ्गव पुङ्गव-केतन ते समतामयतां न हि कोऽपि सुधीः। शरणागत-वत्सल तत्त्व-निधे भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥७॥

विदिता न मया विशदैक-कला न च किश्चन काश्चनमस्ति गुरो। द्रुतमेव विधेहि कृपां सह-जां भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥८॥

[\* गुरो इति पाठान्तरम्]

### भगवत्पाद-शिष्यैः कृताः गुरु-स्तुतयः

येषां धी-सूर्य-दीस्या प्रतिहतिमगमन्नाशमेकान्ततो मे ध्वान्तं स्वान्तस्य हेतुर्जनन-मरण-सन्तान-दोलाधिरूढेः। येषां पादौ प्रपन्नाः श्रुति-शम-विनयैर्भूषिताः शिष्य-सङ्घाः सद्यो मुक्तौ स्थितास्तान् यति-वर-महितान् यावदायुर्नमामि॥१॥

<sup>—</sup>श्रुतिसारसमुद्धरणं तोटकाचार्यकृतम् १८८

वेदान्तोदर-वर्ति भास्वदमलं ध्वान्त-च्छिदस्मद्-धियः दिव्यं ज्ञानमतीन्द्रियेऽपि विषये व्याहन्यते न क्वचित्। यो नो न्याय-शलाकयैव निखिलं संसार-बीजं तमः प्रोत्सार्याविरकार्षीद् गुरु-गुरुः पूज्याय तस्मै नमः॥२॥

—नैष्कर्म्यसिद्धिः - श्रीसुरेश्वराचार्यकृता ४.७६-७७

आ शैलादुदयात् तथाऽस्त-गिरितो भास्वद्-यशोराशिभिः व्याप्तं विश्वमनन्धकारमभवद् यस्य स्म शिष्यैरिदम्। आराद् ज्ञान-गभस्तिभिः प्रतिहतश्चन्द्रायते भास्करः तस्मै शङ्कर-भानवे तनु-मनोवाग्भिर्नमः स्यात् सदा॥३॥

यत्-प्रज्ञोदधि-युक्ति-शब्दन-खज-श्रद्धैक-सन्नेत्रक-स्थैर्य-स्तम्भ-मुमुक्षु-दुःखित-कृपा-यत्नोत्थ-बोधामृतम्। पीत्वा जन्म-मृति-प्रवाह-विधुरा मोक्षं ययुर्मोक्षिणः तं वन्देऽत्रि-कुल-प्रसूतममलं वेधोभिधं मद्-गुरुम्॥४॥

— बृहदारण्यकभाष्यवार्त्तिकम् - सुरेश्वराचार्यकृतम्

नमाम्यभोगि-परिवार-सम्पदं निरस्त-भूतिमनुमार्ध-विग्रहम्। अनुग्रमुन्मृदित-काल-लाञ्छनं विना-विनायकमपूर्व-शङ्करम्॥५॥

यद्-वऋ-मानस-सरः-प्रतिलब्ध-जन्म-भाष्यारविन्द-मकरन्द-रसं पिबन्ति। प्रत्याशमुन्मुख-विनीत-विनेय-भृङ्गाः तान् भाष्य-वित्तक-गुरून् प्रणमामि मूर्प्रा॥६॥

—पश्चपादिका पद्मपादाचार्यकृता

वक्तारमासाद्य यमेव नित्या सरस्वती स्वार्थ-समन्विताऽऽसीत्। निरस्त-दुस्तर्क-कलङ्क-पङ्का नमामि तं शङ्करमर्चिताङ्किम्॥७॥

—सङ्क्षेपशारीरकं श्रीसर्वज्ञात्मेन्द्रसरस्वतीश्रीचरणैः कृतम्

# सदाशिवब्रह्मेन्द्रविरचितायां जगद्गुरुरत्नमालायां भगवत्पाद-चरितम्

यदबोध-वशादहं ममेदं तिदहेत्यादिरुदेति भूरि-भेदः। तदखण्डमनन्तमिद्वतीयं परमानन्द-मयं पदं श्रयेयम्॥१॥

कलिना बलिनाऽखिले खिलेऽपि स्खिलते श्रौत-पथेऽपथे प्रवृद्धे। जप-होम-तपस्सु नाम-शेषेष्वपि यातेषु सुभाषितेषु शोषम्॥२॥

जगदीक्षण-विह्वलामृतान्धो-निगद-व्यक्त-कृपा-रसानुबन्धम् । प्रणिदिश्य गुहं पुरैव गन्तुं प्रणिबन्धुं च मखान् द्विषश्च यन्तुम्॥३॥

अवतार्य सुरान् परांश्च पूर्वं विधि-विष्णिवन्द्र-मुखान् विनोद-पूर्वम्। स्वयमप्यवतीर्य सुत्युरार्या-कमितुः श्री-शिव-शर्मणो विचार्य॥४॥

उदभूत् सदने निटाल-दृग् यो मद-भाजां सुधियां प्रमाथ-योग्ये। शिशुरर्पयतान्मुमुक्षु-भाग्यं स शुभं शङ्कर-देशिकः सुभोग्यम्॥५॥

प्रति-चन्द्र-भवं निवृत्ति-धर्मा श्रित-गोविन्द-मुनेरवाप्त-धर्मा। जयतात् कृत-सूत्र-भाष्य-कर्मा स्वयमन्ते-वसतां वितीर्ण-शर्मा॥६॥

कुहनान्त्यज-विश्वनाथ-सृष्टो द्रुहिण-व्यास-वरोदितानुशिष्टः। ममतां मम तावदेष भिन्द्यान्नमतश्चोपरतिं ददात्वनिन्द्याम्॥७॥

प्रविशन् बदरीमवाप्य सद्यः परमाचार्य-पदार्चनं ऋमाद् यः। धवलाचलमाप्य योऽप्यमाद्यच्छिव-लावण्यमुदीक्ष्य तं प्रपद्ये॥८॥

प्रतिपादित-लिङ्ग-पश्चकेऽमुं प्रणिवर्त्याशु तिरोहिते गिरीशे। विनिवृत्य स दिग्-जय-प्रवृत्तो विविधैः शिष्य-वरैर्विभातु चित्ते॥९॥

अथ कान्यकुमार-सन्धि-सेतु-स्थलिनी-वैङ्कट-कालहस्ति-यातुः। यमि-नेतुरमुष्य काञ्चि-यात्रा शमिदानीं शम-दं क्रियाद् विचित्रा॥१०॥ श्रित-निर्मल-राजसेन-चोल-क्षिति-पालोद्धृत-विप्र-देव-शालः । वरदस्य तथाऽऽम्र-नायकस्याप्युरु-वेश्म-द्वय-कृञ्जयाय मे स्यात्॥११॥ प्रकृतिं च गुहाश्रयां महोग्रां स्व-कृते चक्र-वरे प्रवेश्य योऽग्रे। अकृताश्रित-सौम्य-मूर्तिमार्यां सुकृतं नः स चिनोतु शङ्करार्यः॥१२॥ उपयात्सु बुधेषु सर्व-दिग्भ्यः प्रदिशन्नाशु पराभवं य एभ्यः। विधृताखिल-वित्-पदश्च काञ्च्यामधृतार्तिः स दिशेच्छ्रियं च काञ्चित्॥१३॥ समितिष्ठिपदा-हिमाद्रि-सेव्यं क्रमशो धर्म-विचारणाय दिव्यम्। अधि-काञ्चि च शारदा-मठं योऽभ्यधिकं नः सुखमातनोतु सोऽयम्॥१४॥ परमन्तिक-सत्-सुरेश्वराद्यैः परमाद्वैत-मतं स्फुटं प्रवेद्य।

परि-काश्चिपुरं परे विलीनः परमायास्तु शिवाय सद्गुरुर्नः॥१५॥

# कामकोटि-परम्परागतैः आचार्यैः कृताः स्तुतयः

नमस्तस्मै भगवते शङ्कराचार्य-रूपिणे। येन वेदान्त-विद्येयमुद्धृता वेद-सागरात्॥१॥

—विद्यारण्यमुनिविरचितायाम् अपरोक्षानुभूतिदीपिकायाम् स्तुवन्मोह-तमः-स्तोम-भानु-भावमुपेयुषः । स्तुमस्तान् भगवत्पादान् भव-रोग-भिषग्-वरान्॥२॥

—सदाशिवेन्द्रसरस्वतीश्रीचरणैः कृता ब्रह्मसूत्रवृत्तिः

वेदान्तार्थाभिधानेन सर्वानुग्रह-कारिणम्। यति-रूप-धरं वन्दे शङ्करं लोक-शङ्करम्॥३॥

—नवपश्चाशत्तमेः आचार्यैः श्रीभगवन्नामबोधेन्द्रसरस्वतीश्रीचरणैः कृतं हरिहराद्वैतभूषणम् यमाश्रिता गिरां देवी नन्दयत्यात्म-संश्रितान्। तमाश्रये श्रिया जुष्टं शङ्करं करुणा-निधिम्॥४॥

— नवपञ्चाशत्तमैः आचार्यैः श्रीभगवन्नामबोधेन्द्रसरस्वतीश्रीचरणैः प्रणीतम् विवरणप्रमेयसङ्ग्रहात्मकम् अद्वैतभूषणम् सर्व-तन्त्र-स्वतन्त्राय सदाऽऽत्माद्वैत-वेदिने। श्रीमते शङ्करार्याय वेदान्त-गुरवे नमः॥५॥

अविप्नुत-ब्रह्मचर्यान् अन्वितेन्द्र-सरस्वतीन्। आत्त-मिथ्यावार-पथान् अद्वैताचार्य-सङ्कथान्॥६॥

आ-सेतु-हिमवच्छैलं सदाचार-प्रवर्तकान्। जगद्-गुरून् स्तुमः काश्ची-शारदा-मठ-संश्रयान्॥७॥

—पञ्चषष्टितमैः पीठाधिपतिभिः श्रीमत्सुदर्शनमहादेवेन्द्रसरस्वतीश्रीचरणैः प्रणीतः जगद्गुरु-परम्परा-स्तवः

गुरुर्नाम्ना महिम्ना च शङ्करो यो विराजते। तदीयाङ्कि-गलद्-रेणु-गणायास्तु नमो मम॥८॥

—अष्टषष्टितमाचार्यैः श्रीचन्द्रशेखरेन्द्रसरस्वतीश्रीचरणैः प्रणीतम्

कामाक्षी-करुणा-रूपं कामकोटि-जगद्गुरुम्। चिन्मूर्तिं कलये चित्ते शङ्कराचार्यमव्ययम्॥९॥

— नवषष्टितमाचार्यैः श्रीजयेन्द्रसरस्वतीश्रीचरणैः प्रणीतम्

भजेऽहं भगवत्पादं भारतीय-शिखामणिम्। अद्वैत-मैत्री-सद्भाव-चेतनायाः प्रबोधकम्॥१०॥

—सप्ततितमाचार्यैः श्रीशङ्करविजयेन्द्रसरस्वतीश्रीचरणैः प्रणीतम्

# शङ्कर-चरित्र-ग्रन्थेषु

मेधावी निगम-पटुर्बहु-श्रुतो वा येनर्ते न कलयिता किलात्म-तत्त्वम्। तन्नेत्रं तमसि च दिव्य-दृष्टि-दायि श्रेयो नः प्रदिशतु धाम देशिकाख्यम्॥१॥

—पुण्यश्लोकमञ्जरी

नमामि शङ्कराचार्य-गुरु-पाद-सरोरुहम्। यस्य प्रसादान्मूढोऽपि सर्वज्ञोऽहं सदाऽस्म्यहम्॥२॥ वेदे ब्रह्म-समस्तदङ्ग-निचये गर्गोपमस्तत्-कथा-तात्पर्यार्थ-विवेचने गुरु-समस्तत्-कर्म-संवर्णने। आसीज्जैमिनिरेव तद्-वचन-ज-प्रोद्घोध-कन्दे समो व्यासेनैव विभाति सद्गुरुरसौ श्री-शङ्कराख्यः क्षितौ॥३॥

अद्वैतार्णव-पूर्ण-चन्द्रमभिदा-पद्माटवी-भास्करं विद्वत्-कोटि-समर्चिताङ्गि-युगलं प्रद्वेष-कक्षानलम्। हृद्याभेद्य-समस्त-वेद-जनित-प्रोद्यद्-विवेकाङ्करं स्विद्यद्-वागमृतं परात्-पर-गुरुं श्री-शङ्करं तं भजे॥४॥

—आनन्दगिरीयशङ्करविजयः

गामाऋम्य पदेऽधिकाश्चि निबिडं स्कन्धेश्चतुर्भिस्तथा व्यावृण्वन् भुवनान्तरं परिहरंस्तापं स-मोह-ज्वरम्। यः शाखी द्विज-संस्तुतः फलति तत् स्वाद्यं रसाख्यं फलं तस्मै शङ्कर-पादपाय महते तन्मस्नि-सन्ध्यं नमः॥५॥

—व्यासाचलीयशङ्करविजयः

देशे कालडि-नाम्नि केरल-धरा-शोभा-करे सद्-द्विजे जातः श्रीपति-मन्दिरस्य सविधे सर्वज्ञतां प्राप्तवान्। भूत्वा षोडश-वत्सरे यति-वरो गत्वा बदर्याश्रमं कर्ता भाष्य-निबन्धनस्य सु-कविः श्री-शङ्करः पावनः॥६॥

---गोविन्दानन्दरचिते शङ्कराचार्यचरिते

अज्ञानान्तर्गहन-पतितान् आत्म-विद्योपदेशैः त्रातुं लोकान् भव-दव-शिखा-ताप-पापच्यमानान्। मुक्का मौनं वट-विटपिनो मूलतो निष्पतन्ती शम्भोर्मूर्तिश्चरति भुवने शङ्कराचार्य-रूपा॥७॥

—-नवकालिदासमाधवकविकृतः शङ्करदिग्विजयः

क्वेमे शङ्कर-सद्गुरोर्गुण-गणा दिग्-जाल-कूलङ्कषाः कालोन्मीलित-मालती-परिमलावष्टम्भ-मुष्टिन्धयाः । क्वाहं हन्त तथापि सद्गुरु-कृपा-पीयूष-पारम्परी-मग्नोन्मग्न-कटाक्ष-वीक्षण-बलादस्मि प्रशस्तोऽर्हताम्॥८॥

—सङ्क्षेपशङ्करविजये

श्रीमच्छङ्कर-सद्गुरोर्भगवतोऽगाधामसाधारणीं वाणीं नः प्रतनीयसीं मुहुरिमां गाढुं समुत्कण्ठते। तन्मूर्तिः प्रभुरेव भक्त-जनता-वात्सल्य-वैपुल्य-भूः अस्मै साधु ददातु शस्त-दयया हस्तावलम्बं हरः॥९॥

—वल्लीसहायकविकृतौ आचार्यदिग्विजये

### अन्यैः वेदान्ताचार्यैः कृताः स्तुतयः

प्रचार्यं सर्व-लोकेषु सश्चार्यं हृदयाम्बुजे। विचार्यं सर्व-वेदान्तैः आचार्यं शङ्करं भजे॥१॥

—नारायणीयोपनिषद्भाष्ये

भगवत्पाद-पादाज्ज-पांसवः सन्तु सन्ततम्। अपारासार-संसार-सागरोत्तार-सेतवः॥२॥

—चित्सुखाचार्याणां भाष्यभावप्रकाशिकायाम्

उद्धृत्य वेद-पयसः कमलामिवाब्धेः आलिङ्गिःताखिल-जगत्-प्रभवैक-मूर्तिम्। विद्यामशेष-जगतां सुख-दामदाद् यः तं शङ्करं विमल-भाष्य-कृतं नमामि॥३॥

—विवरणाचार्याणां पश्चपादिकाविवरणे

यद्-भाष्याम्बुज-जात-जात-मधुर-प्रेयोमधु-प्रार्थना-सार्थ-व्यग्र-धियः समग्र-मरुतः स्वर्गेऽपि निर्वेदिनः। यस्मिन् मुक्ति-पथः पथीन-मुनिभिः सम्प्रार्थितः सम्बभौ तस्मै भाष्य-कृते नमोऽस्तु भगवत्पादाभिधां बिभ्रते॥४॥

—आनन्दगिर्याचार्याणां सूत्रभाष्यव्याख्यायां - ६

श्री-गुरुं भगवत्पादं शरण्यं भक्त-वत्सलम्। शिवं शिव-करं शुद्धमप्रमेयं नमाम्यहम्॥५॥

---अद्वैतसभायाः ब्रह्मविद्यापत्रिकायां प्रकाशिते अज्ञातकर्तृके गुर्वष्टके

तं वन्दे शङ्कराचार्यं लोक-त्रितय-शङ्करम्। सत्-तर्क-नखरोद्गीर्ण-वावदूक-मतङ्गजम्॥६॥

—तत्त्वबोधभगवत्प्रणीते तत्त्वबोधे

आनन्द-घनमद्बन्द्वं निर्विकारं निरञ्जनम्। भजेऽहं भगवत्पादं भजतामभय-प्रदम्॥७॥

—मनीषा-पश्चक-व्याख्याने

यद्-भाष्योक्तेर्लव-परिजुषश्छात्र-वर्गा महान्तः निर्भिन्दन्ति प्रबल-मतयो वादि-शैलं समस्तम्। यैर्वेदाब्धेरमृतमिव सद्-भाष्यमापत् प्रकाशं तत्-पादाज्ञं स्फुरतु हृदये ह्युद्धृतं सर्वदा मे॥८॥

—मनीषापश्चरत्नलघुविवरणे

महा-मोह-पङ्के विरिश्चाचरान्तं प्रजा-हस्तिनं मग्नमालोक्य भाष्येः। जलैः क्षालयित्वाऽऽत्म-विद्या-दिवं यो नयत्येकलं शङ्करं तं नमामि॥९॥

संसार-सर्प-परिदष्ट-विनष्ट-जन्तु-सञ्जीवनाय परया कृपयोपपन्नः। ब्रह्मावबोध-परमौषधमुद्वहन् यः तं शङ्करं परतरं भिषजां भजामि॥१०॥

—अद्वैतबोधामृतम्

वेदान्ताम्भोगभीरा नय-मकर-कुला ब्रह्म-विद्याङ्ग-षण्डा पाषण्डोत्तुङ्ग-वृक्ष-प्रमथन-निपुणा मान-वीची-तरङ्गा। यस्यास्योत्था सरस्वत्यखिल-भव-भय-ध्वंसिनी शङ्करस्य गङ्गा शम्भोः कपर्दादिव निखिल-गुरोर्नीमि तत्-पाद-पद्मम्॥११॥

—ज्ञानघनपादानां तत्त्वशुद्धौ

सूत्र-प्रग्रह-वेद-वाजिनि महन्मीमांसक-स्यन्दने तिष्ठन् भाष्य-पिनाकमुञ्चल-गुणं कृत्वाऽऽत्म-धी-सायकम्। आकृष्य प्रदहन्नशेष-विपदां मूलं पुराणां त्रयं भूयान्नोऽभिनवः पुरारिरशुभस्योच्छित्तये शङ्करः॥१२॥

—रामानन्दस्य ऋजु-विवरण-व्याख्यायाम्

यद्-भाष्य-सागर-ज-युक्ति-मणीन् प्रकीर्णान् प्राप्याधुना कतिपयान् कवयो भवन्ति। तस्मै नमो जन-मनोज्ज-दिवाकराय कृत्स्नागमार्थ-निलयाय यतीश्वराय॥१३॥

— बोधनिधि-कृते उपदेश-प्रकरण-विवरणे

वेदान्तार्थं गभीरं ह्यति-सुगमतया बोधयामीति विष्णुः व्यासात्माऽसूत्रयत् तद् दुरिधगममभूद् वादि-दुर्बुद्धि-भेदात्। भिन्दन् दुर्बुद्धि-भेदं य इह करुणयाऽभाष्ययद् भाष्यमेतत् तं वन्दे सर्व-वन्द्यं त्रि-जगित भगवत्पाद-संज्ञं महेशम्॥१४॥

—रामानन्दसरस्वतीकृतविवरणोपन्यासे

त्रि-वर्गेणाक्रान्ते जनन-मरणादि-व्रण-भुवा जनेऽस्मिन् सर्वस्मिंस्तिमिर-परिणाहैक-शरणे। निषेक्तुं निध्यातोऽमृतमग-पतिः शङ्कर इति स्व-नाम व्याख्यातुं जयति कुहना-भिक्षुरनिशम्॥१५॥

—अभिनवद्राविडाचार्य-श्रीबालकृष्णानन्दसरस्वतीनां शारीरकमीमांसाभाष्यवार्तिके

श्री-सम्बन्धमुदीक्ष्य वाचक-पदे यान् शार्ङ्गिणं वैष्णवाः चन्द्रोत्तंस-पदास्पदत्व-कलनाच्छम्भुं च शैवा विदुः। आनन्दाद्वय-शोभमान-परम-प्रेमास्पदं योगिनः तान् पादाम्बुज-रेणु-धूत-तमसो वन्दे सदा श्री-गुरून्॥१६॥

—गङ्गाधरसरस्वत्याख्यभिक्षुणा रचितायाम् आत्मसाम्राज्यसिद्धिव्याख्यायाम्

नमः श्री-शङ्कराचार्य-गुरवे शङ्करात्मने। शरीरिणां शङ्कराय शङ्कर-ज्ञान-हेतवे॥१७॥

—-नृसिंहाश्रमविरचितायां तत्वबोधिन्याख्यायां सङ्क्षेपशारीरकटीकायाम्

याऽनुभूतिः स्वयं-ज्योतिरादित्येशान-विग्रहा। शङ्कराख्या च तं नौमि सुरेश्वर-गुरुं परम्॥१८॥

—-नृसिंहप्रज्ञमुनिकृते बृहदारण्यकभाष्यवार्तिकन्यायतत्त्वविवरणे

संसाराब्धि-निषण्णाज्ञ-निकर-प्रोज्जिहीर्षया। कृत-संहननं वन्दे शङ्करं लोक-शङ्करम्॥१९॥

—विज्ञानवासयतिरचितायां पश्चपादिकाव्याख्यायाम

वेदान्तार्थ-तदाभास-क्षीर-नीर-विवेकिनम्। नमामि भगवत्पादं पर-हंस-धुरन्धरम्॥२०॥

—अमलानन्दसरस्वतीनां वेदान्तकल्पतरौ

नाना-भाष्यादृता सा सगुण-फल-गतिर्वेध-विद्या-विशेषैः तत्-तद्-देशाप्ति-रम्या सरिदिव सकला यत्र यात्यंश-भूयम्। तस्मिन्नानन्द-सिन्धावतिमहति फले भाव-विश्रान्ति-मुद्रा शास्त्रस्योद्घाटिता यैः प्रणमत हृदि तान् नित्यमाचार्य-पादान्॥२१॥

—अप्पयदीक्षितानां न्यायरक्षामणौ

प्रचण्ड-पाखण्ड-विखण्डनोद्यतं त्रयी-शिरोर्थ-प्रतिपादने रतम्। बुधैर्नुतं योग-कलाभिरावृतं नमामि तं शङ्कर-देशिकं ततम्॥२२॥

—सचिदानन्दसरस्वतीकृतायाम् आर्याव्याख्यायाम्

दृष्ट्वा यो दिव्य-दृष्टिः किल-युग-समये "मन्द-भाग्या मनुष्याः तस्मात् तन्त्र-प्रपञ्चः सुर-यजन-विधिर्मत्-कृतो निष्फलः स्यात्"। इत्याविर्भूय पृथ्व्यां पुनरिप कृतवांस्तन्त्र-सारं गिरीशः तं वन्दे शङ्कराख्यं महिततम-मनः-प्रार्थनीयार्थ-रूपम्॥२३॥

—प्रपश्चसारसम्बन्धदीपिकायाम्

येनाद्वन्द्वमखण्डमक्षय-पदं प्रादर्शि तापापहं भाष्य-ग्रन्थि-निबन्धनैः श्रुति-शिरोवाक्यार्थ-विद्योतिभिः। नित्यो यत्र समस्त-सद्-गुण-गणस्तं शङ्कराचार्य-गीर् विख्यातं मुनि-मौलि-लालित-पद-द्वन्द्वं सदा संश्रये॥२४॥

—रामतीर्थस्वामिरचितायाम् अन्वयार्थप्रकाशिकाख्यायां सङ्क्षेपशारीरकव्याख्यायाम्

वेदान्त-व्रात-नीरं शत-पथ-कथित-न्याय-रत्न-प्रपूरं पारावारं सुतारं निगम-मुख-षडङ्गात्म-सद्-ग्राह-घोरम्। कारं-कारं सुगाहं श्रुत-मत-मथितैर्ब्रह्म-विद्यामृतं यः प्रादादादाय तस्मादशरण-शरणं शङ्करं तं नमामः॥२५॥

—आनन्दपूर्णरचितायां न्यायकल्पलतिकानाम्यां सुरेश्वरवार्तिकटीकायाम्

वेदान्तार्थ-विभासकाय गुरवे शान्ताय सन्न्यासिने नाना-वादि-नगेन्द्र-सङ्घ-पवये योगीन्द्र-वन्द्याय च। मोह-ध्वान्त-दिवाकराय भगवत्पादाभिधां बिभ्रते तस्मै भाष्य-कृते नमोऽस्तु सततं पूर्णाय बोधात्मने॥२६॥

—तैत्तिरीयभाष्यटीकायाम्

ये वेदान्त-सुधोदिधं सुमनसां निःश्रेयसाय स्वयं निर्मथ्योदहरिन्नरूपण-गुणावृत्तेन चेतोमथा। अद्वैतामृतमासुरानुशयिनामास्वादनीयेतरत् तानाऽऽस्माक-गुरोरुपैमि भगवत्पादादिमान् देशिकान्॥२७॥

—कृष्णानन्दयतिकृतौ सिद्धान्तसिद्धाञ्जने

काले शिवः ऋम-वशात् किल-दोष-दुष्टे यः सम्प्रदाय-रिहतं तदपेक्ष्य भूयः। क्षोण्यामवातरदशेष-जगद्धितार्थी श्री-शङ्कराख्यममलं गुरुमाश्रये तम्॥२८॥

—नारायणकृतौ प्रपश्चसारार्थदीपे

वेदाद्यागम-दुग्ध-सिन्धु-मथनात् तन्मेय-मन्थाद्रिणा दिव्याभोग-विचार-वासुकि-वशादाश्रित्य धैर्यं परम्। ब्रह्मोद्बोध-सुधां विधाय दयया मर्त्यानमर्त्यानमी कुर्वन्तो गुरवो जयन्ति जगतां लक्ष्मीश-वद् रक्षकाः॥२९॥

—वरदराजपण्डितकृतौ खण्डनमण्डने

यदीय-वाक्-सूर्य-रुचि-प्रणाशितः हृदन्ध-कारो नमतामशेषतः। महात्मनः शिष्य-हिते सदा रतान् नमामि तान् शङ्कर-पूज्य-देशिकान्॥३०॥

—शङ्कविरचिते कैवल्यनवनीते

यद्-वक्राम्बुज-निस्सृतं परमकं श्री-सूत्र-भाष्यामृतं पीत्वा मादृश-जीव-भङ्ग-निचया नन्दन्ति मोक्षाङ्गणे। नाना-वादि-मदेभ-भञ्जन-महा-व्यग्रोग्र-कण्ठीरवान् वन्दे व्यास-मुनीन्द्र-शङ्कर-मुखान् सद्-देशिकांस्तानहम्॥३१॥

—अमरेश्वरशास्त्रिरचिते अज्ञानध्वान्तचण्डभास्करे

यो लोकोपकृति-प्रविष्ट-हृदयो जित्वाऽतिबाह्यं मतं श्रीमच्छङ्कर-शब्द-पूर्व-भगवत्पादाभिधानं गतम्। सद्-वेदान्त-रहस्य-वत् स्फुटितवान् गोप्यं रहो-मानवं तं वन्दे भगवन्तमन्तक-रिपुं सर्वान्तराय-च्छिदम्॥३२॥

—कामेश्वरसूरिकृतायाम् अरुणामोदिनीनाम्त्र्यां सौन्दर्यलहरीव्याख्यायाम्

अखिल-पर-हंस-देशिकमागम-गूढार्थ-दर्शकं प्राज्ञम्। स्वानन्द-पूर्ण-सागरमनिशमहं नौमि शङ्कराचार्यम्॥३३॥

—नागनाथरचिते आत्मबोधप्रकरणे

विष्णवे व्यास-रूपाय ब्रह्म-सूत्र-कृते नमः। महेशाय च तद्-भाष्य-कृते शङ्कर-रूपिणे॥३४॥

—अञ्चालसूरिरचिते भामतीतिलके

हर-लीलावताराय शङ्कराय वरौजसे। कैवल्य-कलना-कल्प-तरवे गुरवे नमः॥३५॥

—उमामहेश्वररचितायां तत्त्वचन्द्रिकायाम्

यत्-पादाज्ज-प्रभव-विमल-श्री-परागालि-भास्वान् मत्-स्वान्त-स्थं प्रणुदित तमः-पुञ्जमत्यन्त-चण्डम्। यत्-कारुण्य-प्रव-परिजुषा तारितोऽनेन तूर्णं संसाराब्धिः प्रणितरिनशं स्याद् गुरूणां पदाज्जे॥३६॥

—सीतारामसूरिरचिते वेदान्तकौस्तुमे

पाराशर्य-वचोविलास-मसृणैः सूत्रैः ऋमेणाततैः अत्यस्तैः प्रकटीचकार भगवान् यो भाष्य-संज्ञं पटम्। अज्ञानोद्भव-जाङ्य-नाश-करणं स्वानन्द-दं सेविनां तं वन्देऽखिल-योगि-वन्द्य-चरणं श्री-शङ्करं शं-करम्॥३७॥

—कमलाकरदेवकृतौ आनन्दविलासे

योऽयं दैवत-सार्वभौम-विभवो विश्वाधिको रुद्र इ त्याद्यैराद्य-वचोभिरद्वयपरैरद्यापि संस्तूयते। अद्वैतात्म-विबोधनाय विदुषामिच्छा-समङ्गीकृत-श्रीमच्छङ्कर-देशिकेन्द्र-वपुषं श्री-शङ्करं भावये॥३८॥

—शङ्कराचार्याष्टके

## शङ्कर-वाङ्गहिमा

अधिगत-भिदा पूर्वाचार्यानुपेत्य सहस्र-धा सरिदिव मही-भागान् सम्प्राप्य शौरि-पदोद्गता। जयित भगवत्पाद-श्रीमन्मुखाम्बुज-निर्गता जनन-हरणी सूक्तिर्ब्रह्माद्वयैक-परायणा॥१॥

—अप्पय्यदीक्षितानां सिद्धान्तलेशसङ्ग्रहे

संसाराध्विन ताप-भानु-किरण-प्रोद्भूत-दाह-व्यथा-खिन्नानां जल-काङ्क्षया मरु-भुवि श्रान्त्या परिभ्राम्यताम्। अत्यासन्न-सुखाम्बुधिं सुख-करं ब्रह्माद्वयं दर्शय-न्त्येषा शङ्कर-भारती विजयते निर्वाण-सन्दायिनी॥२॥

—विवेकचूडामणौ

#### जय-घोषः

श्री-शङ्कराचार्य-वर्य ब्रह्म-ज्ञान-प्रदायक। अज्ञान-तिमिरादित्य सुज्ञानाब्यि-सुधाकर॥१॥

ज्ञान-मुद्राश्चित-कर शिष्य-हृत्-ताप-हारक। कम्र-मुक्ति-गृह-द्वार-कवाट-घ्न-पदाम्बुज ॥२॥

(स्वामिन् ! जय ! विजयी भव !)

षण्मत-स्थापनाचार्यत्रयी-मार्ग-प्रकाशक। प्रसन्न-वदनाम्भोज परमार्थ-प्रकाशक॥३॥

ज्ञानात्मकैक-दण्डाढ्य कमण्डलु-लसत्-कर। काषाय-वसनोपेत भस्मोद्ध्रलित-विग्रह॥४॥

(स्वामिन् ! जय ! विजयी भव !)

श्रीमत्-कैलास-निलय-सच्छिवांशावतारक। कालटी-क्षेत्र-निवसदार्याम्बा-गर्भ-संश्रित ॥५॥

शिवादि-गुरु-वंशाम्बुनिधि-राकेश-सन्निभ। पितृ-दत्तान्वर्थ-भूत-शङ्कराख्या-समुञ्चल ॥६॥

(स्वामिन् ! जय ! विजयी भव !)

अभ्यस्त-वेद-वेदाङ्ग निखिलागम-पारग। दरिद्र-ब्राह्मणी-दत्त-भिक्षामलक-तोषित ॥७॥

स्वर्णामलक-सद्धृष्टि-प्रसादानन्दित-द्विज । अष्ट-वर्ष-चतुर्-वेदिन् द्वादशाखिल-शास्त्र-ग॥८॥

(स्वामिन् ! जय ! विजयी भव !)

सरिद्-वर्त्मातप-श्रान्त-मातृ-दुःखापनोदक। नऋ-ग्रह-व्याज-मातृ-मत-पारमहंस्यक ॥९॥

```
चिन्तना-मात्र-सान्निध्य-करणाश्वासिताम्बक।
सोमोद्भवा-तटी-क्रुप्त-सौम्य-गोविन्द-सेवन ॥१०॥
```

(स्वामिन् ! जय ! विजयी भव !)

गोविन्दार्य-मुखावाप्त-महावाक्य-चतुष्टय। योग-सिद्धि-गृहीतेन्दुभवा-पूर-कमण्डलो॥११॥

गुर्वनुज्ञात-विश्वेश-दिदृक्षा-गमनोत्सुक। चण्डालाकार-विश्वेश-प्रश्नानुप्रश्न-हर्षित॥१२॥

(स्वामिन् ! जय ! विजयी भव !)

विश्वेशानुग्रहावाप्त-भाष्य-ग्रथन-नैपुण । भाष्य-स्फुट-श्रुतिशिरो-मत-तत्त्वाभिलापक॥१३॥

यदूद्वह-प्रोक्त-गीता-याथातथ्य-विवेचक। ब्रह्मसूत्रार्थ-संवाद-हृष्यत्-सत्यवती-सुत॥१४॥

(स्वामिन् ! जय ! विजयी भव !)

मन्दाकिनी-झरी-रम्य-भाष्य-पावित-भूतल। भाष्य-सार-प्रकरण-कृत-जिज्ञास्-तोषण ॥१५॥

सौन्दर्य-लहरी-मुख्य-बहु-स्तोत्र-विधायक । योगजाग्नि-कृत-स्वाम्बा-यज्ञ-स्थापित-सत्पथ॥१६॥

(स्वामिन् ! जय ! विजयी भव !)

त्रिरधीतात्मीय-भाष्य-सनन्दन-समाश्रय। कुकूलानल-कूट-स्थ-कुमारिल-कृतानते॥१७॥

कर्मैक-पथिकोद्दण्ड-मण्डनान्त्याश्रम-प्रद। कञ्ज-योन्यवतार-श्री-सुरेश्वर-सुदेशिक ॥१८॥

(स्वामिन् ! जय ! विजयी भव !)

यथावत्-तत्त्व-विज्ञातृ-हस्तामलक-सद्गुरो । तोटकाभिव्यक्त-भक्ति-तत्त्व-ज्ञानाढ्य-शिष्यक॥१९॥

पृथ्वीधवादि-शिष्यौघ-शिरोधृत-पद-द्वय । शारदा-स्थापना-पूत-ऋश्यशृङ्ग-गिरि-स्थल॥२०॥

(स्वामिन् ! जय ! विजयी भव !)

ककुडाय-महायात्रा-पवित्रित-महीतल। रामेश्वरादि-मेर्वन्त-प्रतिष्ठापित-सन्मत॥२१॥

अद्वैत-स्थापनाचार्य भगवत्पाद-संज्ञक। वेद-वेदान्त-सम्प्रोक्त-रक्षार्थ-मठ-कल्पन॥२२॥

(स्वामिन् ! जय ! विजयी भव !)

कैलास-यात्रा-सम्प्राप्त-चन्द्रमौलि-प्रपूजक। नेपाल-केदार-वर-सिद्धि-लिङ्ग-निधायक ॥२३॥

चिदम्बर-सभा-न्यस्त-मोक्ष-लिङ्ग यतीश्वर। तुङ्गा-भद्रा-सङ्ग-भूमि-भोग-लिङ्ग-समर्चन ॥२४॥

(स्वामिन् ! जय ! विजयी भव !)

श्रीचक्रात्मक-ताटङ्क-पोषिताम्बा-मनोरथ । काञ्च्यां श्रीचक्र-राजाख्य-यन्न-स्थापन-दीक्षित॥२५॥

भेरी-पटह-वाद्यादि-राज-लक्षण-लक्षित। सर्वज्ञ-पीठाध्यारोह-लुप्त-सार्वज्ञ्य-संशय॥२६॥

(स्वामिन् ! जय ! विजयी भव !)

वादार्थागत-सर्वज्ञ-बाल-सन्त्यास-दायक। शारदा-मठ-मेरु-श्री-योगलिङ्गाभिषेचन ॥२७॥ सोपान-पञ्चकोद्घोष-कृत-शिष्यानुशासन। सत्यव्रत-समाख्यात-काश्च्यन्तरित-विग्रह॥२८॥

(स्वामिन् ! जय ! विजयी भव !)

काश्चीपुराभरण-कामद-कामकोटि-पीठाभिषिक्त वर-देशिक-सार्वभौम। सार्वज्ञ्य-शक्त्यधिगताखिल-मन्न-तन्न-चऋ-प्रतिष्ठिति-विजृम्भित-चातुरीक॥२९॥

(स्वामिन् ! जय ! विजयी भव !)



अयं पद्यसङ्गृहः

\* श्रीमचन्द्रशेखरेन्द्रसरस्वतीश्रीपादानां षष्ट्यब्दपूर्त्यवसरे प्रकाशिते ब्रह्मसूत्रभाष्यपुस्तके

\* श्रीशङ्करभक्तजनसभया प्रकाशिते अद्वैताक्षरमालिकायाः द्वितीयसंस्करणपुस्तके

\* शिमिऴि-वेङ्कट-राधाकृष्णशास्त्रिभिः सङ्कलितायां श्रीशङ्करभगवत्पादप्रशस्तिमञ्जर्यां च सङ्गृहीतानि आचार्यप्रशस्तिरूपाणि पद्यानि आधृत्य सङ्कलितः

> जय जय शङ्कर हर हर शङ्कर जय जय शङ्कर हर हर शङ्कर। काश्ची-शङ्कर कामकोटि-शङ्कर हर हर शङ्कर जय जय शङ्कर॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्। करोमि यद् यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥

अनेन पूजनेन श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्याः प्रीयन्ताम्। ॐ तत् सद् ब्रह्मार्पणमस्तु।





# ॥ श्री-लक्ष्मी-नृसिंह-जयन्ती-पूजा॥

# ॥ पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा॥

(आचम्य)

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवणं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुव्रोम्। (अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा) ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः अविघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गणानां त्वा गणपंति हवामहे कविं केवीनामुंपमश्रंवस्तमम्। ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत् आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद् सादनम्॥

अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।
ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।
पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरघ्यं समर्पयामि।
आचमनीयं समर्पयामि।
ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।
स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।
वस्नार्थमक्षतान् समर्पयामि।
यज्ञोपवीताभरणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।
दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।
गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

### पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

#### ॥ अर्चना ॥

१. ॐ सुमुखाय नमः ९. ॐ धूमकेतवे नमः

२. ॐ एकदन्ताय नमः १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः

३. ॐ कपिलाय नमः ११. ॐ फालचन्द्राय नमः

४. ॐ गजकर्णकाय नमः १२. ॐ गजाननाय नमः

५. ॐ लम्बोदराय नमः १३. ॐ वऋतुण्डाय नमः

६. ॐ विकटाय नमः १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः

७. ॐ विघ्नराजाय नमः १५. ॐ हेरम्बाय नमः

८. ॐ विनायकाय नमः १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

<u>धूपमाघ्रापयामि।</u>

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्प्रनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वऋतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ। अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि। छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

# ॥ प्रधान-पूजा — श्री-लक्ष्मी-नृसिंहपूजा॥

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुव्रोम्।

श्रीविघ्रेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि।

#### ॥सङ्कल्पः॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते अद्य ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकाणां प्रभवादीनां षष्ट्याः संवत्सराणां मध्ये () १६ नाम संवत्सरे उत्तरायणे / दक्षिणायने वसन्तऋतौ मेषमासे शुक्रपक्षे चतुर्दश्यां शुभितथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर / भानु) वासरयुक्तायाम् (स्वाती/?)<sup>१७</sup> नक्षत्र ( )<sup>१८</sup> नाम योग ( ) करण युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्यां चतुर्दश्यां शुभितथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय-आयुरारोग्य-ऐश्वर्याभिवृद्धर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्धर्थं पुत्रपौत्राभि-वृद्धर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्धर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय-व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्य अपनोदनद्वारा सकल-पापक्षयार्थं श्री नृसिंह-जयन्ती-पुण्यकाले यथाशक्ति-ध्यान-आवाहनादि-षोडशोपचारैः श्री-नृसिंह-पूजां करिष्ये। तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।

<sup>&</sup>lt;sup>१६</sup>पृष्टं ६२१ पश्यताम्

<sup>&</sup>lt;sup>१७</sup>पृष्टं ६३१ पश्यताम्

१८ पृष्टं ६३२ पश्यताम्

(गणपति-प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

#### ॥ आसन-पूजा॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चासनं कुरु॥

#### ॥ घण्टा-पूजा॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्। घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

#### ॥ कलश-पूजा॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः।

ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्)

आपो वा इद सर्वं विश्वां भूतान्यापः प्राणा वा आपः प्रशव् आपोऽन्नमापोऽमृत्मापः सम्राडापो विराडापः स्वराडाप्रछन्दा इस्यापो ज्योती इष्यापो यजू इष्यापः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भुवः सुवराप

ओम्॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥ कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः। अङ्गेश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च ह्रदा नदाः। आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥ ॐ भूर्भृवः सुवो भूर्भृवः सुवेः।

(इति कलशजलेन सर्वीपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

#### ॥ आत्म-पूजा॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

१. ॐ आत्मने नमः ४. ॐ जीवात्मने नमः

२. ॐ अन्तरात्मने नमः ५. ॐ परमात्मने नमः

३. ॐ योगात्मने नमः ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः

#### समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः। त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

#### ॥ पीठ-पूजा॥

१. ॐ आधारशक्त्ये नमः ८. ॐ रत्नवेदिकाये नमः

२. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः

३. ॐ आदिकूर्माय नमः १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः

४. ॐ आदिवराहाय नमः ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः

५. ॐ अनन्ताय नमः १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः

६. ॐ पृथिव्ये नमः १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः

७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः १४. ॐ योगपीठासनाय नमः

#### ॥ गुरु-ध्यानम्॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

### ॥ षोडशोपचार-पूजा॥

ध्यायामि देवदेवं तं शङ्खचऋगदाधरम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं लक्ष्मीयुक्तं विभूषितम्॥ अस्मिन् बिम्बे श्री-लक्ष्मी-नृसिंहं ध्यायामि।

सहस्रंशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रंपात्। स भूमिं विश्वतों वृत्वा। अत्यंतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥ अस्मिन् बिम्बे श्री-लक्ष्मी-नृसिंहम् आवाहयामि।

पुरुष पुवेद सर्वम्। यद्भूतं यच् भव्यम्। उतामृत्त्वस्येशांनः। यदन्नेनातिरोहंति॥ आसनं समर्पयामि।

पृतावानस्य मिह्मा। अतो ज्यायाईश्च पूर्रुषः। पादौंऽस्य विश्वां भूतानिं। त्रिपादंस्यामृतं दिवि॥ पादां समर्पयामि।

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः। पादौंऽस्येहाऽऽभंबात्पुनः। ततो विश्वङ्कांकामत्। साशनानशने अभि॥

#### अर्घ्यं समर्पयामि।

तस्माँद्विराडंजायत। विराजो अधि पूर्रुषः। स जातो अत्यंरिच्यत। पृश्चाद्भृमिमथो पुरः॥ आचमनीयं समर्पयामि।

यत्पुरुषेण ह्विषां। देवा यज्ञमतंन्वत। वसन्तो अस्याऽऽसीदाज्यम्। ग्रीष्म इध्मः श्ररद्धविः॥ मधुपकं समर्पयामि।

सप्तास्यांऽऽसन् परिधयः। त्रिः सप्त स्मिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वानाः। अबंधन् पुरुषं पृशुम्॥ शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

> तं युज्ञं बहिषि प्रौक्षन्। पुरुषं जातमंग्रतः। तेनं देवा अयजन्त। साध्या ऋषंयश्च ये॥ वस्रं समर्पयामि।

तस्मौद्यज्ञाथ्संबृहुतः। सम्भृतं पृषदाज्यम्। पृश्र्इस्ताइश्चेके वायव्यान्। आर्ण्यान्ग्राम्याश्च ये॥ यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

तस्मौद्यज्ञाथ्संर्वृहुतंः। ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दार्श्स जज्ञिरे तस्मौत्। यजुस्तस्मादजायत॥ दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि। तस्मादश्वां अजायन्त। ये के चोंभयादंतः। गावों ह जिज्ञेरे तस्मांत्। तस्मांज्ञाता अजावयंः॥ पुष्पाणि समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

#### ॥ अङ्ग-पूजा॥

- १. ॐ अनघाय नमः पादौ पूजयामि
- २. वामनाय नमः गुल्फौ पूजयामि
- ३. शौरये नमः जङ्घे पूजयामि
- ४. वैकुण्ठवासिने नमः ऊरू पूजयामि
- ५. पुरुषोत्तमाय नमः मेढ्रं पूजयामि
- ६. वासुदेवाय नमः कटिं पूजयामि
- ७. हृषीकेशाय नमः नाभिं पूजयामि
- ८. माधवाय नमः हृदयं पूजयामि
- ९. मधुसूदनाय नमः कण्ठं पूजयामि
- १०. वराहाय नमः बाहून् पूजयामि
- ११. नृसिंहाय नमः हस्तान् पूजयामि
- १३. दैत्यसूदनाय नमः मुखं पूजयामि
- १६. दामोदराय नमः नासिकां पूजयामि
- १४. पुण्डरीकाक्षाय नमः— नेत्रे पूजयामि
- १५. गरुडध्वजाय नमः श्रोत्रे पूजयामि
- १६. गोविन्दाय नमः ललाटं पूजयामि
- १७. अच्युताय नमः शिरः पूजयामि
- १८. श्री-नृसिंहाय नमः सर्वाणि अङ्गानि पूजयामि

### ॥ चतुर्विंशति नामपूजा॥

- १. ॐ केशवाय नमः
- २. ॐ नारायणाय नमः
- ३. ॐ माधवाय नमः
- ४. ॐ गोविन्दाय नमः
- ५. ॐ विष्णवे नमः
- ६. ॐ मधुसूदनाय नमः
- ७. ॐ त्रिविक्रमाय नमः
- ८. ॐ वामनाय नमः
- ९. ॐ श्रीधराय नमः
- १०. ॐ हृषीकेशाय नमः
- ११. ॐ पद्मनाभाय नमः
- १२. ॐ दामोदराय नमः

- १३. ॐ सङ्कर्षणाय नमः
- १४. ॐ वासुदेवाय नमः
- १५. ॐ प्रद्युम्नाय नमः
- १६. ॐ अनिरुद्धाय नमः
- १७. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः
- १८. ॐ अधोक्षजाय नमः
- १९. ॐ नृसिंहाय नमः
- २०. ॐ अच्युताय नमः
- २१. ॐ जनार्दनाय नमः
- २२. ॐ उपेन्द्राय नमः
- २३. ॐ हरये नमः
- २४. ॐ श्रीकृष्णाय नमः

# ॥श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाष्टोत्तरशतनामाविलः॥

श्रीनृसिंहाय नमः

महासिंहाय नमः

दिव्यसिंहाय नमः

महाबलाय नमः

उग्रसिंहाय नमः

महादेवाय नमः

उपेन्द्राय नमः

अग्निलोचनाय नमः

रौद्राय नमः

शौरये नमः

महावीराय नमः

सुविक्रमपराक्रमाय नमः

हरिकोलाहलाय नमः

चिक्रणे नमः

विजयाय नमः

अजयाय नमः

१०

अव्ययाय नमः		विकरालाय नमः	
दैत्यान्तकाय नमः		गतायुषे नमः	
परब्रह्मणे नमः		सर्वकर्तृकाय नमः	
अघोराय नमः	२०	भैरवाडम्बराय नमः	
घोरविक्रमाय नमः		दिव्याय नमः	
ज्वालामुखाय नमः		अगम्याय नमः	
ज्वालामालिने नमः		सर्वशत्रुजिते नमः	
महाज्वालाय नमः		अमोघास्राय नमः	
महाप्रभवे नमः		शस्त्रधराय नमः	५०
निटिलाक्षाय नमः		सव्यजूटाय नमः	
सहस्राक्षाय नमः		सुरेश्वराय नमः	
दुर्निरीक्ष्याय नमः		सहस्रबाहवे नमः	
प्रतापनाय नमः		वज्रनखाय नमः	
महादंष्ट्राय नमः	३०	सर्वसिद्धये नमः	
प्राज्ञाय नमः		जनार्दनाय नमः	
हिरण्यक-निषूदनाय नमः		अनन्ताय नमः	
चण्डकोपिने नमः		भगवते नमः	
सुरारिघ्नाय नमः		स्थूलाय नमः	
सदार्तिघ्नाय नमः		अगम्याय नमः	६०
सदाशिवाय नमः		परावराय नमः	
गुणभद्राय नमः		सर्वमन्नैकरूपाय नमः	
महाभद्राय नमः		सर्वयत्रविदारणाय नमः	
बलभद्राय नमः		अव्ययाय नमः	
सुभद्रकाय नमः	४०	परमानन्दाय नमः	
करालाय नमः		कालजिते नमः	
		I	

श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाष्टोत्तरशतनामावलिः			
खगवाहनाय नमः			

विभवे नमः

प्रभवे नमः

कालाय नमः

सर्वेश्वराय नमः

सङ्क्षणाय नमः

164

अव्यक्ताय नमः सुव्यक्ताय नमः

भक्तातिवत्सलाय नमः

00

त्रिविक्रमाय नमः त्रिलोकात्मने नमः

१००

१०८

सलभाय नमः श्चये नमः

लोकैकनायकाय नमः

सर्वाय नमः

शरणागतवत्सलाय नमः धीराय नमः

धराय नमः

सर्वज्ञाय नमः भीमाय नमः

भीमपराऋमाय नमः देवप्रियाय नमः

नुताय नमः

पूज्याय नमः

भवहृते नमः

परमेश्वराय नमः

श्रीवत्सवक्षसे नमः

श्रीवासाय नमः

८०

विश्वम्भराय नमः स्थिराभाय नमः

अच्युताय नमः

पुरुषोत्तमाय नमः अधोक्षजाय नमः अक्षयाय नमः

सेव्याय नमः वनमालिने नमः

प्रकम्पनाय नमः गुरवे नमः

लोकगुरवे नमः स्रष्टे नमः

परस्मै ज्योतिषे नमः परायणाय नमः

॥इति श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा॥

### ॥ उत्तराङ्ग-पूजा॥

यत्पुरुषं व्यंदधुः। कृतिधा व्यंकल्पयन्। मुखं किमंस्य कौ बाहू। कावूरू पादांवुच्येते॥ श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाय नमः धूपमाघ्रापयामि।

ब्राह्मणौंऽस्य मुखंमासीत्। बाहू रांजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः। पुद्धाः शूद्रो अंजायत॥

उद्दींप्यस्व जातवेदोऽपृघ्निर्ऋतिं ममं।
पृशू श्रृश्च मह्ममार्वह् जीवंनं च दिशों दिश॥
मा नों हि श्मीज्ञातवेदो गामश्वं पुरुषं जगंत्।
अबिंभ्रदग्न आगंहि श्रिया मा परिपातय॥
श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाय नमः अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

🕉 भूर्भुवः सुवंः। + ब्रह्मणे स्वाहाँ।

चन्द्रमा मनसो जातः। चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रश्चाग्निश्चां प्राणाद्वायुरंजायत॥

श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाय नमः ( ) पानकं च निवेदयामि, अमृतापिधानमसि। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

नाभ्यां आसीद्न्तरिक्षम्। शीर्ष्णो द्यौः समंवर्तत। पुन्न्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्। तथा लोकार अंकल्पयन्॥

पूर्गीफलसमायुक्तं नागवल्लीदलैर्युतम्। कर्पूरचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥ श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाय नमः ताम्बूलं समर्पयामि। वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवंर्णं तमंस्स्तु पारे। सर्वाणि रूपाणि विचित्य धीरः। नामानि कृत्वाऽभिवद्न् यदास्ते॥ श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाय नमः समस्त-अपराध-क्षमापनार्थं कर्पूरनीराजनं दर्शयामि।

कर्पूरनीरजनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

धाता पुरस्ताद्यमुंदाज्हारं। श्रुकः प्रविद्वान् प्रुदिश्श्वतंस्रः। तमेवं विद्वानमृतं इह भंवति। नान्यः पन्था अयंनाय विद्यते॥ योऽपां पुष्पं वेदं। पुष्पंवान् प्रजावान् पशुमान् भंवति। चन्द्रमा वा अपां पुष्पम्। पुष्पंवान् प्रजावान् पशुमान् भंवति। य एवं वेदं। योऽपामायतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति।

> ओं तद्वृह्म। ओं तद्वायुः। ओं तदात्मा। ओं तथ्मत्यम्। ओं तथ्सर्वम्। ओं तत्पुरोर्नमः॥

अन्तश्चरितं भूतेषु गुहायां विश्वमूर्तिषु। त्वं यज्ञस्त्वं वषद्कारस्त्वमिन्द्रस्त्वः रुद्रस्त्वं विष्णुस्त्वं ब्रह्म त्वं प्रजापतिः। त्वं तंदाप् आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः सुवरोम्॥

श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाय नमः वेदोक्तमत्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

सुवर्णरजतैर्युक्तं चामीकरविनिर्मितम्। स्वर्णपुष्यं प्रदास्यामि गृह्यतां मधुसूदन॥ स्वर्णपुष्यं समर्पयामि। प्रदक्षिणं करोम्यद्य पापानि नुत माधव। मयार्पितान्यशेषाणि परिगृह्य कृपां कुरु॥ यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण-पदे पदे॥ प्रदक्षिणं कृत्वा।

नमस्ते देवदेवेश नमस्ते भक्तवत्सल। नमस्ते पुण्डरीकाक्ष वासुदेवाय ते नमः॥ नमः सर्वहितार्थाय जगदाधाररूपिणे। साष्टाङ्गोऽयं प्रणामोऽस्तु जगन्नाथ मया कृतः॥ अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

युज्ञेनं युज्ञमंयजन्त देवाः। तानि धर्माणि प्रथमान्यांसन्। ते हु नाकं महिमानः सचन्ते। यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ - छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

### ॥ लक्ष्मी-नृसिंह-करुणारस-स्तोत्रम्॥

श्रीमत्-पयोनिधि-निकेतन चक्रपाणे भोगीन्द्र-भोग-मणि-राजित-पुण्य-मूर्ते । योगीश शाश्वत शरण्य भवाब्धि-पोत लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥१॥ ब्रह्मेन्द्र-रुद्र-मरुदर्क-किरीट-कोटि-सङ्घट्टिताङ्कि-कमलामल-कान्ति-कान्त। लक्ष्मी-लसत्-कुच-सरोरुह-राजहंस लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥२॥ संसार-दाव-दहनाकर-भी-करोरु-ज्वालावलीभिरतिदग्ध-तनूरुहस्य । त्वत्-पाद-पद्म-सरसी-शरणागतस्य लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥३॥

संसार-जाल-पिततस्य जगन्निवास सर्वेन्द्रियार्थ-बडिशाग्र-झषोपमस्य । प्रोत्कम्पित-प्रचुर-तालुक-मस्तकस्य लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥४॥

संसार-कूपमितघोरमगाध-मूलं सम्प्राप्य दुःख-शत-सर्प-समाकुलस्य। दीनस्य देव कृपया पदमागतस्य लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥५॥

संसार-भीकर-करीन्द्र-कराभिघात-निष्पीड्यमान-वपुषः सकलार्ति-नाश। प्राण-प्रयाण-भव-भीति-समाकुलस्य लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥६॥

संसार-सर्प-विष-दिग्ध-महोग्र-तीव्र-दंष्ट्राग्र-कोटि-परिदष्ट-विनष्ट-मूर्तेः । नागारि-वाहन सुधाब्धि-निवास शौरे लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥७॥

संसार-वृक्षमघ-बीजमनन्त-कर्म-शाखा-युतं करण-पत्रमनङ्ग-पृष्पम्। आरुह्य दुःख-फलितं पततं दयालो लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥८॥ संसार-सागर-विशाल-कराल-काल-नऋ-ग्रह-ग्रसित-निग्रह-विग्रहस्य । व्यग्रस्य राग-निचयोर्मि-निपीडितस्य लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥९॥

संसार-सागर-निमञ्जनमृह्यमानं दीनं विलोकय विभो करुणा-निधे माम्। प्रह्लाद-खेद-परिहार-परावतार लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥१०॥

संसार-घोर-गहने चरतो मुरारे मारोग्र-भीकर-मृग-प्रचुरार्दितस्य । आर्तस्य मत्सर-निदाघ-सुदुःखितस्य लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥११॥

बद्ध्वा गले यम-भटा बहु तर्जयन्तः कर्षन्ति यत्र भव-पाश-शतैर्युतं माम्। एकाकिनं परवशं चिकतं दयालो लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥१२॥

लक्ष्मीपते कमलनाभ सुरेश विष्णो यज्ञेश यज्ञ मधुसूदन विश्वरूप। ब्रह्मण्य केशव जनार्दन वासुदेव लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥१३॥

एकेन चक्रमपरेण करेण शङ्ख्यम् अन्येन सिन्धु-तनयाम् अवलम्ब्य तिष्ठन्। वामेतरेण वरदाभय-पद्म-चिह्नं लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥१४॥ अन्थस्य मे हृत-विवेक-महाधनस्य चोरैर्-महाबलिभिरिन्द्रिय-नामधेयैः । मोहान्धकार-कुहरे विनिपातितस्य लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥१५॥

प्रह्लाद-नारद-पराशर-पुण्डरीक-व्यासादि-भागवत-पुङ्गव-हृन्निवास । भक्तानुरक्त-परिपालन-पारिजात लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥१६॥

लक्ष्मी-नृसिंह-चरणाज्ञ-मधुव्रतेन स्तोत्रं कृतं शुभकरं भुवि शङ्करेण। ये तत् पठन्ति मनुजा हरि-भक्ति-युक्ताः ते यान्ति तत्-पद-सरोजमखण्ड-रूपम्॥१७॥

॥इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ श्री-लक्ष्मी-नृसिंह-करुणारस-स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

# ॥श्री-लक्ष्मी-नृसिंह-पञ्चरत्न-स्तोत्रम्॥

त्वत्-प्रभु-जीव-प्रियमिच्छिसि चेन्नरहरि-पूजां कुरु सततं प्रतिबिम्बालङ्कृति-धृति-कुशलो बिम्बालङ्कृतिमातनुते। चेतो-भृङ्ग भ्रमसि वृथा भव-मरु-भूमौ विरसायां भज भज लक्ष्मी-नरसिंहानघ-पद-सरसिज-मकरन्दम्॥१॥

शुक्तौ रजत-प्रतिभा जाता कटकाद्यर्थ-समर्था चेद् दुःखमयी ते संसृतिरेषा निर्वृति-दाने निपुणा स्यात्। चेतो-भृङ्ग भ्रमसि वृथा भव-मरु-भूमौ विरसायां भज भज लक्ष्मी-नरसिंहानघ-पद-सरसिज-मकरन्दम्॥२॥ आकृति-साम्याच्छाल्मिल-कुसुमे स्थल-निलनत्व-भ्रममकरोः गन्ध-रसाविह किमु विद्येते विफलं भ्राम्यसि भृश-विरसेऽस्मिन्। चेतो-भृङ्ग भ्रमिस वृथा भव-मरु-भूमौ विरसायां भज भज लक्ष्मी-नरसिंहानघ-पद-सरसिज-मकरन्दम्॥३॥

स्रक्-चन्दन-विनतादीन् विषयान् सुखदान् मत्वा तत्र विहरसे गन्ध-फली-सदृशा ननु तेऽमी भोगानन्तर-दुःख-कृतः स्युः। चेतो-भृङ्गः भ्रमसि वृथा भव-मरु-भूमौ विरसायां भज भज लक्ष्मी-नरसिंहानघ-पद-सरसिज-मकरन्दम्॥४॥

तव हितमेकं वचनं वक्ष्ये शृणु सुख-कामो यदि सततं स्वप्ने दृष्टं सकलं हि मृषा जाग्रति च स्मर तद्वदिति। चेतो-भृङ्ग भ्रमसि वृथा भव-मरु-भूमौ विरसायां भज भज लक्ष्मी-नरसिंहानघ-पद-सरसिज-मकरन्दम्॥५॥

॥इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ श्री-लक्ष्मी-नृसिंह-पश्चरत्न-स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

# ॥श्रीमद्भागवते महापुराणे सप्तमस्कन्धे नवमोऽध्यायः॥ श्रीनारद उवाच

एवं सुरादयः सर्वे ब्रह्मरुद्रपुरः सराः। नोपैतुमशकन्मन्यु संरम्भं सुदुरासदम्॥१॥

साक्षात्श्रीः प्रेषिता देवैर्दष्ट्वा तं महदद्भुतम्। अदृष्टाश्रुतपूर्वत्वात्सा नोपेयाय शङ्किता॥२॥

प्रह्रादं प्रेषयामास ब्रह्मावस्थितमन्तिके। तात प्रशमयोपेहि स्विपत्रे कुपितं प्रभुम्॥३॥ तथेति शनकै राजन्महाभागवतोऽर्भकः। उपेत्य भुवि कायेन ननाम विधृताञ्जलिः॥४॥

स्वपादमूले पतितं तमर्भकं विलोक्य देवः कृपया परिप्नुतः। उत्थाप्य तच्छीष्णर्यदधात्कराम्बुजं कालाहिवित्रस्तिधयां कृताभयम्॥५॥

स तत्करस्पर्शधुताखिलाशुभः सपद्यभिव्यक्तपरात्मदर्शनः । तत्पादपद्मं हृदि निर्वृतो दधौ हृष्यत्तनुः क्लिन्नहृदश्रुलोचनः॥६॥

अस्तौषीद्धरिमेकाग्र मनसा सुसमाहितः। प्रेमगद्भदया वाचा तत्र्यस्तहृदयेक्षणः॥७॥

### श्रीप्रह्राद उवाच

ब्रह्मादयः सुरगणा मुनयोऽथ सिद्धाः सत्त्वैकतानगतयो वचसां प्रवाहैः। नाराधितुं पुरुगुणैरधुनापि पिप्रुः किं तोष्ट्रमर्हति स मे हरिरुग्रजातेः॥८॥

मन्ये धनाभिजनरूपतपःश्रुतौजस् तेजःप्रभावबलपौरुषबुद्धियोगाः । नाराधनाय हि भवन्ति परस्य पुंसो भक्त्या तुतोष भगवान्गजयूथपाय॥९॥

विप्राद्विषड्गुणयुतादरविन्दनाभ पादारविन्दविमुखात्श्वपचं वरिष्ठम्। मन्ये तदर्पितमनोवचनेहितार्थ प्राणं पुनाति स कुलं न तु भूरिमानः॥१०॥ नैवात्मनः प्रभुरयं निजलाभपूर्णो मानं जनादविदुषः करुणो वृणीते। यद्यञ्जनो भगवते विदधीत मानं तच्चात्मने प्रतिमुखस्य यथा मुखश्रीः॥११॥

तस्मादहं विगतविक्कव ईश्वरस्य सर्वात्मना महि गृणामि यथा मनीषम्। नीचोऽजया गुणविसर्गमनुप्रविष्टः पूयेत येन हि पुमाननुवर्णितेन॥१२॥

सर्वे ह्यमी विधिकरास्तव सत्त्वधाम्नो ब्रह्मादयो वयमिवेश न चोद्विजन्तः। क्षेमाय भूतय उतात्मसुखाय चास्य विक्रीडितं भगवतो रुचिरावतारैः॥१३॥ तद्यच्छ मन्युमसुरश्च हतस्त्वयाद्य मोदेत साधुरपि वृश्चिकसर्पहत्या। लोकाश्च निर्वृतिमिताः प्रतियन्ति सर्वे रूपं नृसिंह विभयाय जनाः स्मरन्ति॥१४॥

नाहं बिभेम्यजित तेऽतिभयानकास्य जिह्वार्कनेत्रभुकुटीरभसोग्रदंष्ट्रात् । आत्रस्रजःक्षतजकेशरशङ्कुकर्णान् निर्ह्वादभीतदिगिभादरिभिन्नखाग्रात्॥१५॥

त्रस्तोऽस्म्यहं कृपणवत्सल दुःसहोग्र संसारचक्रकदनाद्गसतां प्रणीतः। बद्धः स्वकर्मभिरुशत्तम तेऽङ्क्षिमूलं प्रीतोऽपवर्गशरणं ह्वयसे कदा नु॥१६॥ यस्मात्प्रियाप्रियवियोगसंयोगजन्म शोकाग्निना सकलयोनिषु दह्यमानः। दुःखौषधं तदपि दुःखमतद्धियाहं भूमन्भ्रमामि वद मे तव दास्ययोगम्॥१७॥

सोऽहं प्रियस्य सुहृदः परदेवताया लीलाकथास्तव नृसिंह विरिश्चगीताः। अञ्जस्तितर्म्यनुगृणन्गुणविप्रमुक्तो दुर्गाणि ते पदयुगालयहंससङ्गः॥१८॥

बालस्य नेह शरणं पितरौ नृसिंह नार्तस्य चागदमुदन्वति मञ्जतो नौः। तप्तस्य तत्प्रतिविधिर्य इहाञ्जसेष्टस् तावद्विभो तनुभृतां त्वदुपेक्षितानाम्॥१९॥

यस्मिन्यतो यर्हि येन च यस्य यस्माद्
यस्मै यथा यदुत यस्त्वपरः परो वा।
भावः करोति विकरोति पृथक्स्वभावः
सश्चोदितस्तदखिलं भवतः स्वरूपम्॥२०॥

माया मनः सृजित कर्ममयं बलीयः कालेन चोदितगुणानुमतेन पुंसः। छन्दोमयं यदजयार्पितषोडशारं संसारचक्रमज कोऽतितरेत्त्वदन्यः॥२१॥

स त्वं हि नित्यविजितात्मगुणः स्वधाम्ना कालो वशीकृतविसृज्यविसर्गशक्तिः। चक्रे विसृष्टमजयेश्वर षोडशारे निष्पीड्यमानमुपकर्ष विभो प्रपन्नम्॥२२॥ दृष्टा मया दिवि विभोऽखिलिधण्यपानाम् आयुः श्रियो विभव इच्छति याञ्जनोऽयम्। येऽस्मत्पितुः कुपितहासविजृम्भितभू विस्फूर्जितेन लुलिताः स तु ते निरस्तः॥२३॥

तस्मादमूस्तनुभृतामहमाशिषोऽज्ञ आयुः श्रियं विभवमैन्द्रियमाविरिश्चात्। नेच्छामि ते विलुलितानुरुविक्रमेण कालात्मनोपनय मां निजभृत्यपार्श्वम्॥२४॥

कुत्राशिषः श्रुतिसुखा मृगतृष्णिरूपाः क्वेदं कलेवरमशेषरुजां विरोहः। निर्विद्यते न तु जनो यदपीति विद्वान् कामानलं मधुलवैः शमयन्दुरापैः॥२५॥

क्वाहं रजःप्रभव ईश तमोऽधिकेऽस्मिन् जातः सुरेतरकुले क्व तवानुकम्पा। न ब्रह्मणो न तु भवस्य न वै रमाया यन्मेऽर्पितः शिरसि पद्मकरः प्रसादः॥२६॥

नैषा परावरमतिर्भवतो ननु स्याज् जन्तोर्यथात्मसुहृदो जगतस्तथापि। संसेवया सुरतरोरिव ते प्रसादः सेवानुरूपमुदयो न परावरत्वम्॥२७॥

एवं जनं निपतितं प्रभवाहिकूपे कामाभिकाममनु यः प्रपतन्प्रसङ्गात्। कृत्वात्मसात्सुरर्षिणा भगवन्गृहीतः सोऽहं कथं नु विसृजे तव भृत्यसेवाम्॥२८॥ मत्प्राणरक्षणमनन्त पितुर्वधश्च मन्ये स्वभृत्यऋषिवाक्यमृतं विधातुम्। खङ्गं प्रगृह्य यदवोचदसद्विधित्सुस् त्वामीश्वरो मदपरोऽवतु कं हरामि॥२९॥

एकस्त्वमेव जगदेतममुष्य यत्त्वम् आद्यन्तयोः पृथगवस्यसि मध्यतश्च। सृष्ट्वा गुणव्यतिकरं निजमाययेदं नानेव तैरवसितस्तदनुप्रविष्टः॥३०॥

त्वम्वा इदं सदसदीश भवांस्ततोऽन्यो माया यदात्मपरबुद्धिरियं ह्यपार्था। यद्यस्य जन्म निधनं स्थितिरीक्षणं च तद्वैतदेव वसुकालवदष्टितर्वीः॥३१॥

न्यस्येदमात्मिन जगद्विलयाम्बुमध्ये शेषेत्मना निजसुखानुभवो निरीहः। योगेन मीलितदगात्मिनपीतिनद्रस् तुर्ये स्थितो न तु तमो न गुणांश्च युङ्के॥३२॥

तस्यैव ते वपुरिदं निजकालशक्त्या सञ्चोदितप्रकृतिधर्मण आत्मगूढम्। अम्भस्यनन्तशयनाद्विरमत्समाधेर् नाभेरभृत्स्वकणिकावटवन्महाज्जम्॥३३॥

तत्सम्भवः कविरतोऽन्यदपश्यमानस् त्वां बीजमात्मिन ततं स बहिर्विचिन्त्य। नाविन्ददब्दशतमप्सु निमञ्जमानो जातेऽङ्क्रुरे कथमुहोपलभेत बीजम्॥३४॥ स त्वात्मयोनिरतिविस्मित आश्रितोऽज्ञं कालेन तीव्रतपसा परिशुद्धभावः। त्वामात्मनीश भृवि गन्धमिवातिसूक्ष्मं भूतेन्द्रियाशयमये विततं ददर्श॥३५॥

एवं सहस्रवदनाङ्ग्निशिरःकरोरु नासाद्यकर्णनयनाभरणायुधाढ्यम्। मायामयं सदुपलक्षितसन्निवेशं दृष्ट्वा महापुरुषमाप मुदं विरिश्चः॥३६॥

तस्मै भवान्हयशिरस्तनुवं हि बिभ्रद् वेदद्रुहावतिबलौ मधुकैटभाख्यौ। हत्वानयच्छ्रुतिगणांश्च रजस्तमश्च सत्त्वं तव प्रियतमां तनुमामनन्ति॥३७॥

इत्थं नृतिर्यगृषिदेवझाषावतारेर् लोकान्विभावयसि हंसि जगत्प्रतीपान्। धर्मं महापुरुष पासि युगानुवृत्तं छन्नः कलौ यदभवस्त्रियुगोऽथ स त्वम्॥३८॥

नैतन्मनस्तव कथासु विकुण्ठनाथ सम्प्रीयते दुरितदुष्टमसाधु तीव्रम्। कामातुरं हर्षशोकभयैषणार्तं तस्मिन्कथं तव गतिं विमृशामि दीनः॥३९॥

जिह्वैकतोऽच्युत विकर्षति मावितृप्ता शिश्नोऽन्यतस्त्वगुदरं श्रवणं कुतश्चित्। घ्राणोऽन्यतश्चपलदक्क च कर्मशक्तिर् बह्वयः सपत्य इव गेहपतिं लुनन्ति॥४०॥ एवं स्वकर्मपतितं भववैतरण्याम् अन्योन्यजन्ममरणाशनभीतभीतम्। पश्यञ्जनं स्वपरविग्रहवैरमैत्रं हन्तेति पारचर पीपृहि मृढमद्य॥४१॥

को न्वत्र तेऽखिलगुरो भगवन्प्रयास उत्तारणेऽस्य भवसम्भवलोपहेतोः। मूढेषु वै महदनुग्रह आर्तबन्धो किं तेन ते प्रियजनाननुसेवतां नः॥४२॥

नैवोद्विजे पर दुरत्ययवैतरण्यास् त्वद्वीर्यगायनमहामृतमग्नचित्तः । शोचे ततो विमुखचेतस इन्द्रियार्थ मायासुखाय भरमुद्वहतो विमूढान्॥४३॥

प्रायेण देव मुनयः स्वविमुक्तिकामा मौनं चरन्ति विजने न परार्थनिष्ठाः। नैतान्विहाय कृपणान्विमुमुक्ष एको नान्यं त्वदस्य शरणं भ्रमतोऽनुपश्ये॥४४॥

यन्मैथुनादिगृहमेधिसुखं हि तुच्छं कण्डूयनेन करयोरिव दुःखदुःखम्। तृप्यन्ति नेह कृपणा बहुदुःखभाजः कण्डूतिवन्मनसिजं विषहेत धीरः॥४५॥

मौनव्रतश्रुततपोऽध्ययनस्वधर्म व्याख्यारहोजपसमाधय आपवर्ग्याः। प्रायः परं पुरुष ते त्वजितेन्द्रियाणां वार्ता भवन्त्युत न वात्र तु दाम्भिकानाम्॥४६॥ रूपे इमे सदसती तव वेदसृष्टे बीजाङ्कुराविव न चान्यदरूपकस्य। युक्ताः समक्षमुभयत्र विचक्षन्ते त्वां योगेन वह्निमिव दारुषु नान्यतः स्यात्॥४७॥

त्वं वायुरग्निरविनिर्वियदम्बु मात्राः प्राणेन्द्रियाणि हृदयं चिदनुग्रहश्च। सर्वं त्वमेव सगुणो विगुणश्च भूमन् नान्यत्त्वदस्त्यपि मनोवचसा निरुक्तम्॥४८॥

नैते गुणा न गुणिनो महदादयो ये सर्वे मनः प्रभृतयः सहदेवमर्त्याः। आद्यन्तवन्त उरुगाय विदन्ति हि त्वाम् एवं विमृश्य सुधियो विरमन्ति शब्दात्॥४९॥

तत्तेऽर्हत्तम नमः स्तुतिकर्मपूजाः कर्म स्मृतिश्चरणयोः श्रवणं कथायाम्। संसेवया त्विय विनेति षडङ्गया किं भक्तिं जनः परमहंसगतौ लभेत॥५०॥

#### श्रीनारद उवाच

एताबद्धर्णितगुणो भक्त्या भक्तेन निर्गुणः। प्रह्लादं प्रणतं प्रीतो यतमन्युरभाषत॥५१॥

## श्रीभगवानुवाच

प्रह्राद भद्र भद्रं ते प्रीतोऽहं तेऽसुरोत्तम। वरं वृणीष्वाभिमतं कामपूरोऽस्म्यहं नृणाम्॥५२॥

मामप्रीणत आयुष्मन्दर्शनं दुर्लभं हि मे। दृष्ट्वा मां न पुनर्जन्तुरात्मानं तप्तुमर्हति॥५३॥ प्रीणन्ति ह्यथ मां धीराः सर्वभावेन साधवः। श्रेयस्कामा महाभाग सर्वासामाशिषां पतिम्॥५४॥

#### श्रीनारद् उवाच

एवं प्रलोभ्यमानोऽपि वरैर्लोकप्रलोभनैः। एकान्तित्वाद्भगवति नैच्छत्तानसुरोत्तमः॥५५॥

॥इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां सप्तमस्कन्धे नवमोऽध्यायः॥

# ॥श्रीमद्भागवते महापुराणे सप्तमस्कन्धे नवमोऽध्यायः॥ श्रीनारद उवाच

एवं सुरादयः सर्वे ब्रह्मरुद्रपुरः सराः। नोपैतुमशकन्मन्यु संरम्भं सुदुरासदम्॥१॥

साक्षात्श्रीः प्रेषिता देवैर्दञ्चा तं महदद्भुतम्। अदृष्टाश्रुतपूर्वत्वात्सा नोपेयाय शङ्किता॥२॥

प्रह्रादं प्रेषयामास ब्रह्मावस्थितमन्तिके। तात प्रशमयोपेहि स्वपित्रे कुपितं प्रभुम्॥३॥

तथेति शनके राजन्महाभागवतोऽर्भकः। उपेत्य भुवि कायेन ननाम विधृताञ्जलिः॥४॥

स्वपादमूले पतितं तमर्भकं विलोक्य देवः कृपया परिप्नुतः। उत्थाप्य तच्छीष्णर्यदधात्कराम्बुजं कालाहिवित्रस्तिधयां कृताभयम्॥५॥

स तत्करस्पर्शधुताखिलाशुभः सपद्यभिव्यक्तपरात्मदर्शनः। तत्पादपद्मं हृदि निर्वृतो दधौ हृष्यत्तनुः क्लिन्नहृदशुलोचनः॥६॥ अस्तौषीद्धरिमेकाग्र मनसा सुसमाहितः। प्रेमगद्गदया वाचा तत्र्यस्तहृदयेक्षणः॥७॥

#### श्रीप्रहाद उवाच

ब्रह्मादयः सुरगणा मुनयोऽथ सिद्धाः सत्त्वैकतानगतयो वचसां प्रवाहैः। नाराधितुं पुरुगुणैरधुनापि पिप्रुः किं तोष्टुमर्हति स मे हरिरुग्रजातेः॥८॥

मन्ये धनाभिजनरूपतपःश्रुतौजस्-तेजःप्रभावबलपौरुषबुद्धियोगाः । नाराधनाय हि भवन्ति परस्य पुंसो भक्त्या तुतोष भगवान्गजयूथपाय॥९॥

विप्राद्विषङ्गुणयुतादरविन्दनाभ पादारविन्दविमुखात्श्वपचं वरिष्ठम्। मन्ये तदर्पितमनोवचनेहितार्थ प्राणं पुनाति स कुलं न तु भूरिमानः॥१०॥

नैवात्मनः प्रभुरयं निजलाभपूर्णो मानं जनादविदुषः करुणो वृणीते। यद्यञ्जनो भगवते विदधीत मानं तच्चात्मने प्रतिमुखस्य यथा मुखश्रीः॥११॥

तस्मादहं विगतविक्कव ईश्वरस्य सर्वात्मना महि गृणामि यथा मनीषम्। नीचोऽजया गुणविसर्गमनुप्रविष्टः पूयेत येन हि पुमाननुवर्णितेन॥१२॥ सर्वे ह्यमी विधिकरास्तव सत्त्वधाम्नो ब्रह्मादयो वयमिवेश न चोद्विजन्तः। क्षेमाय भूतय उतात्मसुखाय चास्य विक्रीडितं भगवतो रुचिरावतारैः॥१३॥ तद्यच्छ मन्युमसुरश्च हतस्त्वयाद्य मोदेत साधुरिप वृश्चिकसर्पहत्या। लोकाश्च निर्वृतिमिताः प्रतियन्ति सर्वे रूपं नृसिंह विभयाय जनाः स्मरन्ति॥१४॥

नाहं बिभेम्यजित तेऽतिभयानकास्य जिह्वार्कनेत्रभुकुटीरभसोग्रदंष्ट्रात् । आत्रस्रजःक्षतजकेशरशङ्कुकर्णान् निर्ह्वादभीतदिगिभादरिभिन्नखाग्रात्॥१५॥

त्रस्तोऽस्म्यहं कृपणवत्सल दुःसहोग्र संसारचक्रकदनाद्गसतां प्रणीतः। बद्धः स्वकर्मभिरुशत्तम तेऽङ्किःमूलं प्रीतोऽपवर्गशरणं ह्वयसे कदा नु॥१६॥

यस्मात्प्रियाप्रियवियोगसंयोगजन्म शोकाग्निना सकलयोनिषु दह्यमानः। दुःखौषधं तदपि दुःखमतिद्धयाहं भूमन्भ्रमामि वद मे तव दास्ययोगम्॥१७॥

सोऽहं प्रियस्य सुहृदः परदेवताया लीलाकथास्तव नृसिंह विरिश्चगीताः। अञ्जस्तितर्म्यनुगृणन्गुणविप्रमुक्तो दुर्गाणि ते पदयुगालयहंससङ्गः॥१८॥ बालस्य नेह शरणं पितरौ नृसिंह नार्तस्य चागदमुदन्वति मञ्जतो नौः। तप्तस्य तत्प्रतिविधिर्य इहाञ्जसेष्टस्-तावद्विभो तनुभृतां त्वदुपेक्षितानाम्॥१९॥

यस्मिन्यतो यर्हि येन च यस्य यस्माद्
यस्मै यथा यदुत यस्त्वपरः परो वा।
भावः करोति विकरोति पृथक्स्वभावः
सश्चोदितस्तदखिलं भवतः स्वरूपम्॥२०॥

माया मनः सृजित कर्ममयं बलीयः कालेन चोदितगुणानुमतेन पुंसः। छन्दोमयं यदजयार्पितषोडशारं संसारचऋमज कोऽतितरेत्त्वदन्यः॥२१॥

स त्वं हि नित्यविजितात्मगुणः स्वधाम्ना कालो वशीकृतविसृज्यविसर्गशक्तिः। चक्रे विसृष्टमजयेश्वर षोडशारे निष्पीड्यमानमुपकर्ष विभो प्रपन्नम्॥२२॥

दृष्टा मया दिवि विभोऽखिलिधिष्णयपानाम् आयुः श्रियो विभव इच्छति याञ्जनोऽयम्। येऽस्मत्पितुः कुपितहासविजृम्भितभू विस्फूर्जितेन लुलिताः स तु ते निरस्तः॥२३॥

तस्मादम्स्तनुभृतामहमाशिषोऽज्ञ आयुः श्रियं विभवमैन्द्रियमाविरिश्चात्। नेच्छामि ते विलुलितानुरुविक्रमेण कालात्मनोपनय मां निजभृत्यपार्श्वम्॥२४॥ कुत्राशिषः श्रुतिसुखा मृगतृष्णिरूपाः केदं कलेवरमशेषरुजां विरोहः। निर्विद्यते न तु जनो यदपीति विद्वान् कामानलं मधुलवैः शमयन्दुरापैः॥२५॥

क्वाहं रजःप्रभव ईश तमोऽधिकेऽस्मिन् जातः सुरेतरकुले क्व तवानुकम्पा। न ब्रह्मणो न तु भवस्य न वै रमाया यन्मेऽर्पितः शिरसि पद्मकरः प्रसादः॥२६॥

नैषा परावरमितर्भवतो ननु स्याज् जन्तोर्यथात्मसुहृदो जगतस्तथापि। संसेवया सुरतरोरिव ते प्रसादः सेवानुरूपमुदयो न परावरत्वम्॥२७॥

एवं जनं निपतितं प्रभवाहिकूपे कामाभिकाममनु यः प्रपतन्प्रसङ्गात्। कृत्वात्मसात्सुरर्षिणा भगवन्गृहीतः सोऽहं कथं नु विसृजे तव भृत्यसेवाम्॥२८॥

मत्प्राणरक्षणमनन्त पितुर्वधश्च मन्ये स्वभृत्यऋषिवाक्यमृतं विधातुम्। खङ्गं प्रगृह्य यदवोचदसद्विधित्सुस्-त्वामीश्वरो मदपरोऽवतु कं हरामि॥२९॥

एकस्त्वमेव जगदेतममुष्य यत्त्वम् आद्यन्तयोः पृथगवस्यसि मध्यतश्च। सृष्ट्वा गुणव्यतिकरं निजमाययेदं नानेव तैरवसितस्तदनुप्रविष्टः॥३०॥ त्वम्वा इदं सदसदीश भवांस्ततोऽन्यो माया यदात्मपरबुद्धिरियं ह्यपार्था। यद्यस्य जन्म निधनं स्थितिरीक्षणं च तद्वैतदेव वसुकालवदष्टितर्वोः॥३१॥

न्यस्येदमात्मिन जगद्विलयाम्बुमध्ये शेषेऽऽत्मना निजसुखानुभवो निरीहः। योगेन मीलितदगात्मिनिपीतिनद्रस्-तुर्ये स्थितो न तु तमो न गुणांश्च युङ्क्षा ३२॥

तस्यैव ते वपुरिदं निजकालशक्त्या सञ्चोदितप्रकृतिधर्मण आत्मगूढम्। अम्भस्यनन्तशयनाद्विरमत्समाधेर्-नाभेरभूत्स्वकणिकावटवन्महाज्ञम्॥३३॥

तत्सम्भवः कविरतोऽन्यदपश्यमानस्-त्वां बीजमात्मिन ततं स बहिर्विचिन्त्य। नाविन्ददब्दशतमप्सु निमञ्जमानो जातेऽङ्कुरे कथमुहोपलभेत बीजम्॥३४॥

स त्वात्मयोनिरतिविस्मित आश्रितोऽजं कालेन तीव्रतपसा परिशुद्धभावः। त्वामात्मनीश भुवि गन्धमिवातिसूक्ष्मं भृतेन्द्रियाशयमये विततं ददर्श॥३५॥

एवं सहस्रवदनाङ्क्षिशिरःकरोरु नासाद्यकर्णनयनाभरणायुधाढ्यम्। मायामयं सद्पलक्षितसन्निवेशं दृष्ट्वा महापुरुषमाप मुदं विरिश्चः॥३६॥ तस्मै भवान्हयशिरस्तनुवं हि बिभ्रद् वेदद्रुहावतिबलौ मधुकैटभाख्यौ। हत्वानयच्छ्रुतिगणांश्च रजस्तमश्च सत्त्वं तव प्रियतमां तनुमामनन्ति॥३७॥

इत्थं नृतिर्यगृषिदेवझषावतारैर् लोकान्विभावयसि हंसि जगत्प्रतीपान्। धर्मं महापुरुष पासि युगानुवृत्तं छन्नः कलौ यदभवस्त्रियुगोऽथ स त्वम्॥३८॥

नैतन्मनस्तव कथासु विकुण्ठनाथ सम्प्रीयते दुरितदुष्टमसाधु तीव्रम्। कामातुरं हर्षशोकभयैषणार्तं तस्मिन्कथं तव गतिं विमृशामि दीनः॥३९॥

जिह्वैकतोऽच्युत विकर्षति मावितृप्ता शिश्नोऽन्यतस्त्वगुदरं श्रवणं कुतश्चित्। घ्राणोऽन्यतश्चपलदक्क च कर्मशक्तिर् बह्व्यः सपत्र्य इव गेहपतिं लृनन्ति॥४०॥

एवं स्वकर्मपतितं भववैतरण्याम् अन्योन्यजन्ममरणाशनभीतभीतम्। पश्यञ्जनं स्वपरविग्रहवैरमैत्रं हन्तेति पारचर पीपृहि मूढमद्य॥४१॥

को न्वत्र तेऽखिलगुरो भगवन्प्रयास उत्तारणेऽस्य भवसम्भवलोपहेतोः। मूढेषु वै महदनुग्रह आर्तबन्धो किं तेन ते प्रियजनाननुसेवतां नः॥४२॥ नैवोद्विजे पर दुरत्ययवैतरण्यास्-त्वद्वीर्यगायनमहामृतमग्नचित्तः । शोचे ततो विमुखचेतस इन्द्रियार्थ मायासुखाय भरमुद्वहतो विमूढान्॥४३॥

प्रायेण देव मुनयः स्वविमुक्तिकामा मौनं चरन्ति विजने न परार्थनिष्ठाः। नैतान्विहाय कृपणान्विमुमुक्ष एको नान्यं त्वदस्य शरणं भ्रमतोऽनुपश्ये॥४४॥

यन्मैथुनादिगृहमेधिसुखं हि तुच्छं कण्डूयनेन करयोरिव दुःखदुःखम्। तृप्यन्ति नेह कृपणा बहुदुःखभाजः कण्डूतिवन्मनसिजं विषहेत धीरः॥४५॥

मौनव्रतश्रुततपोऽध्ययनस्वधर्म व्याख्यारहोजपसमाधय आपवर्ग्याः। प्रायः परं पुरुष ते त्वजितेन्द्रियाणां वार्ता भवन्त्युत न वात्र तु दाम्भिकानाम्॥४६॥

रूपे इमे सदसती तव वेदसृष्टे बीजाङ्कुराविव न चान्यदरूपकस्य। युक्ताः समक्षमुभयत्र विचक्षन्ते त्वां योगेन वह्निमिव दारुषु नान्यतः स्यात्॥४७॥

त्वं वायुरग्निरविनिवियदम्बु मात्राः प्राणेन्द्रियाणि हृदयं चिदनुग्रहश्च। सर्वं त्वमेव सगुणो विगुणश्च भूमन् नान्यत्त्वदस्त्यपि मनोवचसा निरुक्तम्॥४८॥ नैते गुणा न गुणिनो महदादयो ये सर्वे मनः प्रभृतयः सहदेवमर्त्याः। आद्यन्तवन्त उरुगाय विदन्ति हि त्वाम् एवं विमृश्य सुधियो विरमन्ति शब्दात्॥४९॥

तत्तेऽर्हत्तम नमः स्तुतिकर्मपूजाः कर्म स्मृतिश्वरणयोः श्रवणं कथायाम्। संसेवया त्वयि विनेति षडङ्गया किं भक्तिं जनः परमहंसगतौ लभेत॥५०॥

### श्रीनारद उवाच

एताबद्वर्णितगुणो भक्त्या भक्तेन निर्गुणः। प्रह्लादं प्रणतं प्रीतो यतमन्युरभाषत॥५१॥

#### श्रीभगवानुवाच

प्रह्राद भद्र भद्रं ते प्रीतोऽहं तेऽसुरोत्तम। वरं वृणीष्वाभिमतं कामपूरोऽस्म्यहं नृणाम्॥५२॥

मामप्रीणत आयुष्मन्दर्शनं दुर्लभं हि मे। दृष्ट्वा मां न पुनर्जन्तुरात्मानं तप्तुमहिति॥५३॥

प्रीणन्ति ह्यथ मां धीराः सर्वभावेन साधवः। श्रेयस्कामा महाभाग सर्वासामाशिषां पतिम्॥५४॥

#### श्रीनारद उवाच

एवं प्रलोभ्यमानोऽपि वरैर्लोकप्रलोभनैः। एकान्तित्वाद्भगवति नैच्छत्तानसुरोत्तमः॥५५॥

॥इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां सप्तमस्कन्धे नवमोऽध्यायः॥

# ॥ अर्घ्यप्रदानम्॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम् नृसिंह-जयन्ती-पुण्यकाले श्री-लक्ष्मी-नृसिंह-पूजान्ते क्षीरार्घ्यप्रदानं करिष्ये॥

> हिरण्याक्षवधार्थाय भूभारोत्तरणाय च। परित्राणाय साधूनां जातो विष्णुर्नृकेसरी। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं सलक्ष्मी-नृहरे स्वयम्॥ श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाय नमः इदमर्घ्यमिदमर्घ्यमिदमर्घ्यम्॥

> > अनेन अर्घ्यप्रदानेन भगवान् सर्वात्मकः श्री-लक्ष्मी-नृसिंहः प्रीयताम्।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अनन्तपुण्यफलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥ श्री-लक्ष्मी-नृसिंह-जयन्ती-पुण्यकाले अस्मिन् मया क्रियमाण महाविष्णुपूजायां यद्देयमुपायनदानं तत्प्रत्याम्नायार्थं हिरण्यं श्री-लक्ष्मी-नृसिंह-प्रीतिं कामयमानः मनसोद्दिष्टाय ब्राह्मणाय सम्प्रददे नमः न मम। अनया पूजया श्री-लक्ष्मी-नृसिंहः प्रीयताम्।

# ॥ विसर्जनम्॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपः-पूजा-क्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

इदं व्रतं मया देव कृतं प्रीत्यै तव प्रभो। न्यूनं सम्पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादाञ्जनाईन॥ मद्वंशे ये नरा जाता ये जनिष्यन्ति चापरे। तांस्त्वमुद्धर देवेश दुःसहाद्भवसागरात्॥

पातकार्णवमग्नस्य व्याधिदुःखाम्बुवारिभिः। तीव्रैश्च परिभृतस्य मोहदुःखगतस्य मे॥

करावलम्बनं देहि शेषशायिन् जगत्पते। श्रीनृसिंह रमाकान्त भक्तानां भयनाशन॥

क्षीराब्धिनिवासिन् त्वं चक्रपाणे जनार्दन। व्रतेनानेन देवेश भुक्तिमुक्तिप्रदो भव॥

अस्मात् बिम्बात् श्री-लक्ष्मी-नृसिंहं यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि (अक्षतानर्पित्वा देवमुत्सर्जयेत्।) अनया पूजया श्री-लक्ष्मी-नृसिंहः प्रीयताम्।

> कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्। करोमि यद्यत् सकलं परस्मे नारायणायेति समर्पयामि॥

> > ॐ तत्सद्बह्मार्पणमस्तु।

सालग्रामशिलावारि पापहारि शरीरिणाम्। आजन्मकृतपापानां प्रायश्चित्तं दिने दिने॥ अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिनिवारणम्।

इति तीर्थं पीत्वा शिरसि प्रसादं धारयेत्।

सर्वपापक्षयकरं विष्णुपादोदकं श्भम्॥





# ॥ श्री-वरमहालक्ष्मी-पूजा ॥

# ॥ पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा॥

(आचम्य)

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवणं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविद्रोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुव्रोम्। (अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा) ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः अविघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गणानां त्वा गणपंति हवामहे कविं केवीनामुंपमश्रंवस्तमम्। ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत् आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद् सादनम्॥

अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।
ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।
पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरघ्यं समर्पयामि।
आचमनीयं समर्पयामि।
ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।
स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।
वस्नार्थमक्षतान् समर्पयामि।
यज्ञोपवीताभरणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।
दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।
गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

# पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

#### ॥ अर्चना ॥

१. ॐ सुमुखाय नमः

९. ॐ धूमकेतवे नमः

२. ॐ एकदन्ताय नमः

१०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः

३. ॐ कपिलाय नमः

११. ॐ फालचन्द्राय नमः

४. ॐ गजकर्णकाय नमः

१२. ॐ गजाननाय नमः

५. ॐ लम्बोदराय नमः

१३. ॐ वऋतुण्डाय नमः

६. ॐ विकटाय नमः

१४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः

७. ॐ विघ्नराजाय नमः १५. ॐ हेरम्बाय नमः

८. ॐ विनायकाय नमः

१६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाघ्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्प्रनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वऋतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ। अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि। छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

# ॥ प्रधान-पूजा — श्रीमहालक्ष्मी-पूजा॥

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

#### ॥सङ्कल्पः॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते अद्य ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे

शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकाणां प्रभवादीनां षष्ट्याः संवत्सराणां मध्ये () १९ नाम संवत्सरे दक्षिणायने वर्ष-ऋतौ (कटक/सिंह)-श्रावण-मासे शुक्रपक्षे ( ) शुभितथौ भृगुवासरयुक्तायाम् ( नक्षत्र ( )<sup>२१</sup> नाम योग ( )<sup>२२</sup> करण युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् ( ) शुभितिथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय-आयुरारोग्य-ऐश्वर्याभिवृद्धर्थम् धर्मार्थकाममोक्ष-चत्रविधफलप्रुषार्थसिद्धार्थं पुत्रपौत्राभिवृद्धार्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्धार्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहा-पातकचतुष्टय-व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां अपनोदनद्वारा सकल-पापक्षयार्थं आयुष्मत्सत्सन्तानसमृद्ध्यर्थं दीर्घसौमङ्गल्यावाह्यर्थं श्रीवरमहालक्ष्मी-प्रसादसिद्धर्थं यथाशक्ति-ध्यानावाहनादि श्रीवरमहालक्ष्मी-पूजां करिष्ये। तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये। श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। शोभनार्थे क्षेमाय पुनरागमनाय च।

<sup>&</sup>lt;sup>१९</sup>पृष्टं ६२१ पश्यताम्

<sup>&</sup>lt;sup>२°</sup>पृष्टं ६३१ पश्यताम्

<sup>&</sup>lt;sup>२१</sup>पृष्टं ६३२ पश्यताम् <sup>२२</sup>पृष्टं ६३३ पश्यताम

(गणपति-प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

#### ॥ आसन-पूजा॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चासनं कुरु॥

#### ॥ घण्टा-पूजा॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्। घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

#### ॥ कलश-पूजा॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः।

ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्) आपो वा इद॰ सर्वं विश्वां भूतान्यापंः प्राणा वा आपंः पृशव्

आपोऽन्नमापोऽमृंत्मापंः सम्राडापों विराडापंः स्वराडापृश्छन्दा्र्इस्यापो ज्योती्र्ड्ष्यापो यज्रू्ड्ष्यापंः स्त्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भुवः सुवराप ओम्॥

> कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः। अङ्गश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च ह्रदा नदाः। आयान्तु देविपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥ ॐ भूर्भृवः सुवो भूर्भृवः सुवेः।

(इति कलशजलेन सर्वीपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

#### ॥ आत्म-पूजा॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

१. ॐ आत्मने नमः ४. ॐ जीवात्मने नमः

२. ॐ अन्तरात्मने नमः ५. ॐ परमात्मने नमः

३. ॐ योगात्मने नमः ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः

#### समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः। त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

### ॥ पीठ-पूजा॥

१. ॐ आधारशक्त्ये नमः ८. ॐ रत्नवेदिकाये नमः

२. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः

३. ॐ आदिकूर्माय नमः १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः

४. ॐ आदिवराहाय नमः ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः

५. ॐ अनन्ताय नमः १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः

६. ॐ पृथिव्यै नमः १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः

७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः १४. ॐ योगपीठासनाय नमः

#### ॥ गुरु-ध्यानम्॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

# ॥ षोडशोपचार-पूजा॥

पद्मासनां पद्मकरां पद्ममालाविभूषिताम्। क्षीरसागरसम्भूतां हेमवर्णसमप्रभाम्॥ क्षीरवर्गसमं वस्त्रं दधानां हरिवल्लभाम्। भावये भक्तियोगेन कलशेऽस्मिन् मनोहरे॥ अस्मिन् कुम्भे (प्रतिमायां) श्री-वरलक्ष्मीं ध्यायामि।

बालभानुप्रतीकाशे पूर्णचन्द्रनिभानने। सूत्रेऽस्मिन् सुस्थिरा भूत्वा प्रयच्छ बहुलान् वरान्॥

# इति दोरस्थापनम्।

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये विष्णुवक्षस्थलालये। आवाहयामि देवि त्वामभीष्टफलदा भव॥

### श्री-वरलक्ष्मीमावाहयामि।

अनेकरत्नखचितं क्षीरसागरसम्भवे। स्वर्णसिहासनं देवि स्वीकुरुष्व हरिप्रिये॥ श्री-वरलक्ष्म्ये नमः आसनं समर्पयामि। गङ्गादिसरिदानीतं गन्धपुष्पसमन्वितम्। पाद्यं ददामि ते देवि प्रसीद परमेश्वरि॥

#### श्री-वरलक्ष्म्यै नमः पाद्यं समर्पयामि।

गङ्गानदीसमानीतं सुवर्णकलशस्थितम्। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं पुत्रपौत्रफलप्रदे॥ श्री-वरलक्ष्म्ये नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

प्रसन्नं शीतलं तोयं प्रसन्नमुखपङ्कजे। गृहाणाचमनार्थाय गरुडध्वजवल्लभे॥

श्री-वरलक्ष्म्यै नमः आचमनं समर्पयामि।

महालक्ष्मि महादेवि मध्वाज्यदिधसंयुतम्। मधुपर्कं गृहाणेमं मधुसूदनवल्ल्भे॥ श्री-वरलक्ष्म्ये नमः मधुपर्कं समर्पयामि।

पयोदिधघृतैर्युक्तं शर्करामधुसंयुतम्। पञ्चामृतं गृहाणेदं वरलक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥ श्री-वरलक्ष्म्यै नमः पञ्चामृतं समर्पयामि।

हेमकुम्भस्थितं स्वच्छं गङ्गादिसरिदाहृतम्। स्नानार्थं सलिलं देवि गृह्यतां सागरात्मजे॥

# श्री-वरलक्ष्म्यै नमः स्नानं समर्पयामि। स्नानान्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

दिव्याम्बरयुगं सूक्ष्मं कश्चकं च मनोहरम्। वरलक्ष्मि महादेवि गृहाणेदं मयाऽर्पितम्॥

श्री-वरलक्ष्म्यै नमः वस्त्रं समर्पयामि।

माङ्गल्यमणिसंयुक्तं मुक्ता-विद्रुमसंयुतम्। दत्तं मङ्गलसूत्रं च गृहाण हरिवल्लभे॥

### श्री-वरलक्ष्म्यै नमः कण्ठसूत्रं समर्पयामि।

रत्नताटङ्ककेयूरहारकङ्कणभूषिते । भूषणानि महार्हाणि गृहाण करुणानिधे॥

श्री-वरलक्ष्म्ये नमः आभरणानि समर्पयामि।

कर्पूरचन्दनोपेतं कस्तूरीकुङ्कमान्वितम्। सर्वगन्धं गृहाणाद्य सर्वमङ्गलदायिनि॥ श्री-वरलक्ष्म्ये नमः गन्धान् धारयामि।

शालिजातान् चन्द्रवर्णान् स्निग्धमौक्तिकसन्निभान्। अक्षतान् देवि गृह्णीष्व पङ्कजाक्षस्य वल्लभे॥ श्री-वरलक्ष्म्ये नमः अक्षतान् समर्पयामि।

मन्दारपारिजाताङोः केतक्युत्पलपाटलैः। मल्लिकाजातिवकुलैः पुष्पैस्त्वां पूजयाम्यहम्॥

श्री-वरलक्ष्म्यै नमः पुष्पमालां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

#### ॥ अङ्ग-पूजा॥

- १. वरलक्ष्म्यै नमः पादौ पूजयामि
- २. महालक्ष्म्ये नमः गुल्फो पूजयामि
- ३. इन्दिरायै नमः जङ्घे पूजयामि
- ४. चण्डिकायै नमः जानुनी पूजयामि
- ५. क्षीराब्धितनयायै नमः ऊरू पूजयामि
- ६. पीताम्बरधारिण्यै नमः— कटिं पूजयामि

- ७. सागरसम्भवायै नमः गृह्यं पूजयामि
- ८. नारायणप्रियायै नमः नाभिं पूजयामि
- ९. जगत्कुक्ष्यै नमः कुक्षिं पूजयामि
- १०. विश्वजनन्ये नमः वक्षः पूजयामि
- ११. सुस्तन्ये नमः स्तनो पूजयामि
- १२. कम्बुकण्ठचे नमः कण्ठं पूजयामि
- १३. सुन्दर्ये नमः 
   स्कन्धौ पूजयामि
- १४. पद्महस्तायै नमः हस्तान् पूजयामि
- १५. बहुप्रदाये नमः बाहून् पूजयामि
- १६. चन्द्रवदनायै नमः वक्र पूजयामि
- १७. चश्रलायै नमः चुबुकं पूजयामि
- १८. बिम्बोष्ठ्ये नमः ओष्ठं पूजयामि
- १९. अनघायै नमः अधरं पूजयामि
- २०. सुकपोलायै नमः कपोलौ पूजयामि
- २१. फलप्रदायै नमः फालम् पूजयामि
- २२. नीलालकायै नमः अलकान् पूजयामि
- २३. शिवायै नमः शिरः पूजयामि
- २४. सर्वमङ्गलायै नमः सर्वाण्यङ्गानि पूजयामि

### ॥ अष्टलक्ष्मी-अर्चना॥

- १. आदिलक्ष्म्यै नमः
- २. धान्यलक्ष्म्यै नमः
- ३. धेर्यलक्ष्म्ये नमः
- ४. गजलक्ष्म्यै नमः

- ५. सन्तानलक्ष्म्यै नमः
- ६. विजयलक्ष्म्यै नमः
- ७. विद्यालक्ष्म्यै नमः
- ८. धनलक्ष्म्यै नमः

२०

९. वरलक्ष्म्यै नमः

१०. महालक्ष्म्यै नमः

# ॥ लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामावलिः॥

#### ॥ध्यानम्॥

वन्दे पद्मकरां प्रसन्नवदनां सौभाग्यदां भाग्यदां हस्ताभ्यामभयप्रदां मणिगणैर्नानाविधैर्भूषिताम्। भक्ताभीष्टफलप्रदां हरिहरब्रह्मादिभिः सेवितां पार्श्वे पङ्कजशङ्खपद्मनिधिभिर्युक्तां सदा शक्तिभिः॥

सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतमांशुकगन्धमाल्यशोभे। भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्मम्॥

प्रकृत्ये नमः विकृत्ये नमः विद्याये नमः सर्वभूतिहतप्रदाये नमः श्रद्धाये नमः विभूत्ये नमः स्रभ्ये नमः प्रमात्मिकाये नमः पद्मात्मिकाये नमः पद्मालयाये नमः पद्मालयाये नमः

श्चये नमः

स्वाहायै नमः

स्वधायै नमः
सुधायै नमः
धन्यायै नमः
हिरण्मय्यै नमः
लक्ष्म्यै नमः
नित्यपुष्टायै नमः
विभावर्यै नमः

अदित्यै नमः दित्यै नमः दीप्तायै नमः वसुधायै नमः वसुधारिण्यै नमः कमलायै नमः

(१६न्यटा(१२शतनानापार)ः -			202
कान्तायै नमः		पद्मगन्धिन्यै नमः	
क्षमाये नमः		पुण्यगन्धायै नमः	
क्षीरोदसम्भवायै नमः		सुप्रसन्नायै नमः	
अनुग्रहप्रदायै नमः	30	प्रसादाभिमुख्यै नमः	
बुद्धये नमः		प्रभाये नमः	
अनघायै नमः		चन्द्रवदनायै नमः	
हरिवल्लभायै नमः		चन्द्रायै नमः	
अशोकायै नमः		चन्द्रसहोदर्यै नमः	
अमृतायै नमः		चतुर्भुजायै नमः	६०
दीप्तायै नमः		चन्द्ररूपायै नमः	
लोकशोकविनाशिन्यै नमः		इन्दिरायै नमः	
धर्मनिलयायै नमः		इन्दुशीतलायै नमः	
करुणायै नमः		आह्रादजनन्यै नमः	
लोकमात्रे नमः	४०	पुष्ट्ये नमः	
पद्मप्रियायै नमः		शिवायै नमः	
पद्महस्तायै नमः		शिवकर्ये नमः	
पद्माक्ष्यै नमः		सत्यै नमः	
पद्मसुन्दर्ये नमः		विमलायै नमः	
पद्मोद्भवायै नमः		विश्वजनन्यै नमः	७०
पद्ममुख्यै नमः		तुष्ट्यै नमः	
पद्मनाभप्रियायै नमः		दारिद्यनाशिन्यै नमः	
रमायै नमः		प्रीतिपुष्करिण्यै नमः	
पद्ममालाधरायै नमः		शान्तायै नमः	
देव्यै नमः	५०	शुक्रमाल्याम्बरायै नमः	
पद्मिन्यै नमः		श्रियै नमः	
		•	

१०८

श्भाये नमः

भास्कर्ये नमः हिरण्यप्राकारायै नमः बिल्वनिलयायै नमः समुद्रतनयायै नमः जयायै नमः वरारोहायै नमः मङ्गलायै देव्यै नमः यशस्विन्यै नमः ८० विष्णुवक्षःस्थलस्थितायै नमः वसुन्धरायै नमः विष्णुपत्र्ये नमः उदाराङ्गायै नमः हरिण्ये नमः प्रसन्नाक्ष्ये नमः हेममालिन्यै नमः नारायणसमाश्रितायै नमः धनधान्यकर्ये नमः दारिद्यध्वंसिन्यै नमः सिद्धौ नमः देव्यै नमः स्रेणसोम्याये नमः सर्वोपद्रवहारिण्ये नमः नवदुर्गायै नमः श्भप्रदाये नमः नृपवेश्मगतानन्दायै नमः महाकाल्ये नमः ब्रह्मविष्णुशिवात्मिकायै नमः वरलक्ष्म्यै नमः त्रिकालज्ञानसम्पन्नायै नमः वसुप्रदाये नमः भुवनेश्वर्ये नमः

> ॥इति श्री-लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा॥ श्री-वरलक्ष्म्यै नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

### ॥ उत्तराङ्ग-पूजा॥

धूपं ददामि ते रम्यं गुग्गुल्वगरुसंयुतम्। गृहाण त्वं महालक्ष्मि भक्तानामिष्टदायिनि॥

श्री-वरलक्ष्म्यै नमः धूपमाघ्रापयामि।

साज्यं त्रिवर्तिसंयुक्तं सर्वाभीष्टप्रदायिनि। दीपं गृहाण कमले देहि मे सर्वमीप्सितम्॥ श्री-वरलक्ष्म्ये नमः अलङ्कार-दीपं सन्दर्शयामि।

नानाभक्ष्यसमायुक्तं नानाफलसमन्वितम्। नैवेद्यं गृह्यतां देवि नारायणकुटुम्बिनि॥ श्री-वरलक्ष्म्ये नमः नैवेद्यं समर्पयामि।

उशीरवासितं तोयं शीतलं शशिसोदरि। पानाय गृह्यतां देवि पारावारतनूभवे॥ श्री-वरलक्ष्म्ये नमः पानीयं समर्पयामि।

पूगीफलं सकर्पूरं नागवल्लीदलानि च। चूर्णं च चन्द्रसहजे गृह्यन्तां हरिवल्लभे॥

श्री-वरलक्ष्म्यै नमः ताम्बूलं समर्पयामि।

नीराजनं नीरजाक्षि नारायणविलासिनि । गृह्यतामर्पितं भक्त्या गरुडध्वजभामिनि॥ श्री-वरलक्ष्म्यै नमः कर्पूरनीराजनं सन्दर्शयामि। कर्पूरनीराजनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिं गृहाणेमं पुरुषोत्तमवल्लभे। वरलक्ष्मि नमस्तुभ्यं वरान्देहि ममाखिलान्॥ श्री-वरलक्ष्म्यै नमः मन्नपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

सर्वमङ्गललाभाय सर्वपापनिवृत्तये। प्रदक्षिणं करोम्यद्य प्रसीद परमेश्वरि॥

#### श्री-वरलक्ष्म्यै नमः प्रदक्षिणं समर्पयामि।

नमोऽस्तु नालीकनिभाननायै नमोऽस्तु नारायणवल्लभायै । नमोऽस्तु रत्नाकरसम्भवायै नमोऽस्तु लक्ष्म्यै जगतां जनन्यै॥

श्री-वरलक्ष्म्यै नमः नमस्कारान् समर्पयामि।

आयुरारोग्यमैश्वर्यं पुत्रपौत्रान् पशून् धनम्। शत्रुक्षयं महालक्ष्मि प्रयच्छ करुणानिधे॥ श्री-वरलक्ष्म्ये नमः प्रार्थनाः समर्पयामि।

# ॥ दोरग्रन्थि-पूजा॥

कमलायै नमः — प्रथमग्रन्थिं पूजयामि।
रमायै नमः — द्वितीयग्रन्थिं पूजयामि।
लोकमात्रे नमः — तृतीयग्रन्थिं पूजयामि।
विश्वजनन्यै नमः — चतुर्थग्रन्थिं पूजयामि।
महालक्ष्म्यै नमः — पश्चमग्रन्थिं पूजयामि।
क्षीराब्धितनयायै नमः — षष्ठग्रन्थिं पूजयामि।
विश्वसाक्षिण्यै नमः — सप्तमग्रन्थिं पूजयामि।
हरिवल्लभायै नमः — अष्टमग्रन्थिं पूजयामि।
चन्द्रसहोदर्यै नमः — नवमग्रन्थिं पूजयामि।

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये सर्वपापप्रणाशिनि। दोरकं प्रतिगृह्णामि सुप्रीता भव सर्वदा॥ इति दोरकं हस्तेन गृहीत्वा।

करिष्यामि व्रतं देवि त्वद्भक्ता त्वत्परायणा। श्रियं देहि यशो देहि सौभाग्यं देहि मे शुभे॥

नवतन्तुसमायुक्तं नवग्रन्थिसमन्वितम्। बध्नीयां दक्षिणे हस्ते दोरकं हरिवल्लभे॥ इति दोरकं बध्नीयात्।

# ॥ अर्घ्यम्॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-वरलक्ष्मी-प्रीत्यर्थं वरलक्ष्मीपूजान्ते क्षीरार्घ्यप्रदानं करिष्ये॥

> गोक्षीरेण युतं देवि गन्धपुष्पसमन्वितम्। अर्घ्यं गृहाण वरदे वरलक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥

श्री-वरलक्ष्म्यै नमः इदमर्घ्यम् इदमर्घ्यम्।

### ॥ उपायन-दानम्॥

इन्दिरा प्रतिगृह्णाति इन्दिरा वै ददाति च। इन्दिरा तारयेद् द्वाभ्यां इन्दिरायै नमो नमः॥

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अनन्तपुण्यफलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

श्रीवरमहालक्ष्मीपूजाकाले अस्मिन् मया क्रियमाण-श्रीवरमहालक्ष्मीपूजायां यद्देयमुपायनदानं तत्प्रत्याम्नायार्थं हिरण्यं श्रीवरमहालक्ष्मीप्रीतिं कामयमानः

मनसोद्दिष्टाय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे नमः न मम। अनया पूजया श्रीवरमहालक्ष्मीः प्रीयताम्।

# इति उपायनं दत्त्वा सुवासिनीश्च सम्पूजयेत्॥ इति वरलक्ष्मीपूजाविधिः॥

# ॥ प्रार्थना ॥

दामोदिर नमस्तेऽस्तु नमस्रैलोक्यमातृके। नमस्तेऽस्तु महालक्ष्मि त्राहि मां परमेश्विरि॥ सर्वदा देहि मे द्रव्यं दानायापि च भुक्तये। धनधान्यं धरां हर्षं कीर्तिम् आयुश्च देहि मे॥ यन्मया वाञ्छितं देवि तत्सर्वं सफलं कुरु। न बाधन्तां कुकर्माणि सङ्कटं मे निवारय॥

#### ॥ कनकधारास्तवः॥

अङ्गं हरेः पुलकभूषणमाश्रयन्ती भृङ्गाङ्गनेव मुकुलाभरणं तमालम्। अङ्गीकृताखिलविभूतिरपाङ्गलीला माङ्गल्यदास्तु मम मङ्गलदेवतायाः॥१॥

मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारेः प्रेमत्रपाप्रणिहितानि गतागतानि। माला दशोर्मधुकरीव महोत्पले या सा मे श्रियं दिशतु सागरसम्भवायाः॥२॥

आमीलिताक्षमधिगम्य मुदा मुकुन्दम् आनन्दकन्दमनिमेषमनङ्गतन्त्रम् । आकेकरस्थितकनीनिकपक्ष्मनेत्रं भूत्यै भवेन्मम भुजङ्गशयाङ्गनायाः॥३॥ बाह्वन्तरे मधुजितः श्रितकौस्तुभे या हारावलीव हरिनीलमयी विभाति। कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्षमाला कल्याणमावहत् मे कमलालयायाः॥४॥

कालाम्बुदालिलिलितोरिस कैटभारेः धाराधरे स्फुरित या तिडदङ्गनेव। मातुः समस्तजगतां महनीयमूर्तिः भद्राणि मे दिशतु भार्गवनन्दनायाः॥५॥

प्राप्तं पदं प्रथमतः खलु यत्प्रभावात् माङ्गल्यभाजि मधुमाथिनि मन्मथेन। मय्यापतेत्तदिह मन्थरमीक्षणार्धं मन्दालसं च मकरालयकन्यकायाः॥६॥

विश्वामरेन्द्रपदवीभ्रमदानदक्षम् आनन्दहेतुरधिकं मुरविद्विषोऽपि। ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्द्धम् इन्दीवरोदरसहोदरमिन्दिरायाः ॥७॥

इष्टा विशिष्टमतयोऽपि यया दयाई-दष्ट्या त्रिविष्टपपदं सुलभं लभन्ते। दृष्टिः प्रहृष्टकमलोदरदीप्तिरिष्टां पृष्टिं कृषीष्ट मम पुष्करविष्टरायाः॥८॥

दद्याद्दयानुपवनो द्रविणाम्बुधाराम् अस्मिन्निञ्चनिवहङ्गशिशौ विषण्णे। दुष्कर्मघर्ममपनीय चिराय दूरं नारायणप्रणयिनीनयनाम्बुवाहः ॥९॥ गीर्देवतेति गरुडध्वजसुन्दरीति शाकम्भरीति शशिशेखरवल्लभेति। सृष्टिस्थितिप्रलयकेलिषु संस्थितायै तस्यै नमस्रिभुवनैकगुरोस्तरुण्यै॥१०॥

श्रुत्यै नमोऽस्तु शुभकर्मफलप्रसूत्यै रत्यै नमोऽस्तु रमणीयगुणार्णवायै। शक्त्यै नमोऽस्तु शतपत्रनिकेतनायै पृष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तमवल्लभायै॥११॥

नमोऽस्तु नालीकनिभाननायै नमोऽस्तु दुग्धोदधिजन्मभूम्यै। नमोऽस्तु सोमामृतसोदरायै नमोऽस्तु नारायणवल्लभायै॥१२॥

नमोऽस्तु हेमाम्बुजपीठिकायै नमोऽस्तु भूमण्डलनायिकायै। नमोऽस्तु देवादिदयापरायै नमोऽस्तु शाङ्गीयुधवल्लभायै॥१३॥

नमोऽस्तु देव्यै भृगुनन्दनायै नमोऽस्तु विष्णोरुरसि स्थितायै। नमोऽस्तु लक्ष्म्यै कमलालयायै नमोऽस्तु दामोदरवल्लभायै॥१४॥

नमोऽस्तु कान्त्यै कमलेक्षणायै नमोऽस्तु भूत्यै भुवनप्रसूत्यै। नमोऽस्तु देवादिभिरर्चितायै नमोऽस्तु नन्दात्मजवक्षभायै॥१५॥ सम्पत्कराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि साम्राज्यदानविभवानि सरोरुहाक्षि। त्वद्वन्दनानि दुरिताहरणोद्यतानि मामेव मातरनिशं कलयन्तु मान्ये॥१६॥

यत्कटाक्षसमुपासनाविधिः सेवकस्य सकलार्थसम्पदः। सन्तनोति वचनाङ्गमानसैः त्वां मुरारिहृदयेश्वरीं भजे॥१७॥

सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतमांशुकगन्धमाल्यशोभे । भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम्॥१८॥

दिग्धस्तिभिः कनककुम्भमुखावसृष्ट-स्वर्वाहिनी विमलचारुजलाप्नुताङ्गीम्। प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेष-लोकाधिनाथगृहिणीम् अमृताब्धिपुत्रीम्॥१९॥

कमले कमलाक्षवल्लभे त्वं करुणापूरतरङ्गितैरपाङ्गेः । अवलोकय मामिकश्चनानां प्रथमं पात्रमकृत्रिमं दयायाः॥२०॥

स्तुवन्ति ये स्तुतिभिरमीभिरन्वहं त्रयीमयीं त्रिभुवनमातरं रमाम्। गुणाधिका गुरुतरभाग्यभागिनो भवन्ति ते भुवि बुधभाविताशयाः॥२१॥ देवि प्रसीद जगदीश्वरि लोकमातः कल्याणगात्रि कमलेक्षणजीवनाथे। दारिद्यभीतिहृदयं शरणागतं माम् आलोकय प्रतिदिनं सदयैरपाङ्गेः॥

॥इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ श्री-कनकधारास्तवः सम्पूर्णः॥

# ॥ महालक्ष्म्यष्टकम्॥

#### इन्द्र उवाच

नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते। शङ्खचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥१॥

नमस्ते गरुडारूढे कोलासुरभयङ्करि। सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥२॥

सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदृष्टभयङ्कारि। सर्वदुःखहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥३॥

सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्तिमुक्तिप्रदायिनि। मन्नमूर्ते सदा देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥४॥

आद्यन्तरहिते देवि आद्यशक्तिमहेश्वरि। योगजे योगसम्भूते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥५॥

स्थूलसूक्ष्ममहारौद्रे महाशक्ति महोदरे। महापापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥६॥

पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्मस्वरूपिणि। परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥७॥ श्वेताम्बरधरे देवि नानालङ्कारभूषिते। जगत्स्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥८॥

महालक्ष्म्यष्टकं स्तोत्रं यः पठेद्धक्तिमान्नरः। सर्वसिद्धिमवाप्नोति राज्यं प्राप्नोति सर्वदा॥ एककाले पठेन्नित्यं महापापविनाशनम्। द्विकालं यः पठेन्नित्यं धनधान्यसमन्वितः॥ निकालं यः पठेन्नित्यं महाशत्रुविनाशनम्। महालक्ष्मीर्भवेन्नित्यं प्रसन्ना वरदा शुभा॥

॥इति श्रीमद्वद्मपुराणे श्री-महालक्ष्म्यष्टकं सम्पूर्णम्॥

### ॥ अपराध-क्षमापनम्॥

न्यूनं वाऽप्यगुणं वाऽपि यन्मया मोहितं कृतम्। सर्वं तदस्तु सम्पूर्णं त्वत्प्रसादान्महेश्वरि॥ लक्ष्मि त्वत्कृपया नित्यं कृता पूजा तवाऽऽज्ञया। स्थिरा भव गृहे ह्यस्मिन् मम सन्तानकर्मणि॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्। करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥ सर्वं तत्सद्वह्मार्पणमस्तु।



# ॥ श्री-सङ्कष्टचतुर्थीव्रत-सिद्धिविनायक-पूजा ॥

(मूलम्—श्री-व्रतराजः)

श्रावणकृष्णचतुर्थ्यां सङ्कष्टचतुर्थीव्रतम्। तच्च चन्द्रोदयव्यापिन्यां कार्यम्। श्रावणे बहुले पक्षे चतुर्थ्यां तु विधूदये। गणेशं पूजियत्वा तु चन्द्रायार्घ्यं प्रदापयेत् इति कथायां तत्र व्रतपूजाविधानात्।

द्विनद्वये तद्याप्तौ पूर्वेव। "मातृविद्धा गणेश्वर" इति वचनात्। दिनद्वयेऽव्याप्तौ परैव। हेमाद्रौ चन्द्रोदयाभावे चतुर्थी निशि षद्वटिकाव्याप्ता परैव व्रते। इति।

# ॥ पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा॥

(आचम्य)

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवणं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुव्रोम्।

(अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा)

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा

श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः

अविघ्रेन परिसमास्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गुणपंति हवामहे कविं केवीनाम्पूपमश्रवस्तमम्। ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत् आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद् सादनम्॥

अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।

पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि। वस्नार्थमक्षतान् समर्पयामि।

यज्ञोपवीताभरणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

दिव्यपरिमलगन्थान् धारयामि।

गन्थस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

### ॥ अर्चना ॥

१. ॐ सुमुखाय नमः

९. ॐ धूमकेतवे नमः

२. ॐ एकदन्ताय नमः

१०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः

३. ॐ कपिलाय नमः

११. ॐ फालचन्द्राय नमः

४. ॐ गजकर्णकाय नमः

१२. ॐ गजाननाय नमः

५. ॐ लम्बोदराय नमः

१३. ॐ वऋतुण्डाय नमः

६. ॐ विकटाय नमः

१४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः

७. ॐ विघ्नराजाय नमः

१५. ॐ हेरम्बाय नमः

८. ॐ विनायकाय नमः

१६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाघ्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वऋतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ। अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि। छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

# ॥ प्रधान-पूजा — श्री-सिद्धिवनायक-पूजा॥

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवणं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुव्रोम्।

#### ॥ सङ्कल्पः ॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहर्ते अद्य ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिके प्रभवादि षष्टिसंवत्सराणां मध्ये ( ) २३ नाम संवत्सरे दक्षिणायने वर्ष-ऋतौ ( )-मासे कृष्णपक्षे चतुर्थ्यां शुभतिथौ ( ) वासरयुक्तायाम् ( )<sup>२४</sup> नक्षत्र ( )<sup>२५</sup> नाम योग ( )<sup>२६</sup>-करण युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्यां चतुर्थ्यां शुभतिथौ विद्याधनपुत्रपौत्रप्राप्त्यर्थं समस्तरोगमुक्तिकामः श्री-गणेश-प्रीत्यर्थं अस्माकं सकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय-आयुरारोग्य-ऐश्वर्याभिवृद्धर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्धर्थं पुत्रपौत्राभि-वृद्धर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्धर्थं मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय-व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्य अपनोदनद्वारा सकल-पापक्षयार्थं श्री-सिद्धिविनायक-प्रसादसिद्धार्थं यथाशक्ति-ध्यानावाहनादिषोडशोपचारैः श्री-सिद्धिविनायक-पूजां सङ्कष्टचतुर्थीव्रतमहं करिष्ये। तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।

<sup>&</sup>lt;sup>२३</sup>पृष्टं ६२१ पश्यताम्

<sup>&</sup>lt;sup>२४</sup>पृष्टं ६३१ पश्यताम्

<sup>&</sup>lt;sup>२५</sup>पृष्टं ६३२ पश्यताम् <sup>२६</sup>पृष्टं ६३३ पश्यताम्

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। शोभनार्थे क्षेमाय पुनरागमनाय च। (गणपति-प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

### ॥ आसन-पूजा॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चासनं कुरु॥

### ॥ घण्टा-पूजा॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्। घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

### ॥ कलश-पूजा॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्ये नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः।

ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः। ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि। (अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्) आपो वा इद सर्वृं विश्वां भूतान्यापः प्राणा वा आपः पृशव् आपोऽन्नमापोऽमृंतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापृश्छन्दाङ्स्यापो ज्योती्र्ष्ट्यापो यजूङ्ष्यापः स्त्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भुवः सुवराप् ओम्॥ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षो तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः। अङ्गेश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च ह्रदा नदाः। आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥ ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवेः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

### ॥ आत्म-पूजा॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

१. ॐ आत्मने नमः ४. ॐ जीवात्मने नमः

२. ॐ अन्तरात्मने नमः ५. ॐ परमात्मने नमः

३. ॐ योगात्मने नमः ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः

### समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः। त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

# ॥ पीठ-पूजा॥

१. ॐ आधारशक्त्ये नमः ८. ॐ रत्नवेदिकाये नमः

२. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः

३. ॐ आदिकूर्माय नमः १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः

४. ॐ आदिवराहाय नमः ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः

५. ॐ अनन्ताय नमः १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः

६. ॐ पृथिव्यै नमः १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः

७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः १४. ॐ योगपीठासनाय नमः

#### ॥ गुरु-ध्यानम्॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

### ॥ प्राण-प्रतिष्ठा ॥

# ॥ षोडशोपचार-पूजा॥

सौवर्णरौप्यताम्रमृन्मयाद्यन्यतमां गणपतिमूर्तिं कृत्वा जलपूर्णं पूर्णपात्रं वस्रयुतकुम्भोपरि स्थापयित्वा षोडशोपचारैः पूजयेत्।

लम्बोदरं चतुर्बाहुं त्रिनेत्रं रक्तवर्णकम्। नानारत्नेः सुवेषाढ्यं प्रसन्नास्यं विचिन्तयेत्॥

ध्यायेद्गजाननं देवं तप्तकाश्चनसुप्रभम्। चतुर्बाहुं महाकायं सूर्यकोटिसमप्रभम्॥

# अस्मिन् बिम्बे/प्रतिमायां/चित्रपटे श्री-सिद्धिविनायकं ध्यायामि।

आगच्छ त्वं जगन्नाथ सुरासुरनमस्कृत। अनाथनाथ सर्वज्ञ विघ्नराज कृपां कुरु॥

सहस्रंशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रंपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वा। अत्यंतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥

# गजास्याय नमः, अस्मिन् बिम्बे/प्रतिमायां/चित्रपटे गजास्यमावाहयामि।

गोप्ता त्वं सर्वलोकानामिन्द्रादीनां विशेषतः। भक्तदारिद्यविच्छेत्ता एकदन्त नमोऽस्तु ते॥

पुरुष एवेद सर्वम्। यद्भूतं यच् भव्यम्। उतामृतत्वस्येशांनः। यदन्नेनातिरोहंति॥

विघ्नराजाय नमः, आसनं समर्पयामि।

मोदकान्धारयन्हस्ते भक्तानां वरदायक। देवदेव नमस्तेऽस्तु भक्तानां फलदो भव॥ पुतावानस्य मिह्मा। अतो ज्यायाईश्च पूर्रुषः। पादौंऽस्य विश्वां भूतानिं। त्रिपादंस्यामृतंं दिवि॥ लम्बोदराय नमः, पाद्यं समर्पयामि।

महाकाय महारूप अनन्तफलदो भव। देवदेव नमस्तेऽस्तु सर्वेषां पापनाशन॥

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः। पादौँ उस्येहा ऽऽभंवात्पुनेः। ततो विश्वङ्कां कामत्। साशनानशने अभि॥ शङ्करसूनवे नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।

कुरुष्वाचमनं देव सुरवन्द्य सुवाहन। सर्वाघदलनस्वामिन्नीलकण्ठ नमोऽस्तु ते॥

तस्माँद्विराडंजायत। विराजो अधि पूर्रुषः। स जातो अत्यरिच्यत। पृश्चाद्भूमिमथी पुरः॥

उमासुताय नमः, आचमनीयं समर्पयामि।

स्नानं पश्चामृतेनैव गृहाण गणनायक। अनाथनाथ सर्वज्ञ नमो मूषकवाहन॥ पयो-दिध-घृतं चैव शर्करामधुसंयुतम्। पश्चामृतेन स्नपनं प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम्॥

यत्पुरुषेण ह्विषां। देवा युज्ञमतंन्वत। वसन्तो अस्याऽऽसीदाज्यम्। ग्रीष्म इध्मः शुरद्धविः॥

वऋतुण्डाय नमः, पञ्चामृतस्नानम् समर्पयामि।

गङ्गा च यमुना चैव गोदावरिसरस्वती। नर्मदा सिन्धुकावेरी जलं स्नानाय कल्पितम्॥ सप्तास्यांऽऽसन् परिधयः। त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वानाः। अबंध्रन् पुरुषं पृशुम्॥

## हेरम्बाय नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

रक्तवस्त्रसुयुग्मं च देवानामपि दुर्लभम्। गृहाण मङ्गलं देव लम्बोदर हरात्मज॥

तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्। पुरुषं जातमंग्रतः। तेनं देवा अयंजन्त। साध्या ऋषंयश्च ये॥

शूर्पकर्णाय नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

ब्रह्मसूत्रं सोत्तरीयं गृहाण गणनायक। आरक्तं ब्रह्मसूत्रं च कनकस्योतरीयकम्॥

तस्मौद्यज्ञाथ्सेर्वहुतः। सम्भृतं पृषदाज्यम्। पृशू इस्ता इश्चेके वायव्यान्। आरुण्यान्ग्राम्याश्च ये॥

कुजाय नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

उद्यद्भास्करसङ्काशं सन्ध्यावदरुणं प्रभो। वीरालङ्करणं दिव्यं सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, सिन्दूरं समर्पयामि। २७

नानाविधानि दिव्यानि नानारत्नोञ्चलानि च। भूषणानि गृहाणेश पार्वतीप्रियनन्दन॥ श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, आभरणानि समर्पयामि। २७

गृहाणेश्वर सर्वज्ञ दिव्यचन्दनमुत्तमम्। करुणाकर गुआक्ष गौरीसुत नमोऽस्तु ते॥

तस्माँ द्युज्ञाथ्सं वृहुतंः। ऋचः सामांनि जज्ञिरे। छन्दा १सि जज्ञिरे तस्मात्। यजुस्तस्मांदजायत॥

# गणेश्वराय नमः, दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुङ्कमाक्ताः सुशोभिताः। मया निवेदिता भक्त्या गृहाण गणनायक॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

सुगन्धिदिव्यमालां च गृहाण गणनायक। विनायक नमस्तुभ्यं शिवसूनो नमोऽस्तु ते<sup>२७</sup>॥

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि मे प्रभो। मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, पुष्पमालां समर्पयामि।

करवीरैर्जातिकुसुमैश्चम्पकैर्बकुलैः शुभैः। शतपत्रेश्च कह्लारैरर्चयेद् गणनायकम्॥

तस्मादश्वां अजायन्त। ये के चौभयादेतः। गावो ह जज़िरे तस्मौत्। तस्मौज्ञाता अजावयः॥

विघ्ननाशिने नमः, पुष्पाणि समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि। विघ्ननाशिने नमः, दूर्वाकुङ्कमादि समर्पयामि। [अनेनैव नाम्ना दूर्वाकुङ्कमादि दद्यात्।]

<sup>&</sup>lt;sup>२७</sup>अयं श्लोकः/उपचारः श्रीव्रतराजान्तर्गत-सिद्धिविनायक-पूजाया उद्धतः

# ॥ अङ्ग-पूजा॥

۶.	गणेश्वराय	नमः —	पादौ	पूजयामि
२.	विघ्नराजाय	नमः —	जानुनी	पूजयामि
₹.	आखुवाहनाय	नमः —	ऊरू	पूजयामि
٧.	हेरम्बाय	नमः —	कटिं	पूजयामि
<b>4</b> .	कामारिसूनवे	नमः —	नाभिं	पूजयामि
ξ.	लम्बोदराय	नमः —	उदरं	पूजयामि
<i>७</i> .	गौरीसुताय	नमः —	स्तनौ	पूजयामि
۷.	गणनायकाय	नमः —	हृदयं	पूजयामि
۶.	स्थूलकण्ठाय	नमः —	कण्ठं	पूजयामि
१०.	स्कन्दाग्रजाय	नमः —	स्कन्धौ	पूजयामि
११.	पाशहस्ताय	नमः —	हस्तौ	पूजयामि
१२.	गजवऋाय	नमः —	वऋं	पूजयामि
१३.	विघ्रहर्त्रे	नमः —	ललाटं	पूजयामि
१४.	सर्वेश्वराय	नमः —	शिरः	पूजयामि
१५.	श्रीगणाधिपाय	नमः —	सर्वाण्यङ्गानि	पूजयामि

# ॥ एकविंशति-दूर्वायुग्म-पूजा २८॥

۶.	गणाधिपाय	नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि।
٧.	पाशाङ्क्षशधराय	नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि।
₹.	आखुवाहनाय	नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि।
٧.	विनायकाय	नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि।

<sup>&</sup>lt;sup>२८</sup>इयं पूजा सिद्धिविनायकपूजाया उद्धृतः

	_	
<b>4.</b>	ईशपुत्राय	नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि।
ξ.	सर्वसिद्धि-प्रदाय	नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि।
<i>७</i> .	एकदन्ताय	नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि।
۷.	इभवऋाय	नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि।
۶.	मूषिकवाहनाय	नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि।
१०.	कुमारगुरवे	नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि।
<b>११.</b>	कपिलवर्णाय	नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि।
१२.	ब्रह्मचारिणे	नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि।
१३.	मोदकहस्ताय	नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि।
१४.	सुरश्रेष्ठाय	नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि।
१५.	गजनासिकाय	नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि।
१६.	कपित्थफल-प्रियाय	नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि।
१७.	गजमुखाय	नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि।
१८.	सुप्रसन्नाय	नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि।
<i>१९</i> .	सुराग्रजाय	नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि।
२०.	उमापुत्राय	नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि।
२१.	स्कन्दप्रियाय	नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि।
		• •

# ॥ गणपत्यष्टोत्तरशतनामाविलः॥

गणेश्वराय नमः गणक्रीडाय नमः महागणपतये नमः विश्वकर्त्र नमः

विश्वमुखाय नमः दुर्जयाय नमः धूर्जयाय नमः जयाय नमः

सुरूपाय नमः		लम्बनासिकाय नमः	
सर्वनेत्राधिवासाय नमः	१०	सर्वावयवसम्पूर्णाय नमः	
वीरासनाश्रयाय नमः		सर्वलक्षणलिखेताय नमः	
योगाधिपाय नमः		इक्षुचापधराय नमः	
तारकस्थाय नमः		शूलिने नमः	
पुरुषाय नमः		कान्तिकन्दलिताश्रयाय नमः	
गजकर्णकाय नमः		अक्षमालाधराय नमः	४०
चित्राङ्गाय नमः		ज्ञानमुद्रावते नमः	
श्यामदशनाय नमः		विजयावहाय नमः	
भालचन्द्राय नमः		कामिनी-कामना-काम-मालिनी-	
चतुर्भुजाय नमः		केलि-लालिताय नमः	
शम्भुतेजसे नमः	२०	अमोघसिद्धये नमः	
यज्ञकायाय नमः		आधाराय नमः	
सर्वात्मने नमः		आधाराधेयवर्जिताय नमः	
सामबृंहिताय नमः		इन्दीवरदलश्यामाय नमः	
कुलाचलांसाय नमः		इन्दुमण्डलनिर्मलाय नमः	
व्योमनाभये नमः		कर्मसाक्षिणे नमः	
कल्पद्रुमवनालयाय नमः		कर्मकर्त्रे नमः	५०
निम्ननाभये नमः		कर्माकर्मफलप्रदाय नमः	
स्थूलकुक्षये नमः		कमण्डलुधराय नमः	
पीनवक्षसे नमः		कल्पाय नमः	
बृहद्भुजाय नमः	३०	कपर्दिने नमः	
पीनस्कन्धाय नमः		कटिसूत्रभृते नमः	
कम्बुकण्ठाय नमः		कारुण्यदेहाय नमः	
लम्बोष्ठाय नमः		कपिलाय नमः	
		•	

ग्हाशयाय नमः

ग्हाब्धिस्थाय नमः

घटकुम्भाय नमः

घटोदराय नमः

पूर्णानन्दाय नमः

परानन्दाय नमः

धरणीधराय नमः

बृहत्तमाय नमः

ब्रह्मपराय नमः

ब्रह्मण्याय नमः

भव्याय नमः

भृतालयाय नमः

भोगदात्रे नमः

महामनसे नमः

वरेण्याय नमः

वामदेवाय नमः

वज्रनिवारणाय नमः

वन्द्याय नमः

विश्वकर्त्र नमः

विश्वचक्षुषे नमः

हव्यकव्यभुजे नमः

हवनाय नमः

ब्रह्मवित्प्रियाय नमः

धनदाय नमः

१००

स्वतन्त्राय नमः सत्यसङ्कल्पाय नमः सौभाग्यवर्धनाय नमः E o कीर्तिदाय नमः शोकहारिणे नमः त्रिवर्गफलदायकाय नमः चतुर्बाहवे नमः चतुर्दन्ताय नमः ९० चतुर्थी-तिथि-सम्भवाय नमः सहस्रशीर्षो पुरुषाय नमः सहस्राक्षाय नमः सहस्रपदे नमः कामरूपाय नमः 00

**Q** 

८0

कामगतये नमः द्विरदाय नमः द्वीपरक्षकाय नमः क्षेत्राधिपाय नमः क्षमाभर्त्रे नमः लयस्थाय नमः लड्डुकप्रियाय नमः प्रतिवादिमुखस्तम्भाय नमः दृष्टचित्तप्रसादनाय नमः भगवते नमः भक्तिसुलभाय नमः

याज्ञिकाय नमः

याजकप्रियाय नमः

# ॥इति श्री-गणेशपुराणे उपासनाखण्डे श्री-गणपत्यष्टोत्तरशतनामाविलः सम्पूर्णा॥

दशाङ्गं गुग्गुलं धूपमुत्तमं गणनायक। गृहाण देव देवेश उमासुत नमोऽस्तु ते॥

यत्पुर्रुषं व्यंदधुः। कृतिधा व्यंकल्पयन्। मुखं किमस्य को बाहू। कावूरू पादांवुच्येते॥

विकटाय नमः, धूपमाघ्रापयामि।

सर्वज्ञ सर्वरत्नाढ्य सर्वेश विबुधप्रिय। गृहाण मङ्गलं दीपं घृतवर्तिसमन्वितम्॥

ब्राह्मणौऽस्य मुखंमासीत्। बाहू रांजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैषयः। पुन्नाः शूद्रो अंजायत॥

वामनाय नमः, अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि। दीपानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः सुवंः। + ब्रह्मणे स्वाहाँ। नैवेद्यं गृह्यतां देव नानामोदकसंयुतम्। पक्कान्नफलसंयुक्तं षड्रसैश्च समन्वितम्॥

चन्द्रमा मनंसो जातः। चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रेश्चाग्निश्चं। प्राणाद्वायुरंजायत॥

> सर्वदेवाय नमः, () निवेदयामि, अमृतापिधानमसि।

कृष्णावेण्यागौतमीनां पयोष्णीनर्मदाजलैः। आचम्यतां विघ्नराज प्रसन्नो भव सर्वदा॥ निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

फलान्यमृतकल्पानि सुगन्धीन्यघनाशन। आनीतानि यथाशक्त्या गृहाण गणनायक॥ सर्वार्तिनाशिने नमः, फलं समर्पयामि।

एकविंशतिसङ्ख्याकान् मोदकान् घृतपाचितान्। नैवेद्यं सफलं दद्यान्नमस्ते विघ्ननाशिने॥ श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, मोदकान् समर्पयामि।<sup>२९</sup>

ताम्बूलं गृह्यतां देव नागवल्ल्या दलैर्युतम्। कर्पूरेण समायुक्तं सुगन्धं मुखभूषणम्॥ नाभ्यां आसीदन्तरिक्षम्। शीर्ष्णो द्यौः समेवर्तत। पुद्धां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्। तथां लोकाः अंकल्पयन्॥

विघ्नहर्त्रे नमः, कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि।

सर्वदेवाधिदेव त्वं सर्वसिद्धिप्रदायक। भक्त्या दत्तां मया देव गृहाण दक्षिणां विभो॥ सर्वेश्वराय नमः, दक्षिणां समर्पयामि।

पश्चवर्तिसमायुक्तं विह्निना योजितं मया। गृहाण मङ्गलं दीपं विघ्नराज नमोऽस्तु ते॥ चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्निस्तथैव च। त्वमेव सर्वतेजांसि आर्तिक्यं प्रतिगृह्यताम्॥

२९ अयं श्लोकः/उपचारः श्रीव्रतराजान्तर्गत-सिद्धिविनायक-पूजाया उद्धृतः

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवेर्णं तमंस्सतु पारे। सर्वाणि रूपाणि विचित्य धीरः। नामानि कृत्वाऽभिवद्न् यदास्ते॥ श्री-सिद्धिवनायकाय नमः, समस्त-अपराध-क्षमापनार्थं कर्पूरनीराजनं

> दर्शयामि। कर्पूरनीरजनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि। रक्षां धारयामि। पुष्पैः पूजयामि।

धाता पुरस्ताद्यमुंदाज्हारं। श्राकः प्रविद्वान् प्रदिश्रश्चतंस्रः। तमेवं विद्वान्मृतं इह भंवति। नान्यः पन्था अयंनाय विद्यते॥ योऽपां पुष्पं वेदं। पुष्पंवान् प्रजावान् पशुमान् भंवति। चन्द्रमा वा अपां पुष्पम्। पुष्पंवान् प्रजावान् पशुमान् भंवति। य एवं वेदं। योऽपामायतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति।

ओं तद्रुह्म। ओं तद्वायुः। ओं तदात्मा। ओं तथ्मत्यम्। ओं तथ्सर्वम्। ओं तत्पुरोर्नमः॥

अन्तश्चरितं भूतेषु गुहायां विश्वमूर्तिषु। त्वं यज्ञस्त्वं वषद्कारस्त्वमिन्द्रस्त्वः रुद्रस्त्वं विष्णुस्त्वं ब्रह्म त्वं प्रजापितः। त्वं तंदाप आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः सुवरोम्॥

यो वेदादौ स्वंरः प्रोक्तो वेदान्तं च प्रतिष्ठितः। तस्यं प्रकृतिंठीनस्य यः परः स महेश्वंरः॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, वेदोक्तमन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण-पदे पदे॥

## प्रदक्षिणं कृत्वा।

नमस्ते विघ्नसंहत्रे नमस्ते ईप्सितप्रद। नमस्ते देवदेवेश नमस्ते गणनायक॥

विनायकेशपुत्रस्त्वं गजराज सुरोत्तम। देहि मे सकलान् कामान् वन्दे सिद्धिविनायक॥

नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे। सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटियुगधारिणे नमः॥

स्प्तास्यांऽऽसन् परिधयः। त्रिः स्प्त स्मिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तंन्वानाः। अबंध्रन् पुरुषं पृशुम्॥ श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, नमस्कारान् समर्पयामि।

युज्ञेनं युज्ञमंयजन्त देवाः। तानि धर्माणि प्रथमान्यांसन्। ते हु नाकं महिमानः सचन्ते। यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥

# श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, छत्रचामर-नृत्त-गीत-वाद्यादि समस्तराजोपचारान् समर्पयामि।

यन्मयाऽऽचरितं देव व्रतमेतत् सुदुर्लभम्। गणेश त्वं प्रसन्नः सन् सफलं कुरु सर्वदा॥

विनायक गणेशान सर्वदेवनमस्कृत। पार्वतीप्रिय विघ्नेश मम विघ्नान्निवारय॥ नमो नमो गणेशाय नमस्ते विश्वरूपिणे। निर्विघ्नं कुरु मे कामं नमामि त्वां गजानन॥

अगजाननपद्मार्कं गजाननमहर्निशम्। अनेकदं तं भक्तानाम् एकदन्तमुपास्महे॥ विनायक वरं देहि महात्मन् मोदकप्रिय। अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

एवं पूजा प्रकर्तव्या षोडशैरुपचारकैः। मोदकान्कारयेन्मातस्तिलजान्दश पार्वति॥ देवाग्रे स्थापयेत्पश्च पश्च विप्राय कल्पयेत्। पूजयित्वा तु तं विप्रं भक्तिभावेन देववत्॥

दक्षिणां च यथाशक्त्या दत्त्वा वै पश्चमोदकान्। पूजयेन्निशि चन्द्रं च अर्घ्यं दत्त्वा यथाविधि॥

# ॥अर्घ्यम्॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-सिद्धिविनायक-प्रीत्यर्थं श्री-सङ्कष्टचतुर्थीव्रत-पूजान्ते क्षीरार्घ्यप्रदानं करिष्ये॥

(हस्ते साक्षतपुष्पं क्षीरं गृहीत्वा)

क्षीरसागरसम्भूत सुधारूप निशाकर। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं गणेशप्रीतिवर्धनम्॥१॥

रोहिणीसहितचन्द्रमसे नमः, इदमर्घ्यम् इदमर्घ्यम्।

क्षीरोदार्णवसम्भूत सुधारूप निशाकर। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं रोहिण्या सहितः शशिन्॥२॥

रोहिणीसहितचन्द्रमसे नमः, इदमर्घ्यम् इदमर्घ्यम्।

गणेशाय नमस्तुभ्यं सर्वसिद्धिप्रदायक। सङ्कष्टं हर मे देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते॥३॥

सङ्कष्टहरगणेशाय नमः, इदमर्घ्यम् इदमर्घ्यम् इदमर्घ्यम्।

कृष्णपक्षे चतुर्थ्यां तु पूजितोऽसि विधूदये। क्षिप्रं प्रसादितो देव गृहाणार्ध्यं नमोऽस्तु ते॥४॥ सङ्कष्टहरगणेशाय नमः, इदमर्घ्यम् इदमर्घ्यम्।

तिथीनामुत्तमे देवि गणेशप्रियवल्लभे।

तथानामुत्तम दाव गणशाप्रयवस्नमा सर्वसङ्कष्टनाशाय चतुर्थ्यर्घ्यं नमोऽस्तु ते॥५॥

चतुर्थे नमः, इदमर्घ्यम् इदमर्घ्यम् इदमर्घ्यम्।

## ॥ उपायन-दानम्॥

## आचार्य पूजा

अद्यपूर्वोक्त-एवङ्गुण-विशेषण-विशिष्टायामस्यां चतुर्थ्यां शुभितिथौ श्री-सिद्धिविनायक-पूजा-फलसिद्धार्थं ब्राह्मणपूजाम् उपायन-दानं च करिष्ये॥ श्री-महागणपित-स्वरूपस्य ब्राह्मणस्य इदमासनम्। गन्धादि-सकलाराधनैः स्वर्चितम्॥

> [अथैकविंशतिं गृह्य मोदकान् घृतपाचितान्। स्थापयित्वा गणाध्यक्षसमीपे कुरुनन्दन॥

दश विप्राय दातव्याः स्थापयेद् दश आत्मिन। एकं गणाधिपे दद्यात् सघृतं मोदकं शुभम्]॥

#### वायनमन्नः

विप्रवर्य नमस्तुभ्यं मोदकान्वै ददाम्यहम्। मोदकान्सफलान्पश्च दक्षिणाभिः समन्वितान्। आपदुद्धरणार्थाय गृहाण द्विजसत्तम॥

### प्रार्थना

अबुद्धमतिरिक्तं वा द्रव्यहीनं मया कृतम्। सत्सर्वं पूर्णतां यातु विप्ररूप गणेश्वर॥ ब्राह्मणान् भोजयेद्देवि यथान्नेन यथासुखम्। स्वयं भुञ्जीत पञ्चैव मोदकान्फलसंयुतान्॥

अशक्तश्चैकमन्नं वा भुञ्जीत दिधसंयुतम्। अथवा भोजनं कार्यमेकवारं हिमागजे॥

प्रतिमां गुरवे दद्यादाचार्याय सदक्षिणाम्। वस्रकुम्भसमायुक्तामादौ मन्नमिमं जपेत्॥

ॐ नमो हेरम्ब मदमोहित सङ्कष्टान्निवारय निवारय। इति मूलमन्त्रमेकविंशतिवारं जपेत्।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अनन्तपुण्यफलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

श्री-सङ्कष्टचतुर्थीव्रत-पूजा-पुण्यकाले अस्मिन् मया क्रियमाण-श्री-सिद्धिविनायक-पूजायां यद्देयमुपायनदानं तत्प्रत्याम्नायार्थं हिरण्यं श्री-सिद्धिविनायक-प्रीतिं कामयमानः मनसोद्दिष्टाय ब्राह्मणाय सम्प्रददे नमः न मम।

### विसर्जनमन्नः

गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने त्वं गणेश्वर। व्रतेनानेन देवेश यथोक्तफलदो भव॥ अनया पूजया श्री-सिद्धिविनायकः प्रीयताम्।

# ॥ अपराध-क्षमापनम्॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपः पूजािक्रयादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे गजाननम्॥ अनया पूजया श्री-सिद्धिविनायकः प्रीयताम्॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्। करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्बह्मार्पणमस्तु।

# ॥ श्री-कृष्णजन्माष्टमी-पूजा ॥

(मूलम्—श्री-व्रतराजः)

व्रतपूर्वदिने दन्तधावनपूर्वकं कृतैकभक्तो व्रतदिने कृतनित्यिक्रियो देवताः प्रार्थयेत्—

> सूर्यः सोमो यमः कालसन्थ्या भूतान्यहःक्षपा। पवनो दिक्पतिर्भूमिराकाशं खेचरा नराः। ब्रह्मशासनमास्थाय कल्पन्तामिह सन्निधिम्॥

इत्युक्ता सफलं पुष्पाक्षतजलपूर्णं ताम्रपात्रमादाय मासपक्षाद्यिख्य अमुकफलकामं पापक्षयकामो वा कृष्णप्रीतये कृष्णजन्माष्टमीव्रतं करिष्ये इति सङ्कल्प्य।

> वासुदेवं समुद्दिश्य सर्वपापप्रशान्तये। उपवासं करिष्यामि कृष्णाष्टम्यां नभस्यहम्॥

> अद्य कृष्णाष्टमी देवी नभश्चन्द्रं सरोहिणीम्। अर्चियत्वोपवासेन भोक्ष्येऽहमपरेऽहिन॥

एनसो मोक्षकामोऽस्मि यद्गोविन्दवियोनिजम्। तन्मे मुश्रतु मां त्राहि पतितं शोकसागरे॥

आजन्ममरणं यावद् यन्मया दुष्कृतं कृतम्। तत्प्रणाशय गोविन्द प्रसीद पुरुषोत्तम॥

इत्युक्ता पात्रस्थं जलं निक्षिपेत्।

ततः कदली-स्तम्भ-वासोभि-राम्र-पश्चव-युत-सज्जल-पूर्ण-कलशेर्दीपैः पुष्प-मालाभिर्युतमगुरु-धूपित-मग्नि-खङ्ग-कृष्णच्छाग-रक्षामणि-द्वार-न्यस्त-मुसलादि-युतं मङ्गलोपेतं षष्ठया देव्याधिष्ठितं देवक्याः सूतिकागृहं विधाय तस्य समन्ताद्भित्तिषु कुसुमाञ्जलीन् देवगन्धर्वादीन् खङ्ग-चर्मधर-वसुदेव-देवकी-नन्द-यशोदा-गर्ग-गोपी-गोपान्-कंस-नियुक्तान् गो-धेनु-कुञ्जरान्-यमुनां तन्मध्ये कालियमन्यच तत्कालीनं गोकुलचरितं यथासम्भवं लिखित्वा सूतिकागृहमध्ये प्रछदपटावृतं मञ्चकं स्थापियत्वा मध्याह्रे नद्यादौ तिलैः स्नात्वा अर्धरात्रे श्रीकृष्णं सपरिवारं सुपूजयेत्॥

# ॥ पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा॥

(आचम्य)

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुव्रोम्। (अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा) ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा

श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः

अविघ्रेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गुणपंति र हवामहे कविं केवीनामुंपमश्रंवस्तमम्। ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत् आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद् सादनम्॥

अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।

पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वस्रार्थमक्षतान् समर्पयामि।

यज्ञोपवीताभरणार्थे अक्षतान् समर्पयामि। दिव्यपरिमलगन्थान् धारयामि। गन्थस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि। पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

# ॥ अर्चना ॥

१. ॐ सुमुखाय नमः

९. ॐ धूमकेतवे नमः

२. ॐ एकदन्ताय नमः

१०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः

३. ॐ कपिलाय नमः

११. ॐ फालचन्द्राय नमः

४. ॐ गजकर्णकाय नमः

१२. ॐ गजाननाय नमः

५. ॐ लम्बोदराय नमः

१३. ॐ वऋतुण्डाय नमः

६. ॐ विकटाय नमः

१४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः

७. ॐ विघ्नराजाय नमः १५. ॐ हेरम्बाय नमः

१६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः

८. ॐ विनायकाय नमः

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाघ्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वऋतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ। अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

# ॥ प्रधान-पूजा — श्रीकृष्ण-पूजा॥

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

#### ॥ सङ्कल्पः॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहर्ते अद्य ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिके प्रभवादि षष्टिसंवत्सराणां मध्ये ( ) नाम संवत्सरे दक्षिणायने वर्ष-ऋतौ (कर्कटक/सिंह)-श्रावण-मासे कृष्णपक्षे अष्टम्यां शुभितथौ (इन्दु/भौम/बुध/गुरु/भृगु /स्थिर/भानु) वासरयुक्तायाम् ( )-नक्षत्रयुक्तायां ( )-योग ( )-करण-युक्तायां च एवं गुण-विशेषण-विशिष्टायाम् अस्याम् नवम्यां शुभितिथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय-आयुरारोग्य-ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्धार्थं पुत्रपौत्राभिवृद्धार्थम् इष्टकाम्यार्थसिद मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहा-पातकचतुष्टय-व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्य अपनोदनद्वारा सकल-पापक्षयार्थं श्रावण-कृष्ण-जन्माष्टमी-पुण्यकाले देवकी-सहित-श्रीकृष्ण-प्रीत्यर्थं देवकी-सहित-श्रीकृष्ण-प्रसाद-सिध्यर्थं कल्पोक्त-प्रकारेण देवकी-सहित-श्रीकृष्ण-पूजां करिष्ये।

तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। (गणपति-प्रसादं शिरसा

गृहीत्वा)

### ॥ आसन-पूजा॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चासनं कुरु॥

### ॥ घण्टा-पूजा॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्। घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

### ॥ कलश-पूजा॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्ये नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्ये नमः।

ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि। (अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्)

आपो वा इद सर्वं विश्वां भूतान्यापंः प्राणा वा आपंः प्रशव् आपोऽन्नमापोऽमृंत्मापंः सम्राडापों विराडापंः स्वराडाप्रछन्दा इस्यापो ज्योती इष्यापो यजू इष्यापंः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भवः स्वराप ओम्॥

> कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वस्न्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः। अङ्गेश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च ह्रदा नदाः। आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥ ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवैः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

### ॥ आत्म-पूजा॥

🕉 आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

१. ॐ आत्मने नमः ४. ॐ जीवात्मने नमः

२. ॐ अन्तरात्मने नमः ५. ॐ परमात्मने नमः

 ॐ योगात्मने नमः ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः

### समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः। त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

### ॥ पीठ-पूजा॥

८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः १. ॐ आधारशक्त्ये नमः

२. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः

३. ॐ आदिकूर्माय नमः १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः

४. ॐ आदिवराहाय नमः ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः

१२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः ५. ॐ अनन्ताय नमः

६. ॐ पृथिव्यै नमः १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः

१४. ॐ योगपीठासनाय नमः ७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः

#### ॥ गुरु-ध्यानम्॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

## ॥श्रीकृष्णजन्माष्टमी-षोडशोपचार-पूजा॥

गायद्भिः किन्नराद्यैः सततपरिवृता वेणुवीणानिनादैः भृङ्गारादर्श-कुन्तप्रवर-कृतकरैः किङ्करैः सेव्यमाना। पर्यङ्के स्वास्तृते या मुदिततरमुखी पुत्रिणी सम्यगास्ते सा देवी देवमाता जयति सुवदना देवकी दिव्यरूपा॥

इति देवकीं ध्यात्वा।

ध्यायामि बालकं सुप्तं मात्रङ्के स्तनपायिनम्। श्रीवत्स-वक्षसं शान्तं नीलोत्पल-दलच्छविम्॥

एवं देवक्या सहितं श्रीकृष्णं ध्यात्वा।

ॐ नमो देव्यै श्रियै नमः इति श्रियं ध्यात्वा, आवाह्य।

ॐ नमो वसुदेवाय नमः इति देवकीसहितं वसुदेवं ध्यात्वा, आवाह्य।

ॐ नमो नन्दाय नमः इति यशोदासहितं नन्दं ध्यात्वा, आवाह्य।

ॐ नमो बलदेवाय नमः इति श्रीकृष्णसिहतं बलदेवं ध्यात्वा, आवाह्य।

ॐ नमश्चण्डिकायै नमः इति चण्डिकां ध्यात्वा आवाह्य।

ततः श्रीकृष्णपूजां कुर्यात्। ध्यानम्—

कृष्णं चतुर्भुजं देवं शङ्खचऋगदाधरम्। पीताम्बरयुगोपतं लक्ष्मीयुक्तं विभूषितम्॥ लसत्कौस्तुभ-शोभाढ्यं मेघश्यामं सुलोचनम्। ध्यायामि पुण्डरीकाक्षं जगदानन्दकारकम्॥

#### श्रीकृष्णं ध्यायामि।

सहस्रंशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रंपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वा। अत्यंतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥

आगच्छ देवदेवेश जगद्योने रमापते। बिम्बे चास्मिन्नधिष्ठाने सन्निधेहि कृपां कुरु॥

#### श्रीकृष्णमावाहयामि।

पुरुष पुवेद श्सर्वम्। यद्भूतं यच्च भव्यम्। उतामृत्त्वस्येशांनः। यदन्नेनातिरोहंति॥ देवदेव जगन्नाथ गरुडासनसंस्थित। गृहाणासनकं दिव्यं जगद्धातर्नमोऽस्तु ते॥ सपरिवाराय कृष्णाय नमः, आसनं समर्पयामि।

पुतावानस्य महिमा। अतो ज्यायाईश्च पूर्रुषः। पादौंऽस्य विश्वां भूतानि। त्रिपादस्यामृतं दिवि॥

नानातीर्थाहृतं शुद्धं निर्मलं पुष्पमिश्रितम्। पाद्यं गृहाण दैत्यारे विश्वरूप नमोऽस्तु ते॥ सपरिवाराय कृष्णाय नमः, पाद्यं समर्पयामि।

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः। पादौँ उस्येहा ऽऽभवात्पुनः। ततो विश्वङ्कां कामत्। साशनानशने अभि॥ गन्थपुष्पाक्षतोपेतं फलेन च समन्वितम्। अर्घ्यं गृहाण देवेश मया दत्तं हि भक्तितः॥

सपरिवाराय कृष्णाय नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।

तस्माँद्विराडंजायत। विराजो अधि पूर्रुषः। स जातो अत्यरिच्यत। पृश्लाद्भूमिमथो पुरः॥

गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्यो मयाऽऽनीतं सुशीतलम्। गृहाणाचमनं देव विश्वकाय नमोऽस्तु ते॥

सपरिवाराय कृष्णाय नमः, आचमनीयं समर्पयामि।

यत्पुरुषेण ह्विषां। देवा युज्ञमतंन्वत। वसन्तो अस्याऽऽसीदाज्यम्। ग्रीष्म इध्मः शुरद्धविः॥

दिध क्षौद्रं घृतं शुद्धं किपलायाः सुगन्धि यत्। सुस्वादु मधुरं शौरे मधुपर्कं गृहाण भोः॥

सपरिवाराय कृष्णाय नमः, मधुपर्कं समर्पयामि। सपरिवाराय कृष्णाय नमः, आचमनीयं समर्पयामि।

> पश्चामृतेन स्नपनं करिष्यामि सुरोत्तम। क्षीरोदधिनिवासाय लक्ष्मीकान्ताय ते नमः॥ सपरिवाराय कृष्णाय नमः, पश्चामृतस्नानं समर्पयामि।

स्प्रास्यांऽऽसन् परिधयः। त्रिः स्प्रा स्मिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वानाः। अबंध्नन् पुरुषं पृशुम्॥

मन्दािकनी गौतमी च यमुना च सरस्वती। ताभ्यः स्नानार्थमानीतं गृहाण शिशिरं जलम्॥

#### सपरिवाराय कृष्णाय नमः, स्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

तं युज्ञं बहिषि प्रौक्षन्। पुरुषं जातमंग्रतः। तेनं देवा अयजन्त। साध्या ऋषंयश्च ये॥ शुद्ध-जाम्बूनद-प्रख्ये तटिद्धासुर-रोचिषी। मयोपपादिते तुभ्यं वाससी च गृहाण भोः॥

#### सपरिवाराय कृष्णाय नमः, वस्रं समर्पयामि।

तस्मौद्यज्ञार्थ्सर्वेहुतः। सम्भृतं पृषदाज्यम्। पृशू इस्ता इश्चेत्रे वायव्यान्। आरुण्यान्ग्राम्याश्च ये॥

दामोदर नमस्तेऽस्तु त्राहि मां भवसागरात्। ब्रह्मसूत्रं मया दत्तं गृहाण पुरुषोत्तम॥

#### सपरिवाराय कृष्णाय नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

किरीटकुण्डलादीनि काश्चीवलययुग्मकम्। कौस्तुभं वनमालां च भूषणानि भजस्व भोः॥ सपरिवाराय कृष्णाय नमः, आभरणानि समर्पयामि।

तस्माँद्यज्ञाथ्संर्वहुतंः। ऋचः सामांनि जज्ञिरे। छन्दार्शसे जज्ञिरे तस्मात्। यजुस्तस्मांदजायत॥

मलयाचलसम्भूतं गन्धसारं मनोहरम्। हृदयानन्दनं चारु प्रीत्यर्थे प्रतिगृह्यताम्॥

#### सपरिवाराय कृष्णाय नमः, चन्दनं समर्पयामि।

तस्मादश्वां अजायन्त। ये के चौभयादेतः। गार्वो ह जिज्ञेरे तस्मौत्। तस्मौज्ञाता अजावयः॥

#### मालतीचम्पकादीनि यूथिकावकुलानि च। तुलसीपत्रमिश्राणि गृहाण सुरसत्तम॥

# सपरिवाराय कृष्णाय नमः, पुष्पाणि समर्पयामि।

#### ॥ अङ्ग-पूजा॥

१. गोविन्दाय नमः —पादौ पूजयामि

२. माधवाय नमः —जङ्घे पूजयामि

३. मधुसूदनाय नमः —कटिं पूजयामि

४. पद्मनाभाय नमः —नाभिं पूजयामि

५. हृषीकेशाय नमः —हृदयं पूजयामि

६. सङ्कर्षणाय नमः —स्तनौ पूजयामि

७. वामनाय नमः —बाहू पूजयामि

८. दैत्यसूदनाय नमः —हस्तौ पूजयामि

९. हरिकेशाय नमः —कण्ठं पूजयामि

१०. चारुमुखाय नमः —मुखं पूजयामि

११. त्रिविक्रमाय नमः —नासिकां पूजयामि

१२. पुण्डरीकाक्षाय नमः-नेत्रे पूजयामि

१३. नृसिंहाय नमः —श्रोत्रे पूजयामि

१४. उपेन्द्राय नमः —ललाटं पूजयामि

१५. हरये नमः —शिरः पूजयामि

१६. श्रीकृष्णाय नमः — सर्वाणि अङ्गानि पूजयामि

80

### ॥ चतुर्विंशति नामपूजा॥

- १. ॐ केशवाय नमः
- २. ॐ नारायणाय नमः
- ३. ॐ माधवाय नमः
- ४. ॐ गोविन्दाय नमः
- ५. ॐ विष्णवे नमः
- ६. ॐ मधुसूदनाय नमः
- ७. ॐ त्रिविक्रमाय नमः
- ८. ॐ वामनाय नमः
- ९. ॐ श्रीधराय नमः
- १०. ॐ हृषीकेशाय नमः
- ११. ॐ पद्मनाभाय नमः
- १२. ॐ दामोदराय नमः

- १३. ॐ सङ्कर्षणाय नमः
- १४. ॐ वास्देवाय नमः
- १५. ॐ प्रद्युम्नाय नमः
- १६. ॐ अनिरुद्धाय नमः
- १७. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः
- १८. ॐ अधोक्षजाय नमः
- १९. ॐ नृसिंहाय नमः
- २०. ॐ अच्युताय नमः
- २१. ॐ जनार्दनाय नमः
- २२. ॐ उपेन्द्राय नमः
- २३. ॐ हरये नमः
- २४. ॐ श्रीकृष्णाय नमः

# ॥ कृष्णाष्टोत्तरशतनामावलिः॥

श्रीकृष्णाय नमः

कमलानाथाय नमः

वासुदेवाय नमः

सनातनाय नमः

वस्देवात्मजाय नमः

पुण्याय नमः

लीलामानुषविग्रहाय नमः

श्रीवत्सकौस्तुभधराय नमः

यशोदावत्सलाय नमः

हरये नमः

चतुर्भुजात्तचक्रासि-

गदाशङ्खाम्बुजायुधाय नमः

देवकीनन्दनाय नमः

श्रीशाय नमः

नन्दगोपप्रियात्मजाय नमः

यमुनावेगसंहारिणे नमः

बलभद्रप्रियानुजाय नमः		इलापतये नमः	
पूतनाजीवितहराय नमः		परस्मै ज्योतिषे नमः	
शकटासुरभञ्जनाय नमः		यादवेन्द्राय नमः	
नन्दव्रजजनानन्दिने नमः		यदूद्वहाय नमः	
सिचदानन्दविग्रहाय नमः	२०	वनमालिने नमः	
नवनीतविलिप्ताङ्गाय नमः		पीतवाससे नमः	
नवनीतनटाय नमः		पारिजातापहारकाय नमः	
अनघाय नमः		गोवर्धनाचलोद्धर्त्रे नमः	
नवनीतनवाहाराय नमः		गोपालाय नमः	
मुचुकुन्दप्रसादकाय नमः		सर्वपालकाय नमः	५०
षोडशस्त्रीसहस्रेशाय नमः		अजाय नमः	
त्रिभङ्गीमधुराकृतये नमः		निरञ्जनाय नमः	
शुकवागमृताब्धीन्दवे नमः		कामजनकाय नमः	
गोविन्दाय नमः		कञ्जलोचनाय नमः	
योगिनां पतये नमः	3 o	मधुघ्ने नमः	
वत्सवाटचराय नमः		मथुरानाथाय नमः	
अनन्ताय नमः		द्वारकानायकाय नमः	
धेनुकासुरमर्दनाय नमः		बलिने नमः	
तृणीकृततृणावर्ताय नमः		बृन्दावनान्तसश्चारिणे नमः	
यमलार्जुनभञ्जनाय नमः		तुलसीदामभूषणाय नमः	६०
उत्तालतालभेत्रे नमः		स्यमन्तकमणेर्हर्त्रे नमः	
तमालश्यामलाकृतये नमः		नरनारायणात्मकाय नमः	
गोपगोपीश्वराय नमः		कुजाकृष्णाम्बरधराय नमः	
योगिने नमः		मायिने नमः	
कोटिसूर्यसमप्रभाय नमः	४०	परमपूरुषाय नमः	

वृषभासुरविध्वंसिने नमः

१०

800

मृष्टिकास्रचाण्रमल्युद्ध-बाणास्रकरान्तकाय नमः युधिष्ठिरप्रतिष्ठात्रे नमः विशारदाय नमः बर्हिबर्हावतंसकाय नमः संसारवैरिणे नमः पार्थसारथये नमः कंसारये नमः मुरारये नमः अव्यक्ताय नमः गीतामृतमहोदधये नमः नरकान्तकाय नमः 00 कालीयफणिमाणिकारञ्जितश्री-अनादिब्रह्मचारिणे नमः कृष्णाव्यसनकर्षकाय नमः पदाम्बुजाय नमः शिशुपालशिरश्छेत्रे नमः दामोदराय नमः यज्ञभोक्रे नमः दुर्योधनकुलान्तकाय नमः दानवेन्द्रविनाशकाय नमः विदुराकूरवरदाय नमः विश्वरूपप्रदर्शकाय नमः नारायणाय नमः परब्रह्मणे नमः सत्यवाचे नमः पन्नगाशनवाहनाय नमः सत्यसङ्कल्पाय नमः जलकीडासमासक्तगोपी-सत्यभामारताय नमः जयिने नमः वस्त्रापहारकाय नमः 60 पुण्यश्लोकाय नमः स्भद्रापूर्वजाय नमः तीर्थपादाय नमः विष्णवे नमः भीष्ममुक्तिप्रदायकाय नमः वेदवेद्याय नमः दयानिधये नमः जगद्गरवे नमः सर्वतीर्थात्मकाय नमः जगन्नाथाय नमः सर्वग्रहरूपिणे नमः वेण्नादविशारदाय नमः

॥इति श्री-ब्रह्माण्डमहापुराणे वायुप्रोक्ते

परात्पराय नमः

#### श्री-कृष्णाष्टोत्तरशतनामाविलः सम्पूर्णा॥

#### ॥ उत्तराङ्ग-पूजा॥

यत्पुर्रुषं व्यंदधुः। कृतिधा व्यंकल्पयन्। मुखं किमंस्य कौ बाहू। कावूरू पादांवुच्येते॥

वनस्पतिरसोद्भृतं कालागरुसमन्वितम्। धूपं गृहाण गोविन्द गुणसागर गोपते॥

सपरिवाराय कृष्णाय नमः, धूपमाघ्रापयामि।

ब्राह्मणौऽस्य मुखंमासीत्। बाहू रांजन्यः कृतः। ऊरू तदंस्य यद्वैश्यः। पुद्धाः शूद्रो अंजायत॥

यज्ञेश्वराय देवाय तथा यज्ञोद्भवाय च। यज्ञानां पतये नाथ गोविन्दाय नमो नमः॥ साज्यं त्रिवर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया। दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापह॥ सपरिवाराय कृष्णाय नमः, दीपं दर्शयामि।

ॐ भूर्भुवः सुवंः। + ब्रह्मणे स्वाहाँ।

चन्द्रमा मनंसो जातः। चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रेश्चाग्निश्चे। प्राणाद्वायुरंजायत॥

विश्वेश्वराय विश्वाय तथा विश्वोद्भवाय च। विश्वस्य पतये तुभ्यं गोविन्दाय नमो नमः॥

शाल्योदनं पायसं च सिताघृतविमिश्रितम्। नानापक्वान्नसंयुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥

#### सपरिवाराय कृष्णाय नमः, सूपसहितं शाल्योदनं शाकोपदंसं निवेदयामि।

मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि । उत्तरापोशनं समर्पयामि। हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि । पादप्रक्षालनं समर्पयामि । गण्डूषं समर्पयामि। हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि । आचमनीयं समर्पयामि। सपरिवाराय कृष्णाय नमः,

शष्कुली-लवनचिपिट-गुडचिपिट-गुड-शुण्ठी-नवनीतादीनि, जम्बूफल-तिन्निणीफल-प्रभृतीनि नानाफलानि च निवेदयामि।

नाभ्यां आसीद्न्तरिक्षम्। शीर्ष्णो द्यौः समेवर्तत। पुन्न्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्। तथा लोकार अंकल्पयन्॥

> पूगीफलसमायुक्तं नागवल्ली-दलैर्युतम्। कर्पूरचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

सपरिवाराय कृष्णाय नमः, कर्पूरताम्बूलं निवेदयामि।

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवंणं तमंस्सतु पारे। सर्वाणि रूपाणि विचित्य धीरंः। नामांनि कृत्वाऽभिवदन् यदास्ते॥

> नीराजयेत्ततो भक्त्या मङ्गलं समुदीरयन्। जय-मङ्गल-निर्घोषैर्देवदेवं समर्चयेत्॥

सपरिवाराय कृष्णाय नमः, कर्पूरनीराजनं दर्शयामि।

धाता पुरस्ताद्यमुंदाज्हारं। श्रुक्तः प्रविद्वान् प्रुदिश्श्वतंस्रः। तमेवं विद्वानमृतं इह भंवति। नान्यः पन्था अयंनाय विद्यते॥ योऽपां पुष्पं वेदं। पुष्पंवान् प्रजावान् पशुमान् भंवति। चन्द्रमा वा अपां पुष्पम्। पुष्पंवान् प्रजावान् पशुमान् भंवति। य एवं वेदं। योऽपामायतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। ओं तद्रुह्म। ओं तद्वायुः। ओं तदात्मा। ओं तथ्मत्यम्। ओं तथ्मर्वम्। ओं तत्पुरोर्नमः॥

अन्तश्चरितं भूतेषु गृहायां विश्वमूर्तिषु। त्वं यज्ञस्त्वं वषद्कारस्त्वमिन्द्रस्त्वः रुद्रस्त्वं विष्णुस्त्वं ब्रह्म त्वं प्रजापितः। त्वं तदाप् आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः सुवरोम्॥

सपरिवाराय कृष्णाय नमः, वेदोक्तमन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

दत्वा पुष्पाञ्जलिं चैव प्रदक्षिणपुरस्सरम्। प्रणमेदण्डवद्भुमौ भक्तिप्रह्वः पुनः पुनः॥

स्तुत्वा नानाविधैः स्तोत्रैः प्रार्थयेत जगत्पतिम्। नमस्तुभ्यं जगन्नाथ देवकीतनय प्रभो॥

वसुदेवात्मजानन्त यशोदानन्दवर्धन। गोविन्द गोकुलाधार गोपीकान्त नमोऽस्तु ते॥

सपरिवाराय कृष्णाय नमः, प्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

ततो जातकर्मनालच्छेदषष्ठीपूजानामकरणकर्माणि सङ्क्षेपेण कार्याणि।

### ॥ अर्घ्यप्रदानम्॥

ततस्तु दापयेदर्घ्यम् इन्दोरुदयतः शुचिः। कृष्णाय प्रथमं दद्याद्देवकीसहिताय च॥

नालिकेरेण शुद्धेन दद्यादर्घ्यं विचक्षणः। कृष्णाय परया भक्त्या शङ्खे कृत्वा विधानतः॥ जातः कंसवधार्थाय भूभारोत्तारणाय च। पाण्डवानां हितार्थाय धर्मसंस्थापनाय च॥

कौरवाणां विनाशाय दैत्यानां निधनाय च। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं देवकीजनित प्रभो॥

सपरिवाराय कृष्णाय नमः, इदमर्घ्यमिदमर्घ्यमिदमर्घ्यम्॥

पूजिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यः तत्तन्नाममन्रेण अर्घ्यं दद्यात्

१. ॐ देवक्यै नमः —इदमर्घ्यम्

२. ॐ वसुदेवाय नमः —इदमर्घ्यम्

३. ॐ रोहिण्यै नमः —इदमर्घ्यम्

४. ॐ सबलायै नमः —इदमर्घ्यम्

५. ॐ सात्यक्यै नमः —इदमर्घ्यम्

६. ॐ उद्धवाय नमः — इदमर्घ्यम्

७. ॐ अऋूराय नमः —इदमर्घ्यम्

८. ॐ उग्रसेनादि-यादवेभ्यो नमः —इदमर्घ्यम्

९. ॐ नन्दाय नमः —इदमर्घ्यम

१०. ॐ यशोदायै नमः —इदमर्घ्यम्

११. ॐ तत्कालप्रसूताभ्यः गोपगोपिकाभ्यो नमः—इदमर्घ्यम्

१३. ॐ कालिन्द्यै नमः — इदमर्घ्यम

१४. ॐ काल्यै नमः —इदमर्घ्यम्

### इति पृथकपृथगर्घं दत्वा॥

ततश्चन्द्रोदये रोहिणीयुतं चन्द्रं स्थण्डिले प्रतिमायां वा नाममन्त्रेण सम्पूज्य।

ततस्तु रोहिणीयुक्तं चन्द्रं सम्पूज्य भक्तितः। स्तुत्वा तु स्तोत्रमन्नेण चन्द्रायार्घ्यं प्रदापयेत्॥

आप्यायस्वेति मन्नेण देवसमीपे चन्दनिबम्बे रोहिणीसिहतं चन्द्रमावाह्य षोडशोपचारैः सम्पूजयेत्॥ चन्द्रप्रार्थना–

ज्योत्स्रायाः पतये तुभ्यं ज्योतिषां पतये नमः। नमस्ते रोहिणीकान्त सुधावास नमोऽस्तु ते॥

नमो मण्डलदीपाय शिरोरत्नाय धूर्जटे। कलाभिर्वर्धमानाय नमश्चन्द्राय चारवे॥

इति प्रणमेत्।

ज्योत्स्रापते नमस्तुभ्यं नमस्ते ज्योतिषां पते। नमस्ते रोहिणीकान्त नमस्ते युवमोहन॥ इति स्तुत्वा।

शङ्क्षे कृत्वा ततस्तोयं सपुष्पफलचन्दनम्। जानुभ्यामवनीं गत्वा चन्द्रायार्घ्यं निवेदयेत्॥

#### चन्द्रार्घ्यमञ्रः-

क्षीरोदार्णवसम्भूत अत्रिनेत्रसमुद्भव। रोहिणीश गृहाणार्घ्यं रमाभ्रातर्मनःपते॥

रोहिणीसहिताय चन्द्राय नमः इदमर्घ्यम् (त्रिः) इत्यर्घ्यं दत्वा देवकीसहिताय कृष्णाय छत्रचामराद्युपचारं कृत्वा पूजां समाप्य कृष्णावतारघट्टं पठेत्॥

युज्ञेनं युज्ञमंयजन्त देवाः। तानि धर्माणि प्रथमान्यांसन्। ते हु नाकं महिमानः सचन्ते। यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ सपरिवाराय कृष्णाय नमः, छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि। अनघं वामनं शौरिं वैकुण्ठं पुरुषोत्तमम्। वासुदेवं हृषीकेशं माधवं मधुसूदनम्॥१॥ वराहं पुण्डरीकाक्षं नृसिंहं दैत्यसूदनम्। दामोदरं पद्मनाभं केशवं गरुडध्वजम्॥२॥

गोविन्दमच्युतं कृष्णमनन्तमपराजितम्। अधोक्षजं जगद्वीजं सर्गस्थित्यन्तकारणम्॥३॥

अनादिनिधनं विष्णुं त्रिलोकेशं त्रिविक्रमम्। नारायणं चतुर्बाहं शङ्खचक्रगदाधरम्॥४॥

पीताम्बरधरं नित्यं वनमालाविभूषितम्। श्रीवत्साङ्कं जगत्सेतुं श्रीकृष्णं श्रीधरं हरिम्॥५॥

शरणं त्वां प्रपद्येऽहं सर्वकामार्थसिद्धये। प्रणममामि सदा देवं वासुदेवं जगत्पतिम्॥६॥

#### इति मन्नैः प्रणम्य॥

त्राहि मां सर्वलोकेश हरे संसारसागरात्। त्राहि मां सर्वपापघ्न दुःखशोकार्णवात्प्रभो। सर्वलोकेश्वर त्राहि पतितं मां भवार्णवे॥१॥

देवकीनन्दन श्रीश हरे संसारसागरात्। त्राहि मां सर्वदुःखघ्न रोगशोकार्णवाद्धरे॥२॥

दुर्वृत्तात्रायसे विष्णो ये स्मरन्ति सकृत्सकृत्। सोऽहं देवातिदुर्वृत्तस्राहि मां शोकसागरात्॥३॥

पुष्कराक्ष निमग्नोऽहं मायाव्यज्ञानसागरे। त्राहि मां देवदेवेश त्वत्तो नान्योऽस्ति रक्षिता॥४॥ यद्वाल्ये यच कौमारे यौवने यच वार्धके। तत्पुण्यं वृद्धिमायातु पापं हर हलायुध॥५॥

इति मन्नैः प्रार्थयेत्॥

ततः स्तोत्रं पठन् पुराणश्रवणादिना जागरं कुर्यात्॥ द्वितीयेऽह्नि प्रातःकाले स्नानादिनित्यकर्म कृत्वा पूर्ववद्देवं पूजयित्वा ब्राह्मणान् भोजयेत्॥

तेभ्यः सुवर्णधेनुवस्नादि दत्त्वा कृष्णो मे प्रीयतामिति वदेत्॥ यं देवं देवकी देवी वसुदेवादजीजनत्। भौमस्य ब्रह्मणो गृप्त्यै तस्मै ब्रह्मात्मने नमः॥ नमस्ते वासुदेवाय गोब्राह्मणहिताय च।

नमस्ते वासुदेवाय गोब्राह्मणहिताय च। शान्तिरस्तु शिवं चास्तु इत्युक्का मां विसर्जयेत्॥

इति प्रतिमामुद्वास्य तां ब्राह्मणाय दत्त्वा पारणं कृत्वा व्रतं समापयेत्॥ सर्वस्मै सर्वेश्वराय सर्वेषां पतये सर्वसम्भवाय गोविन्दाय नमो नम इति पारणे॥

> भूताय भूतपतये नम इति समापने मन्नः॥ इति पूजाविधिः॥



हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अनन्तपुण्यफलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

श्री-कृष्णजन्माष्टमी-पुण्यकाले अस्मिन् मया क्रियमाण-सपरिवार-कृष्णपूजायां यद्देयमुपायनदानं तत्प्रतिनिधित्वेन हिरण्यं सपरिवार-श्री-कृष्ण-प्रीतिं कामयमानः मनसोद्दिष्टाय ब्राह्मणाय सम्प्रददे नमः न मम्। अनया पूजया सपरिवार-श्रीकृष्णः प्रीयताम्। कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्। करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्बह्मार्पणमस्तु।





# ॥ श्री-सिद्धिविनायक-पूजा ॥

(मूलम्—श्री-व्रतराजः)

# ॥ पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा॥

(आचम्य)

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवणं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुव्रोम्। (अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा) ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः अविघ्नेन परिसमास्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।

ॐ गुणानां त्वा गुणपंति ह्वामहे क्विं क्वीनामुंपमश्रंवस्तमम्। ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत् आ नः शृण्वत्रृतिभिः सीद् सादंनम्॥ अस्मिन् हिरद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि। ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि। पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरध्यं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। ॐ भूर्भ्वस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि। वस्नार्थमक्षतान् समर्पयामि। यज्ञोपवीताभरणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

गन्थस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि। पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

#### ॥ अर्चना ॥

१. ॐ स्मुखाय नमः ९. ॐ धूमकेतवे नमः

२. ॐ एकदन्ताय नमः १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः

३. ॐ कपिलाय नमः ११. ॐ फालचन्द्राय नमः

४. ॐ गजकर्णकाय नमः १२. ॐ गजाननाय नमः

५. ॐ लम्बोदराय नमः १३. ॐ वऋतुण्डाय नमः

६. ॐ विकटाय नमः १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः

७. ॐ विघ्नराजाय नमः १५. ॐ हेरम्बाय नमः

८. ॐ विनायकाय नमः १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाघ्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वऋतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ। अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि। छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

## ॥ प्रधान-पूजा — श्री-सिद्धिवनायक-पूजा॥

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

#### ॥सङ्कल्पः॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते अद्य ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिके प्रभवादि षष्टिसंवत्सराणां मध्ये ( )<sup>३</sup>° नाम संवत्सरे दक्षिणायने वर्ष-ऋतौ (सिंह/कन्या)-भाद्रपद-मासे शुक्लपक्षे चतुर्थ्यां शुभितथौ ( ) वासरयुक्तायाम् ( )<sup>३१</sup> नक्षत्र ( )<sup>३२</sup> नाम योग (वणिजा/भद्रा)<sup>३३</sup>-करण युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् चतुर्थ्यां शुभतिथौ अस्माकं सकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय-आयुरारोग्य-ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् धर्मार्थकाममोक्ष-चतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्धार्थं पुत्रपौत्राभिवृद्धार्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्धार्थं मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहा-पातकचतुष्टय-व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्य अपनोदनद्वारा सकल-पापक्षयार्थं श्री-सिद्धिविनायक-प्रसादसिद्धार्थं यथाशक्ति-ध्यानावाहनादिषोडशोपचारैः श्री-सिद्धिविनायक-पूजां करिष्ये। तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।

<sup>&</sup>lt;sup>३</sup>°पृष्टं ६२१ पश्यताम्

३१पृष्टं ६३१ पश्यताम्

<sup>&</sup>lt;sup>३२</sup>पृष्टं ६३२ पश्यताम्

३३ पृष्टं ६३३ पश्यताम्

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। शोभनार्थे क्षेमाय पुनरागमनाय च। (गणपति-प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

#### ॥ आसन-पूजा॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥
पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चासनं कुरु॥

#### ॥ घण्टा-पूजा॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्। घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

#### ॥ कलश-पूजा॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्ये नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः।

ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः। ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि। (अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्) आपो वा इद॰ सर्वं विश्वां भूतान्यापः प्राणा वा आपः पृशव् आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापृश्छन्दाः स्यापो ज्योतीः इष्यापो यजू इष्यापः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भुवः सुवराप ओम्॥ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः। अङ्गेश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च ह्रदा नदाः। आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥ ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवेः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

#### ॥ आत्म-पूजा॥

#### ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

१. ॐ आत्मने नमः ४. ॐ जीवात्मने नमः

२. ॐ अन्तरात्मने नमः ५. ॐ परमात्मने नमः

३. ॐ योगात्मने नमः ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः

#### समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः। त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

### ॥ पीठ-पूजा॥

१. ॐ आधारशक्त्ये नमः ८. ॐ रत्नवेदिकाये नमः

२. ॐ मृलप्रकृत्यै नमः ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः

३. ॐ आदिकूर्माय नमः १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः

४. ॐ आदिवराहाय नमः ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः

५. ॐ अनन्ताय नमः १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः

६. ॐ पृथिव्यै नमः १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः

७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः १४. ॐ योगपीठासनाय नमः

#### ॥ गुरु-ध्यानम्॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

#### ॥ प्राण-प्रतिष्ठा ॥

असुनीते पुनरिति ऋचं पठित्वा गर्भाधानादिपश्चदशसंस्कार सिद्धयर्थं पश्चदशप्रणवावृत्तीः करिष्ये इति सङ्कल्प्य पश्चदशवारं प्रणवमावर्त्य तचक्षुर्देवहितम् इति मन्नेण देवस्याज्येन नेत्रोन्मीलनं कृत्वा पश्चोपचारैः पूजनं कुर्यात्। आसनविधिं कृत्वा पुरुषसूक्त-न्यासान् विधाय पूजनमारभेत्॥

## ॥ षोडशोपचार-पूजा॥

करिष्ये गणनाथस्य व्रतं सम्पत्करं शुभम्। भक्तानामिष्टवरदं सर्वमङ्गल-कारणम्॥

एकदन्तं शूर्पकर्णं गजवऋं चतुर्भुजम्। पाशाङ्क्ष्यधरं देवं ध्यायेत् सिद्धिविनायकम्॥

ध्यायेद् देवं महाकायं तप्तकाश्चनसन्निभम्। चतुर्भुजं महाकायं सर्वाभरणभूषितम्॥

दन्ताक्षमाला-परशु-पूर्णमोदक-हस्तकम् । मोदकासक्त-शुण्डाग्रम् एकदन्तं विनायकम्॥

### अस्मिन् बिम्बे/प्रतिमायां/चित्रपटे श्री-सिद्धिविनायकं ध्यायामि।

आवाहयामि विघ्नेश सुरराजार्चितेश्वर। अनाथनाथ सर्वज्ञ पूजार्थं गणनायक॥

स्हस्रंशीर्षा पुरुषः। स्हस्राक्षः स्हस्रंपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वा। अत्यंतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥

अस्मिन् बिम्बे/प्रतिमायां/चित्रपटे श्री-सिद्धिविनायकम् आवाहयामि।

विचित्ररत्नरचितं दिव्यास्तरणसंयुतम्। स्वर्णसिंहासनं चारु गृहाण सुरपूजित॥

पुरुष पृवेद सर्वम्। यद्भूतं यच् भव्यम्। उतामृतत्वस्येशांनः। यदन्नेनातिरोहंति॥

#### श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, आसनं समर्पयामि।

सर्वतीर्थसमानीतं पाद्यं गन्धादिसंयुतम्। विघ्नराज गृहाणेनदं भगवन् भक्तवत्सल॥

प्तावानस्य मिहुमा। अतो ज्यायाईश्च पूर्रुषः। पादौंऽस्य विश्वां भूतानि। त्रिपादंस्यामृतं दिवि॥ श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यं च फलसंयुक्तं गन्धपुष्पाक्षतैर्युतम्। गणाध्यक्ष नमस्तेऽस्तु गृहाण करुणानिधे॥

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः। पादौँ उस्येहाऽऽभंवात्पुनंः। ततो विश्वङ्कांकामत्। साशनानशने अभि॥ श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।

विनायक नमस्तुभ्यं त्रिदशैरभिवन्दित। गङ्गाहृतेन तोयेन शीघ्रमाचमनं कुरु॥

तस्माँद्विराडंजायत। विराजो अधि पूर्रुषः। स जातो अत्यंरिच्यत। पृश्चाद्भृमिमथो पुरः॥

#### श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, आचमनीयं समर्पयामि।

दध्याज्यमधुसंयुक्तं मधुपर्कं मयाऽऽहृतम्। गृहाण सर्वलोकेश गणनाथ नमोऽस्तु ते॥ यत्पुरुषेण ह्विषां। देवा यज्ञमतंन्वत। वसन्तो अस्याऽऽसीदाज्यम्। ग्रीष्म इध्मः श्ररद्धविः॥ श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, मधुपर्कं समर्पयामि।

> पयो दिध घृतं चैव शर्करामधुसंयुतम्। पञ्चामृतं गृहाणेदं स्नानाय गणनायक॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, पश्चामृतस्नानम् समर्पयामि।

गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्य आनीतं तोयमुत्तमम्। भक्त्या समर्पितं तुभ्यं स्नानायाभीष्टदायक॥

स्प्रास्यांऽऽसन् परि्धयः। त्रिः सप्त स्मिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वानाः। अबंधन् पुरुषं पृशुम्॥

# श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

रक्तवस्रयुगं देव दिव्यं काश्चनसम्भवम्। सर्वप्रद गृहाणेदं लम्बोदर हरात्मज॥

तं युज्ञं बुर्हिषि प्रौक्षन्ं। पुरुषं जातमंग्रतः। तेनं देवा अयेजन्त। साध्या ऋषंयश्च ये॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

राजतं ब्रह्मसूत्रं च काश्चनं चोत्तरीयकम्। गृहाण चारु सर्वज्ञ भक्तानां वरदो भव॥

तस्मौद्यज्ञाथ्सेर्वहुतः। सम्भृतं पृषदाज्यम्। पृशू इस्ता इश्वेके वायव्यान्। आरुण्यान्ग्राम्याश्च ये॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

उद्यद्भास्करसङ्काशं सन्ध्यावदरुणं प्रभो। वीरालङ्करणं दिव्यं सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, सिन्दूरं समर्पयामि।

नानाविधानि दिव्यानि नानारत्नोञ्चलानि च। भूषणानि गृहाणेश पार्वतीप्रियनन्दन॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, आभरणानि समर्पयामि।

कस्तूरीरोचनाचन्द्रकुङ्क्षमेश्च समन्वितम्। विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

तस्माँ द्युज्ञाथ्सं वृंहुतंः। ऋचः सामांनि जज्ञिरे। छन्दा १सि जज्ञिरे तस्मात्। यजुस्तस्मांदजायत॥

### श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि।

रक्ताक्षतांश्च देवेश गृहाण द्विरदानन। ललाटपटले चन्द्रस्तस्योपरि विधार्यताम्॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि मे प्रभो। मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

करवीरैर्जातिकुसुमैश्चम्पकैर्बकुलैः शुभैः। शतपत्रेश्च कह्नारैरर्चयेद् गणनायकम्॥

तस्मादश्वां अजायन्त। ये के चौभयादेतः। गावों ह जज़िरे तस्मौत्। तस्मौज्ञाता अजावयः॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, पुष्पाणि समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

# ॥ अङ्ग-पूजा॥

۶.	पार्वतीनन्दनाय	नमः — पादौ	पूजयामि
٧.	गणेशाय	नमः — गुल्फौ	पूजयामि
₹.	जगद्धात्रे	नमः — जङ्घे	पूजयामि
٧.	जगद्वल्लभाय	नमः — जानुनी	पूजयामि
<b>4</b> .	उमापुत्राय	नमः — ऊरू	पूजयामि
€.	विकटाय	नमः — कटिं	पूजयामि
<i>9</i> .	गुहाग्रजाय	नमः — गुह्यं	पूजयामि
۷.	महत्तमाय	नमः — मेढ्रं	पूजयामि
۶.	नाथाय	नमः — नाभिं	पूजयामि
<b>१०.</b>	उत्तमाय	नमः — उदरं	पूजयामि
११.	विनायकाय	नमः — वक्षः	पूजयामि
१२.	पाशच्छिदे	नमः — पार्श्वी	पूजयामि
१३.	हेरम्बाय	नमः — हृदयं	पूजयामि
१४.	कपिलाय	नमः — कण्ठं	पूजयामि
१५.	स्कन्दाग्रजाय	नमः — स्कन्धौ	पूजयामि
१६.	हरसुताय	नमः — हस्तान्	पूजयामि
१७.	ब्रह्मचारिणे	नमः — बाहून्	पूजयामि
१८.	सुमुखाय	नमः — मुखं	पूजयामि
१९.	एकदन्ताय	नमः — दन्तौ	पूजयामि
२०.	विघ्ननेत्रे	नमः — नेत्रे	पूजयामि
२१.	शूर्पकर्णाय	नमः — कर्णौ	पूजयामि
२२.	फालचन्द्राय	नमः — फालं	पूजयामि
२३.	नागाभरणाय	नमः — नासिकां	पूजयामि

२४.	चिरन्तनाय	नमः —	चुबुकं	पूजयामि
२५.	स्थूलौष्ठाय	नमः —	ओष्ठौ	पूजयामि
२६.	गलन्मदाय	नमः —	गण्डो	पूजयामि
२७.	कपिलाय	नमः —	कचान्	पूजयामि
२८.	शिवप्रियाय	नमः —	शिरः	पूजयामि
२९.	सर्वमङ्गलासुताय	नमः —	सर्वाण्यङ्गानि	पूजयामि

# ॥ एकविंशति-पत्र-पूजा॥

۶.	सुमुखाय	नमः — मालती	-पत्रं समर्पयामि
₹.	उमापुत्राय	नमः — माची	-पत्रं समर्पयामि
₹.	हेरम्बाय	नमः — बृहती	-पत्रं समर्पयामि
٧.	लम्बोदराय	नमः — बिल्व	-पत्रं समर्पयामि
۷.	द्विरदाननाय	नमः — दूर्वा	-पत्रं समर्पयामि
€.	धूमकेतवे	नमः — दुर्धूर	-पत्रं समर्पयामि
<i>9</i> .	बृहते	नमः — बदरी	-पत्रं समर्पयामि
۷.	अपवर्गदाय	नमः — अपामार्ग	-पत्रं समर्पयामि
۶.	द्वैमातुराय	नमः — तुलसी	-पत्रं समर्पयामि
१०.	चिरन्तनाय	नमः — चूत	-पत्रं समर्पयामि
११.	कपिलाय	नमः — करवीर	-पत्रं समर्पयामि
१२.	विष्णुस्तुताय	नमः — विष्णुकान्त	न-पत्रं समर्पयामि
१३.	अमलाय	नमः — आमलकी	-पत्रं समर्पयामि
१४.	महते	नमः — मरुवक	-पत्रं समर्पयामि
१५.	सिन्धूराय	नमः — सिन्धूर	-पत्रं समर्पयामि
१६.	गजाननाय	नमः — जाती	-पत्रं समर्पयामि

- -पत्रं समर्पयामि गण्डगलन्मदाय नमः — गण्डली .08
- -पत्रं समर्पयामि शङ्करीप्रियाय नमः — शमी १८.
- -पत्रं समर्पयामि भृङ्गराजत्कटाय नमः — भृङ्गराज 83.
- अर्जुनदन्ताय नमः अर्जुन -पत्रं समर्पयामि २०.
- अर्कप्रभाय नमः — अर्क -पत्रं समर्पयामि २१.

#### ॥ एकविंशति-पुष्प-पूजा॥

-पुष्पं समर्पयामि पश्चास्य -गणपतये नमः — पुन्नाग የ.

-गणपतये नमः — मन्दार ₹. महा

धीर -गणपतये नमः — दाडिमी 3.

8. विष्वक्सेन-गणपतये नमः — वकुल

आमोद -गणपतये नमः — अमृणाल 4.

-गणपतये नमः — पाटली 3 प्रमथ

-गणपतये नमः — द्रोण *9*. रुद्र

विद्या -गणपतये नमः — दुर्धूर ۷.

विघ्न -गणपतये नमः — चम्पक

१०. दुरित -गणपतये नमः — रसाल

कामितार्थ-गणपतये नमः — केतकी ११.

सम्मोह १२. -गणपतये नमः — माधवी

विष्ण् -गणपतये नमः — श्यामक १३.

ईश १४. -गणपतये नमः — अर्क

१५. गजास्य -गणपतये नमः — कह्लार

सर्वसिद्धि -गणपतये नमः — सेवन्तिका १६.

वीर -गणपतये नमः — बिल्व .08

-पुष्पं समर्पयामि -पुष्पं समर्पयामि

-पुष्पं समर्पयामि

-पुष्पं समर्पयामि

१८.	कन्दर्प	-गणपतये नमः — करवीर	-पुष्पं समर्पयामि
<i>१९</i> .	उच्छिष्ट	-गणपतये नमः — कुन्द	-पुष्पं समर्पयामि
२०.	ब्रह्म	-गणपतये नमः — पारिजात	-पुष्पं समर्पयामि
28	त्तान	-गणपतरो नमः — जाती	-पद्यं समर्परामि

# ॥ एकविंशति-दूर्वायुग्म-पूजा॥

۶.	गणाधिपाय	नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि।
२.	पाशाङ्क्षधराय	नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि।
₹.	आखुवाहनाय	नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि।
٧.	विनायकाय	नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि।
۷.	ईशपुत्राय	नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि।
ξ.	सर्वसिद्धि-प्रदाय	नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि।
<i>७</i> .	एकदन्ताय	नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि।
۷.	इभवऋाय	नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि।
۶.	मूषिकवाहनाय	नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि।
१०.	कुमारगुरवे	नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि।
<b>११.</b>	कपिलवर्णाय	नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि।
१२.	ब्रह्मचारिणे	नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि।
१३.	मोदकहस्ताय	नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि।
१४.	सुरश्रेष्ठाय	नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि।
१५.	गजनासिकाय	नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि।
१६.	कपित्थफल-प्रियाय	नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि।
१७.	गजमुखाय	नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि।
१८.	सुप्रसन्नाय	नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि।

_		2
गणपत्यष्ट	त्तरशत-	गमावालः

272

१९. सुराग्रजाय

२०. उमापुत्राय

२१. स्कन्दप्रियाय

नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि।

नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि।

नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि।

### ॥ गणपत्यष्टोत्तरशतनामाविलः॥

80

गणेश्वराय नमः

गणक्रीडाय नमः

महागणपतये नमः

विश्वकर्त्रे नमः

विश्वमुखाय नमः

दुर्जयाय नमः

धूर्जयाय नमः

जयाय नमः

स्रूपाय नमः

सर्वनेत्राधिवासाय नमः

वीरासनाश्रयाय नमः

योगाधिपाय नमः

तारकस्थाय नमः

पुरुषाय नमः

गजकर्णकाय नमः

चित्राङ्गाय नमः

श्यामदशनाय नमः

भालचन्द्राय नमः

चतुर्भुजाय नमः

शम्भुतेजसे नमः

यज्ञकायाय नमः

सर्वात्मने नमः

सामबृंहिताय नमः

कुलाचलांसाय नमः

व्योमनाभये नमः

कल्पद्रुमवनालयाय नमः

निम्ननाभये नमः

स्थूलकुक्षये नमः

पीनवक्षसे नमः

बृहद्भुजाय नमः पीनस्कन्धाय नमः

कम्बुकण्ठाय नमः

लम्बोष्ठाय नमः

लम्बनासिकाय नमः

सर्वावयवसम्पूर्णाय नमः

सर्वलक्षणलिक्षताय नमः

२०

`

30

इक्षुचापधराय नमः		घटकुम्भाय नमः	
शूलिने नमः		घटोदराय नमः	
कान्तिकन्दलिताश्रयाय नमः		पूर्णानन्दाय नमः	
अक्षमालाधराय नमः	४०	परानन्दाय नमः	
ज्ञानमुद्रावते नमः		धनदाय नमः	
विजयावहाय नमः		धरणीधराय नमः	
कामिनी-कामना-काम-मालिनी-		बृहत्तमाय नमः	
केलि-लालिताय नमः		ब्रह्मपराय नमः	
अमोघसिद्धये नमः		ब्रह्मण्याय नमः	
आधाराय नमः		ब्रह्मवित्प्रियाय नमः	90
आधाराधेयवर्जिताय नमः		भव्याय नमः	
इन्दीवरदलश्यामाय नमः		भूतालयाय नमः	
इन्दुमण्डलनिर्मलाय नमः		भोगदात्रे नमः	
कर्मसाक्षिणे नमः		महामनसे नमः	
कर्मकर्त्रे नमः	५०	वरेण्याय नमः	
कर्माकर्मफलप्रदाय नमः		वामदेवाय नमः	
कमण्डलुधराय नमः		वन्द्याय नमः	
कल्पाय नमः		वज्रनिवारणाय नमः	
कपर्दिने नमः		विश्वकर्त्रे नमः	
कटिसूत्रभृते नमः		विश्वचक्षुषे नमः	८०
कारुण्यदेहाय नमः		हवनाय नमः	
कपिलाय नमः		हव्यकव्यभुजे नमः	
गुह्यागमनिरूपिताय नमः		स्वतन्त्राय नमः	
गुहाशयाय नमः		सत्यसङ्कल्पाय नमः	
गुहाब्धिस्थाय नमः	६०	सौभाग्यवर्धनाय नमः	

१००

कीर्तिदाय नमः शोकहारिणे नमः त्रिवर्गफलदायकाय नमः चतुर्बाहवे नमः चतुर्दन्ताय नमः ९० चतुर्थी-तिथि-सम्भवाय नमः

सहस्रशीर्षो पुरुषाय नमः सहस्राक्षाय नमः

सहस्रपदे नमः कामरूपाय नमः

कामगतये नमः द्विरदाय नमः द्वीपरक्षकाय नमः

क्षेत्राधिपाय नमः

क्षमाभर्त्रे नमः

लयस्थाय नमः

लडुकप्रियाय नमः

प्रतिवादिमुखस्तम्भाय नमः

दुष्टचित्तप्रसादनाय नमः भगवते नमः

भक्तिसुलभाय नमः

याज्ञिकाय नमः

याजकप्रियाय नमः

॥इति श्री-गणेशपुराणे उपासनाखण्डे श्री-गणपत्यष्टोत्तरशतनामाविलः सम्पूर्णा॥

दशाङ्गं गुग्गुलुं धूपं सुगन्धं च मनोहरम्। गृहाण सर्वदेवेश उमापुत्र नमोऽस्तु ते॥

यत्पुरुषं व्यंदधुः। कृतिधा व्यंकल्पयन्। मुखं किमस्य को बाहू। कावूरू पादांवुच्येते॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, धूपमाघ्रापयामि।

सर्वज्ञ सर्वलोकेश त्रैलोक्यतिमिरापह। गृहाण मङ्गलं दीपं रुद्रप्रिय नमोऽस्तु ते॥

ब्राह्मणौऽस्य मुखंमासीत्। बाहू रांजन्यः कृतः। ऊरू तदंस्य यद्वैश्यः। पुद्धाः शूद्रो अंजायत॥ उद्दींप्यस्व जातवेदोऽपृघ्निर्ऋतिं ममं।
पृशू श्र्श्च मह्ममावंहु जीवंनं च दिशों दिश॥
मा नों हि श्सीज्ञातवेदो गामश्वं पुरुषं जगंत।
अविंश्रदम् आगंहि श्रिया मा परिपातय॥
श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।
दीपानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ भूर्भ्वः सुवंः। + ब्रह्मणे स्वाहाँ। नानाखाद्यमयं दिव्यं नैवेद्यं ते निवेदितम्। मया भक्त्या शिवापुत्र गृहाण गणनायक॥

चन्द्रमा मनंसो जातः। चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रेश्चाग्निश्चे। प्राणाद्वायुरंजायत॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, () निवेदयामि, अमृतापिधानमसि। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

एलोशीरलवङ्गादिकर्पूरपरिवासितम् । प्राशनार्थं कृतं तोयं गृहाण गणनायक॥ मध्ये मध्ये पानीयं समर्पयामि। उत्तरापोशनं मुखप्रक्षालनं च समर्पयामि।

> मलयाचलसम्भूतं कर्पूरेण समन्वितम्। करोद्वर्तनकं चारु गृह्यतां जगतः पते॥ करोद्वर्तनम् समर्पयामि।

बीजपूराम्रपनसखजूरीकदलीफलम् । नारिकेलफलं दिव्यं गृहाण गणनायक॥ इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव। तेन मे सफलावाप्तिर्भवेञ्जन्मनि जन्मनि॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, फलं समर्पयामि।

एकविंशतिसङ्ख्याकान् मोदकान् घृतपाचितान्। नैवेद्यं सफलं दद्यान्नमस्ते विघ्ननाशिने॥ श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, मोदकान् समर्पयामि।

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्ल्या दलैर्युतम्। कर्पूरेलासमायुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

नाभ्यां आसीद्न्तिरिक्षम्। शीष्णीं द्यौः समंवर्तत। पुद्धां भूमिर्दिशः श्रोत्रौत्। तथा लोकाः अंकल्पयन्॥ श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि।

> वज्रमाणिक्यवैदूर्यमुक्ताविद्रुममण्डितम्। पुष्परागसमायुक्तं भूषणं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, भूषणानि समर्पयामि।

दूर्वायुग्मं गृहीत्वा तु गन्धपुष्पाक्षतैर्युतम्। पूजयेत्सिद्धिविघ्नेशं प्रत्येकं पूर्वनामभिः॥

गणाधिप नमस्तेऽस्तु उमापुत्राघनाशन। एकदन्तेभवक्रेति तथा मूषकवाहन॥

विनायकेशपुत्रेति सर्वसिद्धिप्रदायक। कुमारगुरवे नित्यं पूजनीयः प्रयत्नतः॥

इति दूर्वार्पणम्॥

नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये नमस्ते अस्तु लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्नविनाशिने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमो नमः॥

> विघ्नेश्वर विशालाक्ष सर्वाभीष्टफलप्रद। प्रदक्षिणं करोमि त्वां सर्वान्कामान् प्रयच्छ मे॥ चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्निस्तथैव च। त्वमेव सर्वतेजांसि आर्तिक्यं प्रतिगृह्यताम्॥

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवंणं तमंस्सतु पारे। सर्वाणि रूपाणि विचित्य धीरः। नामानि कृत्वाऽभिवदन् यदास्ते॥

# श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, समस्त-अपराध-क्षमापनार्थं कर्पूरनीराजनं दर्शयामि।

कर्पूरनीरजनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि। रक्षां धारयामि। पुष्पैः पूजयामि।

धाता पुरस्ताद्यमुंदाज्ञहारं। श्रुकः प्रविद्वान् प्रदिश्रश्वतंस्रः। तमेवं विद्वानमृतं इह भविति। नान्यः पन्था अर्यनाय विद्यते॥ योऽपां पुष्पं वेदं। पुष्पंवान् प्रजावान् पशुमान् भविति। चन्द्रमा वा अपां पुष्पम्। पुष्पंवान् प्रजावान् पशुमान् भविति। य एवं वेदं। योऽपामायतंनं वेदं। आयतंनवान् भविति।

> औं तद्धृह्म। औं तद्घायुः। ओं तदात्मा। ओं तथ्सत्यम्। ओं तथ्सर्वम्। ओं तत्पुरोर्नमः॥

अन्तश्चरितं भूतेषु गुहायां विश्वमूर्तिषु। त्वं यज्ञस्त्वं वषद्कारस्त्वमिन्द्रस्त्वः रुद्रस्त्वं विष्णुस्त्वं ब्रह्म त्वं प्रजापितः। त्वं तदाप आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः सुवरोम्॥

यो वेदादौ स्वरः प्रोक्तो वेदान्ते च प्रतिष्ठितः। तस्य प्रकृतिलीनस्य यः परः स महेश्वरः॥

#### श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, वेदोक्तमन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

नमस्ते विघ्नसंहत्रे नमस्ते ईप्सितप्रद। नमस्ते देवदेवेश नमस्ते गणनायक॥

विनायकेशपुत्रस्त्वं गजराज सुरोत्तम। देहि मे सकलान् कामान् वन्दे सिद्धिविनायक॥

स्प्रास्यांऽऽसन् परिधयंः। त्रिः स्प्रा स्मिधंः कृताः। देवा यद्यज्ञं तंन्वानाः। अबंध्रन् पुरुषं पृश्रम्॥ श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, नमस्कारान् समर्पयामि।

युज्ञेनं युज्ञमंयजन्त देवाः। तानि धर्माणि प्रथमान्यांसन्।
ते ह् नाकं मिह्मानंः सचन्ते। यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥
श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, छत्रचामर-नृत्त-गीत-वाद्यादि
समस्तराजोपचारान् समर्पयामि।

यन्मयाऽऽचरितं देव व्रतमेतत् सुदुर्लभम्। गणेश त्वं प्रसन्नः सन् सफलं कुरु सर्वदा॥

विनायक गणेशान सर्वदेवनमस्कृत। पार्वतीप्रिय विघ्नेश मम विघ्नान्निवारय॥ नमो नमो गणेशाय नमस्ते विश्वरूपिणे। निर्विघ्नं कुरु मे कामं नमामि त्वां गजानन॥ अगजाननपद्मार्कं गजाननमहर्निशम्। अनेकदं तं भक्तानाम् एकदन्तमुपास्महे॥

विनायक वरं देहि महात्मन् मोदकप्रिय। अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

### ॥ अर्घ्यम्॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-सिद्धिविनायक-प्रीत्यर्थं श्री-सिद्धिविनायक-पूजान्ते क्षीरार्घ्यप्रदानं करिष्ये॥

(हस्ते साक्षतपुष्पं क्षीरं गृहीत्वा)

अर्घ्यं गृहाण हेरम्ब वरप्रद विनायक। गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तं भक्त्या दत्तं मया प्रभो॥१॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, इदमर्घ्यम् इदमर्घ्यम्।

नमस्ते भिन्नदन्ताय नमस्ते हरसूनवे। इदमर्घ्यं प्रदास्यामि गृहाण गणनायक॥२॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, इदमर्घ्यम् इदमर्घ्यम्।

नमस्तुभ्यं गणेशाय नमस्ते विघ्ननायक। पुनरर्घ्यं प्रदास्यामि गृहाण गणनायक॥३॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, इदमर्घ्यम् इदमर्घ्यम्।

#### ॥ उपायन-दानम्॥

#### आचार्य पूजा

अद्यपूर्वोक्त-एवङ्गुण-विशेषण-विशिष्टायामस्यां चतुर्थ्यां शुभितिथौ श्री-सिद्धिविनायक-पूजा-फलसिद्धार्थं ब्राह्मणपूजाम् उपायन-दानं च करिष्ये॥ श्री-महागणपित-स्वरूपस्य ब्राह्मणस्य इदमासनम्। गन्धादि-सकलाराधनैः स्वर्चितम्॥

[अथैकविंशतिं गृह्य मोदकान् घृतपाचितान्। स्थापयित्वा गणाध्यक्षसमीपे कुरुनन्दन॥

दश विप्राय दातव्याः स्थापयेद् दश आत्मिन। एकं गणाधिपे दद्यात् सघृतं मोदकं शुभम्]॥ वायनमन्त्रः

दशानां मोदकानां च फलदक्षिणया युतम्। विप्राय फलसिद्धयर्थं वायनं प्रददाम्यहम्॥ प्रतिमा-दान-मन्नः

विनायकस्य प्रतिमां वस्त्रयुग्मेन वेष्टिताम्। तुभ्यं सम्प्रददे विप्र प्रीयतां में गजाननः॥

गणेशः प्रतिगृह्णाति गणेशो वै ददाति च। गणेशस्तारकोभाभ्यां गणेशाय नमो नमः॥ हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अनन्तपुण्यफलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

श्री-विनायक-चतुर्थी-पुण्यकाले अस्मिन् मया क्रियमाण-श्री-सिद्धिविनायक-पूजायां यद्देयमुपायनदानं तत्प्रत्याम्नायार्थं हिरण्यं श्री-सिद्धिविनायक-प्रीतिं कामयमानः मनसोद्दिष्टाय ब्राह्मणाय सम्प्रददे नमः न मम।

#### अनया पूजया श्री-सिद्धिविनायकः प्रीयताम्।

# ॥ प्रार्थना ॥ ॥ महागणेशपश्चरत्नम् ॥

मुदाकरात्तमोदकं सदाविमुक्तिसाधकं कलाधरावतंसकं विलासिलोकरक्षकम्। अनायकैकनायकं विनाशितेभदैत्यकं नताशुभाशुनाशकं नमामि तं विनायकम्॥१॥

नतेतरातिभीकरं नवोदितार्कभास्वरं नमत्सुरारिनिर्जरं नताधिकापदुद्धरम्। सुरेश्वरं निधीश्वरं गजेश्वरं महेश्वरं तमाश्रये परात्परं निरन्तरम्॥२॥

समस्तलोकशङ्करं निरस्तदैत्यकुञ्जरं दरेतरोदरं वरं वरेभवऋमक्षरम्। कृपाकरं क्षमाकरं मुदाकरं यशस्करं मनस्करं नमस्कृतां नमस्करोमि भास्वरम्॥३॥

अिकश्चनार्तिमार्जनं चिरन्तनोक्तिभाजनं पुरारिपूर्वनन्दनं सुरारिगर्वचर्वणम्। प्रपश्चनाशभीषणं धनञ्जयादिभूषणं कपोलदानवारणं भजे पुराणवारणम्॥४॥

नितान्तकान्तदन्तकान्तिमन्तकान्तकात्मजम् अचिन्त्यरूपमन्तहीनमन्तरायकृन्तनम् । हृदन्तरे निरन्तरं वसन्तमेव योगिनां तमेकदन्तमेव तं विचिन्तयामि सन्ततम्॥५॥ महागणेशपश्चरत्नमादरेण योऽन्वहं प्रजल्पति प्रभातके हृदि स्मरन् गणेश्वरम्। अरोगतामदोषतां सुसाहितीं सुपुत्रतां समाहितायुरष्टभूतिमभ्युपैति सोऽचिरात्॥

॥इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ श्री-महागणेशपश्चरत्नं सम्पूर्णम्॥

## ॥ गणेशभुजङ्गम्॥

रणत् क्षुद्रघण्टानिनादाभिरामं चलत् ताण्डवोद्दण्डवत्पद्मतालम्। लसत् तुन्दिलाङ्गोपरिव्यालहारं गणाधीशमीशानसूनुं तमीडे॥१॥

ध्वनिध्वंसवीणालयोल्लासिवऋं स्फुरच्छुण्डदण्डोल्लसद्बीजपूरम्। गलद्दर्पसौगन्थ्यलोलालिमालं गणाधीशमीशानसूनुं तमीडे॥२॥

प्रकाशञ्जपारक्तरन्तप्रसून-प्रवालप्रभातारुणज्योतिरेकम्। प्रलम्बोदरं वऋतुण्डैकदन्तं गणाधीशमीशानसूनुं तमीडे॥३॥

विचित्रस्फुरद्रल्नमालाकिरीटं किरीटोल्लसचन्द्ररेखाविभूषम्। विभूषैकभूषं भवध्वंसहेतुं गणाधीशमीशानसूनुं तमीडे॥४॥ उदश्रद्भुजावल्लरीदृश्यमूलोच्-चलद्-भ्रूलता-विभ्रमभ्राजदक्षम्। मरुत् सुन्दरीचामरैः सेव्यमानं गणाधीशमीशानसुनुं तमीडे॥५॥

स्फुरन्निष्ठुरालोलपिङ्गाक्षितारं कृपाकोमलोदारलीलावतारम्। कलाबिन्दुगं गीयते योगिवर्यैर्-गणाधीशमीशानसूनुं तमीडे॥६॥

यमेकाक्षरं निर्मलं निर्विकल्पं गुणातीतमानन्दमाकारशून्यम्। परं पारमोङ्कारमाम्रायगर्भं वदन्ति प्रगल्भं पुराणं तमीडे॥७॥

चिदानन्दसान्द्राय शान्ताय तुभ्यं नमो विश्वकर्त्रे च हर्त्रे च तुभ्यम्। नमोऽनन्तलीलाय कैवल्यभासे नमो विश्वबीज प्रसीदेशसूनो॥८॥

इमं सुस्तवं प्रातरुत्थाय भक्त्या पठेद्यस्तु मर्त्यो लभेत्सर्वकामान्। गणेशप्रसादेन सिद्धान्ति वाचो गणेशे विभौ दुर्लभं किं प्रसन्ने॥९॥

॥इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ श्री-गणेशभुजङ्गं सम्पूर्णम्॥

# ॥ वक्रतुण्डमहागणपतिसहस्रनामस्तोत्रम्॥ मुनिरुवाच

कथं नाम्नां सहस्रं तं गणेश उपदिष्टवान्। शिवदं तन्ममाचक्ष्व लोकानुग्रहतत्पर॥१॥

#### ब्रह्मोवाच

देवः पूर्वं पुरारातिः पुरत्रयजयोद्यमे। अनर्चनाद्गणेशस्य जातो विघ्नाकुलः किल॥२॥

मनसा स विनिर्धार्य ददृशे विघ्नकारणम्। महागणपतिं भक्त्या समभ्यर्च्य यथाविधि॥३॥

विघ्रप्रशमनोपायमपृच्छदपरिश्रमम् । सन्तुष्टः पूजया शम्भोर्महागणपतिः स्वयम्॥४॥

सर्वविघ्नप्रशमनं सर्वकामफलप्रदम्। ततस्तस्मै स्वयं नाम्नां सहस्रमिदमब्रवीत्॥५॥

अस्य श्रीवऋतुण्डमहागणपतिसहस्रनामस्तोत्रमन्नस्य महागणपतिर्ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। महागणपतिर्देवता। गं बीजम्। हुं शक्तिः। स्वाहा कीलकम्। चतुर्विधपुरुषार्थसिद्धार्थे जपे विनियोगः।

#### ॥ करन्यासः॥

गणेश्वरो गणकीड इत्यङ्गुष्ठाभ्यां नमः। कुमारगुरुरीशान इति तर्जनीभ्यां नमः। ब्रह्माण्डकुम्भश्चिद्योमेति मध्यमाभ्यां नमः। रक्तो रक्ताम्बरधर इत्यनामिकाभ्यां नमः। सर्वसद्गुरुसंसेव्य इति कनिष्ठिकाभ्यां नमः। लुप्तविद्यः स्वभक्तानामिति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

#### ॥ हृदयादिन्यासः॥

छन्दश्छन्दोद्भव इति हृदयाय नमः। निष्कलो निर्मल इति शिरसे स्वाहा। सृष्टिस्थितिलयकीड इति शिखायै वषट्। ज्ञानं विज्ञानमानन्द इति कवचाय हुम्। अष्टाङ्गयोगफलभृदिति नेत्रत्रयाय वौषट्। अनन्तशक्तिसहित इत्यस्राय फट्। भूर्भुवः स्वरोम् इति दिग्बन्धः।

#### ॥ध्यानम्॥

गजवदनमचिन्त्यं तीक्ष्णदंष्ट्रं त्रिनेत्रं बृहदुदरमशेषं भूतिराजं पुराणम्। अमरवरसुपूज्यं रक्तवर्णं सुरेशं पशुपतिसुतमीशं विघ्नराजं नमामि॥

खर्वं स्थूलतन् गजेन्द्रवदनं लम्बोदरं सुन्दरं प्रस्यन्दन्मदगन्धलुब्धमधुपव्यालोलगण्डस्थलम्। दन्ताघातविदारितारिरुधिरैः सिन्दूरशोभाकरं वन्दे शैलसुतासुतं गणपतिं सिद्धिप्रदं कामदम्॥

#### सकलविघ्नविनाशनद्वारा श्रीमहागणपतिप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

#### ॥स्तोत्रम्॥

#### श्रीगणपतिरुवाच

ॐ गणेश्वरो गणकीडो गणनाथो गणाधिपः। एकदन्तो वऋतुण्डो गजवक्रो महोदरः॥१॥

लम्बोदरो धूम्रवर्णो विकटो विघ्ननाशनः। सुमुखो दुर्मुखो बुद्धो विघ्नराजो गजाननः॥२॥

भीमः प्रमोद आमोदः सुरानन्दो मदोत्कटः। हेरम्बः शम्बरः शम्भुर्लम्बकर्णो महाबलः॥३॥

नन्दनो लम्पटो भीमो मेघनादो गणअयः। विनायको विरूपाक्षो वीरः शूरवरप्रदः॥४॥

महागणपतिर्बुद्धिप्रियः क्षिप्रप्रसादनः। रुद्रप्रियो गणाध्यक्ष उमापुत्रोऽघनाशनः॥५॥

कुमारगुरुरीशानपुत्रो मूषकवाहनः। सिद्धिप्रियः सिद्धिपतिः सिद्धः सिद्धिविनायकः॥६॥

अविघ्नस्तुम्बुरुः सिंहवाहनो मोहिनीप्रियः। कटङ्कटो राजपुत्रः शाकलः सम्मितोऽमितः॥७॥

कूष्माण्डसामसम्भूतिर्दुर्जयो धूर्जयो जयः। भूपतिर्भुवनपतिर्भूतानां पतिरव्ययः॥८॥

विश्वकर्ता विश्वमुखो विश्वरूपो निधिर्गुणः। कविः कवीनामृषभो ब्रह्मण्यो ब्रह्मवित्प्रियः॥९॥

ज्येष्ठराजो निधिपतिर्निधिप्रियपतिप्रियः। हिरण्मयपुरान्तःस्थः सूर्यमण्डलमध्यगः॥१०॥ कराहतिध्वस्तसिन्धुसिललः पूषदन्तभित्। उमाङ्कलेलकुतुकी मुक्तिदः कुलपावनः॥११॥

किरीटी कुण्डली हारी वनमाली मनोमयः। वैमुख्यहतदैत्यश्रीः पादाहतिजितक्षितिः॥१२॥

सद्योजातः स्वर्णमुञ्जमेखली दुर्निमित्तह्त्। दुःस्वप्नहृत्प्रसहनो गुणी नादप्रतिष्ठितः॥१३॥

सुरूपः सर्वनेत्राधिवासो वीरासनाश्रयः। पीताम्बरः खण्डरदः खण्डवैशाखसंस्थितः॥१४॥

चित्राङ्गः श्यामदशनो भालचन्द्रो हविर्भुजः। योगाधिपस्तारकस्थः पुरुषो गजकर्णकः॥१५॥

गणाधिराजो विजयः स्थिरो गजपतिर्ध्वजी। देवदेवः स्मरः प्राणदीपको वायुकीलकः॥१६॥

विपश्चिद्वरदो नादो नादभिन्नमहाचलः। वराहरदनो मृत्युञ्जयो व्याघ्राजिनाम्बरः॥१७॥

इच्छाशक्तिभवो देवत्राता दैत्यविमर्दनः। शम्भुवऋोद्भवः शम्भुकोपहा शम्भुहास्यभूः॥१८॥

शम्भुतेजाः शिवाशोकहारी गौरीसुखावहः। उमाङ्गमलजो गौरीतेजोभूः स्वर्धुनीभवः॥१९॥

यज्ञकायो महानादो गिरिवर्ष्मा शुभाननः। सर्वात्मा सर्वदेवात्मा ब्रह्ममूर्धा ककुप्श्रुतिः॥२०॥

ब्रह्माण्डकुम्भश्चिद्योमभालःसत्यशिरोरुहः। जगञ्जन्मलयोन्मेषनिमेषोऽग्यर्कसोमदक्॥२१॥ गिरीन्द्रैकरदो धर्माधर्मीष्ठः सामबृंहितः। ग्रहर्क्षदशनो वाणीजिह्वो वासवनासिकः॥२२॥

भूमध्यसंस्थितकरो ब्रह्मविद्यामदोदकः। कुलाचलांसः सोमार्कघण्टो रुद्रशिरोधरः॥२३॥

नदीनदभुजः सर्पाङ्गुलीकस्तारकानखः। व्योमनाभिः श्रीहृदयो मेरुपृष्ठोऽर्णवोदरः॥२४॥

कुक्षिस्थयक्षगन्धर्वरक्षःकिन्नरमानुषः । पृथ्वीकटिः सृष्टिलिङ्गः शैलोरुर्दस्रजानुकः॥२५॥

पातालजङ्घो मुनिपात्कालाङ्गुष्ठस्रयीतनुः। ज्योतिर्मण्डललाङ्गुलो हृदयालाननिश्चलः॥२६॥

हृत्पद्मकर्णिकाशाली वियत्केलिसरोवरः। सद्भक्तध्याननिगडः पूजावारिनिवारितः॥२७॥

प्रतापी काश्यपो मन्ता गणको विष्टपी बली। यशस्वी धार्मिको जेता प्रथमः प्रमथेश्वरः॥२८॥

चिन्तामणिर्द्वीपपतिः कल्पद्रुमवनालयः। रत्नमण्डपमध्यस्थो रत्नसिंहासनाश्रयः॥२९॥

तीव्राशिरोद्धृतपदो ज्वालिनीमौलिलालितः। नन्दानन्दितपीठश्रीर्भोगदो भूषितासनः॥३०॥

सकामदायिनीपीठः स्फुरदुग्रासनाश्रयः। तेजोवतीशिरोरत्नं सत्यानित्यावतंसितः॥३१॥

सविघ्ननाशिनीपीठः सर्वशक्त्यम्बुजालयः। लिपिपद्मासनाधारो वह्निधामत्रयालयः॥३२॥ उन्नतप्रपदो गूढगुल्फः संवृतपार्ष्णिकः। पीनजङ्गः श्लिष्टजानुः स्थूलोरुः प्रोन्नमत्कटिः॥३३॥

निम्ननाभिः स्थूलकुक्षिः पीनवक्षा बृहद्भुजः। पीनस्कन्धः कम्बुकण्ठो लम्बोष्ठो लम्बनासिकः॥३४॥

भग्नवामरदस्तुङ्गसव्यदन्तो महाहनुः। हस्वनेत्रत्रयः शूर्पकर्णो निबिडमस्तकः॥३५॥

स्तबकाकारकुम्भाग्रो रत्नमौलिर्निरङ्कुशः। सर्पहारकटीसूत्रः सर्पयज्ञोपवीतवान्॥३६॥

सर्पकोटीरकटकः सर्पग्रैवेयकाङ्गदः। सर्पकक्षोदराबन्धः सर्पराजोत्तरच्छदः॥३७॥

रक्तो रक्ताम्बरधरो रक्तमालाविभूषणः। रक्तेक्षणो रक्तकरो रक्तताल्वोष्ठपश्लवः॥३८॥

श्वेतः श्वेताम्बरधरः श्वेतमालाविभूषणः।

श्वेतातपत्ररुचिरः श्वेतचामरवीजितः॥३९॥

सर्वावयवसम्पूर्णः सर्वलक्षणलक्षितः।

सर्वाभरणशोभोढ्यः सर्वशोभासमन्वितः॥४०॥

सर्वमङ्गलमाङ्गल्यः सर्वकारणकारणम्। सर्वदेववरः शार्ङ्गी बीजपूरी गदाधरः॥४१॥

इक्षुचापधरः शूली चऋपाणिः सरोजभृत्। पाशी धृतोत्पलः शालिमञ्जरीभृत्स्वदन्तभृत्॥४२॥

कल्पवल्लीधरो विश्वाभयदैककरो वशी। अक्षमालाधरो ज्ञानमुद्रावान् मुद्गरायुधः॥४३॥

पूर्णपात्री कम्बुधरो विधृताङ्कुशमूलकः। करस्थाम्रफलश्चृतकलिकाभृत्कुठारवान्॥४४॥ पुष्करस्थस्वर्णघटीपूर्णरत्नाभिवर्षकः । भारतीसुन्दरीनाथो विनायकरतिप्रियः॥४५॥

महालक्ष्मीप्रियतमः सिद्धलक्ष्मीमनोरमः। रमारमेशपूर्वाङ्गो दक्षिणोमामहेश्वरः॥४६॥

महीवराहवामाङ्गो रतिकन्दर्पपश्चिमः। आमोदमोदजननः सम्प्रमोदप्रमोदनः॥४७॥

संवर्धितमहावृद्धिऋद्धिसिद्धिप्रवर्धनः । दन्तसौमुख्यसुमुखः कान्तिकन्दिलताश्रयः॥४८॥

मदनावत्याश्रिताङ्किः कृतवैमुख्यदुर्मुखः। विघ्नसम्पन्नवः पद्मः सर्वोन्नतमदद्रवः॥४९॥

विघ्रकृत्रिम्नचरणो द्राविणीशक्तिसत्कृतः। तीव्राप्रसन्ननयनो ज्वालिनीपालितैकदृक्॥५०॥

मोहिनीमोहनो भोगदायिनीकान्तिमण्डनः। कामिनीकान्तवऋश्रीरिधष्ठितवसुन्धरः॥५१॥

वसुधारामदोन्नादो महाशङ्खानिधिप्रियः। नमद्वसुमतीमाली महापद्मनिधिः प्रभुः॥५२॥

सर्वसद्गुरुसंसेव्यः शोचिष्केशहृदाश्रयः। ईशानमूर्धा देवेन्द्रशिखः पवननन्दनः॥५३॥

प्रत्युग्रनयनो दिव्यो दिव्यास्त्रशतपर्वधृक्। ऐरावतादिसर्वाशावारणो वारणप्रियः॥५४॥

वज्राद्यस्नपरीवारो गणचण्डसमाश्रयः। जयाजयपरिकरो विजयाविजयावहः॥५५॥

अजयार्चितपादाङ्गो नित्यानन्दवनस्थितः। विलासिनीकृतोल्लासः शौण्डी सौन्दर्यमण्डितः॥५६॥ अनन्तानन्त्सुखदः सुमङ्ग्लसुमङ्ग्लः।

ज्ञानाश्रयः क्रियाधार इच्छाशक्तिनिषेवितः॥५७॥

सुभगासंश्रितपदो ललिताललिताश्रयः।

कामिनीपालनः कामकामिनीकेलिलालितः॥५८॥

सरस्वत्याश्रयो गौरीनन्दनः श्रीनिकेतनः। गुरुगुप्तपदो वाचासिद्धो वागीश्वरीपतिः॥५९॥

निलनीकामुको वामारामो ज्येष्ठामनोरमः। रौद्रीमुद्रितपादाङ्गो हुम्बीजस्तुङ्गशक्तिकः॥६०॥

विश्वादिजननत्राणः स्वाहाशक्तिः सकीलकः। अमृताब्धिकृतावासो मदघूर्णितलोचनः॥६१॥

उच्छिष्टोच्छिष्टगणको गणेशो गणनायकः। सार्वकालिकसंसिद्धिर्नित्यसेव्यो दिगम्बरः॥६२॥

अनपायोऽनन्तदृष्टिरप्रमेयोऽजरामरः । अनाविलोऽप्रतिहृतिरच्युतोऽमृतमक्षरः॥६३॥

अप्रतर्क्योऽक्षयोऽजय्योऽनाधारोऽनामयोऽमलः। अमेयसिद्धिरद्वैतमघोरोऽग्निसमाननः॥६४॥

अनाकारोऽब्धिभूम्यग्निबलघ्नोऽव्यक्तलक्षणः। आधारपीठमाधार आधाराधेयवर्जितः॥६५॥

आखुकेतन आशापूरक आखुमहारथः। इक्षुसागरमध्यस्थ इक्षुभक्षणलालसः॥६६॥

इक्षुचापातिरेकश्रीरिक्षुचापनिषेवितः । इन्द्रगोपसमानश्रीरिन्द्रनीलसमद्युतिः॥६७॥

इन्दीवरदलश्याम इन्दुमण्डलमण्डितः। इध्मप्रिय इडाभाग इडावानिन्दिराप्रियः॥६८॥ इक्ष्वाकुविघ्नविध्वंसी इतिकर्तव्यतेप्सितः। ईशानमौलिरीशान ईशानप्रिय ईतिहा॥६९॥

ईषणात्रयकल्पान्त ईहामात्रविवर्जितः। उपेन्द्र उडुभृन्मौलिरुडुनाथकरप्रियः॥७०॥

उन्नतानन उत्तुङ्ग उदारस्त्रिदशाग्रणीः। ऊर्जस्वानूष्मलमद ऊहापोहदुरासदः॥७१॥

ऋग्यजुःसामनयन ऋद्धिसिद्धिसमर्पकः। ऋजुचित्तैकस्लभो ऋणत्रयविमोचनः॥७२॥

लुप्तविघ्नः स्वभक्तानां लुप्तशक्तिः सुरद्विषाम्। लुप्तश्रीर्विमुखार्चानां लूताविस्फोटनाशनः॥७३॥

एकारपीठमध्यस्थ एकपादकृतासनः। एजिताखिलदैत्यश्रीरेधिताखिलसंश्रयः॥७४॥

ऐश्वर्यनिधिरैश्वर्यमैहिकामुष्मिकप्रदः। ऐरम्मदसमोन्मेष ऐरावतसमाननः॥७५॥

ओङ्कारवाच्य ओङ्कार ओजस्वानोषधीपतिः। औदार्यनिधिरौद्धत्यधैर्य औन्नत्यनिःसमः॥७६॥

अङ्क्षः सुरनागानामङ्कृशाकारसंस्थितः। अः समस्तविसर्गान्तपदेषु परिकीर्तितः॥७७॥

कमण्डलुधरः कल्पः कपर्दी कलभाननः। कर्मसाक्षी कर्मकर्ता कर्माकर्मफलप्रदः॥७८॥

कदम्बगोलकाकारः कूष्माण्डगणनायकः। कारुण्यदेहः कपिलः कथकः कटिसूत्रभृत्॥७९॥

खर्वः खङ्गप्रियः खङ्गः खान्तान्तःस्थः खनिर्मलः। खल्वाटशृङ्गनिलयः खट्वाङ्गी खन्दुरासदः॥८०॥ गुणाढ्यो गहनो गद्यो गद्यपद्यसुधार्णवः। गद्यगानप्रियो गर्जो गीतगीर्वाणपूर्वजः॥८१॥

गुह्याचाररतो गुह्यो गुह्यागमनिरूपितः। गुहाशयो गुडाब्धिस्थो गुरुगम्यो गुरुर्गुरुः॥८२॥

घण्टाघर्घरिकामाली घटकुम्भो घटोदरः। ङकारवाच्यो ङाकारो ङकाराकारशुण्डभृत्॥८३॥

चण्डश्रण्डेश्वरश्रण्डी चण्डेशश्रण्डविक्रमः। चराचरिता चिन्तामणिश्चर्वणलालसः॥८४॥ छन्दश्छन्दोद्भवश्छन्दो दुर्लक्ष्यश्छन्दविग्रहः। जगद्योनिर्जगत्साक्षी जगदीशो जगन्मयः॥८५॥ जप्यो जपपरो जाप्यो जिह्वासिंहासनप्रभुः। स्रवद्गण्डोल्लसद्धानझङ्कारिभ्रमराकुलः ॥८६॥

टङ्कारस्फारसंरावष्टङ्कारमणिनूपुरः । ठद्वयीपल्लवान्तस्थसर्वमन्त्रेषु सिद्धिदः॥८७॥

डिण्डिमुण्डो डाकिनीशो डामरो डिण्डिमप्रियः। ढक्कानिनादमुदितो ढोङ्को ढुण्ढिविनायकः॥८८॥

तत्त्वानां प्रकृतिस्तत्त्वं तत्त्वम्पदनिरूपितः। तारकान्तरसंस्थानस्तारकस्तारकान्तकः ॥८९॥

स्थाणुः स्थाणुप्रियः स्थाता स्थावरं जङ्गमं जगत्। दक्षयज्ञप्रमथनो दाता दानं दमो दया॥९०॥

दयावान्दिव्यविभवो दण्डभृद्दण्डनायकः। दन्तप्रभिन्नाभ्रमालो दैत्यवारणदारणः॥९१॥ दंष्ट्रालग्नद्वीपघटो देवार्थनृगजाकृतिः। धनं धनपतेर्बन्धुर्धनदो धरणीधरः॥९२॥ ध्यानैकप्रकटो ध्येयो ध्यानं ध्यानपरायणः। ध्वनिप्रकृतिचीत्कारो ब्रह्माण्डावलिमेखलः॥९३॥

नन्द्यो नन्दिप्रियो नादो नादमध्यप्रतिष्ठितः। निष्कलो निर्मलो नित्यो नित्यानित्यो निरामयः॥९४॥

परं व्योम परं धाम परमात्मा परं पदम्। परात्परः पशुपतिः पशुपाशविमोचनः। पूर्णानन्दः परानन्दः पुराणपुरुषोत्तमः॥९५॥

पद्मप्रसन्नवदनः प्रणताज्ञाननाशनः। प्रमाणप्रत्ययातीतः प्रणतार्तिनिवारणः॥९६॥

फणिहस्तः फणिपतिः फूत्कारः फणितप्रियः। बाणार्चिताङ्कियुगलो बालकेलिकुतूहली। ब्रह्म ब्रह्मार्चितपदो ब्रह्मचारी बृहस्पतिः॥९७॥

बृहत्तमो ब्रह्मपरो ब्रह्मण्यो ब्रह्मवित्प्रियः। बृहन्नादाग्प्रचीत्कारो ब्रह्माण्डावलिमेखलः॥९८॥

भ्रूक्षेपदत्तलक्ष्मीको भर्गो भद्रो भयापहः। भगवान् भक्तिसुलभो भूतिदो भूतिभूषणः॥९९॥

भव्यो भूतालयो भोगदाता भूमध्यगोचरः। मन्नो मन्नपतिर्मन्नी मदमत्तो मनोरमः॥१००॥ मेखलाहीश्वरो मन्दगतिर्मन्दनिभेक्षणः। महाबलो महावीर्यो महाप्राणो महामनाः॥१०१॥

यज्ञो यज्ञपतिर्यज्ञगोप्ता यज्ञफलप्रदः। यशस्करो योगगम्यो याज्ञिको याजकप्रियः॥१०२॥ रसो रसप्रियो रस्यो रञ्जको रावणार्चितः।

रसा रसाप्रया रस्या रञ्जका रावणाचतः। राज्यरक्षाकरो रत्नगर्भी राज्यसुखप्रदः॥१०३॥ लक्षो लक्षपतिर्लक्ष्यो लयस्थो लड्डकप्रियः। लासप्रियो लास्यपरो लाभकृष्ठोकविश्रुतः॥१०४॥

वरेण्यो वह्निवदनो वन्द्यो वेदान्तगोचरः। विकर्ता विश्वतश्चक्षुर्विधाता विश्वतोमुखः॥१०५॥

वामदेवो विश्वनेता वज्रिवज्रनिवारणः। विवस्वद्वन्धनो विश्वाधारो विश्वेश्वरो विभुः॥१०६॥

शब्दब्रह्म शमप्राप्यः शम्भुशक्तिगणेश्वरः। शास्ता शिखाग्रनिलयः शरण्यः शम्बरेश्वरः॥१०७॥

षडृतुकुसुमस्रग्वी षडाधारः षडक्षरः। संसारवैद्यः सर्वज्ञः सर्वभेषजभेषजम्॥१०८॥

सृष्टिस्थितिलयक्रीडः सुरकुञ्जरभेदकः। सिन्दूरितमहाकुम्भः सदसद्भक्तिदायकः॥१०९॥

साक्षी समुद्रमथनः स्वयंवेद्यः स्वदक्षिणः। स्वतन्त्रः सत्यसङ्कल्पः सामगानरतः सुखी॥११०॥

हंसो हस्तिपिशाचीशो हवनं हव्यकव्यभुक्। हव्यं ह्तप्रियो हृष्टो हृल्लेखामन्त्रमध्यगः॥१११॥

क्षेत्राधिपः क्षमाभर्ता क्षमाक्षमपरायणः। क्षिप्रक्षेमकरः क्षेमानन्दः क्षोणीसुरद्रुमः॥११२॥

धर्मप्रदोऽर्थदः कामदाता सौभाग्यवर्धनः। विद्याप्रदो विभवदो भुक्तिमुक्तिफलप्रदः॥११३॥

आभिरूप्यकरो वीरश्रीप्रदो विजयप्रदः। सर्ववश्यकरो गर्भदोषहा पुत्रपौत्रदः॥११४॥ मेधादः कीर्तिदः शोकहारी दौर्भाग्यनाशनः। प्रतिवादिमुखस्तम्भो रुष्टचित्तप्रसादनः॥११५॥

पराभिचारशमनो दुःखहा बन्धमोक्षदः। लवस्रुटिः कला काष्ठा निमेषस्तत्परक्षणः॥११६॥

घटी मुहूर्तः प्रहरो दिवा नक्तमहर्निशम्। पक्षो मासर्त्वयनाब्दयुगं कल्पो महालयः॥११७॥

राशिस्तारा तिथियोंगो वारः करणमंशकम्। लग्नं होरा कालचक्रं मेरुः सप्तर्षयो ध्रुवः॥११८॥

राहुर्मन्दः कविर्जीवो बुधो भौमः शशी रविः। कालः सृष्टिः स्थितिर्विश्वं स्थावरं जङ्गमं जगत्॥११९॥

भूरापोऽग्निर्मरुद्धोमाहङ्कृतिः प्रकृतिः पुमान्। ब्रह्मा विष्णुः शिवो रुद्र ईशः शक्तिः सदाशिवः॥१२०॥

त्रिदशाः पितरः सिद्धा यक्षा रक्षांसि किन्नराः। सिद्धविद्याधरा भूता मनुष्याः पशवः खगाः॥१२१॥

समुद्राः सरितः शैला भूतं भव्यं भवोद्भवः। साङ्क्ष्यं पातञ्जलं योगं पुराणानि श्रुतिः स्मृतिः॥१२२॥

वेदाङ्गानि सदाचारो मीमांसा न्यायविस्तरः। आयुर्वेदो धनुर्वेदो गान्धर्वं काव्यनाटकम्॥१२३॥

वैखानसं भागवतं मानुषं पाश्चरात्रकम्। शैवं पाशुपतं कालामुखं भैरवशासनम्॥१२४॥

शाक्तं वैनायकं सौरं जैनमार्हतसंहिता। सदसद्यक्तमव्यक्तं सचेतनमचेतनम्॥१२५॥

बन्धो मोक्षः सुखं भोगो योगः सत्यमणुर्महान्। स्वस्ति हुम्फट् स्वधा स्वाहा श्रौषट् वौषट् वषण्णमः॥१२६॥

ज्ञानं विज्ञानमानन्दो बोधः संवित्समोऽसमः। एक एकाक्षराधार एकाक्षरपरायणः॥१२७॥

एकाग्रधीरेकवीर एकोऽनेकस्वरूपधृक्। द्विरूपो द्विभुजो द्यक्षो द्विरदो द्वीपरक्षकः॥१२८॥

द्वैमातुरो द्विवदनो द्वन्द्वहीनो द्वयातिगः। त्रिधामा त्रिकरस्रेता त्रिवर्गफलदायकः॥१२९॥

त्रिगुणात्मा त्रिलोकादिस्त्रिशक्तीशस्त्रिलोचनः। चतुर्विधवचोवृत्तिपरिवृत्तिप्रवर्तकः॥१३०॥

चतुर्बाहुश्चतुर्दन्तश्चतुरात्मा चतुर्भुजः। चतुर्विधोपायमयश्चतुर्वर्णाश्रमाश्रयः ॥१३१॥

चतुर्थीपूजनप्रीतश्चतुर्थीतिथिसम्भवः । पञ्चाक्षरात्मा पञ्चात्मा पञ्चास्यः पञ्चकृत्तमः॥१३२॥

पश्चाधारः पश्चवर्णः पश्चाक्षरपरायणः। पश्चतालः पश्चकरः पश्चप्रणवमातृकः॥१३३॥

पश्चब्रह्ममयस्फूर्तिः पश्चावरणवारितः। पश्चभक्षप्रियः पश्चबाणः पश्चशिवात्मकः॥१३४॥

षद्गोणपीठः षद्गक्रधामा षङ्गन्थिभेदकः। षडङ्गध्वान्तविध्वंसी षडङ्गुलमहाह्रदः॥१३५॥

षण्मुखः षण्मुखभ्राता षद्गक्तिपरिवारितः। षड्वेरिवर्गविध्वंसी षडूर्मिभयभञ्जनः॥१३६॥

षद्गर्कद्रः षद्गर्मा षङ्गुणः षड्रसाश्रयः। सप्तपातालचरणः सप्तद्वीपोरुमण्डलः॥१३७॥ सप्तस्वर्लोकमुकुटः सप्तसप्तिवरप्रदः। सप्ताङ्गराज्यसुखदः सप्तर्षिगणवन्दितः॥१३८॥

सप्तच्छन्दोनिधिः सप्तहोत्रः सप्तस्वराश्रयः। सप्ताब्धिकेलिकासारः सप्तमातृनिषेवितः॥१३९॥

सप्तच्छन्दो मोदमदः सप्तच्छन्दो मखप्रभुः। अष्टमूर्तिर्ध्ययमूर्तिरष्टप्रकृतिकारणम् ॥१४०॥

अष्टाङ्गयोगफलभृदष्टपत्राम्बुजासनः। अष्टशक्तिसमानश्रीरष्टैश्वर्यप्रवर्धनः ॥१४१॥

अष्टपीठोपपीठश्रीरष्टमातृसमावृतः । अष्टभैरवसेव्योऽष्टवसुवन्द्योऽष्टमूर्तिभृत्॥१४२॥

अष्टचऋस्फुरन्मूर्तिरष्टद्रव्यहविःप्रियः । अष्टश्रीरष्टसामश्रीरष्टैश्वर्यप्रदायकः । नवनागासनाध्यासी नवनिध्यनुशासितः॥१४३॥

नवद्वारपुरावृत्तो नवद्वारनिकेतनः। नवनाथमहानाथो नवनागविभूषितः॥१४४॥

नवनारायणस्तुल्यो नवदुर्गानिषेवितः। नवरत्नविचित्राङ्गो नवशक्तिशिरोद्धतः॥१४५॥

दशात्मको दशभुजो दशदिक्पतिवन्दितः। दशाध्यायो दशप्राणो दशेन्द्रियनियामकः॥१४६॥

दशाक्षरमहामन्त्रो दशाशाव्यापिविग्रहः। एकादशमहारुद्रैःस्तुतश्चेकादशाक्षरः ॥१४७॥

द्वादशद्विदशाष्टादिदोर्दण्डास्त्रनिकेतनः । त्रयोदशभिदाभिन्नो विश्वेदेवाधिदैवतम्॥१४८॥ चतुर्दशेन्द्रवरदश्चतुर्दशमनुप्रभुः । चतुर्दशाद्यविद्याख्यश्चतुर्दशजगत्पतिः॥१४९॥

सामपश्चदशः पश्चदशीशीतांशुनिर्मलः। तिथिपश्चदशाकारस्तिथ्या पश्चदशार्चितः॥१५०॥

षोडशाधारनिलयः षोडशस्वरमातृकः। षोडशान्तपदावासः षोडशेन्दुकलात्मकः॥१५१॥

कलासप्तदशी सप्तदशसप्तदशाक्षरः। अष्टादशद्वीपपतिरष्टादशपुराणकृत्॥१५२॥

अष्टादशौषधीसृष्टिरष्टादशविधिः स्मृतः। अष्टादशलिपिव्यष्टिसमष्टिज्ञानकोविदः॥१५३॥

अष्टादशान्नसम्पत्तिरष्टादशविजातिकृत्। एकविंशः पुमानेकविंशत्यङ्गुलिपल्लवः॥१५४॥

चतुर्विंशतितत्त्वात्मा पश्चविंशाख्यपूरुषः। सप्तविंशतितारेशः सप्तविंशतियोगकृत्॥१५५॥

द्वात्रिंशद्भैरवाधीशश्चतुस्त्रिंशन्महाह्रदः । षद्गिंशत्तत्त्वसम्भूतिरष्टत्रिंशत्कलात्मकः॥१५६॥

पञ्चाशद्विष्णुशक्तीशः पञ्चाशन्मातृकालयः। द्विपञ्चाशद्वपुःश्रेणी त्रिषष्ट्यक्षरसंश्रयः। पञ्चाशदक्षरश्रेणीपञ्चाशद्रुद्रविग्रहः ॥१५७॥

चतुःषष्टिमहासिद्धियोगिनीवृन्दवन्दितः। नमदेकोनपञ्चाशन्मरुद्वर्गनिरर्गलः ॥१५८॥

चतुःषष्ट्यर्थनिर्णता चतुःषष्टिकलानिधिः। अष्टषष्टिमहातीर्थक्षेत्रभैरववन्दितः॥१५९॥ चतुर्नवतिमन्नात्मा षण्णवत्यधिकप्रभुः। शतानन्दः शतधृतिः शतपत्रायतेक्षणः॥१६०॥

शतानीकः शतमखः शतधारावरायुधः। सहस्रपत्रनिलयः सहस्रफणिभूषणः॥१६१॥

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। सहस्रनामसंस्तुत्यः सहस्राक्षबलापहः॥१६२॥

दशसाहस्रफणिभृत्फणिराजकृतासनः । अष्टाशीतिसहस्राद्यमहर्षिस्तोत्रपाठितः॥१६३॥

लक्षाधारः प्रियाधारो लक्षाधारमनोमयः। चतुर्लक्षजपप्रीतश्चतुर्लक्षप्रकाशकः॥१६४॥

चतुरशीतिलक्षाणां जीवानां देहसंस्थितः। कोटिसूर्यप्रतीकाशः कोटिचन्द्रांशुनिर्मलः॥१६५॥

शिवोद्भवाद्यष्टकोटिवैनायकधुरन्थरः। सप्तकोटिमहामन्त्रमन्त्रितावयवद्युतिः॥१६६॥

त्रयस्त्रिंशत्कोटिसुरश्रेणीप्रणतपादुकः । अनन्तदेवतासेच्यो ह्यनन्तशुभदायकः॥१६७॥

अनन्तनामानन्तश्रीरनन्तोऽनन्तसौख्यदः। अनन्तशक्तिसहितो ह्यनन्तमुनिसंस्तुतः॥१६८॥

#### ॥फलश्रुतिः॥

इति वैनायकं नाम्नां सहस्रमिदमीरितम्। इदं ब्राह्मे मुहूर्ते यः पठित प्रत्यहं नरः॥१६९॥

करस्थं तस्य सकलमैहिकामुष्मिकं सुखम्। आयुरारोग्यमैश्वर्यं धैर्यं शौर्यं बलं यशः॥१७०॥

मेधा प्रज्ञा धृतिः कान्तिः सौभाग्यमभिरूपता। सत्यं दया क्षमा शान्तिर्दाक्षिण्यं धर्मशीलता॥१७१॥

जगत्संवननं विश्वसंवादो वेदपाटवम्। सभापाण्डित्यमौदार्यं गाम्भीर्यं ब्रह्मवर्चसम्॥१७२॥

ओजस्तेजः कुलं शीलं प्रतापो वीर्यमार्यता। ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं स्थैर्यं विश्वासता तथा॥१७३॥

धनधान्यादिवृद्धिश्च सकृदस्य जपाद्भवेत्। वश्यं चतुर्विधं विश्वं जपादस्य प्रजायते॥१७४॥

राज्ञो राजकलत्रस्य राजपुत्रस्य मन्त्रिणः। जप्यते यस्य वश्यार्थे स दासस्तस्य जायते॥१७५॥

धर्मार्थकाममोक्षाणामनायासेन साधनम्। शाकिनीडाकिनीरक्षोयक्षग्रहभयापहम् ॥१७६॥

साम्राज्यसुखदं सर्वसपत्नमदमर्दनम्। समस्तकलहध्वंसि दग्धबीजप्ररोहणम्॥१७७॥

दुःस्वप्रशमनं कुद्धस्वामिचित्तप्रसादनम्। षड्वर्गाष्टमहासिद्धित्रिकालज्ञानकारणम् ॥१७८॥

परकृत्यप्रशमनं परचऋप्रमर्दनम्। सङ्ग्राममार्गे सर्वेषामिदमेकं जयावहम्॥१७९॥ सर्ववन्ध्यत्वदोषघ्नं गर्भरक्षेककारणम्। पठ्यते प्रत्यहं यत्र स्तोत्रं गणपतेरिदम्॥१८०॥

देशे तत्र न दुर्भिक्षमीतयो दुरितानि च। न तद्गेहं जहाति श्रीर्यत्रायं जप्यते स्तवः॥१८१॥

क्षयकुष्ठप्रमेहार्शभगन्दरविषूचिकाः । गुल्मं प्रीहानमाध्मानमतिसारं महोदरम्॥१८२॥

कासं श्वासमुदावर्तं शूलं शोफामयोदरम्। शिरोरोगं विमं हिक्कां गण्डमालामरोचकम्॥१८३॥

वातिपत्तकफद्धन्द्वत्रिदोषजनितज्वरम् । आगन्तुविषमं शीतमुष्णं चैकाहिकादिकम्॥१८४॥

इत्याद्युक्तमनुक्तं वा रोगदोषादिसम्भवम्। सर्वं प्रशमयत्याशु स्तोत्रस्यास्य सकृञ्जपः॥१८५॥

प्राप्यतेऽस्य जपात्सिद्धिः स्रीशूद्रैः पतितैरपि। सहस्रनाममन्रोऽयं जपितव्यः शुभाप्तये॥१८६॥

महागणपतेः स्तोत्रं सकामः प्रजपन्निदम्। इच्छया सकलान् भोगानुपभुज्येह पार्थिवान्॥१८७॥

मनोरथफलैर्दिव्यैर्व्योमयानैर्मनोरमैः । चन्द्रेन्द्रभास्करोपेन्द्रब्रह्मशर्वादिसद्मसु॥१८८॥

कामरूपः कामगतिः कामदः कामदेश्वरः। भुक्का यथेप्सितान्भोगानभीष्टैः सह बन्धुभिः॥१८९॥

गणेशानुचरो भूत्वा गणो गणपतिप्रियः। नन्दीश्वरादिसानन्दैर्नन्दितः सकलैर्गणैः॥१९०॥ शिवाभ्यां कृपया पुत्रनिर्विशेषं च लालितः। शिवभक्तः पूर्णकामो गणेश्वरवरात्पुनः॥१९१॥

जातिस्मरो धर्मपरः सार्वभौमोऽभिजायते।

निष्कामस्तु जपन्नित्यं भक्त्या विघ्नेशतत्परः॥१९२॥

योगसिद्धिं परां प्राप्य ज्ञानवैराग्यसंयुतः। निरन्तरे निराबाधे परमानन्दसंज्ञिते॥१९३॥ विश्वोत्तीर्णे परे पूर्णे पुनरावृत्तिवर्जिते। लीनो वैनायके धाम्नि रमते नित्यनिर्वृते॥१९४॥

यो नामभिर्हुतैर्दत्तैः पूजयेदर्चयेन्नरः। राजानो वश्यतां यान्ति रिपवो यान्ति दासताम्॥१९५॥

तस्य सिध्यन्ति मन्नाणां दुर्लभाश्चेष्टसिद्धयः। मूलमन्नादपि स्तोत्रमिदं प्रियतमं मम॥१९६॥

नभस्ये मासि शुक्लायां चतुर्थ्यां मम जन्मनि। दूर्वाभिर्नामभिः पूजां तर्पणं विधिवचरेत्॥१९७॥

अष्टद्रव्यैर्विशेषेण कुर्याद्भक्तिसुसंयुतः। तस्येप्सितं धनं धान्यमैश्वर्यं विजयो यशः॥१९८॥ भविष्यति न सन्देहः पुत्रपौत्रादिकं सुखम्।

इदं प्रजिपतं स्तोत्रं पठितं श्रावितं श्रुतम्॥१९९॥

व्याकृतं चर्चितं ध्यातं विमृष्टमभिवन्दितम्। इहामुत्र च विश्वेषां विश्वेश्वर्यप्रदायकम्॥२००॥

स्वच्छन्दचारिणाप्येष येन सन्धार्यते स्तवः। स रक्ष्यते शिवोद्भूतैर्गणैरध्यष्टकोटिभिः॥२०१॥

लिखितं पुस्तकस्तोत्रं मन्नभूतं प्रपूजयेत्। तत्र सर्वोत्तमा लक्ष्मीः सन्निधत्ते निरन्तरम्॥२०२॥ दानेरशेषैरखिलेर्व्रतेश्च तीर्थेरशेषैरखिलेर्मखैश्च । न तत्फलं विन्दति यद्गणेश-सहस्रनामस्मरणेन सद्यः॥२०३॥

एतन्नाम्नां सहस्रं पठित दिनमणौ प्रत्यहं प्रोज्जिहाने सायं मध्यन्दिने वा त्रिषवणमथवा सन्ततं वा जनो यः। स स्यादैश्वर्यधुर्यः प्रभवित वचसां कीर्तिमुचैस्तनोति दारिद्यं हन्ति विश्वं वशयित सुचिरं वर्धते पुत्रपौत्रैः॥२०४॥

> अकिश्वनोऽप्येकचित्तो नियतो नियतासनः। प्रजपंश्चतुरो मासान् गणेशार्चनतत्परः॥२०५॥

दरिद्रतां समुन्मूल्य सप्तजन्मानुगामपि। लभते महतीं लक्ष्मीमित्याज्ञा पारमेश्वरी॥२०६॥

आयुष्यं वीतरोगं कुलमितविमलं सम्पदश्चार्तिनाशः कीर्तिर्नित्यावदाता भवित खलु नवा कान्तिरव्याजभव्या। पुत्राः सन्तः कलत्रं गुणवदिभमतं यद्यदन्यच तत्तत् नित्यं यः स्तोत्रमेतत् पठित गणपतेस्तस्य हस्ते समस्तम्॥२०७॥

> गणअयो गणपतिर्हेरम्बो धरणीधरः। महागणपतिर्बुद्धिप्रियः क्षिप्रप्रसादनः॥२०८॥

अमोघसिद्धिरमृतमन्त्रश्चिन्तामणिर्निधिः । सुमङ्गलो बीजमाशापूरको वरदः कलः॥२०९॥

काश्यपो नन्दनो वाचासिद्धो ढुण्ढिर्विनायकः। मोदकैरेभिरत्रैकविंशत्या नामभिः पुमान्॥२१०॥

उपायनं ददेद्धत्त्वा मत्प्रसादं चिकीर्षति। वत्सरं विघ्रराजोऽस्य तथ्यमिष्टार्थसिद्धये॥२११॥ यः स्तौति मद्गतमना ममाराधनतत्परः। स्तुतो नाम्ना सहस्रेण तेनाहं नात्र संशयः॥२१२॥ नमो नमः सुरवरपूजिताङ्क्षये

नमा नमः सुरवरपूर्जिताङ्ग्रय नमो नमो निरुपममङ्गलात्मने। नमो नमो विपुलदयैकसिद्धये

नमो नमः करिकलभाननाय ते॥२१३॥

किङ्किणीगणरचितचरणः

प्रकटितगुरुमितचारुकरणः । मदजललहरीकलितकपोलः शमयतु दुरितं गणपतिनाम्ना॥२१४॥

॥इति श्रीगणेशपुराणे उपासनाखण्डे ईश्वरगणेशसंवादे गणेशसहस्रनामस्तोत्रं नाम षट्गत्वारिंशोऽध्यायः॥

#### ॥ अपराध-क्षमापनम्॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपः पूजािक्रयादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे गजाननम्॥

अनया पूजया श्री-सिद्धिविनायकः प्रीयताम्॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्। करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥ ॐ तत्सद्बह्मार्पणमस्तु। अपराध-क्षमापनम् 306



# ॥ श्री-सरस्वती-पूजा ॥

(मूलम्—पूजा-सङ्ग्रहः (राधाकृष्ण-शास्त्रिणः))

# ॥ पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा॥

(आचम्य)

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवणं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुव्रोम्। (अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा) ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः अविघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गुणपंति ह्वामहे क्विं केवीनामुंपमश्रंवस्तमम्। ज्येष्ठराज्ं ब्रह्मंणां ब्रह्मणस्पत् आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद् सादंनम्॥ अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि। ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि। पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरघ्यं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। ऋगनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि। चस्नार्थमक्षतान् समर्पयामि। यज्ञोपवीताभरणार्थे अक्षतान् समर्पयामि। दिव्यपरिमलगन्थान् धारयामि।

गन्थस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि। पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

#### ॥ अर्चना ॥

१. ॐ स्मुखाय नमः

९. ॐ धूमकेतवे नमः

२. ॐ एकदन्ताय नमः

१०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः

३. ॐ कपिलाय नमः

११. ॐ फालचन्द्राय नमः

४. ॐ गजकर्णकाय नमः

१२. ॐ गजाननाय नमः

५. ॐ लम्बोदराय नमः

१३. ॐ वऋतुण्डाय नमः

६. ॐ विकटाय नमः

१४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः

७. ॐ विघ्नराजाय नमः

१५. ॐ हेरम्बाय नमः

८. ॐ विनायकाय नमः

१६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाघ्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वऋतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ। अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

## ॥ प्रधान-पूजा — श्री-सरस्वती-पूजा॥

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवणं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

#### ॥सङ्कल्पः॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते अद्य ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकाणां प्रभवादीनां षष्ट्याः संवत्सराणां मध्ये ( )३४ नाम संवत्सरे दक्षिणायने वर्ष-ऋतौ (कन्या/तुला)-आश्वयुज-मासे शुक्लपक्षे नवम्यां शुभितथौ ( )-वासरयुक्तायाम् ( नक्षत्र ( )<sup>३६</sup> नाम योग ( )<sup>३७</sup> करण युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् ( ) शुभितथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय-आयुरारोग्य-ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् धर्मार्थकाममोक्ष-चतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्धार्थं पुत्रपौत्राभिवृद्धार्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्धार्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहा-पातकचतुष्टय-व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्य अपनोदनद्वारा सकल-पापक्षयार्थं श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-सरस्वती-प्रीत्यर्थं श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-सरस्वती-पूजां करिष्ये। तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये। श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। शोभनार्थे क्षेमाय पुनरागमनाय च।

(गणपति-प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

<sup>&</sup>lt;sup>३४</sup>पृष्टं ६२१ पश्यताम्

३५ पृष्टं ६३१ पश्यताम्

<sup>&</sup>lt;sup>३६</sup>पृष्टं ६३२ पश्यताम्

३७ पृष्टं ६३३ पश्यताम्

#### ॥ आसन-पूजा॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चासनं कुरु॥

#### ॥ घण्टा-पूजा॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्। घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

#### ॥ कलश-पूजा॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः। ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि। (अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्) आपो वा इद सर्वं विश्वां भूतान्यापः प्राणा वा आपः पृशव् आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापृश्छन्दाः स्यापो ज्योतीः इष्यापो यजू इष्यापः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भवः सुवराप ओम्॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः। अङ्गेश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥ सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च ह्रदा नदाः। आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥ ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवंः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

#### ॥ आत्म-पूजा॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

१. ॐ आत्मने नमः ४. ॐ जीवात्मने नमः

२. ॐ अन्तरात्मने नमः ५. ॐ परमात्मने नमः

३. ॐ योगात्मने नमः ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः

#### समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः। त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

#### ॥ पीठ-पूजा ॥

१. ॐ आधारशक्त्ये नमः ८. ॐ रत्नवेदिकाये नमः

२. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः

३. ॐ आदिकूर्माय नमः १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः

४. ॐ आदिवराहाय नमः ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः

५. ॐ अनन्ताय नमः १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः

६. ॐ पृथिव्ये नमः १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः

७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः १४. ॐ योगपीठासनाय नमः

#### ॥ गुरु-ध्यानम्॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

## ॥ षोडशोपचार-पूजा॥

सरस्वतीं सत्यवासां सुधांशुसमविग्रहाम्। स्फटिकाक्षस्रजं पद्मं पुस्तकं च शुकं करैः॥

चतुर्भिर्दधतीं देवीं चन्द्रबिम्ब-समाननाम्। वल्लभामखिलार्थानां वल्लकीवादनप्रियाम्॥

भारतीं भावये देवीं भाषाणामधिदेवताम्। भावितां हृदये सद्भिर्भामिनीं परमेष्ठिनः॥

अस्मिन् पुस्तक-मण्डले दुर्गालक्ष्मी-युक्तां सरस्वतीं ध्यायामि।

चतुर्भुजां चन्द्रवर्णां चतुराननवल्लभाम्। आवाहयामि वाणि त्वामाश्रितार्ति-विनाशिनीम्॥ अस्मिन् पुस्तक-मण्डले दुर्गालक्ष्मी-युक्तां सरस्वतीमावाहयामि।

> आसनं सङ्गृहाणेदमाश्रिते सकलामरैः। आदते सर्वमुनिभिरार्तिदे सुरवैरिणाम्॥

श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-युक्तायै सरस्वत्यै नमः, आसनं समर्पयामि।

पाद्यमाद्यन्तशून्यायै वेद्यायै वेदवादिभिः। दास्यामि वाणि वरदे देवराजसमर्चिते॥

श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-युक्तायै सरस्वत्यै नमः, पाद्यं समर्पयामि।

अघहन्त्रि गृहाणेदम् अर्घ्यमष्टाङ्गसंयुतम्। अम्बाखिलानां जगताम् अम्बुजासनसुन्दरि॥

श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-युक्तायै सरस्वत्यै नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।

आचम्यतां तोयमिदमाश्रितार्थप्रदायिनि। आत्मभूवदनावासे आधिहारिणि ते नमः॥

श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-युक्तायै सरस्वत्यै नमः, आचमनीयं समर्पयामि।

मधुपर्कं गृहाणेदं मधुसूदनवन्दिते। मन्दस्मिते महादेवि महादेवसमर्चिते॥

श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-युक्तायै सरस्वत्यै नमः, मधुपर्कं समर्पयामि।

पश्चामृतं गृहाणेदं पश्चाननसमर्चिते। पयोदधिघृतोपेतं पश्चपातकनाशिनि॥

श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-युक्तायै सरस्वत्यै नमः, पञ्चामृतं समर्पयामि।

नमस्ते हंसवाहिन्यै नमस्ते धातृपत्निके। गन्धोदकेन सम्पूर्णं स्नानं च प्रतिगृह्यताम्॥

श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-युक्तायै सरस्वत्यै नमः, गन्धोदकस्नानं समर्पयामि। ३८

साध्वीनामग्रतो गण्ये साधुसङ्घसमादते। सरस्वति नमस्तुभ्यं स्नानं स्वीकुरु सम्प्रति॥

श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-युक्तायै सरस्वत्यै नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

दुकूलद्वितयं देवि दुरितापहवैभवे। विधिप्रिये गृहाणेदं सुधानिधिसमं शिवे॥

# श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-युक्तायै सरस्वत्यै नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

उपवीतं गृहाणेदमुपमाशून्यवैभवे। हिरण्यगर्भमहिषि हिरण्मयगुणैः कृतम्॥

श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-युक्तायै सरस्वत्यै नमः, उपवीतं समर्पयामि।

वर्णरूपे गृहाणेदं स्वर्णवर्यपरिष्कृतम्। अर्णवोद्धृतरत्नाढ्यं कर्णभूषादिभूषणम्॥

श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-युक्तायै सरस्वत्यै नमः, आभरणानि समर्पयामि।

विन्यस्तं नेत्रयोः कान्त्यै सौवीराञ्जनमुत्तमम्। सङ्गृहाण सुरश्रेष्ठे वागीश्वरि नमोऽस्तु ते॥

श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-युक्तायै सरस्वत्यै नमः, नेत्राञ्जनं समर्पयामि। ३८

कुङ्कमाञ्जन-सिन्दूर-कञ्चकादिकमम्बिके । सौभाग्यद्रव्यमखिलं सुरवन्द्ये गृहाण मे॥

श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-युक्तायै सरस्वत्यै नमः, सौभाग्यद्रव्यं समर्पयामि।

अन्धकारिप्रियाराध्ये गन्धमुत्तमसौरभम्। गृहाण वाणि वरदे गन्धर्वपरिपूजिते॥

श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-युक्तायै सरस्वत्यै नमः, गन्धं समर्पयामि।

अक्षतांस्त्वं गृहाणेमान् अहतानमरार्चिते। अक्षतेऽद्भुतरूपाढ्ये यक्षराजादिवन्दिते॥

श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-युक्तायै सरस्वत्यै नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

३८ अयं श्लोकः/उपचारः व्रत-कल्प-त्रयाद् उद्धृतः

# पुन्नाग-जाती-मल्ल्यादि-पुष्पजातं गृहाण मे। पुमर्थदायिनि परे पुस्तकाढ्य-कराम्बुजे॥

# श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-युक्तायै सरस्वत्यै नमः, पुष्पाणि समर्पयामि।

#### ॥अङ्ग-पूजा॥

የ.	पावनायै नमः	— पादौ पूजयामि
٦.	गिरे नमः	— गुल्फो पूजयामि
₹.	जगद्वन्द्यायै नमः	— जङ्घे पूजयामि
٧.	जलजासनायै नमः	— जानुनी पूजयामि
<b>4.</b>	उत्तमायै नमः	— ऊरू पूजयामि
€.	कमलासनप्रियायै नम	ाः— कटिं पूजयामि
<b>9</b> .	नानाविद्यायै नमः	— नाभिं पूजयामि
۷.	वाण्ये नमः	— वक्षः पूजयामि
۶.	कुरङ्गाक्ष्यै नमः	— कुचौ पूजयामि
१०.	कलारूपिण्यै नमः	— कण्ठं पूजयामि
११.	भाषायै नमः	— बाहून् पूजयामि
१२.	चिरन्तनायै नमः	— चुबुकं पूजयामि
१३.	मुग्धस्मितायै नमः	— मुखं पूजयामि
१४.	लोलेक्षणायै नमः	— लोचने पूजयामि
१५.	कलायै नमः	— ललाटं पूजयामि
१६.	वर्णरूपायै नमः	— कर्णौ पूजयामि
.७१	करुणायै नमः	— कचान् पूजयामि
१८.	शिवायै नमः	— शिरः पूजयामि
१९.	सरस्वत्यै नमः	— सर्वाण्यङ्गानि पूजयामि

# ॥ दुर्गाष्टोत्तरशतनामाविलः॥

सत्ये नमः		सत्यानन्दस्वरूपिण्यै नमः	
साध्यै नमः		अनन्तायै नमः	
भवप्रीतायै नमः		भाविन्यै नमः	
भवान्यै नमः		भाव्यायै नमः	
भवमोचन्यै नमः		भव्यायै नमः	
आर्यायै नमः		अभव्यायै नमः	
दुर्गायै नमः		सदागत्यै नमः	3 o
जयायै नमः		शाम्भव्यै नमः	
आद्यायै नमः		देवमात्रे नमः	
त्रिनेत्रायै नमः	१०	चिन्तायै नमः	
शूलधारिण्यै नमः		रत्नप्रियायै नमः	
पिनाकधारिण्यै नमः		सर्वविद्यायै नमः	
चित्रायै नमः		दक्षकन्यायै नमः	
चण्डघण्टायै नमः		दक्षयज्ञविनाशिन्यै नमः	
महातपसे नमः		अपर्णायै नमः	
मनसे नमः		अनेकवर्णायै नमः	
बुद्धौ नमः		पाटलायै नमः	४०
अहङ्कारायै नमः		पाटलावत्यै नमः	
चित्तरूपायै नमः		पट्टाम्बरपरीधानायै नमः	
चितायै नमः	२०	कलमञ्जीररञ्जिन्यै नमः	
चित्त्यै नमः		अमेयविक्रमायै नमः	
सर्वमन्त्रमय्यै नमः		क्रूरायै नमः	
सत्तायै नमः		सुन्दर्ये नमः	
	ı		

दुगाष्टात्तरशतनामावालः			317
सुरसुन्दर्ये नमः		चण्डमुण्डविनाशिन्यै नमः	
वनदुर्गायै नमः		सर्वासुरविनाशायै नमः	
मातङ्ग्री नमः		सर्वदानवघातिन्यै नमः	
मतङ्गमुनिपूजितायै नमः	५०	सर्वशास्त्रमय्यै नमः	
ब्राह्ये नमः		सत्यायै नमः	
माहेश्वर्ये नमः		सर्वास्त्रधारिण्यै नमः	
ऐन्द्रौ नमः		अनेकशस्त्रहस्तायै नमः	
कौमार्ये नमः		अनेकास्त्रधारिण्यै नमः	
वैष्णव्ये नमः		कुमार्ये नमः	८०
चामुण्डायै नमः		एककन्यायै नमः	
वाराह्ये नमः		कैशोर्ये नमः	
लक्ष्म्यै नमः		युवत्यै नमः	
पुरुषाकृत्यै नमः		यत्यै नमः	
विमलायै नमः	६०	अप्रौढायै नमः	
उत्कर्षिण्यै नमः		प्रौढायै नमः	
ज्ञानायै नमः		वृद्धमात्रे नमः	
क्रियायै नमः		बलप्रदायै नमः	
नित्यायै नमः		महोदर्यै नमः	
बुद्धिदायै नमः		मुक्तकेश्यै नमः	९०
बहुलायै नमः		घोररूपायै नमः	
बहुलप्रेमायै नमः		महाबलायै नमः	
सर्ववाहनवाहनायै नमः		अग्निज्वालायै नमः	
निशुम्भशुम्भहनन्यै नमः		रौद्रमुख्ये नमः	
महिषासुरमर्दिन्यै नमः	७०	कालरात्र्ये नमः	
मधुकैटभहन्त्र्ये नमः		तपस्विन्यै नमः	
		1	

१०८

80

नारायण्ये नमः भद्रकाल्ये नमः

विष्णुमायायै नमः जलोदर्ये नमः

शिवदूत्यै नमः

कराल्ये नमः

अनन्तायै नमः

परमेश्वर्ये नमः

कात्यायन्यै नमः

सावित्र्ये नमः

प्रत्यक्षायै नमः ब्रह्मवादिन्यै नमः

॥इति श्री-दुर्गाष्टोत्तरशतनामाविलः सम्पूर्णा॥

# ॥ लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामाविलः॥

### ॥ ध्यानम् ॥

वन्दे पद्मकरां प्रसन्नवदनां सौभाग्यदां भाग्यदां हस्ताभ्यामभयप्रदां मणिगणैर्नानाविधैर्भूषिताम्। भक्ताभीष्टफलप्रदां हरिहरब्रह्मादिभिः सेवितां पार्श्वे पङ्कजशङ्खपद्मनिधिभिर्युक्तां सदा शक्तिभिः॥

सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतमांशुकगन्धमाल्यशोभे। भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्मम्॥

प्रकृत्ये नमः

विकृत्यै नमः विद्याये नमः

सर्वभूतहितप्रदायै नमः

श्रद्धाये नमः

विभूत्यै नमः

सरभ्ये नमः

परमात्मिकायै नमः

वाचे नमः

पद्मालयायै नमः पद्मायै नमः

शुचये नमः

स्वाहायै नमः

स्वधायै नमः

लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामावलिः			319
सुधायै नमः		लोकमात्रे नमः	४०
धन्यायै नमः		पद्मप्रियायै नमः	
हिरण्मय्यै नमः		पद्महस्तायै नमः	
लक्ष्म्यै नमः		पद्माक्ष्ये नमः	
नित्यपुष्टायै नमः		पद्मसुन्दर्ये नमः	
विभावर्यै नमः	२०	पद्मोद्भवायै नमः	
अदित्यै नमः		पद्ममुख्यै नमः	
दित्यै नमः		पद्मनाभप्रियायै नमः	
दीप्तायै नमः		रमायै नमः	
वसुधायै नमः		पद्ममालाधरायै नमः	
वसुधारिण्यै नमः		देव्यै नमः	५०
कमलायै नमः		पद्मिन्यै नमः	
कान्तायै नमः		पद्मगन्धिन्यै नमः	
क्षमायै नमः		पुण्यगन्धायै नमः	
क्षीरोदसम्भवायै नमः		सुप्रसन्नायै नमः	
अनुग्रहप्रदायै नमः	३०	प्रसादाभिमुख्यै नमः	
बुद्धये नमः		प्रभाये नमः	
अनघायै नमः		चन्द्रवदनायै नमः	
हरिवल्लभायै नमः		चन्द्रायै नमः	
अशोकायै नमः		चन्द्रसहोदर्यै नमः	
अमृतायै नमः		चतुर्भुजायै नमः	६०
दीप्तायै नमः		चन्द्ररूपायै नमः	
लोकशोकविनाशिन्यै नमः		इन्दिरायै नमः	
धर्मनिलयायै नमः		इन्दुशीतलायै नमः	
करुणायै नमः		आह्रादजनन्यै नमः	
		•	

पुष्ट्ये नमः		स्रेणसौम्यायै नमः	
शिवायै नमः		शुभप्रदायै नमः	
शिवकर्ये नमः		नृपवेश्मगतानन्दायै नमः	
सत्यै नमः		वरलक्ष्म्यै नमः	९०
विमलायै नमः		वसुप्रदायै नमः	
विश्वजनन्यै नमः	७०	शुभायै नमः	
तुष्ट्ये नमः		हिरण्यप्राकारायै नमः	
दारिद्यनाशिन्यै नमः		समुद्रतनयायै नमः	
प्रीतिपुष्करिण्यै नमः		जयायै नमः	
शान्तायै नमः		मङ्गलायै देव्यै नमः	
शुक्रमाल्याम्बरायै नमः		विष्णुवक्षःस्थलस्थितायै नमः	
श्रियै नमः		विष्णुपत्यै नमः	
भास्कर्ये नमः		प्रसन्नाक्ष्ये नमः	
बिल्वनिलयायै नमः		नारायणसमाश्रितायै नमः	१००
वरारोहायै नमः		दारिद्यध्वंसिन्यै नमः	
यशस्विन्यै नमः	८०	देव्यै नमः	
वसुन्धरायै नमः		सर्वोपद्रवहारिण्यै नमः	
उदाराङ्गायै नमः		नवदुर्गायै नमः	
हरिण्यै नमः		महाकाल्यै नमः	
हेममालिन्यै नमः		ब्रह्मविष्णुशिवात्मिकायै नमः	
धनधान्यकर्ये नमः		त्रिकालज्ञानसम्पन्नायै नमः	
सिख्यै नमः		भुवनेश्वर्यै नमः	१०८
॥नित भी स्थास	متحرتم	ia umafa, ammuu	

॥इति श्री-लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा॥

₹0

# ॥ सरस्वत्यष्टोत्तरशतनामाविलः॥

सुरवन्दितायै नमः सरस्वत्यै नमः महाकाल्यै नमः महाभद्रायै नमः महापाशायै नमः महामायायै नमः वरप्रदायै नमः महाकारायै नमः महाङ्कशायै नमः श्रीप्रदायै नमः पद्मनिलयायै नमः पीतायै नमः पद्माक्ष्ये नमः विमलायै नमः पद्मवऋकाये नमः विश्वाये नमः शिवानुजायै नमः विद्युन्मालायै नमः पुस्तकभृते नमः वैष्णव्ये नमः 80 ज्ञानमुद्रायै नमः चन्द्रिकायै नमः रमायै नमः चन्द्रवदनायै नमः परायै नमः चन्द्रलेखविभूषितायै नमः कामरूपायै नमः सावित्रये नमः महाविद्यायै नमः सुरसायै नमः महापातकनाशिन्यै नमः देव्यै नमः महाश्रयाये नमः दिव्यालङ्कारभूषितायै नमः 80 मालिन्यै नमः वाग्देव्यै नमः महाभोगायै नमः वसुदायै नमः महाभुजायै नमः तीव्रायै नमः २० महाभागायै नमः महाभद्रायै नमः महोत्साहायै नमः महाबलायै नमः दिव्याङ्गायै नमः भोगदायै नमः

सरस्वत्यष्टात्तरशतनामावालः			322
भारत्ये नमः		त्रिकालज्ञायै नमः	
भामायै नमः		त्रिगुणायै नमः	
गोविन्दायै नमः		शास्त्ररूपिण्ये नमः	
गोमत्यै नमः	५०	शुम्भासुरप्रमथिन्यै नमः	
शिवायै नमः		शुभदाये नमः	
जटिलायै नमः		स्वरात्मिकायै नमः	
विन्ध्यवासायै नमः		रक्तबीजनिहन्त्र्यै नमः	
विन्थ्याचलविराजितायै नमः		चामुण्डायै नमः	
चण्डिकायै नमः		अम्बिकायै नमः	८०
वैष्णव्ये नमः		मुण्डकायप्रहरणायै नमः	
ब्राह्ये नमः		धूम्रलोचनमर्दन्यै नमः	
ब्रह्मज्ञानेकसाधनायै नमः		सर्वदेवस्तुतायै नमः	
सौदामिन्यै नमः		सौम्यायै नमः	
सुधामूर्त्ये नमः	६०	सुरासुरनमस्कृतायै नमः	
सुभद्रायै नमः		कालरात्र्ये नमः	
सुरपूजितायै नमः		कलाधारायै नमः	
सुवासिन्यै नमः		रूपसौभाग्यदायिन्यै नमः	
सुनासायै नमः		वाग्देव्यै नमः	
विनिद्रायै नमः		वरारोहायै नमः	९०
पद्मलोचनायै नमः		वाराह्ये नमः	
विद्यारूपायै नमः		वारिजासनायै नमः	
विशालाक्ष्यै नमः		चित्राम्बरायै नमः	
ब्रह्मजायायै नमः		चित्रगन्धायै नमः	
महाफलायै नमः	90	चित्रमाल्यविभूषितायै नमः	
त्रयीमूर्त्ये नमः		कान्तायै नमः	
•		I	

कामप्रदायै नमः चतुराननसाम्राज्यायै नमः

वन्द्यायै नमः रक्तमध्यायै नमः

निरञ्जनायै नमः विद्याधरसुपूजितायै नमः

श्वेताननायै नमः हंसासनायै नमः

नीलभुजायै नमः

नीलजङ्घायै नमः ब्रह्मविष्णुशिवात्मिकायै नमः १०८ चतुर्वर्गफलप्रदायै नमः

॥इति श्री-सरस्वत्यष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा॥ श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-युक्तायै सरस्वत्यै नमः, नानाविधपरिमलपत्र-पुष्पाणि समर्पयामि।

# ॥ उत्तराङ्ग-पूजा ॥

(मूलम्—व्रत-कल्प-त्रयम)

गुग्गुलागरु-कस्तूरी-गोरोचन-समन्वितम् । धूपं गृहाण देवेशि भक्तिं त्वय्यचलां कुरु॥

# श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-युक्तायै सरस्वत्यै नमः, धूपमाघ्रापयामि।

कामधेनुसमुद्भूत-घृतवर्ति-समन्वितम् । दीपं गृहाण कल्याणि कमलासनवन्नभे॥

# श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-युक्तायै सरस्वत्यै नमः, अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

ॐ भूर्भुवः सुवंः। + ब्रह्मणे स्वाहाँ। नैवेद्यं षड्सोपेतं शर्करामधुसंयुतम्। पायसान्नं च भारत्यै ददामि प्रतिगृह्यताम्॥

अपूपान् विविधान् स्वादून् शालिपिष्टोपपाचितान्। मृदुलान् गुडसम्मिश्रान् भक्ष्यादींश्च ददामि ते॥ श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-युक्ताये सरस्वत्ये नमः,() निवेदयामि। अमृतापिधानमसि। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि। मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि। नैवेद्यानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

> पूगीफल-समायुक्तं नागवल्लीदलैर्युतम्। कर्पूरचूर्ण-संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-युक्तायै सरस्वत्यै नमः, कर्पूर-ताम्बूलं समर्पयामि।

नीराजनं गृहाण त्वं जगदानन्ददायिनि। जगत्तिमिरमार्तण्डमण्डले ते नमो नमः॥

श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-युक्तायै सरस्वत्यै नमः, कर्पूर-नीराजनं सन्दर्शयामि। कर्पूरनीराजनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

> शारदे लोकमातस्त्वम् आश्रिताभीष्टदायिनि। पुष्पाञ्जलिं गृहाण त्वं मया भक्त्या समर्पितम्॥

श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-युक्तायै सरस्वत्यै नमः, मन्नपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। स्वर्णपुष्पं समर्पयामि।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण-पदे पदे॥

# प्रदक्षिणं कृत्वा।

पाहि पाहि जगद्बन्धे नमस्ते भक्तवत्सले। नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमो नमः॥ सरस्वति नमस्तुभ्यं वरदे भक्तवत्सले। त्राहि मां नरकाद् घोरात् ब्रह्मपत्नि नमोऽस्तु ते॥

श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-युक्तायै सरस्वत्यै नमः, नमस्कारान् समर्पयामि।

# ॥ प्रार्थना ॥

या कुन्देन्दु-तुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता या वीणा-वरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना। या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा पूजिता सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाङ्यापहा॥

> सरस्वती सरसिजकेसरप्रभा तपस्विनी सितकमलासनप्रिया। घनस्तनी कमलविलोललोचना मनस्विनी भवतु वरप्रसादिनी॥

पाशाङ्क्षश्वरा वाणी वीणापुस्तकधारिणी। मम वक्रे वसेन्नित्यं सन्तुष्टाऽस्तु च सर्वदा॥

चतुर्दशसु विद्यासु रमते या सरस्वती। सा देवी कृपया मह्यं जिह्वासिद्धिं करोतु च॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

## ॥ उपायनदानम् ॥

ब्राह्मणपूजा।

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवणं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

अद्य-पूर्वोक्त-एवं-गुण-सकल-विशेषेण-विशिष्टायां अस्यां नवम्यां शुभितथौ श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-सरस्वती-देवतामुद्दिश्य अद्य मया अनुष्ठित-श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-सरस्वती-पूजान्ते श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-सरस्वती-प्रीत्यर्थं उपायनदानं करिष्ये। श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-सरस्वती-स्वरूपस्य ब्राह्मणस्य इदम् आसनम्। इमे गन्धाः। सकलाराधनैः स्वर्चितम्।

भारती प्रतिगृह्णातु भारतीयं ददाति च। भारती तारिका द्वाभ्यां भारत्ये ते नमो नमः॥

इदम् उपायनं सदक्षिणाकं सताम्बूलं श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-सरस्वती-प्रीतिं कामयमानः श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-सरस्वती-स्वरूपाय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे न मम।

> हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अनन्तपुण्यफलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-सरस्वती-पूजाकाले अस्मिन् मया क्रियमाण-श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-सरस्वती-पूजायां यद्देयमुपायनदानं तत्प्रत्याम्नायार्थं हिरण्यं

श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-सरस्वती-प्रीतिं कामयमानः मनसोद्दिष्टाय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे नमः न मम। अनया पूजया श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-सरस्वत्यः प्रीयन्ताम्।

## ॥ अपराध-क्षमापनम्॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपः-पूजा-क्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्। करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥ सर्वं तत्सद्बह्मार्पणमस्त्।



# ॥ सरस्वती-सहस्रनाम-स्तोत्रम्॥ ॥ध्यानम्॥

श्रीमचन्दनचर्चितोञ्चलवपुः शुक्लाम्बरा मिलका-मालालालित-कुन्तला प्रविलसन्मुक्तावलीशोभना। सर्वज्ञाननिधानपुस्तकधरा रुद्राक्षमालाङ्किता वाग्देवी वदनाम्बुजे वसतु मे त्रैलोक्यमाता शुभा॥

## श्री-नारद् उवाच

भगवन् परमेशान सर्वलोकैकनायक। कथं सरस्वती साक्षात्प्रसन्ना परमेष्ठिनः॥१॥ कथं देव्या महावाण्याः सतत्प्राप सुदुर्लभम्। एतन्मे वद तत्त्वेन महायोगीश्वरप्रभो॥२॥

# श्री-सनत्कुमार उवाच

साधु पृष्टं त्वया ब्रह्मन् गृह्यादुह्यमनुत्तमम्।
भयानुगोपितं यत्नादिदानीं सत्प्रकाश्यते॥३॥
पुरा पितामहं दृष्ट्वा जगत्स्थावरजङ्गमम्।
निर्विकारं निराभासं स्तम्भीभूतमचेतसम्॥४॥
सृष्ट्वा त्रैलोक्यमखिलं वागभावात्तथाविधम्।
आधिक्याभावतः स्वस्य परमेष्ठी जगद्गुरुः॥५॥
दिव्यवर्षायुतं तेन तपो दुष्करमृत्तमम्।
ततः कदाचित्सञ्जाता वाणी सर्वार्थशोभिता॥६॥
अहमस्मि महाविद्या सर्ववाचामधीश्वरी।
मम नाम्नां सहस्रं तु उपदेक्ष्याम्यनुत्तमम्॥७॥

अनेन संस्तुता नित्यं पत्नी तव भवाम्यहम्। त्वया सृष्टं जगत्सर्वं वाणीयुक्तं भविष्यति॥८॥

इदं रहस्यं परमं मम नामसहस्रकम्। सर्वपापौघशमनं महासारस्वतप्रदम्॥९॥

महाकवित्वदं लोके वागीशत्वप्रदायकम्। त्वं वा परः पुमान्यस्तु स्तवेनानेन तोषयेत्॥१०॥

तस्याहं किङ्करी साक्षाद्भविष्यामि न संशयः। इत्युक्ताऽन्तर्दधे वाणी तदारभ्य पितामहः॥११॥

स्तुत्वा स्तोत्रेण दिव्येन तत्पतित्वमवाप्तवान्। वाणीयुक्तं जगत्सर्वं तदारभ्याभवन्मुने॥१२॥

तत्तेहं सम्प्रवक्ष्यामि शृणु यत्नेन नारद। सावधानमना भूत्वा क्षणं शुद्धो मुनीश्वरः॥१३॥

## ॥स्तोत्रम्॥

वाग्वाणी वरदा वन्द्या वरारोहा वरप्रदा। वृत्तिर्वागीश्वरी वार्ता वरा वागीशवल्लभा॥१॥

विश्वेश्वरी विश्ववन्द्या विश्वेशप्रियकारिणी। वाग्वादिनी च वाग्देवी वृद्धिदा वृद्धिकारिणी॥२॥

वृद्धिर्वृद्धा विषघ्नी च वृष्टिर्वृष्टिप्रदायिनी। विश्वाराध्या विश्वमाता विश्वधात्री विनायका॥३॥

विश्वशक्तिर्विश्वसारा विश्वा विश्वविभावरी। वेदान्तवेदिनी वेद्या वित्ता वेदत्रयात्मिका॥४॥

वेदज्ञा वेदजननी विश्वा विश्वविभावरी। वरेण्या वाङ्मयी वृद्धा विशिष्टप्रियकारिणी॥५॥

विश्वतोवदना व्याप्ता व्यापिनी व्यापकात्मिका। व्यालघ्री व्यालभूषाङ्गी विरज्ञा वेदनायिका॥६॥ वेदवेदान्तसंवेद्या वेदान्तज्ञानरूपिणी।

विदवदान्तसवद्या वदान्तज्ञानरूपिणी। विभावरी च विक्रान्ता विश्वामित्रा विधिप्रिया॥७॥

विरष्ठा विप्रकृष्टा च विप्रवर्यप्रपूजिता। वेदरूपा वेदमयी वेदमूर्तिश्च वल्लभा॥८॥

गौरी गुणवती गोप्या गन्धर्वनगरप्रिया। गुणमाता गुहान्तस्था गुरुरूपा गुरुप्रिया॥९॥

गिरिविद्या गानतुष्टा गायकप्रियकारिणी। गायत्री गिरिशाराध्या गीर्गिरीशप्रियङ्करी॥१०॥

गिरिज्ञा ज्ञानविद्या च गिरिरूपा गिरीश्वरी। गीर्माता गणसंस्तुत्या गणनीयगुणान्विता॥११॥

गूढरूपा गुहा गोप्या गोरूपा गौर्गुणात्मिका। गुर्वी गुर्वम्बिका गुह्या गेयजा ग्रहनाशिनी॥१२॥

गृहिणी गृहदोषघ्नी गवघ्नी गुरुवत्सला। गृहात्मिका गृहाराध्या गृहबाधाविनाशिनी॥१३॥

गङ्गा गिरिसुता गम्या गजयाना गुहस्तुता। गरुडासनसंसेव्या गोमती गुणशालिनी॥१४॥

शारदा शाश्वती शैवी शाङ्करी शङ्करात्मिका। श्रीः शर्वाणी शतघ्री च शरचन्द्रनिभानना॥१५॥ शर्मिष्ठा शमनघ्री च शतसाहस्ररूपिणी। शिवा शम्भुप्रिया श्रद्धा श्रुतिरूपा श्रुतिप्रिया॥१६॥

शुचिष्मती शर्मकरी शुद्धिदा शुद्धिरूपिणी। शिवा शिवङ्करी शुद्धा शिवाराध्या शिवात्मिका॥१७॥ श्रीमती श्रीमयी श्राव्या श्रुतिः श्रवणगोचरा। शान्तिः शान्तिकरी शान्ता शान्ताचारप्रियङ्करी॥१८॥

शीललभ्या शीलवती श्रीमाता शुभकारिणी। शुभवाणी शुद्धविद्या शुद्धचित्तप्रपूजिता॥१९॥

श्रीकरी श्रुतपापघ्नी शुभाक्षी शुचिवल्लभा। शिवेतरघ्नी शबरी श्रवणीयगुणान्विता॥२०॥

शारी शिरीषपुष्पाभा शमनिष्ठा शमात्मिका। शमान्विता शमाराध्या शितिकण्ठप्रपूजिता॥२१॥

शुद्धिः शुद्धिकरी श्रेष्ठा श्रुतानन्ता शुभावहा। सरस्वती च सर्वज्ञा सर्वसिद्धिप्रदायिनी॥२२॥ सरस्वती च सावित्री सन्ध्या सर्वेप्सितप्रदा। सर्वार्तिघ्नी सर्वमयी सर्वविद्याप्रदायिनी॥२३॥ सर्वेश्वरी सर्वपुण्या सर्गस्थित्यन्तकारिणी। सर्वाराध्या सर्वमाता सर्वदेवनिषेविता॥२४॥ सर्वेश्वर्यप्रदा सत्या सती सत्वगुणाश्रया।

सहस्राक्षी सहस्रास्या सहस्रपदसंयुता। सहस्रहस्ता साहस्रगुणालङ्कृतविग्रहा॥२६॥

स्वरऋमपदाकारा सर्वदोषनिषूदिनी॥२५॥

सहस्रशीर्षा सद्रूपा स्वधा स्वाहा सुधामयी। षङ्गन्थिभेदिनी सेव्या सर्वलोकैकपूजिता॥२७॥ स्तुत्या स्तुतिमयी साध्या सवितृप्रियकारिणी। संशयच्छेदिनी साङ्क्यवेद्या सङ्ख्या सदीश्वरी॥२८॥ सिद्धिदा सिद्धसम्पूज्या सर्वसिद्धिप्रदायिनी। सर्वज्ञा सर्वशक्तिश्च सर्वसम्पत्प्रदायिनी॥२९॥ सर्वाशुभद्री सुखदा सुखा संवित्स्वरूपिणी। सर्वसम्भीषणी सर्वजगत्सम्मोहिनी तथा॥३०॥

सर्वप्रियङ्करी सर्वशुभदा सर्वमङ्गला। सर्वमन्त्रमयी सर्वतीर्थपुण्यफलप्रदा॥३१॥

सर्वपुण्यमयी सर्वव्याधिघ्नी सर्वकामदा। सर्वविघ्नहरी सर्ववन्दिता सर्वमङ्गला॥३२॥

सर्वमन्नकरी सर्वलक्ष्मीः सर्वगुणान्विता। सर्वानन्दमयी सर्वज्ञानदा सत्यनायिका॥३३॥ सर्वज्ञानमयी सर्वराज्यदा सर्वमुक्तिदा। सुप्रभा सर्वदा सर्वा सर्वलोकवशङ्करी॥३४॥

सुभगा सुन्दरी सिद्धा सिद्धाम्बा सिद्धमातृका। सिद्धमाता सिद्धविद्या सिद्धेशी सिद्धरूपिणी॥३५॥ सुरूपिणी सुखमयी सेवकप्रियकारिणी। स्वामिनी सर्वदा सेव्या स्थूलसूक्ष्मापराम्बिका॥३६॥

साररूपा सरोरूपा सत्यभूता समाश्रया।
सितासिता सरोजाक्षी सरोजासनवल्लभा॥३७॥
सरोरुहाभा सर्वाङ्गी सुरेन्द्रादिप्रपूजिता।
महादेवी महेशानी महासारस्वतप्रदा॥३८॥
महासरस्वती मुक्ता मुक्तिदा मलनाशिनी।
महेश्वरी महानन्दा महामन्नमयी मही॥३९॥
महालक्ष्मीर्महाविद्या माता मन्दरवासिनी।
मन्नगम्या मन्नमाता महामन्नफलप्रदा॥४०॥
महामुक्तिर्महानित्या महासिद्धिप्रदायिनी।
महासिद्धा महामाता महदाकारसंयुता॥४१॥

महा महेश्वरी मूर्तिर्मोक्षदा मणिभूषणा। मेनका मानिनी मान्या मृत्युघ्नी मेरुरूपिणी॥४२॥

मदिराक्षी मदावासा मखरूपा मखेश्वरी। महामोहा महामाया मातृणां मूर्प्रिसंस्थिता॥४३॥

महापुण्या मुदावासा महासम्पत्प्रदायिनी। मणिपूरैकनिलया मधुरूपा महोत्कटा॥४४॥

महासूक्ष्मा महाशान्ता महाशान्तिप्रदायिनी। मुनिस्तुता मोहहन्त्री माधवी माधवप्रिया॥४५॥

मा महादेवसंस्तुत्या महिषीगणपूजिता। मृष्टान्नदा च माहेन्द्री महेन्द्रपददायिनी॥४६॥

मतिर्मतिप्रदा मेधा मर्त्यलोकनिवासिनी। मुख्या महानिवासा च महाभाग्यजनाश्रिता॥४७॥

महिला महिमा मृत्युहारी मेधाप्रदायिनी। मेध्या महावेगवती महामोक्षफलप्रदा॥४८॥

महाप्रभाभा महती महादेवप्रियङ्करी। महापोषा महर्द्धिश्च मुक्ताहारविभूषणा॥४९॥

माणिक्यभूषणा मन्ना मुख्यचन्द्रार्धशेखरा। मनोरूपा मनःशुद्धिर्मनःशुद्धिप्रदायिनी॥५०॥

महाकारुण्यसम्पूर्णा मनोनमनवन्दिता। महापातकजालघ्नी मुक्तिदा मुक्तभूषणा॥५१॥

मनोन्मनी महास्थूला महाऋतुफलप्रदा। महापुण्यफलप्राप्या मायात्रिपुरनाशिनी॥५२॥ महानसा महामेधा महामोदा महेश्वरी। मालाधरी महोपाया महातीर्थफलप्रदा॥५३॥

महामङ्गलसम्पूर्णा महादारिद्यनाशिनी। महामखा महामेघा महाकाली महाप्रिया॥५४॥

महाभूषा महादेहा महाराज्ञी मुदालया। भूरिदा भाग्यदा भोग्या भोग्यदा भोगदायिनी॥५५॥

भवानी भूतिदा भूतिर्भूमिर्भूमिसुनायिका। भूतधात्री भयहरी भक्तसारस्वतप्रदा॥५६॥

भुक्तिर्भुक्तिप्रदा भेकी भक्तिर्भक्तिप्रदायिनी। भक्तसायुज्यदा भक्तस्वर्गदा भक्तराज्यदा॥५७॥

भागीरथी भवाराध्या भाग्यासञ्जनपूजिता। भवस्तुत्या भानुमती भवसागरतारणी॥५८॥

भूतिर्भूषा च भूतेशी भाललोचनपूजिता। भूता भव्या भविष्या च भवविद्या भवात्मिका॥५९॥

बाधापहारिणी बन्धुरूपा भुवनपूजिता। भवघ्री भक्तिलभ्या च भक्तरक्षणतत्परा॥६०॥ भक्तार्तिशमनी भाग्या भोगदानकृतोद्यमा। भुजङ्गभूषणा भीमा भीमाक्षी भीमरूपिणी॥६१॥

भाविनी भ्रातृरूपा च भारती भवनायिका। भाषा भाषावती भीष्मा भैरवी भैरवप्रिया॥६२॥ भूतिर्भासितसर्वाङ्गी भूतिदा भूतिनायिका। भास्वती भगमाला च भिक्षादानकृतोद्यमा॥६३॥

भिक्षुरूपा भक्तिकरी भक्तलक्ष्मीप्रदायिनी। भ्रान्तिघ्ना भ्रान्तिरूपा च भूतिदा भूतिकारिणी॥६४॥

भिक्षणीया भिक्षुमाता भाग्यवदृष्टिगोचरा। भोगवती भोगरूपा भोगमोक्षफलप्रदा॥६५॥ भोगश्रान्ता भाग्यवती भक्ताघौघविनाशिनी। ब्राह्मी ब्रह्मस्वरूपा च बृहती ब्रह्मवल्लभा॥६६॥ ब्रह्मदा ब्रह्ममाता च ब्रह्माणी ब्रह्मदायिनी। ब्रह्मेशी ब्रह्मसंस्तुत्या ब्रह्मवेद्या बुधप्रिया॥६७॥ बालेन्द्रशेखरा बाला बलिपूजाकरप्रिया। बलदा बिन्दुरूपा च बालसूर्यसमप्रभा॥६८॥ ब्रह्मरूपा ब्रह्ममयी ब्रध्नमण्डलमध्यगा। ब्रह्माणी बुद्धिदा बुद्धिबुद्धिरूपा बुधेश्वरी॥६९॥ बन्धक्षयकरी बाधनाशनी बन्धुरूपिणी। बिन्द्वालया बिन्दुभूषा बिन्दुनादसमन्विता॥७०॥ बीजरूपा बीजमाता ब्रह्मण्या ब्रह्मकारिणी। बहुरूपा बलवती ब्रह्मजा ब्रह्मचारिणी॥७१॥ ब्रह्मस्तुत्या ब्रह्मविद्या ब्रह्माण्डाधिपवल्लभा। ब्रह्मेशविष्णुरूपा च ब्रह्मविष्णवीशसंस्थिता॥७२॥ बुद्धिरूपा बुधेशानी बन्धी बन्धविमोचनी। अक्षमालाऽक्षराकाराऽक्षराऽक्षरफलप्रदा ॥ ७३॥ अनन्ताऽऽनन्दसुखदाऽनन्तचन्द्रनिभानना। अनन्तमहिमाऽघोराऽनन्तगम्भीरसम्मिता॥७४॥ अदृष्टाऽदृष्टदाऽनन्ताऽदृष्टभाग्यफलप्रदा। अरुन्धत्यव्ययीनाथाऽनेकसद्गुणसंयुता ॥७५॥ अनेकभूषणाऽदृश्याऽनेकलेखनिषेविता अनन्ताऽनन्तस्खदाऽघोराऽघोरस्वरूपिणी॥७६॥ अशेषदेवतारूपाऽमृतरूपाऽमृतेश्वरी । अनवद्याऽनेकहस्ताऽनेकमाणिक्यभूषणा॥७७॥

अनेकविघ्नसंहर्त्री ह्यनेकाभरणान्विता। अविद्याऽज्ञानसंहर्त्री ह्यविद्याजालनाशिनी॥७८॥

अभिरूपाऽनवद्याङ्गी ह्यप्रतर्क्यगतिप्रदा। अकलङ्कारूपिणी च ह्यनुग्रहपरायणा॥७९॥

अम्बरस्थाऽम्बरमयाऽम्बरमालाऽम्बुजेक्षणा । अम्बिकाऽज्जकराऽज्जस्थांऽशुमत्यंशुशतान्विता॥८०॥

अम्बुजाऽनवराऽखण्डाऽम्बुजासनमहाप्रिया। अजरामरसंसेव्याऽजरसेवितपद्युगा॥८१॥

अतुलार्थप्रदाऽर्थैक्याऽत्युदारा त्वभयान्विता। अनाथवत्सलाऽनन्तप्रियाऽनन्तेप्सितप्रदा ॥८२॥ अम्बुजाक्ष्यम्बुरूपाऽम्बुजातोद्भवमहाप्रिया। अखण्डा त्वमरस्तुत्याऽमरनायकपृजिता॥८३॥

अजेया त्वजसङ्काशाऽज्ञाननाशिन्यभीष्टदा। अक्ताऽघनेना चास्त्रेशी ह्यलक्ष्मीनाशिनी तथा॥८४॥

अनन्तसाराऽनन्तश्रीरनन्तविधिपूजिता । अभीष्टाऽमर्त्यसम्पूज्या ह्यस्तोदयविवर्जिता॥८५॥

आस्तिकस्वान्तनिलयाऽस्ररूपाऽस्रवती तथा। अस्खलत्यस्खलद्रपाऽस्खलद्विद्याप्रदायिनी ॥८६॥

अस्खलित्सिद्धिदाऽऽनन्दाऽम्बुजाताऽमरनायिका। अमेयाऽशेषपापद्र्यक्षयसारस्वतप्रदा॥८७॥

जया जयन्ती जयदा जन्मकर्मविवर्जिता। जगत्प्रिया जगन्माता जगदीश्वरवल्लभा॥८८॥ जातिर्जया जितामित्रा जप्या जपनकारिणी। जीवनी जीवनिलया जीवाख्या जीवधारिणी॥८९॥ जाह्नवी ज्या जपवती जातिरूपा जयप्रदा। जनार्दनप्रियकरी जोषनीया जगत्स्थिता॥९०॥ जगञ्चेष्ठा जगन्माया जीवनत्राणकारिणी। जीवातुलतिका जीवजन्मी जन्मनिबर्हणी॥९१॥

जाड्यविध्वंसनकरी जगद्योनिर्जयात्मिका। जगदानन्दजननी जम्बूश्च जलजेक्षणा॥९२॥

जयन्ती जङ्गपूगघ्री जनितज्ञानविग्रहा। जटा जटावती जप्या जपकर्तृप्रियङ्करी॥९३॥

जपकृत्पापसंहर्त्री जपकृत्फलदायिनी। जपापुष्पसमप्रख्या जपाकुसुमधारिणी॥९४॥

जननी जन्मरहिता ज्योतिर्वृत्यभिदायिनी। जटाजूटनचन्द्रार्धा जगत्मृष्टिकरी तथा॥९५॥

जगत्राणकरी जाड्यध्वंसकर्त्री जयेश्वरी। जगद्वीजा जयावासा जन्मभूर्जन्मनाशिनी॥९६॥

जन्मान्त्यरिहता जैत्री जगद्योनिर्जपात्मिका। जयलक्षणसम्पूर्णा जयदानकृतोद्यमा॥९७॥

जम्भराद्यादिसंस्तुत्या जम्भारिफलदायिनी। जगत्रयहिता ज्येष्ठा जगत्रयवशङ्करी॥९८॥

जगत्रयाम्बा जगती ज्वाला ज्वालितलोचना। ज्वालिनी ज्वलनाभासा ज्वलन्ती ज्वलनात्मिका॥९९॥

जितारातिसुरस्तुत्या जितक्रोधा जितेन्द्रिया। जरामरणशून्या च जिनत्री जन्मनाशिनी॥१००॥ जलजाभा जलमयी जलजासनवल्लभा। जलजस्था जपाराध्या जनमङ्गलकारिणी॥१०१॥

कामिनी कामरूपा च काम्या कामप्रदायिनी। कमाली कामदा कर्त्री ऋतुकर्मफलप्रदा॥१०२॥

कृतघ्नघ्नी क्रियारूपा कार्यकारणरूपिणी। कञ्जाक्षी करुणारूपा केवलामरसेविता॥१०३॥

कल्याणकारिणी कान्ता कान्तिदा कान्तिरूपिणी। कमला कमलावासा कमलोत्पलमालिनी॥१०४॥

कुमुद्धती च कल्याणी कान्तिः कामेशवल्लभा। कामेश्वरी कमिलनी कामदा कामबन्धिनी॥१०५॥ कामधेनुः काञ्चनाक्षी काञ्चनाभा कलानिधिः। क्रिया कीर्तिकरी कीर्तिः ऋतुश्रेष्ठा कृतेश्वरी॥१०६॥

ऋतुसर्विक्रियास्तुत्या ऋतुकृत्प्रियकारिणी। क्रेशनाशकरी कर्जी कर्मदा कर्मबन्धिनी॥१०७॥ कर्मबन्धहरी कृष्टा क्रमघ्नी कञ्जलोचना। कन्दर्पजननी कान्ता करुणा करुणावती॥१०८॥

क्रीङ्कारिणी कृपाकारा कृपासिन्धुः कृपावती। करुणार्द्रा कीर्तिकरी कल्मषघ्नी क्रियाकरी॥१०९॥

क्रियाशक्तिः कामरूपा कमलोत्पलगन्धिनी। कला कलावती कूर्मी कूटस्था कञ्जसंस्थिता॥११०॥

कालिका कल्मषघ्नी च कमनीयजटान्विता। करपद्मा कराभीष्टप्रदा ऋतुफलप्रदा॥१११॥

कौशिकी कोशदा काव्या कर्त्री कोशेश्वरी कृशा। कूर्मयाना कल्पलता कालकूटविनाशिनी॥११२॥

कल्पोद्यानवती कल्पवनस्था कल्पकारिणी। कदम्बकुसुमाभासा कदम्बकुसुमप्रिया॥११३॥ कदम्बोद्यानमध्यस्था कीर्तिदा कीर्तिभूषणा। कुलमाता कुलावासा कुलाचारप्रियङ्करी॥११४॥ कुलानाथा कामकला कलानाथा कलेश्वरी। कुन्दमन्दारपुष्पाभा कपर्दस्थितचन्द्रिका॥११५॥ कवित्वदा काव्यमाता कविमाता कलाप्रदा। तरुणी तरुणीताता ताराधिपसमानना॥११६॥ तृप्तिस्तृप्तिप्रदा तर्क्या तपनी तापिनी तथा। तर्पणी तीर्थरूपा च त्रिदशा त्रिदशेश्वरी॥११७॥ त्रिदिवेशी त्रिजननी त्रिमाता त्र्यम्बकेश्वरी। त्रिपुरा त्रिपुरेशानी त्र्यम्बका त्रिपुराम्बिका॥११८॥ त्रिपुरश्रीस्रयीरूपा त्रयीवेद्या त्रयीश्वरी। त्रय्यन्तवेदिनी ताम्रा तापत्रितयहारिणी॥११९॥ तमालसदृशी त्राता तरुणादित्यसन्निभा। त्रैलोक्यव्यापिनी तृप्ता तृप्तिकृत्तत्त्वरूपिणी॥१२०॥ तुर्या त्रैलोक्यसंस्तुत्या त्रिगुणा त्रिगुणेश्वरी। त्रिपुरघ्री त्रिमाता च त्र्यम्बका त्रिगुणान्विता॥१२१॥ तृष्णाच्छेदकरी तृप्ता तीक्ष्णा तीक्ष्णस्वरूपिणी। तुला तुलादिरहिता तत्तद्बह्मस्वरूपिणी॥१२२॥ त्राणकर्त्री त्रिपापघ्नी त्रिपदा त्रिदशान्विता। तथ्या त्रिशक्तिस्त्रिपदा तुर्या त्रैलोक्यसुन्दरी॥१२३॥ तेजस्करी त्रिमृर्त्याद्या तेजोरूपा त्रिधामता। त्रिचऋकर्त्री त्रिभगा तुर्यातीतफलप्रदा॥१२४॥

तेजस्विनी तापहारी तापोपप्लवनाशिनी। तेजोगर्भा तपःसारा त्रिपुरारिप्रियङ्करी॥१२५॥

तन्वी तापससन्तुष्टा तपताङ्गजभीतिनुत्। त्रिलोचना त्रिमार्गा च तृतीया त्रिदशस्तुता॥१२६॥

त्रिसुन्दरी त्रिपथगा तुरीयपददायिनी। शुभा शुभावती शान्ता शान्तिदा शुभदायिनी॥१२७॥

शीतला शूलिनी शीता श्रीमती च शुभान्विता। योगसिद्धिप्रदा योग्या यज्ञेनपरिपूरिता॥१२८॥

यज्या यज्ञमयी यक्षी यक्षिणी यक्षिवल्लभा। यज्ञप्रिया यज्ञपूज्या यज्ञतुष्टा यमस्तुता॥१२९॥

यामिनीयप्रभा याम्या यजनीया यशस्करी। यज्ञकर्त्री यज्ञरूपा यशोदा यज्ञसंस्तुता॥१३०॥

यज्ञेशी यज्ञफलदा योगयोनिर्यजुस्तुता। यमिसेव्या यमाराध्या यमिपूज्या यमीश्वरी॥१३१॥

योगिनी योगरूपा च योगकर्तृप्रियङ्करी। योगयुक्ता योगमयी योगयोगीश्वराम्बिका॥१३२॥

योगज्ञानमयी योनिर्यमाद्यष्टाङ्गयोगता। यन्निताघौघसंहारा यमलोकनिवारिणी॥१३३॥

यष्टिव्यष्टीशसंस्तुत्या यमाद्यष्टाङ्गयोगयुक्। योगीश्वरी योगमाता योगसिद्धा च योगदा॥१३४॥ योगारूढा योगमयी योगरूपा यवीयसी। यत्ररूपा च यत्रस्था यत्रपूज्या च यत्रिता॥१३५॥

युगकर्त्री युगमयी युगधर्मविवर्जिता। यमुना यमिनी याम्या यमुनाजलमध्यगा॥१३६॥ यातायातप्रशमनी यातनानान्निकृन्तनी। योगावासा योगिवन्द्या यत्तच्छब्दस्वरूपिणी॥१३७॥

योगक्षेममयी यत्रा यावदक्षरमातृका। यावत्पदमयी यावच्छब्दरूपा यथेश्वरी॥१३८॥

यत्तदीया यक्षवन्द्या यद्विद्या यतिसंस्तुता। यावद्विद्यामयी यावद्विद्याबृन्दस्वन्दिता॥१३९॥

योगिहृत्पद्मनिलया योगिवर्यप्रियङ्करी। योगिवन्द्या योगिमाता योगीशफलदायिनी॥१४०॥

यक्षवन्द्या यक्षपूज्या यक्षराजसुपूजिता। यज्ञरूपा यज्ञतुष्टा यायज्ञकस्वरूपिणी॥१४१॥

यत्राराध्या यत्रमध्या यत्रकर्तृप्रियङ्करी। यत्रारूढा यत्रपुज्या योगिध्यानपरायणा॥१४२॥

यजनीया यमस्तुत्या योगयुक्ता यशस्करी। योगबद्धा यतिस्तुत्या योगज्ञा योगनायकी॥१४३॥

योगिज्ञानप्रदा यक्षी यमबाधाविनाशिनी। योगिकाम्यप्रदात्री च योगिमोक्षप्रदायिनी॥१४४॥

# ॥फलश्रुतिः॥

इति नाम्नां सरस्वत्याः सहस्रं समुदीरितम्। मन्नात्मकं महागोप्यं महासारस्वतप्रदम्॥१॥

यः पठेच्छृणुयाद्भक्त्या त्रिकालं साधकः पुमान्। सर्वविद्यानिधिः साक्षात् स एव भवति ध्रुवम्॥२॥

लभते सम्पदः सर्वाः पुत्रपौत्रादिसंयुताः। मूकोऽपि सर्वविद्यास् चतुर्मुख इवापरः॥३॥ भूत्वा प्राप्नोति सान्निध्यम् अन्ते धातुर्मुनीश्वर। सर्वमन्त्रमयं सर्वविद्यामानफलप्रदम्॥४॥

महाकवित्वदं पुंसां महासिद्धिप्रदायकम्। कस्मैचिन्न प्रदातव्यं प्राणैः कण्ठगतैरिप॥५॥ महारहस्यं सततं वाणीनामसहस्रकम्। सुसिद्धमस्मदादीनां स्तोत्रं ते समुदीरितम्॥६॥

॥इति श्रीस्कान्दपुराणान्तर्गत-सनत्कुमार-संहितायां नारद-सनत्कुमार-संवादे सरस्वती-सहस्रनाम-स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥



# ॥ श्री-धन्वन्तरि-पूजा ॥

# ॥ पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा॥

(आचम्य)

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवणं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुव्रोम्। (अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा) ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः अविघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गणानां त्वा गणपंति हवामहे कविं केवीनामुंपमश्रंवस्तमम्। ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत् आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद् सादनम्॥

अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।
ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।
पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरघ्यं समर्पयामि।
आचमनीयं समर्पयामि।
ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।
स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।
वस्नार्थमक्षतान् समर्पयामि।
यज्ञोपवीताभरणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।
दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।
गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

# पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

### ॥ अर्चना ॥

१. ॐ सुमुखाय नमः

९. ॐ धूमकेतवे नमः

२. ॐ एकदन्ताय नमः

१०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः

३. ॐ कपिलाय नमः

११. ॐ फालचन्द्राय नमः

४. ॐ गजकर्णकाय नमः

१२. ॐ गजाननाय नमः

५. ॐ लम्बोदराय नमः

१३. ॐ वऋतुण्डाय नमः

६. ॐ विकटाय नमः

१४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः

७. ॐ विघ्नराजाय नमः १५. ॐ हेरम्बाय नमः

८. ॐ विनायकाय नमः

१६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाघ्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्प्रनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वऋतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ। अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि। छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

# ॥ प्रधान-पूजा — धन्वन्तरिपूजा॥

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवणं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

#### ॥ सङ्कल्पः ॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहत्ते अद्य ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकाणां प्रभवादीनां षष्ट्याः संवत्सराणां मध्ये ( ) ३९ नाम संवत्सरे दक्षिणायने शरद्-ऋतौ तुला-मासे कृष्णपक्षे त्रयोदश्यां शुभितथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर / भानु) वासरयुक्तायाम् ( ) $^{8}$ ° नक्षत्र ( ) $^{8}$ १ नाम योग ( ) करण युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् त्रयोदश्यां शुभितथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय-आयुरारोग्य-ऐश्वर्याभिवृद्धर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्धर्थं पुत्रपौत्राभिवृद्धर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्धर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय-व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्य अपनोदनद्वारा सकल-पापक्षयार्थं श्रीधन्वन्तरि-देवता-प्रीत्यर्थं श्री-धन्वन्तरि-देवता-प्रीति-पूर्वकम् आयुष्य-आरोग्य-ऐश्वर्य-अभिवृद्धार्थं यावच्छक्ति ध्यानावाहनादि षोडशोपचार धन्वन्तरि-पूजां करिष्ये तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।

३९पृष्टं ६२१ पश्यताम्

<sup>&</sup>lt;sup>४°</sup>पृष्टं ६३१ पश्यताम्

४१पृष्टं ६३२ पश्यताम्

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। (गणपति-प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

#### ॥ आसन-पूजा॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चासनं कुरु॥

#### ॥ घण्टा-पूजा॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्। घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

### ॥ कलश-पूजा॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः। ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि। (अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्) आपो वा इद॰ सर्वं विश्वां भूतान्यापः प्राणा वा आपः पृशव् आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापृश्छन्दाः स्यापो ज्योतीः इष्यापो यजूः ध्यापः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भवः सुवराप ओम्॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥ कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः। अङ्गेश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च ह्रदा नदाः। आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥ ॐ भूर्भृवः सुवो भूर्भृवः सुवेः।

(इति कलशजलेन सर्वीपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

#### ॥ आत्म-पूजा॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

१. ॐ आत्मने नमः ४. ॐ जीवात्मने नमः

२. ॐ अन्तरात्मने नमः ५. ॐ परमात्मने नमः

३. ॐ योगात्मने नमः ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः

#### समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः। त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

# ॥ पीठ-पूजा ॥

१. ॐ आधारशक्त्ये नमः ८. ॐ रत्नवेदिकाये नमः

२. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः

३. ॐ आदिकूर्माय नमः १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः

४. ॐ आदिवराहाय नमः ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः

५. ॐ अनन्ताय नमः १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः

६. ॐ पृथिव्ये नमः १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः

७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः १४. ॐ योगपीठासनाय नमः

### ॥ गुरु-ध्यानम्॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

# ॥ षोडशोपचार-पूजा॥

चतुर्भुजं पीतवस्त्रं सर्वालङ्कारशोभितम्। ध्याये धन्वन्तरिं देवं सुरासुरनमस्कृतम्॥ युवानं पुण्डरीकाक्षं सर्वाभरणभूषितम्। दधानममृतस्यैव कमण्डलुं श्रिया युतम्॥ यज्ञ-भोग-भुजं देवं सुरासुरनमस्कृतम्। ध्याये धन्वन्तरिं देवं श्वेताम्बरधरं शुभम्॥ अस्मिन् बिम्बे श्री-धन्वन्तरिं ध्यायामि।

स्हस्रंशीर्षा पुरुषः। स्हस्राक्षः स्हस्रंपात्। स भूमें विश्वतो वृत्वा। अत्यंतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥ अस्मिन् बिम्बे श्री-धन्वन्तरिम् आवाह्यामि।

पुरुष पुवेद श्सर्वम्। यद्भूतं यच् भव्यम्। उतामृत्त्वस्येशांनः। यदन्नेनातिरोहंति॥ श्री-धन्वन्तरये नमः, आसनं समर्पयामि।

पुतावानस्य महिमा। अतो ज्यायाईश्च पूर्रुषः। पादौंऽस्य विश्वां भूतानि। त्रिपादंस्यामृतंं दिवि॥

## श्री-धन्वन्तरये नमः, पाद्यं समर्पयामि।

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुंषः। पादौं उस्येहाऽऽभंवात्पुनंः। ततो विश्वङ्कांकामत्। साशनानशने अभि॥ श्री-धन्वन्तरये नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।

तस्माँद्विराडंजायत। विराजो अधि पूर्रुषः। स जातो अत्यरिच्यत। पृश्चाद्भिमयो पुरः॥ श्री-धन्वन्तरये नमः, आचमनीयं समर्पयामि।

यत्पुरुषेण ह्विषां। देवा यज्ञमतंन्वत। वसन्तो अस्याऽऽसीदाज्यम्। ग्रीष्म इध्मः श्ररद्धविः॥ श्री-धन्वन्तरये नमः, मधुपर्कं समर्पयामि।

स्प्तास्याऽऽंसन् परि्धयः। त्रिः स्प्त स्मिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तंन्वानाः। अबंध्रन् पुरुषं पृश्म्॥ श्री-धन्वन्तरये नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

तं युज्ञं बुर्हिषि प्रौक्षन्ं। पुरुषं जातमंग्रतः। तेनं देवा अयंजन्त। साध्या ऋषयश्च ये॥ श्री-धन्वन्तरये नमः, वस्रं समर्पयामि।

तस्मौद्यज्ञात्संर्वहुतंः। सम्भृतं पृषदाज्यम्। पृश्र्इस्ताइश्चेके वायव्यान्। आरुण्यान्ग्राम्याश्च ये॥ श्री-धन्वन्तरये नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

तस्मौद्यज्ञात्संर्वहृतंः। ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दार्शसे जज्ञिरे तस्मौत्। यजुस्तस्मादजायत॥

श्री-धन्वन्तरये नमः, दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

तस्मादश्वां अजायन्त। ये के चोंभयादंतः। गावों ह जज्ञिरे तस्मांत्। तस्मांज्ञाता अजावयः॥ श्री-धन्वन्तरये नमः, पुष्पाणि समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

#### ॥अङ्ग-पूजा॥

🕉 वराहाय नमः 🔑 पादौ पूजयामि ۶. सङ्कर्षणाय नमः — गुल्फौ पूजयामि ₹. कालात्मने नमः — जानुनी पूजयामि ₹. — जङ्घे पूजयामि ४. विश्वरूपाय नमः — ऊरू पूजयामि ५. ऋोढाय नमः — कटिं पूजयामि ६. भोक्रे नमः — मेढ्रं पूजयामि विष्णवे नमः *9*. — नाभिं पूजयामि हिरण्यगर्भाय नमः ۷. श्रीवत्सधारिणे नमः — कुक्षिं पूजयामि — हृदयं पूजयामि १०. परमात्मने नमः — वक्षः पूजयामि ११. सर्वास्त्रधारिणे नमः १२. वनमालिने नमः — कण्ठं पूजयामि — मुखं पूजयामि १३. सर्वात्मने नमः नेत्राणि पूजयामि १४. सहस्राक्षाय नमः

- १५. सुप्रभाय नमः ललाटं पूजयामि
- १६. चम्पकनासिकाय नमः नासिकां पूजयामि
- १७. सर्वेशाय नमः कर्णौ पूजयामि
- १८. सहस्रशिरसे नमः शिरः पूजयामि
- १९. नीलमेघनिभाय नमः केशान् पूजयामि
- २०. महापुरुषाय नमः सर्वाणि अङ्गानि पूजयामि

### ॥ चतुर्विंशति नामपूजा॥

- १. ॐ केशवाय नमः
- २. ॐ नारायणाय नमः
- ३. ॐ माधवाय नमः
- ४. ॐ गोविन्दाय नमः
- ५. ॐ विष्णवे नमः
- ६. ॐ मधुसूदनाय नमः
- ७. ॐ त्रिविक्रमाय नमः
- ८. ॐ वामनाय नमः
- ९. ॐ श्रीधराय नमः
- १०. ॐ हृषीकेशाय नमः
- ११. ॐ पद्मनाभाय नमः
- १२. ॐ दामोदराय नमः

- १३. ॐ सङ्कर्षणाय नमः
- १४. ॐ वासुदेवाय नमः
- १५. ॐ प्रद्युम्नाय नमः
- १६. ॐ अनिरुद्धाय नमः
- १७. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः
- १८. ॐ अधोक्षजाय नमः
- १९. ॐ नृसिंहाय नमः
- २०. ॐ अच्युताय नमः
- २१. ॐ जनार्दनाय नमः
- २२. ॐ उपेन्द्राय नमः
- २३. ॐ हरये नमः
- २४. ॐ श्रीकृष्णाय नमः

# ॥धन्वन्तर्यष्टोत्तरशतनामाविलः॥

धन्वन्तरये नमः स्धापूर्णकलशाढ्यकराय नमः हरये नमः जरामृतित्रस्तदेवप्रार्थना-साधकाय नमः प्रभवे नमः निर्विकल्पाय नमः निस्समानाय नमः मन्दस्मितमुखाम्बुजाय नमः आञ्जनेयप्रापिताद्रये नमः पार्श्वस्थविनतासुताय नमः निमग्रमन्दरधराय नमः कूर्मरूपिणे नमः बृहत्तनवे नमः नीलकुश्चितकेशान्ताय नमः परमाद्भतरूपधृते नमः कटाक्षवीक्षणाश्वस्तवास् किने नमः सिंहविक्रमाय नमः स्मर्तृहृद्रोगहरणाय नमः महाविष्णवंशसम्भवाय नमः प्रेक्षणीयोत्पलश्यामाय नमः २० आयुर्वेदाधिदैवताय नमः भेषजग्रहणानेहस्स्मरणीय-

पदाम्बुजाय नमः नवयौवनसम्पन्नाय नमः किरीटान्वितमस्तकाय नमः नऋकुण्डलसंशोभि-श्रवणद्वयशष्कुलये नमः दीर्घपीवरदोर्दण्डाय नमः कम्बुग्रीवाय नमः अम्बुजेक्षणाय नमः चतुर्भुजाय नमः शङ्खधराय नमः 30 चऋहस्ताय नमः वरप्रदाय नमः सुधापात्रोपरिलसदाम्रपत्र-लसत्कराय नमः शतपद्याढ्यहस्ताय नमः कस्त्रीतिलकाश्चिताय नमः सुकपोलाय नमः स्नासाय नमः सुन्दरभूलताश्चिताय नमः स्वङ्गलीतलशोभाढ्याय नमः गृढजत्रवे नमः 80 महाहनवे नमः दिव्याङ्गदलसद्वाहवे नमः

केयूरपरिशोभिताय नमः अलक्तकारक्तपादाय नमः मूर्तिमते नमः विचित्ररत्नखचितवलयद्वय-वार्धिपुजिताय नमः शोभिताय नमः सुधार्थान्योन्यसंयुध्यद्देवदैतेय-समोक्षसत्सुजातांसाय नमः अङ्गलीयविभूषिताय नमः सान्त्वनाय नमः कोटिमन्मथसङ्काशाय नमः स्धागन्धरसास्वादमिलद्भन्न-सर्वावयवसुन्दराय नमः मनोहराय नमः अमृतास्वादनोद्युक्तदेवसङ्घ-लक्ष्मीसमर्पितोत्फुल्ल-परिष्टुताय नमः कञ्जमालालसङ्गलाय नमः प्ष्यवर्षणसंयुक्तगन्धर्वकुल-लक्ष्मीशोभितवक्षस्काय नमः सेविताय नमः वनमालाविराजिताय नमः 60 शङ्खतूर्यमृदङ्गादि-नवरत्नमणीक्कप्तहारशोभित-स्वादित्राप्सरोवृताय नमः कन्धराय नमः विष्वक्सेनादियुक्पार्श्वाय नमः हीरनक्षत्रमालादिशोभारञ्जित-सनकादिमुनिस्तुताय नमः दिङ्गखाय नमः साश्चर्यसस्मितचतुर्मुखनेत्र-विरजाय नमः समीक्षिताय नमः अम्बरसंवीताय नमः साशङ्कसम्भ्रमदितिदनुवंश्य-विशालोरवे नमः समीडिताय नमः पृथुश्रवसे नमः नमनोन्मुखदेवादिमौलीरत्न-निम्ननाभये नमः लसत्पदाय नमः सक्ष्ममध्याय नमः दिव्यतेजसे नमः स्थुलजङ्घाय नमः पुञ्जरूपाय नमः निरञ्जनाय नमः E o सर्वदेवहितोत्सुकाय नमः सुलक्षणपदाङ्गष्ठाय नमः स्वनिर्गमक्षुब्धदुग्धवाराशये नमः ८० सर्वसामुद्रिकान्विताय नमः

दुन्दुभिस्वनाय नमः गन्धर्वगीतापदानश्रवणोत्क-महामनसे नमः निष्किश्चनजनप्रीताय नमः भवसम्प्राप्तरोगहृते नमः अन्तर्हितसुधापात्राय नमः महात्मने नमः मायिकाग्रण्ये नमः क्षणार्धमोहिनीरूपाय नमः सर्वस्रीशुभलक्षणाय नमः मदमत्तेभगमनाय नमः 90 सर्वलोकविमोहनाय नमः स्रंसन्नीवीग्रन्थिबन्धासक्त-दिव्यकराङ्गिलिने नमः रत्नदवीलसद्धस्ताय नमः देवदैत्यविभागकृते नमः सङ्ख्यातदेवतान्यासाय नमः दैत्यदानववश्वकाय नमः देवामृतप्रदात्रे नमः परिवेषणहृष्टिधये नमः

उन्मुखोन्मुखदैत्येन्द्रदन्त-पङ्किविभाजकाय नमः पुष्पवत्सुविनिर्दिष्टराहुरक्षःशिरोहराय नमः राहुकेतुग्रहस्थानपश्चाद्गति-विधायकाय नमः अमृतालाभनिर्विण्णयुध्यद्देवारि-स्दनाय नमः गरुत्मद्वाहनारूढाय नमः सर्वेशस्तोत्रसंयुताय नमः स्वस्वाधिकारसन्तुष्ट-शऋवह्न्यादिपूजिताय नमः मोहिनीदर्शनायात-स्थाणुचित्तविमोहकाय नमः शचीस्वाहादिदिक्पालपत्नी-मण्डलसन्नुताय नमः वेदान्तवेद्यमहिम्ने नमः सर्वलोकैकरक्षकाय नमः राजराजप्रपूज्याङ्गये नमः ११० चिन्तितार्थप्रदायकाय नमः

॥इति श्री-धन्वन्तर्यष्टोत्तरशतनामाविलः सम्पूर्णा॥

### ॥ उत्तराङ्ग-पूजा॥

यत्पुरुषं व्यंदधुः। कृतिधा व्यंकल्पयन्। मुखं किमंस्य कौ बाहू। कावूरू पादांवुच्येते॥

दशाङ्गं गुग्गुलं धूपं सुगन्धं सुमनोहरम्। धूपं गृहाण देवेश सर्वभूत मनोहर॥ श्री-धन्वन्तरये नमः, धूपमाघ्रापयामि।

ब्राह्मणौऽस्य मुखंमासीत्। बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः। पुन्नाः शूद्रो अंजायत॥

उद्दींप्यस्व जातवेदोऽप्घ्रन्निर्ऋतिं ममं।
पृशू श्र्र्य मह्यमावंह जीवंनं च दिशों दिश॥
मा नों हि श्सीज्ञातवेदो गामश्वं पुरुषं जगंत्।
अविंश्रद्य आगंहि श्रिया मा परिपातय॥
श्री-धन्वन्तरये नमः, अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

चन्द्रमा मनंसो जातः। चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रंश्चाग्निश्चं। प्राणाद्वायुरंजायत॥

श्री-धन्वन्तरये नमः, ( ) निवेदयामि। अमृतापिधानमसि। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

नाभ्यां आसीद्न्तरिक्षम्। शीर्ष्णो द्यौः समंवर्तत। पुद्धां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्। तथां लोका र अंकल्पयन्॥

> पूगीफलसमायुक्तं नागवल्लीदलैर्युतम्। कर्पूरचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

### श्री-धन्वन्तरये नमः, कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि।

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवंर्णं तमंसुस्तु पारे। सर्वाणि रूपाणि विचित्य धीरः। नामानि कृत्वाऽभिवदन् यदास्ते॥ श्री-धन्वन्तरये नमः, समस्त-अपराध-क्षमापनार्थं कर्पूरनीराजनं दर्शयामि। कर्पूरनीरजनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

धाता पुरस्ताद्यमुंदाज्हारं। श्राकः प्रविद्वान् प्रदिश्श्चतंस्रः।
तमेवं विद्वानमृतं इह भविति। नान्यः पन्था अर्यनाय विद्यते॥
योऽपां पुष्पं वेदं। पुष्पंवान् प्रजावांन् पशुमान् भविति।
चन्द्रमा वा अपां पुष्पम्। पुष्पंवान् प्रजावांन् पशुमान् भविति।
य एवं वेदं। योऽपामायतंनं वेदं। आयतंनवान् भविति।
औं तद्व्वाः। औं तद्वायः। औं तद्वात्मा। औं तथ्मत्यम्।
औं तथ्मर्वम्। औं तत्पुरोर्नमः॥
अन्तश्चरितं भूतेषु गृहायां विश्वमूर्तिष्।
त्वं यज्ञस्त्वं वषद्वारस्त्वमिन्द्रस्त्व र रुद्रस्त्वं विष्णुस्त्वं ब्रह्म त्वं प्रजापितिः।
त्वं तंदाप् आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्सुवरोम्॥

सुवर्णरजतैर्युक्तं चामीकरविनिर्मितम्। स्वर्णपुष्पं प्रदास्यामि गृह्यतां मधुसूदन॥

श्री-धन्वन्तरये नमः, वेदोक्तमन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

### श्री-धन्वन्तरये नमः, स्वर्णपुष्पं समर्पयामि।

प्रदक्षिणं करोम्यद्य पापानि नुत माधव। मयार्पितान्यशेषाणि परिगृह्य कृपां कुरु॥ यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण-पदे पदे॥ प्रदक्षिणं कृत्वा।

नमस्ते देवदेवेश नमस्ते भक्तवत्सल। नमस्ते पुण्डरीकाक्ष वासुदेवाय ते नमः॥

नमः सर्विहितार्त्थाय जगदाधाररूपिणे। साष्टाङ्गोऽयं प्रणामोस्तु जगन्नाथ मया कृतः॥

श्री-धन्वन्तरये नमः, अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

युज्ञेनं युज्ञमंयजन्त देवाः। तानि धर्माणि प्रथमान्यांसन्। ते हु नाकं महिमानं सचन्ते। यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ श्री-धन्वन्तरये नमः, छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अनन्तपुण्यफलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥ धन्वन्तरिजयन्ती-पुण्यकालेऽस्मिन् मया क्रियमाण-धन्वन्तरिपूजायां यद्देयमुपायनदानं तत्प्रत्याम्नायार्थं हिरण्यं श्री-धन्वत्रिप्रीतिं कामयमानः मनसोद्दिष्टाय ब्राह्मणाय सम्प्रददे नमः न मम। अनया पूजया श्री-धन्वन्तरिः प्रीयताम्।

### ॥ विसर्जनम्॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपः-पूजा-क्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

इदं व्रतं मया देव कृतं प्रीत्यै तव प्रभो। न्यूनं सम्पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादाञ्जनार्द्दन॥

अस्मात् बिम्बात् श्री-धन्वन्तिरं यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि (अक्षतानिर्पत्वा देवमुत्सर्जयेत्।) अनया पूजया श्री-धन्वन्तिरः प्रीयताम्। ॐ तत्सद्बह्मार्पणमस्त्॥

# ॥ धन्वन्तरि-स्तोत्रम् (मत्स्य पुराणान्तर्गतम्) ॥

क्षीरोदमथनोद्भृतं दिव्य-गन्धानुलेपनम्। सुधा-कलश-हस्तं तं वन्दे धन्वन्तरिं हरिम्॥

### देव-दानवा ऊचुः

नमो लोक-त्र्याध्यक्ष तेजसा जित-भास्कर। नमो विष्णो नमो जिष्णो नमस्ते कैटभार्दन॥१॥

नमः सर्ग-क्रिया-कर्त्रे जगत् पालयते नमः। नमः स्मृतार्ति-नाशाय नमः पुष्कर मालिने॥२॥

दिव्यौषधि-स्वरूपाय सुधा-कलश-पाणये। शङ्ख-चऋ-गदा-पद्म-धारिणे वनमालिने॥३॥

देवेन्द्रादि-सुरेड्याय नमः क्षीराब्धि-जन्मने। निर्गुणाय विशेषाय हरये ब्रह्म-रूपिणे॥४॥ जगत् प्रतिष्ठितं यत्र जगतां यो न दृश्यते। नमः सूक्ष्मातिसूक्ष्माय तस्मै देवाय शङ्क्षिने॥५॥ यं न पश्यन्ति पश्यन्तं जगदप्यखिलं नराः।

यस्मिन् वनानि पर्वता नद्यश्चैवाखिलं जगत्। तस्मै नमोऽस्तु जगताम् आधाराय नमो नमः॥७॥

अपश्यद्भिर्जगद् यश्च दृश्यते हृदि संस्थितः॥६॥

आद्य-प्रजापतिर्यश्च यः पितॄणां परः पतिः। पतिः सुराणां यस्तस्मै नमः कृष्णाय वेधसे॥८॥

यः प्रवृत्तौ निवृत्तौ च इज्यते कर्मभिः स्वकैः। स्वर्गापवर्ग-फल-दो नमस्तस्मै गदा-भृते॥९॥

यश्चिन्त्यमानो मनसा सद्यः पापं व्यपोहति। नमस्तस्मै विशुद्धाय पराय हरि-मेधसे॥१०॥

यं बुद्धा सर्वभूतानि देव-देवेशमव्ययम्। न पुनर्जन्म-मरणे प्राप्नुवन्ति नमामि तम्॥११॥

यो यज्ञे यज्ञ-परमैरिज्यते यज्ञ-संज्ञितः। तं यज्ञ-पुरुषं विष्णुं नमामि प्रभुमीश्वरम्॥१२॥

गीयते सर्व-वेदेषु वेद-विद्भिर्विदां गतिः। यस्तस्मै वेद-वेद्याय विष्णवे जिष्णवे नमः॥१३॥ यो विश्वं समुत्पन्नं यस्मिश्च लयमेष्यति।

विश्वोद्भव-प्रतिष्ठाय नमस्तस्मै महात्मने॥१४॥

ब्रह्मादि-स्तम्ब-पर्यन्तं येन विश्वमिदं ततम्। माया जालं समुत्तर्त्तं तमुपेन्द्रं नमाम्यहम्॥१५॥

विषाद-तोष-रोषाद्यैर्योऽजस्रं सुख-दुःखजम्। नृत्यत्यखिल-भूत-स्थस्तमुपेन्द्रं नमाम्यहम्॥१६॥ यमाराध्य विशुद्धेन कर्मणा मनसा गिरा। तरन्त्यविद्याम् अखिलाम् आदि-वैद्यं नमाम्यहम्॥१७॥

यः स्थितो विश्व-रूपेण बिभर्ति ह्यखिलौषधीः। तं रत्न-कलशोद्भासि-हस्तं धन्वन्तरिं नुमः॥१८॥

विश्वं विश्व-पतिं विष्णुं तं नमामि प्रजापतिम्। मूर्त्या चासुरमय्या तु तद्विधान् विनिहन्ति यः॥१९॥

रात्रि-रूपं सूर्य-रूपं भजेत्तं सान्ध्य-रूपिणम्। हन्ति विद्या-प्रदानेन यो वा अज्ञान-जं तमः॥२०॥

यस्तु भेषज-रूपेण जगदाप्याययेत् सदा। यस्याक्षिणी चन्द्र-सूर्यौ सर्व-लोक-शुभङ्करः। पश्यतः कर्म सततं तं च धन्वन्तरिं नुमः॥२१॥

यस्मिन् सर्वेश्वरे वश्यं जगत् स्थावर-जङ्गमम्। आभाति तमजं विष्णुं नमामि प्रभुमव्ययम्॥२२॥ ॥इति मत्स्य-पुराणान्तर्गतं धन्वन्तरि-स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥



# ॥ श्री-लक्ष्मी-कुबेर-पूजा ॥

# ॥ पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा॥

(आचम्य)

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवणं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुव्रोम्। (अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा) ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः अविघ्रेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्रेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गुणपंति र हवामहे कविं कविनामुप्मश्रंवस्तमम्। ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत् आ नः शृण्वत्रूतिभिः सीद् सादनम्॥

अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।
ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।
पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरध्यं समर्पयामि।
आचमनीयं समर्पयामि।
ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।
स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।
वस्नार्थमक्षतान् समर्पयामि।
यज्ञोपवीताभरणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।
दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।
गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

### पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

#### ॥ अर्चना ॥

१. ॐ सुमुखाय नमः ९. ॐ धूमकेतवे नमः

२. ॐ एकदन्ताय नमः १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः

३. ॐ कपिलाय नमः ११. ॐ फालचन्द्राय नमः

४. ॐ गजकर्णकाय नमः १२. ॐ गजाननाय नमः

५. ॐ लम्बोदराय नमः १३. ॐ वऋतुण्डाय नमः

६. ॐ विकटाय नमः १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः

७. ॐ विघ्नराजाय नमः १५. ॐ हेरम्बाय नमः

८. ॐ विनायकाय नमः १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाघ्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्प्रनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वऋतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ। अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि। छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

# ॥ प्रधान-पूजा — श्रीमहालक्ष्मी-पूजा॥

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविद्रोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

#### ॥सङ्कल्पः॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते अद्य ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकाणां प्रभवादीनां षष्ट्याः संवत्सराणां )<sup>४२</sup> नाम संवत्सरे दक्षिणायने शरद्-ऋतौ तुला-मासे कृष्णपक्षे अमावास्यायां शुभितथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर / भानु) वासरयुक्तायाम् ( ) ४३ नक्षत्र ( ) ४४ नाम योग (चतुष्पात्/नागव) करण युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् अमावास्यायां शुभितथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय-आयुरारोग्य-ऐश्वर्याभिवृद्धर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्धर्थं पुत्रपौत्राभि-वृद्धर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्धर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय-व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्य अपनोदनद्वारा सकल-पापक्षयार्थं श्रीमहालक्ष्मी-प्रीत्यर्थं श्रीमहालक्ष्मी-पूजां करिष्ये। तदङ्गं मातृगणपूजां नवग्रहपूजां लोकपाल-पूजां च करिष्ये। तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये। श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। शोभनार्थे क्षेमाय पुनरागमनाय

<sup>&</sup>lt;sup>४२</sup>पृष्टं ६२१ पश्यताम्

<sup>&</sup>lt;sup>४३</sup>पृष्टं ६३१ पश्यताम्

<sup>&</sup>lt;sup>४४</sup>पृष्टं ६३२ पश्यताम्

च। (गणपति-प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

#### ॥ आसन-पूजा॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चासनं कुरु॥

#### ॥ घण्टा-पूजा॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्। घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

#### ॥ कलश-पूजा॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।

ओम्॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः। ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि। (अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्) आपो वा इद॰ सर्वं विश्वां भूतान्यापः प्राणा वा आपः पृशव् आपोऽन्नमापोऽमृंतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापश्छन्दाः स्यापो

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

ज्योती् इष्यापो यजू इष्यापेः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भुवः सुवराप

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः। अङ्गेश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च ह्रदा नदाः। आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥ ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवेः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

#### ॥ आत्म-पूजा॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

१. ॐ आत्मने नमः ४. ॐ जीवात्मने नमः

२. ॐ अन्तरात्मने नमः ५. ॐ परमात्मने नमः

३. ॐ योगात्मने नमः ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः

#### समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः। त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

#### ॥ पीठ-पूजा ॥

१. ॐ आधारशक्त्ये नमः ८. ॐ रत्नवेदिकाये नमः

२. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः

३. ॐ आदिकूर्माय नमः १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः

४. ॐ आदिवराहाय नमः ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः

५. ॐ अनन्ताय नमः १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः

६. ॐ पृथिव्ये नमः १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः

७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः १४. ॐ योगपीठासनाय नमः

#### ॥ गुरु-ध्यानम्॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

#### ॥ मातृगण-पूजा॥

१. ॐ गौर्ये नमः ९. ॐ स्वधाये नमः

२. ॐ पद्मायै नमः १०. ॐ स्वाहायै नमः

३. ॐ शच्ये नमः ११. ॐ मातृभ्यो नमः

४. ॐ मेधायै नमः १२. ॐ लोकमातुभ्यो नमः

५. ॐ सावित्र्ये नमः १३. ॐ धृत्ये नमः

६. ॐ विजयायै नमः १४. ॐ पुष्ट्ये नमः

७. ॐ जयायै नमः १५. ॐ तुष्ट्यै नमः

८. ॐ देवसेनायै नमः १६. ॐ आत्मनः कुलदेवतायै नमः

षोडश-मातृभ्यो नमः ध्यायामि। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि। पाद्यं समर्पयामि। अर्घ्यं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। ॐ भूर्भुवस्सुवः।

शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वस्रार्थमक्षतान् समर्पयामि।

आभरणार्थम् अक्षतान् समर्पयामि।

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।

गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालिकां समर्पयामि। धूपदीपार्थम् अक्षतान् समर्पयामि।

नैवेद्यम्। (कदलीफलानि)

कर्पूरताम्बूलं कर्पूरनीराजनार्थं अक्षतान् समर्पयामि। प्रार्थनाः समर्पयामि।

> आयुरारोग्यमैश्वर्यं ददध्वं मातरो मम। निर्विघ्नं सर्वकार्येषु कुरुध्वं सगणाधिपाः॥

गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया। देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः॥

धृतिः पृष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवता। गणेशेनाधिका ह्येता वरदाभयपाणयः॥

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि। छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

### ॥ नवग्रहपूजा ॥

(चित्रे दर्शितया रीत्या मण्डलानि प्रतिष्ठाप्य आरभेत।)

५. बुधः	३. शुकः	४. सोमः
हरितवस्त्रम्	श्वेतवस्त्रम्	श्वेतवस्त्रम्
मुद्ग-मण्डलम्	राजमाष-मण्डलम्	तण्डुल-मण्डलम्
६. बृहस्पतिः	१. आदित्यः	२. अङ्गारकः
पीतवस्त्रम्	रक्तवस्त्रम्	रक्तवस्त्रम्
चणक-मण्डलम्	गोधूम-मण्डलम्	आढकी-मण्डलम्
९. केतुः	७. शनैश्चरः	८. राहुः
कृष्णवस्त्रम्	कृष्णवस्त्रम्	कृष्णवस्त्रम्
कुलत्थ-मण्डलम्	तिल-मण्डलम्	माष-मण्डलम्

जपाकुसुमसङ्काशं काश्यपेयं महाद्युतिम्। तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥१॥

आ सत्येन रजंसा वर्तमानो निवेशयंत्रमृतं मर्त्यं च। हिर्ण्ययंन सिवता रथेनाऽदेवो यांति भुवना विपश्यन्। अग्निं दूतं वृंणीमहे होतारं विश्ववेदसम्। अस्य यज्ञस्यं सुऋतुम्॥ येषामीशं पशुपतिः पशूनां चतुंष्पदामृत चं द्विपदाम्। निष्क्रीतोऽयं यज्ञियं भागमेतु रायस्पोषा यजंमानस्य सन्तु॥ अधिदेवता प्रत्यिधदेवता सिहताय आदित्याय नमः॥

अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहितं आदित्य-ग्रहं ध्यायामि। आवाहयामि।

> धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्। कुमारं शक्तिहस्तं च मङ्गलं प्रणमाम्यहम्॥२॥

अग्निर्मूर्द्धा दिवः क्कुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपाः रेताः सि जिन्वति। स्योना पृथिवि भवाऽनृक्षरा निवेशंनी। यच्छांनः शर्मं सप्रथाः। क्षेत्रंस्य पतिना वयः हिते नेव जयामिस। गामश्वं पोषियत्वा स नो मृडातीदृशे॥ अधिदेवता प्रत्यिदेवता सहिताय अङ्गारकाय नमः॥

अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहितं अङ्गारक-ग्रहं ध्यायामि। आवाहयामि।

> हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्। सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्॥३॥

प्रवंः शुक्रायं भानवं भरध्वः ह्व्यं मृतिं चाग्नये सुपूतम्॥ यो दैव्यांनि मानुषा जनूः ध्यन्तर्विश्वांनि विद्या ना जिगांति॥ इन्द्राणीमासु नारिषु सुपत्नीमहमंश्रवम्। न ह्यंस्या अपुरं चन जुरसा मरेते पतिः॥ इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवांमहे जर्नेभ्यः। अस्माकंमस्तु केवंलः॥ अधिदेवता प्रत्यिधदेवता सहिताय शुक्राय नमः॥

अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सिहतं शुऋ-ग्रहं ध्यायामि। आवाहयामि।

> दिधशङ्खातुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्। नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्॥४॥

आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम् वृष्णियम्। भवा वार्जस्य सङ्ग्थे॥ अप्सु मे सोमो अब्रवीदन्तर्विश्वांनि भेषजा। अग्निं च विश्वशंम्भुवमापेश्च विश्वभेषजीः। गौरी मिमाय सिल्लानि तक्षती। एकंपदी द्विपदी सा चतुंष्पदी। अष्टापदी नवंपदी बभूवुषी। सहस्राक्षरा पर्मे व्योमन्। अधिदेवता प्रत्यिधदेवता सिताय सोमाय नमः॥

अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सिहतं सोम-ग्रहं ध्यायामि। आवाहयामि।

> प्रियङ्गुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्। सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्॥५॥

उद्बंध्यस्वाग्ने प्रतिंजागृह्येनिमष्टापूर्ते स॰ सृंजेथाम्यं चं। पुनः कृण्व॰ स्त्वां पितरं युवानम्न्वाता॰ सीत्विय तन्तुंमेतम्॥ इदं विष्णुर्विचंक्रमे त्रेधा निदंधे पदम्। समूंढमस्यपा॰ सुरे॥ विष्णों र्राटंमिस् विष्णोः पृष्ठमंसि विष्णोः श्रेष्ठेंस्थो विष्णोः स्यूरंसि विष्णों धुवमंसि वैष्ण्वमंसि विष्णां प्रत्यिदेवता प्रत्यिदेवता सहिताय बुधाय नमः॥

अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सिहतं बुध-ग्रहं ध्यायामि। आवाहयामि। देवानां च ऋषीणां च गुरुं काश्चनसन्निभम्। बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्॥६॥

बृहंस्पते अतियद्यों अहींद्विमद्विभाति ऋतुंमुझनेषु। यद्दीदयुच्छवंसर्तप्रजात तद्स्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ इन्द्रंमरुत्व इह पाहि सोमं यथां शार्याते अपिंबः सुतस्यं। तव प्रणीती तवं शूरशर्मुन्नाविवासन्ति क्वयः सुयज्ञाः॥ ब्रह्मंजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमृतः सुरुचो वेन आंवः। सबुध्नियां उपमा अस्य विष्ठाः सृतश्च योनिमसंतश्च विवः॥ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय बृहस्पतये नमः॥

अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सिहतं बृहस्पति-ग्रहं ध्यायामि। आवाहयामि।

> नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्। छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्॥७॥

शं नों देवीर्भिष्टंय आपों भवन्तु पीतयैं। शंयोर्भिस्नंवन्तु नः॥ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वां जातानि परिता बंभूव। यत्कांमास्ते जुहुमस्तन्नों अस्तु वयक्ष स्यांम पतंयो रयीणाम्। इमं यंमप्रस्त्रमाहि सीदाऽङ्गिरोभिः पितृभिः संविदानः। आत्वा मन्नाः कविश्वस्ता वंहन्त्वेना रांजन् ह्विषां मादयस्व॥ अधिदेवता प्रत्यिधदेवता सहिताय शनैश्वराय नमः॥

अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सिहतं शनैश्चर-ग्रहं ध्यायामि। आवाहयामि।

> अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्। सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्॥८॥

कयां नश्चित्र आभुंवदूती स्वावृंधः सर्खां। कया शचिंष्ठया वृता। आऽयङ्गोः पृश्निरक्रमीदसंनन्मातर् पुनंः। पितरं च प्रयन्त्सुवंः। यत्ते देवी निर्ऋतिराबुबन्ध दामं ग्रीवास्वंविचर्त्यम्। इदं ते तद्विष्याम्यायुंषो न मध्यादथांजीवः पितुमंद्धि प्रमुंक्तः॥ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय राहवे नमः॥

अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहितं राहु-ग्रहं ध्यायामि। आवाहयामि।

> पलाशपुष्पसङ्काशं तारकाग्रहमस्तकम्। रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्॥९॥

केतुं कृण्वन्नेकेतवे पेशों मर्या अपेशसें। समुषद्भिरजायथाः॥ ब्रह्मा देवानां पद्वीः कंवीनामृषिर्विप्राणां मिहृषो मृगाणांम्। श्येनो गृध्राणाः स्विधितिर्वनांनाः सोमः प्वित्रमत्येति रेभन्। (ऋक्) सिचेत्र चित्रं चितयन् तमस्मे चित्रंक्षत्र चित्रतंमं वयोधाम्। चन्द्रं र्यिं पुरुवीरं बृहन्तं चन्द्रंचन्द्राभिर्गृणते युंवस्व॥ अधिदेवता प्रत्यिधदेवता सिहताय केतवे नमः॥ अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यिधदेवता-सिहतं केतु-ग्रहं ध्यायामि। आवाह्यामि।

आदित्यादि नवग्रहदेवताभ्यो नमः आसनं समर्पयामि। पाद्यं समर्पयामि। अर्घ्यं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि। वस्नार्थम् अक्षतान् समर्पयामि।

यज्ञोपवीताभरणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

दिव्यपरिमलगन्थान् धारयामि।

गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पैः पूजयामि।

- १. ॐ आदित्याय नमः
- २. ॐ अङ्गारकाय नमः

- ३. ॐ शुक्राय नमः
- ४. ॐ सोमाय नमः
- ५. ॐ बुधाय नमः
- ६. ॐ बृहस्पतये नमः
- ७. ॐ शनैश्चराय नमः
- ८. ॐ राहवे नमः
- ९. ॐ केतवे नमः

नानाविध-परिमल-पत्र-पुष्पाणि समर्पयामि।

आदित्यादि नवग्रहदेवताभ्यो नमः धूपमाघ्रापयामि।

दीपं दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि। कर्पूरनीराजनं दर्शयामि।

प्रार्थनाः समर्पयामि। अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

आदित्यादि नवग्रहदेवताभ्यो नमः (अक्षतान् समर्पयित्वा) यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। शोभनार्थे क्षेमाय पुनरागमनाय च।

# ॥ लोकपाल-पूजा॥

प्राणान् आयम्य। ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम् अद्य-पूर्वोक्त एवं गुण-विशेषेण विशिष्टायाम् अस्यां अमावास्यायां शुभितथौ श्रीमहालक्ष्मी-पूजाङ्गभूतां ब्रह्म-विष्णु-त्र्यम्बक-क्षेत्रपाल-पूजां करिष्ये।

अस्मिन् कूर्चे ब्रह्मादीन् ध्यायामि। ब्रह्मन् सरस्वत्या सह इह आगच्छ आगच्छ। सरस्वती-सहित-ब्रह्माणम् आवाहयामि। आसनं समर्पयामि।

लक्ष्मी-विष्णुभ्यां नमः।

ध्यायामि। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि।

दुर्गा-त्र्यम्बकाभ्यां नमः।

ध्यायामि। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि।

क्षेत्रपाल-भूमिभ्यां नमः।

ध्यायामि। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि।

ब्रह्मादिभ्यो नमः पाद्यं समर्पयामि। अर्घ्यं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि। वस्नार्थम् अक्षतान् समर्पयामि। यज्ञोपवीताभरणार्थे अक्षतान् समर्पयामि। दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पैः पूजयामि।

नैवेद्यम्।

कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि। कर्पूरनीराजनं दर्शयामि। प्रार्थनाः समर्पयामि। अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि। ब्रह्मादिभ्यो नमः (अक्षतान् समर्पयित्वा) यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। शोभनार्थे क्षेमाय पुनरागमनाय च।

#### ॥ प्रार्थना ॥

विघ्नराजं नमस्कृत्य नमस्कृत्य विधिं परम्। विष्णुं रुद्रं श्रियं दुर्गां वन्दे भक्त्या सरस्वतीम्॥

क्षेत्राधिपं नमस्कृत्य दिवानाथं निशाकरम्। धरणीगर्भसम्भूतं शशिपुत्रं बृहस्पतिम्॥

दैत्याचार्यं नमस्कृत्य सूर्यपुत्रं महाग्रहम्। राहुकेतू नमस्कृत्य यज्ञारम्भे विशेषतः॥

शकाद्या देवताः सर्वाः मुनींश्च प्रणमाम्यहम्। गर्गं मुनिं नमस्कृत्य नारदं मुनिसत्तमम्॥ विश्वामित्रं मुनिशार्दूलं विश्वामित्रं भृगोः सुतम्। व्यासं मुनिं नमस्कृत्य आचार्याश्च तपोधनान्॥ सर्वान् तान् प्रणमाम्येवं यज्ञरक्षाकरान् सदा। शङ्खचक्रगदाशार्ङ्ग-पद्मपाणिर्जनार्दनः॥ सर्वासु दिक्षु रक्षेन्मां यावत् पूजावसानकम्।

# ॥ षोडशोपचार-पूजा॥

अरुणकमलसंस्था तद्रजःपुञ्जवर्णा करकमलधृतेष्टाऽभीतियुग्माम्बुजा मणिमकुटविचित्रालङ्कृता कल्पजातैः भवतु भुवनमाता सन्ततं श्रीः श्रियै नः॥ हिरंण्यवर्णां हरिंणीं सुवर्णरंजतुस्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मेयीं लक्ष्मीं जातेवेदो म् आवंह॥१॥ अस्मिन् बिम्बे श्रीमहालक्ष्मीं ध्यायामि। आवाहये महालक्ष्मि चैतन्यस्तन्यदायिनि। विष्णुपत्नि जगन्मातः पूजां गृह्णीष्व ते नमः॥ श्रीमहालक्ष्मीम् आवाहयामि। तां म् आवंह जातंवेदो लक्ष्मीमनंपगामिनींम्। यस्यां हिरंण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानुहम्॥२॥ तप्तकाश्चनवर्णामं मुक्तामणिविराजितम्। अमलं कमलं दिव्यम् आसनं प्रतिगृह्यताम्॥ आसनं समर्पयामि।

अश्वपूर्वा रंथम्ध्यां हस्तिनांदप्रबोधिनीम्।

श्रियं देवीमुपंह्वये श्रीर्मादेवीर्जुषताम्॥३॥

गङ्गातीर्थ-समुद्भृतं गन्ध-पुष्पादिभिर्युतम्। पाद्यं ददाम्यहं देवि गृहाणाऽऽशु नमोऽस्तु ते॥ पाद्यं समर्पयामि।

कां सोऽस्मितां हिरंण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलंन्तीं तृप्तां तुर्पयंन्तीम्। पुद्मे स्थितां पद्मवंर्णां तामिहोपंह्वये श्रियम्॥४॥

> एलागन्धसमायुक्तं स्वर्णपात्रे प्रपूरितम्। अर्घ्यं गृहाण मद्दत्तं प्रसीद त्वं महेश्वरि॥

> > अर्घ्यं समर्पयामि।

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलंन्तीं श्रियं लोके देवर्जुष्टामुदाराम्। तां पद्मिनीमीं शर्रणमहं प्रपंद्येऽलक्ष्मीमें नश्यतां त्वां वृणे॥५॥

> सर्वलोकस्य या शक्तिः ब्रह्मरुद्रादिभिः स्तुता। ददाम्याचमनं तस्यै महालक्ष्म्यै मनोहरम्॥

आचमनीयं समर्पयामि।

आदित्यवंर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तवं वृक्षोऽथ बिल्वः। तस्य फलांनि तपसा नुंदन्तु मायान्तंरायाश्चं बाह्या अंलक्ष्मीः॥६॥

> घृतेन स्नपयामि। पुनः शुद्धोदकं समर्पयामि। पयसा स्नपयामि। पुनः शुद्धोदकं समर्पयामि। दभ्ना स्नपयामि। पुनः शुद्धोदकं समर्पयामि। मधुना स्नपयामि। पुनः शुद्धोदकं समर्पयामि। पश्चामृतेन स्नपयामि। पुनः शुद्धोदकं समर्पयामि।

(कलशजलेन श्री-सूक्तं जप्य) शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

उपैंतु मां देवस्खः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥७॥

> दिव्याम्बरयुगं सूक्ष्मं कश्चकं च मनोहरम्। महालक्ष्मि महादेवि गृहाणेदं मयाऽर्पितम्॥ वस्त्रं समर्पयामि।

क्षुत्पिपासामेलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नांशयाम्यहम्। अभूतिमसंमृद्धिं च सर्वां निर्णुंद मे गृहात्॥८॥

> माङ्गल्यमणिसंयुक्तं मुक्ताविद्रुमसंयुतम्। दत्तं मङ्गलसूत्रं च गृहाण हरिवल्लभे॥ कण्ठसूत्रं समर्पयामि।

रत्नकङ्कणवैडूर्य-मुक्ताहारादिकानि च। सुप्रसन्नेन मनसा दत्तानि त्वं गृहाण मे॥ आभरणानि समर्पयामि।

गुन्धद्वारां दुंराधर्षां नित्यपुंष्टां करीषिणींम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपंह्वये श्रियम्॥९॥

> सिन्दूरारुणवर्णा च सिन्दूरतिलकप्रिया। अतो दत्तं मया देवि सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥ तिलकं समर्पयामि।

मनसः काममाकूतिं वाचः स्त्यमेशीमहि। पृश्नां रूपमन्नस्य मिय श्रीः श्रयतां यशः॥१०॥

मन्दार-पारिजाताद्याः पाटली केतकी तथा। माकन्दं कुरवं चैव गृहाणाऽऽशु नमोऽस्तु ते॥ पुष्पमालां धारयामि।

#### ॥ अङ्ग-पूजा॥

- १. ॐ चपलायै नमः पादौ पूजयामि
- २. चश्रलायै नमः जानुनी पूजयामि
- ३. कमलायै नमः कटिं पूजयामि
- ४. कात्यायन्यै नमः नाभिं पूजयामि
- ५. जगन्मात्रे नमः जठरं पूजयामि
- ६. विश्ववल्लभायै नमः वक्षःस्थलं पूजयामि
- ७. कमलवासिन्यै नमः हस्तौ पूजयामि
- ८. पद्माननायै नमः मुखं पूजयामि
- ९. कमलपत्राक्ष्यै नमः नेत्रत्रयं पूजयामि
- १०. श्रियै नमः शिरः पुजयामि
- ११. महालक्ष्म्यै नमः सर्वाणि अङ्गानि पूजयामि

### ॥ अष्टलक्ष्मी-अर्चना॥

(प्राच्याम् आरभ्य अष्टदिक्षु प्रदक्षिणेन)

१. ॐ आद्यलक्ष्म्ये नमः

२. ॐ विद्यालक्ष्म्यै नमः

(	_
लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामार्वा	लः

377

३. ॐ सौभाग्यलक्ष्म्यै नमः

४. ॐ अमृतलक्ष्म्यै नमः

५. ॐ कामलक्ष्म्यै नमः

६. ॐ सत्यलक्ष्म्यै नमः

७. ॐ भोगलक्ष्म्यै नमः

८. ॐ योगलक्ष्म्यै नमः

आद्यादिलक्ष्मीनां षोडशोपचार-पूजार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

### ॥ लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामावलिः॥

#### ॥ध्यानम्॥

वन्दे पद्मकरां प्रसन्नवदनां सौभाग्यदां भाग्यदां हस्ताभ्यामभयप्रदां मणिगणैर्नानाविधैर्भूषिताम्। भक्ताभीष्टफलप्रदां हरिहरब्रह्मादिभिः सेवितां पार्श्वे पङ्कजशङ्खपद्मनिधिभिर्युक्तां सदा शक्तिभिः॥

सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतमांशुकगन्धमाल्यशोभे। भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्मम्॥

प्रकृत्यै नमः विकृत्यै नमः विद्यायै नमः सर्वभूतिहतप्रदायै नमः श्रद्धायै नमः विभूत्यै नमः स्र्रभ्ये नमः परमात्मिकायै नमः वाचे नमः

पद्मालयाये नमः

पद्मायै नमः

शुचये नमः स्वाहायै नमः

स्वधायै नमः

सुधायै नमः

धन्यायै नमः

हिरण्मय्यै नमः

लक्ष्म्यै नमः

नित्यपुष्टायै नमः

विभावर्ये नमः

२०

लक्ष्यष्टात्तरशतनामावालः		3/8	
अदित्यै नमः		पद्ममुख्यै नमः	
दित्यै नमः		पद्मनाभप्रियायै नमः	
दीप्तायै नमः		रमायै नमः	
वसुधायै नमः		पद्ममालाधरायै नमः	
वसुधारिण्यै नमः		देव्यै नमः	५०
कमलायै नमः		पद्मिन्यै नमः	
कान्तायै नमः		पद्मगन्धिन्यै नमः	
क्षमायै नमः		पुण्यगन्धायै नमः	
क्षीरोदसम्भवायै नमः		सुप्रसन्नायै नमः	
अनुग्रहप्रदायै नमः	\$ o	प्रसादाभिमुख्यै नमः	
बुद्धये नमः		प्रभाये नमः	
अनघायै नमः		चन्द्रवदनायै नमः	
हरिवल्लभायै नमः		चन्द्रायै नमः	
अशोकायै नमः		चन्द्रसहोदर्ये नमः	
अमृतायै नमः		चतुर्भुजायै नमः	६०
दीप्तायै नमः		चन्द्ररूपायै नमः	
लोकशोकविनाशिन्यै नमः		इन्दिरायै नमः	
धर्मनिलयायै नमः		इन्दुशीतलायै नमः	
करुणायै नमः		आह्रादजनन्यै नमः	
लोकमात्रे नमः	४०	पुष्ट्ये नमः	
पद्मप्रियायै नमः		शिवायै नमः	
पद्महस्तायै नमः		शिवकर्यै नमः	
पद्माक्ष्ये नमः		सत्यै नमः	
पद्मसुन्दर्ये नमः		विमलायै नमः	
पद्मोद्भवायै नमः		विश्वजनन्यै नमः	७०
		•	

लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामावलिः		379		
तुष्ट्ये नमः	वरलक्ष्म्यै नमः	९०		
दारिद्यनाशिन्यै नमः	वसुप्रदायै नमः			
प्रीतिपुष्करिण्यै नमः	शुभायै नमः			
शान्तायै नमः	हिरण्यप्राकारायै नमः			
शुक्रमाल्याम्बरायै नमः	समुद्रतनयायै नमः			
श्रिये नमः	जयायै नमः			
भास्कर्ये नमः	मङ्गलायै देव्यै नमः			
बिल्वनिलयायै नमः	विष्णुवक्षःस्थलस्थितायै नमः			
वरारोहायै नमः	विष्णुपत्र्ये नमः			
यशस्विन्यै नमः ८०	प्रसन्नाक्ष्यै नमः			
वसुन्धरायै नमः	नारायणसमाश्रितायै नमः	१००		
उदाराङ्गायै नमः	दारिद्यध्वंसिन्यै नमः			
हरिण्यै नमः	देव्यै नमः			
हेममालिन्यै नमः	सर्वोपद्रवहारिण्यै नमः			
धनधान्यकर्यै नमः	नवदुर्गायै नमः			
सिद्धौ नमः	महाकाल्यै नमः			
स्त्रेणसौम्यायै नमः	ब्रह्मविष्णुशिवात्मिकायै नमः			
शुभप्रदाये नमः	त्रिकालज्ञानसम्पन्नायै नमः			
नृपवेश्मगतानन्दायै नमः	भुवनेश्वर्यै नमः	१०८		
॥इति श्री-लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा॥				

### ॥ उत्तराङ्ग-पूजा॥

कुर्दमेन प्रजाभूता मृथि सम्भव कुर्दम। श्रियं वासयं मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥११॥

> वनस्पति-रसोत्पन्नो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री-महालक्ष्म्यै नमः धूपमाघ्रापयामि। आपः सृजन्तुं स्निग्धानि चिक्कीत वंस मे गृहे। नि चं देवीं मातर्ं श्रियंं वासयं मे कुले॥१२॥

> कार्पासवर्तिसंयुक्तं घृतयुक्तं मनोहरम्। तमोनाशकरं दीपं गृहाण परमेश्वरि॥

श्री-महालक्ष्म्यै नमः अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि। ॐ भूर्भुवः सुवंः। + ब्रह्मणे स्वाहाँ।

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्मेयीं लक्ष्मीं जातंवेदो म आवंह॥१३॥

> नैवेद्यं गृह्यतां लक्ष्मि भक्ष्य-भोज्य-समन्वितम्। षड्रसैर्रचितं दिव्यं लक्ष्मीदेवि नमोऽस्तु ते॥

#### नैवेद्यम्

- श्री-महालक्ष्म्यै नमः ( ) निवेदयामि, अमृतापिधानमसि। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि। पूगीफलसमायुक्तं नागवल्लीदलैर्युतम्। कर्पूरचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥ श्री-महालक्ष्म्यै नमः कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि। श्री-महालक्ष्म्यै नमः समस्त-अपराध-क्षमापनार्थं कर्पूरनीराजनं दर्शयामि। कर्पूरनीरजनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।
योऽपां पुष्पं वेदं। पुष्पंवान् प्रजावाँन् पशुमान् भंवति।
चन्द्रमा वा अपां पुष्पम्। पुष्पंवान् प्रजावाँन् पशुमान् भंवति।
य एवं वेदं। योऽपामायतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति।
ओं तद्व्रह्मा ओं तद्वायुः। ओं तदात्मा। ओं तथ्सत्यम्।
ओं तथ्सर्वम्। ओं तत्पुरोर्नमः॥
अन्तश्चरति भूतेषु गुहायां विश्वमूर्तिषु।
त्वं यज्ञस्त्वं वषद्वारस्त्वमिन्द्रस्त्व र रुद्रस्त्वं विष्णुस्त्वं ब्रह्म त्वं प्रजापितिः।
त्वं त्रंदाप् आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्सुवरोम्॥
श्री-महालक्ष्म्ये नमः वेदोक्तमन्नपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।
स्वर्णपुष्पं समर्पयामि
अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि
छन्नचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि

# ॥ईशानादि पूजा॥

ॐ ईशानाय नमः

ॐ शचिने नमः

ॐ मरुद्धो नमः

ॐ प्रजापतये नमः

ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः

ॐ अमरराजाय नमः

ॐ सूर्याय नमः

ॐ विश्वकर्मणे नमः

- ॐ गुरवे नमः
- ॐ अथर्वाङ्गिरोभ्यां नमः
- ॐ अश्विभ्यां नमः
- ॐ मित्रावरुणाभ्यां नमः
- ॐ विष्णवे नमः
- ॐ ईशानादिभ्यो नमः

षोडशोपचार-पूजार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

# ॥ कुबेर पूजा॥

धनदाय नमस्तुभ्यं निधिपद्माय ते नमः। भवन्तु त्वत्प्रसादान्मे धनधान्यानि सम्पदः॥

कुबेरं पुष्पकगतं निधिभिर्नवभिर्युतम्। सुवर्णवर्णं पिङ्गाक्षं मनसा भावयाम्यहम्॥

नरवाहन यक्षेश सर्वपुण्यजनेश्वर।

कुबेराय नमः, षोडशोपचार-पूजां करिष्ये। कुबेराय नमः, आवाहयामि। कुबेराय नमः, आसनं समर्पयामि। कुबेराय नमः, पाद्यं समर्पयामि। कुबेराय नमः, अर्घ्यं समर्पयामि। कुबेराय नमः, आचमनीयं समर्पयामि। कुबेराय नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि। कुबेराय नमः, वस्त्रं समर्पयामि। कुबेराय नमः, दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। कुबेराय नमः, अक्षतान् समर्पयामि। कुबेराय नमः, पुष्पैः पूजयामि। कुबेराय नमः, धूपमाघ्रापयामि। कुबेराय नमः, अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि। कुबेराय नमः, कदलीफलानि निवेदयामि,

कुबेराय नमः, अमृतापिधानमिस। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि। कुबेराय नमः, कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि। कुबेराय नमः, कर्पूरनीराजनं दर्शयामि। कुबेराय नमः, कर्पूरनीरजनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि। कुबेराय नमः, समस्तोपचारान् समर्पयामि।

> मनुजबाह्यविमानवरस्तुतं गरुडरत्निमं निधिनायकम्। शिवसखं मुकुटादिविभूषितं वररुचिं तमहमुपास्महे सदा॥

अगस्त्य देवदेवेश मर्त्यलोकहितेच्छया। पूजयामि विधानेन प्रसन्नसुमुखो भव॥

# ॥ कुबेराष्टोत्तरशतनामाविलः॥

कुबेराय नमः धनदाय नमः श्रीमते नमः यक्षेशाय नमः गृह्यकेश्वराय नमः निधीशाय नमः शङ्करसखाय नमः महालक्ष्मीनिवासभुवे नमः महापद्मनिधीशाय नमः पूर्णाय नमः १० पद्मनिधीश्वराय नमः

शङ्काख्यनिधिनाथाय नमः

मकराख्यनिधिप्रियाय नमः
सुकच्छपाख्यनिधीशाय नमः
मुकुन्दनिधिनायकाय नमः
कुन्दाख्यनिधिनाथाय नमः
नीलिनित्याधिपाय नमः
महते नमः
वरिनिधिदीपाय नमः
पूज्याय नमः
र॰
लक्ष्मीसाम्राज्यदायकाय नमः
इलिपलापत्याय नमः
कोशाधीशाय नमः

कुबेराष्टोत्तरशतनामावलिः			384
अश्वारूढाय नमः		सौम्यादिकेश्वराय नमः	५०
विश्ववन्द्याय नमः		पुण्यात्मने नमः	
विशेषज्ञाय नमः		पुरुहृतिश्रियै नमः	
विशारदाय नमः		सर्वपुण्यजनेश्वराय नमः	
नलकूबरनाथाय नमः		नित्यकीर्तये नमः	
मणिग्रीवपित्रे नमः	3 o	निधिवेत्रे नमः	
गूढमन्त्राय नमः		लङ्काप्राक्तननायकाय नमः	
वैश्रवणाय नमः		यक्षिणीवृताय नमः	
चित्रलेखामनःप्रियाय नमः		यक्षाय नमः	
एकपिनाकाय नमः		परमशान्तात्मने नमः	
अलकाधीशाय नमः		यक्षराजे नमः	६०
पौलस्त्याय नमः		यक्षिणीहृदयाय नमः	
नरवाहनाय नमः		किन्नरेश्वराय नमः	
कैलासशैलनिलयाय नमः		किम्पुरुषनाथाय नमः	
राज्यदाय नमः		खङ्गायुधाय नमः	
रावणाग्रजाय नमः	४०	विशिने नमः	
चित्रचैत्ररथाय नमः		ईशानदक्षपार्श्वस्थाय नमः	
उद्यानविहाराय नमः		वायुवामसमाश्रयाय नमः	
विहारसुकुतूहलाय नमः		धर्ममार्गनिरताय नमः	
महोत्सहाय नमः		धर्मसम्मुखसंस्थिताय नमः	
महाप्राज्ञाय नमः		नित्येश्वराय नमः	७०
सदापुष्पकवाहनाय नमः		धनाध्यक्षाय नमः	
सार्वभौमाय नमः		अष्टलक्ष्म्याश्रितालयाय नमः	
अङ्गनाथाय नमः		मनुष्यधर्मिणे नमः	
सोमाय नमः		सुकृतिने नमः	
		I	

कोषलक्ष्मीसमाश्रिताय नमः धनलक्ष्मीनित्यवासाय नमः धान्यलक्ष्मीनिवासभुवे नमः अष्टलक्ष्मीसदावासाय नमः गजलक्ष्मीस्थिरालयाय नमः राज्यलक्ष्मीजन्मगेहाय नमः ८० धैर्यलक्ष्मीकृपाश्रयाय नमः अखण्डैश्वर्यसंयुक्ताय नमः नित्यानन्दाय नमः सुखाश्रयाय नमः नित्यतृप्ताय नमः निर्यतृप्ताय नमः निर्यह्वाय नमः

नित्यकामाय नमः निराकाङ्काय नमः निरूपाधिकवासभुवे नमः ९० शान्ताय नमः

सर्वगुणोपेताय नमः

सर्वज्ञाय नमः सर्वसम्मताय नमः शर्वाणीकरुणापात्राय नमः सदानन्दकुपालयाय नमः गन्धर्वकुलसंसेव्याय नमः सौगन्धिकुसुमप्रियाय नमः सुवर्णनगरीवासाय नमः निधिपीठसमाश्रयाय नमः महामेरूत्तरस्थाय नमः महर्षिगणसंस्तृताय नमः तृष्टाय नमः शूर्पणखाज्येष्ठाय नमः शिवपूजारताय नमः अनघाय नमः राजयोगसमायुक्ताय नमः राजशेखरपूज्याय नमः राजराजाय नमः

॥इति श्री-कुबेराष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा॥

#### ॥ नमस्कारः ॥

नमस्ते देवदेवेशि नमस्ते ईफ्सितप्रदे। नमस्तेऽस्तु जगन्मातः नमस्ते केशवप्रिये॥

महालक्ष्म्यै नमः, नमस्करोमि॥

## ॥ प्रार्थना ॥

दामोदिर नमस्तेऽस्तु नमस्रैलोक्यमातृके। नमस्तेऽस्तु महालक्ष्मि त्राहि मां परमेश्विरि॥ सर्वदा देहि मे द्रव्यं दानायापि च भुक्तये। धनधान्यं धरां हर्षं कीर्तिम् आयुश्च देहि मे॥ यन्मया वाञ्छितं देवि तत्सर्वं सफलं कुरु। न बाधन्तां कुकर्माणि सङ्कटं मे निवारय॥

#### ॥ अपराध-क्षमापनम्॥

न्यूनं वाऽप्यगुणं वाऽपि यन्मया मोहितं कृतम्। सर्वं तदस्तु सम्पूर्णं त्वत्प्रसादान्महेश्वरि॥ लक्ष्मि त्वत्कृपया नित्यं कृता पूजा तवाऽऽज्ञया। स्थिरा भव गृहे ह्यस्मिन् मम सन्तानकर्मणि॥

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अनन्तपुण्यफलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥ आश्वयुज-अमावास्या-पुण्यकालेऽस्मिन् मया क्रियमाण-श्रीमहालक्ष्मी-पूजायां यद्देयमुपायनदानं तत्प्रतिनिधित्वेन हिरण्यं श्री-महालक्ष्मीप्रीतिं कामयमानः मनसोद्दिष्टाय ब्राह्मणाय सम्प्रददे नमः न मम। अनया पूजया श्री-महालक्ष्मीः प्रीयताम्।

> कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्। करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्बह्मार्पणमस्तु।

# ॥ कार्त्तिकसोमवारार्घ्यम्॥

## ॥ अर्घ्यम्॥

सोमवारे दिवा स्थित्वा निराहारो महेश्वर। नक्तं भोक्ष्यामि देवेश अर्पयामि सदाशिव॥१॥

—साम्बशिवाय नमः इदमर्घ्यम्। (त्रिः)

नक्तं च सोमवारे च सोमनाथ जगत्पते। अनन्तकोटिसौभाग्यं अक्षय्यं कुरु शङ्कर ॥२॥

—साम्बशिवाय नमः इदमर्घ्यम्। (त्रिः)

नमः सोमविभूषाय सोमायामिततेजसे। इदमर्घ्यं प्रदास्यामि सोमो यच्छतु मे शिवम्॥३॥

—साम्बशिवाय नमः इदमर्घ्यम्। (त्रिः)

आकाशदिग्शरीराय ग्रहनक्षत्रमालिने। इदमर्घ्यं प्रदास्यामि सुप्रीतो वरदो भव॥४॥

—साम्बशिवाय नमः इदमर्घ्यम्। (त्रिः)

अम्बिकायै नमस्तुभ्यं नमस्ते देवि पार्वति। अनघे वरदे देवि गृहाणार्घ्यं प्रसीद मे॥५॥

—पार्वत्यै नमः इदमर्घ्यम्। (त्रिः)

सुब्रह्मण्य महाभाग कार्त्तिकेय सुरेश्वर। इदमर्घ्यं प्रदास्यामि सुप्रीतो वरदो भव॥६॥

-- सुब्रह्मण्याय नमः इदमर्घ्यम्। (त्रिः)

नन्दिकेश महाभाग शिवध्यानपरायण। शैलादये नमस्तुभ्यं गृहाणार्घ्यमिदं प्रभो॥७॥

—नन्दिकेश्वराय नमः इदमर्घ्यम्। (त्रिः)

[नीलकण्ठ-पदाम्भोज-परिस्फुरित-मानस । शम्भोः सेवाफलं देहि चण्डेश्वर नमोऽस्तु ते॥८॥

—चण्डिकेश्वराय नमः इदमर्घ्यम्। (त्रिः)]

# ॥ श्री-स्कन्द-षष्ठी-पूजा ॥

## ॥ पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा॥

(आचम्य)

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवणं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविद्रोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुव्रोम्। (अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा) ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः अविघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गुणपंति रहवामहे कविं कविनामुप्मश्रंवस्तमम्। ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत् आ नेः शृण्वन्नृतिभिः सीद् सादेनम्॥

अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।
ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।
पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरघ्यं समर्पयामि।
आचमनीयं समर्पयामि।
ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।
स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।
वस्नार्थमक्षतान् समर्पयामि।
यज्ञोपवीताभरणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।
दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।
गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

### पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

#### ॥ अर्चना ॥

१. ॐ सुमुखाय नमः

९. ॐ धूमकेतवे नमः

२. ॐ एकदन्ताय नमः

१०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः

३. ॐ कपिलाय नमः

११. ॐ फालचन्द्राय नमः

४. ॐ गजकर्णकाय नमः

१२. ॐ गजाननाय नमः

५. ॐ लम्बोदराय नमः

१३. ॐ वऋतुण्डाय नमः

६. ॐ विकटाय नमः

१४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः

७. ॐ विघ्नराजाय नमः १५. ॐ हेरम्बाय नमः

८. ॐ विनायकाय नमः

१६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाघ्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्प्रनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वऋतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ। अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि। छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

### ॥ प्रधान-पूजा — स्कन्द-पूजा॥

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवणं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुव्रोम्।

#### ॥ सङ्कल्पः॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूत्ते अद्य ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकाणां प्रभवादीनां षष्ट्याः संवत्सराणां मध्ये ( ) भ नाम संवत्सरे दक्षिणायने शरद-ऋतौ तुला/वृश्चिक-मासे कार्तिक-शुक्लपक्षे षष्ठ्यां शुभितथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर / भानु) वासरयुक्तायाम् ( ) <sup>४६</sup> नक्षत्र ( ) <sup>४७</sup> नाम योग (कौलव/तैतिल) करण युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्यां षष्ठ्यां शुभतिथौ श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-प्रीत्यर्थं प्रसाद-सिद्धर्थम् सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय-आयुरारोग्य-ऐश्वर्याणाम् अभिवृद्धर्थं धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्धार्थं पुत्रपौत्राभिवृद्धार्थम् इष्ट-काम्यार्थसिद्धर्थं मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय-व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्य अपनोदनद्वारा सकल-पापक्षयार्थं गो-भू-धन-धान्य-पुत्र-पौत्रादि अनविच्छिन्न-सन्तति स्थिर-लक्ष्मी-कीर्ति-लाभ शत्रु-पराजयादि सदभीष्ट-सिद्धार्थं दिव्यज्ञान-सिद्धार्थं

<sup>&</sup>lt;sup>४५</sup>पृष्टं ६२१ पश्यताम्

<sup>&</sup>lt;sup>४६</sup>पृष्टं ६३१ पश्यताम्

<sup>&</sup>lt;sup>४७</sup>पृष्टं ६३२ पश्यताम्

यावच्छिक्ति-ध्यानावाहनादि षोडशोपचारैः कल्पोक्त-प्रकारेण श्री-वर्ही-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-पूजाराधनं करिष्ये। तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये। श्रीविघ्नेश्वराय नमः, यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। (गणपति-प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

#### ॥ घण्टापूजा॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्। कुरु घण्टारवं तत्र देवताऽऽह्वानलाश्चनम्॥

#### ॥ कलशपूजा ॥

(कलशं गन्धपुष्पाक्षतैः अभ्यर्च्य)

गङ्गायै नमः। यमुनायै नमः। गोदावर्यै नमः। सरस्वत्यै नमः। नर्मदायै नमः। सिन्धवे नमः। कावेर्यै नमः। सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि। (अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्।)

> कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः। अङ्गेश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च ह्रदा नदाः। आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

#### ॥ आत्मपूजा॥

आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

#### ॥ मण्टप-पूजा॥

ॐ ह्रीं श्रीं मण्डुकादि-परतत्त्वात्म-पर्यन्त-पीठ-शक्ति-देवताभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीं शं शकुन्यै नमः।

ॐ ह्रीं श्रीं रें रेवत्यै नमः।

ॐ ह्रीं श्रीं पूं पूताय नमः।

ॐ ह्रीं श्रीं मं महापूतायै नमः।

ॐ ह्रीं श्रीं निं निशीथिन्यै नमः।

ॐ ह्रीं श्रीं मां मालिन्यै नमः।

ॐ ह्रीं श्रीं शीं शीतलायै नमः।

ॐ ह्रीं श्रीं शुं शुद्धायै नमः।

ॐ हीं श्रीं विं विश्वतोमुख्यै नमः।

### षोडशोपचार-पूजा

सिन्धूरारुणमिन्दुकान्तिवदनं केयूरहारादिभिः दिव्यैराभरणैर्विभूषिततनुं स्वर्गादिसौख्यप्रदम्। अम्भोजाभयशक्तिकुक्कुटधरं रक्ताङ्गराकोञ्चलं सुब्रह्मण्यमुपास्महे प्रणमतां भीतिप्रणाशोद्यतम्॥

अस्मिन् कुम्भे सपरिवारं श्री-वही-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिनम् ध्यायामि।

षड्वकं शिखिवाहनं त्रिनयनं चित्राम्बरालङ्कृतं वज्रं शक्तिमसिं त्रिशूलमभयं खेटं धनुश्चक्रकम्। पाशं कुक्कुटमङ्कुशं च वरदं दोर्भिर्दधानं सदा ध्यायेदीप्सितसिद्धिदं शिवसुतं स्कन्दं सुराराधितम्॥

अस्मिन् कुम्भे सपरिवारं श्री-वही-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिनम् आवाहयामि।

आवाहिता भव। संस्थापिता भव। सन्निहिता भव। सन्निरुद्धा भव। अवकुण्ठिता भव। सुप्रीता भव। सुप्रसन्ना भव। वरदा भव। स्वामिन् सर्वजगन्नाथ यावत्पूजावसानकम्। तावत् त्वं प्रीतिभावेन दीपेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

देवदेव महाराज प्रियेश्वर प्रजापते। आसनं दिव्यमीशान दास्येयं परमेश्वर॥

श्री-वही-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः, आसनं समर्पयामि।

यद्भक्तिलेशसम्पर्कात् परमानन्दविग्रह। तस्मै ते शरणाजाय पाद्यं शुद्धाय कल्पये॥

श्री-वही-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः, पाद्यं समर्पयामि।

तापत्रयहरं दिव्यं परमानन्दलक्षणम्। तापत्रयविनिर्मुक्तं तवार्घ्यं कल्पयाम्यहम्॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।

वेदानामपि वेद्याय देवानां देवतात्मने। आचामं कल्पयामीश शुद्धानां शुद्धिहेतवे॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः, आचमनीयं समर्पयामि।

तरुपुष्पसमुद्भृतं सुस्वादु मधुरं मधु। तेजःपुष्टिकरं दिव्यं प्रतिगृह्णीष्व देवेश॥

श्री-वही-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः, मधुपर्कं समर्पयामि।

पयोदिधघृतं चैव मधु च शर्करायुतम्। पश्चामृतं मयाऽऽनीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः, पश्चामृत-स्नानं समर्पयामि।

कामधेनुसमुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम्। पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः, क्षीरस्नानं समर्पयामि।

भागीरथी यमुना चैव गौतमी च सरस्वती। तासां सुसलिलमादाय करोमि त्वामभिषेचनम्॥

श्री-वही-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः, स्नानं समर्पयामि। स्नानान्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलञ्जानिवारणे। मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्॥

श्री-वही-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतात्मकम्। उपवीतं प्रदास्यामि गृहाण परमेश्वर॥

श्री-वही-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

मुक्ता-माणिक्य-वैडूर्य-रत्न-हेमादि-निर्मितम्। नानाभरणं दास्यामि स्वीकुरुष्व दयानिधे॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः, नवमणि-मकुटादि नानाभरणम् समर्पयामि। चन्दनागरुकपूरकस्तूरीकुङ्कमान्वितम् । विलेपनं सुरश्रेष्ठ प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम्॥

### श्री-वही-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः, गन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्रा-कुङ्कुमं समर्पयामि।

अक्षतांश्च सुरश्रेष्ठ कुङ्कुमाक्ता सुशोभिताः। मया निवेदिता भक्त्या गृह्यतां परमेश्वर॥

### श्री-वही-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

मन्दार-पारिजाताज्ञ-केतक्युत्पल-पाटलैः । मिल्लका-जाति-वकुलैः पुष्पैस्त्वां पूजयाम्यहम्॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः, मल्लिकादि-सर्वर्तु-पुष्पमालाः समर्पयामि।

#### ॥ अङ्ग-पूजा ॥

?.	शरवणोद्भृताय नमः	— पादौ पूजयामि।
२.	रौद्रेयाय नमः	— जङ्घे पूजयामि।
₹.	सहस्रपदे नमः	— जानुनी पूजयामि।
٧.	भयनाशनाय नमः	— ऊरू पूजयामि।
۷.	बालग्रहाच्छाटनाय नमः	— मेढ़ं पूजयामि
€.	भक्तपालनाय नमः	— गुह्यं पूजयामि।
<i>७</i> .	गुणनिधये नमः	— कटिं पूजयामि।
۷.	महनीयाय नमः	— नाभिं पूजयामि।
۶.	सर्वाभीष्टप्रदाय नमः	— हृदयं पूजयामि।
80	विशालवक्षसे नमः	— वक्षस्थलं पजयामि।

११.	शक्तिधराय नमः	— हस्तान् पूजयामि।
१२.	अभयप्रदानाय नमः	— बाहून् पूजयामि।
१३.	नीलकण्ठ-तनयाय नमः	— कण्ठान् पूजयामि।
१४.	पतित-पावनाय नमः	— चुबुकानि पूजयामि।
१५.	पुरुष-श्रेष्ठाय नमः	— नासिकानि पूजयामि
१६.	कमललोचनाय नमः	— लोचनानि पूजयामि
१७.	पुण्यमूर्तये नमः	— श्रोत्राणि पूजयामि
१८.	कस्तूरी-तिलकाश्चित-फालाय नग	मः— ललाटानि पूजयामि
१९.	षडाननाय नमः	— मुखानि पूजयामि
२०.	त्रिलोकगुरवे नमः	— ओष्ठानि पूजयामि।
२२.	सहस्रशीर्ष्णे नमः	— शिरांसि पूजयामि।
२३.	भस्मोद्धूलित-विग्रहाय नमः	— सर्वाण्यङ्गानि पूजयामि।

## ॥ षोडश-नामपूजा॥

ξ.	30	ज्ञानशक्त्यात्मने नमः			षण्मुखाय नमः
₹.	<i>ॐ</i>	स्कन्दाय नमः	१०.	<i>ॐ</i>	कुक्कुटध्वजाय नमः
₹.	ૐ	अग्निभुवे नमः	११.	<i>ॐ</i>	शक्तिधराय नमः
४.	<b>ॐ</b>	बाहुलेयाय नमः	१२.	<i>ॐ</i>	गुहाय नमः
٤.	ૐ	गाङ्गेयाय नमः	१३.	<i>ॐ</i>	ब्रह्मचारिणे नमः
€.	ૐ	शरवणोद्भवाय नमः	१४.	<i>ॐ</i>	षण्मातुराय नमः
છ.	ૐ	कार्त्तिकेयाय नमः	१५.	<i>ॐ</i>	क्रौश्रभित्रे नमः
۷.	<i>ॐ</i>	कुमाराय नमः	१६.	<i>ॐ</i>	शिखिवाहनाय नमः

२०

## ॥ षण्मुखसहस्रनामावलिः ॥ ॥ध्यानम्॥

ध्यायेत्षण्मुखिमन्दुकोटिसदृशं रत्नप्रभाशोभितम्। बालार्कद्युतिषिद्भरीटिवलसत्केयूरहारान्वितम् ॥१॥ कर्णालम्बितकुण्डलप्रविलसद्गण्डस्थलाशोभितम्। काश्चीकङ्कणिकिङ्किणीरवयुतं शृङ्गारसारोदयम्॥२॥ ध्यायेदीप्सितसिद्धिदं शिवसुतं श्रीद्वादशाक्षं गृहम्। खेटं कुक्कुटमङ्कुशं च वरदं पाशं धनुश्चक्रकम्॥३॥ वज्रं शक्तिमसिं च शूलमभयं दोर्भिर्धृतं षण्मुखम्।

अचिन्त्यशक्तये नमः
अनघाय नमः
अक्षोभ्याय नमः
अपराजिताय नमः
अनाथवत्सलाय नमः
अमोघाय नमः
अशोकाय नमः
अज्ञराय नमः
अभयाय नमः
अत्युदाराय नमः
१०
अघहराय नमः

अग्रगण्याय नमः

चित्रमयूरवाहनगतं चित्राम्बरालङ्कृतम्॥४॥ अद्रिजासुताय नमः अनन्तमहिम्ने नमः अपाराय नमः अनन्तसौख्यप्रदाय नमः अव्ययाय नमः अनन्तमोक्षदाय नमः अनादये नमः अप्रमेयाय नमः अक्षराय नमः अच्युताय नमः अकल्मषाय नमः अभिरामाय नमः

षण्मुखसहस्रनामावलिः			399
अग्रधुर्याय नमः		आगमसंस्तुताय नमः	५०
अमितविक्रमाय नमः		आर्तसंरक्षणाय नमः	
अनाथनाथाय नमः		आद्याय नमः	
अमलाय नमः		आनन्दाय नमः	
अप्रमत्ताय नमः		आर्यसेविताय नमः	
अमरप्रभवे नमः	३०	आश्रितेष्टार्थवरदाय नमः	
अरिन्दमाय नमः		आनन्दिने नमः	
अखिलाधाराय नमः		आर्तफलप्रदाय नमः	
अणिमादिगुणाय नमः		आश्चर्यरूपाय नमः	
अग्रण्ये नमः		आनन्दाय नमः	
अचश्चलाय नमः		आपन्नार्तिविनाशनाय नमः	६०
अमरस्तुत्याय नमः		इभवऋानुजाय नमः	
अकलङ्काय नमः		इष्टाय नमः	
अमिताशनाय नमः		इभासुरहरात्मजाय नमः	
अग्निभुवे नमः		इतिहासश्रुतिस्तुत्याय नमः	
अनवद्याङ्गाय नमः	४०	इन्द्रभोगफलप्रदाय नमः	
अद्भुताय नमः		इष्टापूर्तफलप्राप्तये नमः	
अभीष्टदायकाय नमः		इष्टेष्टवरदायकाय नमः	
अतीन्द्रियाय नमः		इहामुत्रेष्टफलदाय नमः	
अप्रमेयात्मने नमः		इष्टदाय नमः	
अदृश्याय नमः		इन्द्रवन्दिताय नमः	90
अव्यक्तलक्षणाय नमः		ईडनीयाय नमः	
आपद्विनाशकाय नमः		ईशपुत्राय नमः	
आर्याय नमः		ईप्सितार्थप्रदायकाय नमः	
आढ्याय नमः		ईतिभीतिहराय नमः	
	ı	•	

षण्मुखसहस्रनामावलिः			400
ईड्याय नमः		ऊर्घ्वगाय नमः	१००
ईषणात्रयवर्जिताय नमः		ऊर्ध्वाय नमः	
उदारकीर्तये नमः		ऊर्ध्वलोकैकनायकाय नमः	
उद्योगिने नमः		ऊर्जावते नमः	
उत्कृष्टोरुपराऋमाय नमः		ऊर्जितोदाराय नमः	
उत्कृष्टशक्तये नमः	८०	ऊर्जितोर्जितशासनाय नमः	
उत्साहाय नमः		ऋषिदेवगणस्तुत्याय नमः	
उदाराय नमः		ऋणत्रयविमोचनाय नमः	
उत्सवप्रियाय नमः		ऋजुरूपाय नमः	
उज्जृम्भाय नमः		ऋजुकराय नमः	
उद्भवाय नमः		ऋजुमार्गप्रदर्शनाय नमः	११०
उग्राय नमः		ऋतम्बराय नमः	
उदग्राय नमः		ऋजुप्रीताय नमः	
उग्रलोचनाय नमः		ऋषभाय नमः	
उन्मत्ताय नमः		ऋद्धिदाय नमः	
उग्रशमनाय नमः	९०	ऋताय नमः	
उद्वेगघ्नोरगेश्वराय नमः		लुलितोद्धारकाय नमः	
उरुप्रभावाय नमः		लूतभवपाशप्रभञ्जनाय नमः	
उदीर्णाय नमः		एणाङ्कधरसत्पुत्राय नमः	
उमापुत्राय नमः		एकस्मै नमः	
उदारिधये नमः		एनोविनाशनाय नमः	१२०
ऊर्धरेतःसुताय नमः		ऐश्वर्यदाय नमः	
ऊर्ध्वगतिदाय नमः		ऐन्द्रभोगिने नमः	
ऊर्जपालकाय नमः		ऐतिह्याय नमः	
ऊर्जिताय नमः		ऐन्द्रवन्दिताय नमः	
		•	

षण्मुखसहस्रनामाविलिः			401
ओजस्विने नमः		अस्खलत्सुगतिदायकाय नमः	१५०
ओषधिस्थानाय नमः		कार्तिकेयाय नमः	
ओजोदाय नमः		कामरूपाय नमः	
ओदनप्रदाय नमः		कुमाराय नमः	
औदार्यशीलाय नमः		ऋौश्चदारणाय नमः	
औमेयाय नमः	१३०	कामदाय नमः	
औग्राय नमः		कारणाय नमः	
औन्नत्यदायकाय नमः		काम्याय नमः	
औदार्याय नमः		कमनीयाय नमः	
औषधकराय नमः		कृपाकराय नमः	
औषधाय नमः		काश्चनाभाय नमः	१६०
औषधाकराय नमः		कान्तियुक्ताय नमः	
अंशुमालिने नमः		कामिने नमः	
अंशुमालीड्याय नमः		कामप्रदाय नमः	
अम्बिकातनयाय नमः		कवये नमः	
अन्नदाय नमः	१४०	कीर्तिकृते नमः	
अन्धकारिसुताय नमः		कुकुटधराय नमः	
अन्धत्वहारिणे नमः		कूटस्थाय नमः	
अम्बुजलोचनाय नमः		कुवलेक्षणाय नमः	
अस्तमायाय नमः		कुङ्गमाङ्गाय नमः	
अमराधीशाय नमः		क्रमहराय नमः	१७०
अस्पष्टाय नमः		कुशलाय नमः	
अस्तोकपुण्यदाय नमः		कुक्कुटध्वजाय नमः	
अस्तामित्राय नमः		कृशानुसम्भवाय नमः	
अस्तरूपाय नमः		क्रूराय नमः	
		ı	

षण्मुखसहस्रनामावलिः			402
क्रूरघ्नाय नमः		खेचरेशाय नमः	२००
कलितापहृते नमः		ख्यातेहाय नमः	
कामरूपाय नमः		खेचरस्तुताय नमः	
कल्पतरवे नमः		खरतापहराय नमः	
कान्ताय नमः		खस्थाय नमः	
कामितदायकाय नमः	१८०	खेचराय नमः	
कल्याणकृते नमः		खेचराश्रयाय नमः	
क्रेशनाशाय नमः		खण्डेन्दुमौलितनयाय नमः	
कृपालवे नमः		खेलाय नमः	
करुणाकराय नमः		खेचरपालकाय नमः	
कलुषघ्नाय नमः		खस्थलाय नमः	२१०
क्रियाशक्तये नमः		खण्डितार्काय नमः	
कठोराय नमः		खेचरीजनपूजिताय नमः	
कवचिने नमः		गाङ्गेयाय नमः	
कृतिने नमः		गिरिजापुत्राय नमः	
कोमलाङ्गाय नमः	१९०	गणनाथानुजाय नमः	
कुशप्रीताय नमः		गुहाय नमः	
कुत्सितघ्नाय नमः		गोन्ने नमः	
कलाधराय नमः		गीर्वाणसंसेव्याय नमः	
ख्याताय नमः		गुणातीताय नमः	
खेटधराय नमः		गुहाश्रयाय नमः	२२०
खिन नमः		गतिप्रदाय नमः	
खट्वाङ्गिने नमः		गुणनिधये नमः	
खलनिग्रहाय नमः		गम्भीराय नमः	
ख्यातिप्रदाय नमः		गिरिजात्मजाय नमः	
		•	

षण्मुखसहस्रनामावलिः			403
गूढरूपाय नमः		घोषाय नमः	२५०
गदहराय नमः		घोराघौघविनाशनाय नमः	
गुणाधीशाय नमः		घनानन्दाय नमः	
गुणाग्रण्ये नमः		घर्महन्त्रे नमः	
गोधराय नमः		घृणावते नमः	
गहनाय नमः	२३०	घृष्टिपातकाय नमः	
गुप्ताय नमः		घृणिने नमः	
गर्वघ्राय नमः		घृणाकराय नमः	
गुणवर्धनाय नमः		घोराय नमः	
गुह्याय नमः		घोरदैत्यप्रहारकाय नमः	
गुणज्ञाय नमः		घटितैश्वर्यसन्दोहाय नमः	२६०
गीतिज्ञाय नमः		घनार्थाय नमः	
गतातङ्काय नमः		घनसङ्कमाय नमः	
गुणाश्रयाय नमः		चित्रकृते नमः	
गद्यपद्यप्रियाय नमः		चित्रवर्णाय नमः	
गुण्याय नमः	२४०	चश्रलाय नमः	
गोस्तुताय नमः		चपलद्युतये नमः	
गगनेचराय नमः		चिन्मयाय नमः	
गणनीयचरित्राय नमः		चित्स्वरूपाय नमः	
गतक्रेशाय नमः		चिरानन्दाय नमः	
गुणार्णवाय नमः		चिरन्तनाय नमः	२७०
घूर्णिताक्षाय नमः		चित्रकेलये नमः	
घृणिनिधये नमः		चित्रतराय नमः	
घनगम्भीरघोषणाय नमः		चिन्तनीयाय नमः	
घण्टानादप्रियाय नमः		चमत्कृतये नमः	

षण्मुखसहस्रनामावलिः			404
चोरघ्राय नमः		जाह्नवीसूनवे नमः	300
चतुराय नमः		जितामित्राय नमः	
चारवे नमः		जगद्गुरवे नमः	
चामीकरविभूषणाय नमः		जयिने नमः	
चन्द्रार्ककोटिसदृशाय नमः		जितेन्द्रियाय नमः	
चन्द्रमौलितनूभवाय नमः	२८०	जैत्राय नमः	
चादिताङ्गाय नमः		जरामरणवर्जिताय नमः	
छदाहन्रे नमः		ज्योतिर्मयाय नमः	
छेदिताखिलपातकाय नमः		जगन्नाथाय नमः	
छेदीकृततमःक्लेशाय नमः		जगञ्जीवाय नमः	
छत्रीकृतमहायशसे नमः		जनाश्रयाय नमः	३१०
छादिताशेषसन्तापाय नमः		जगत्सेव्याय नमः	
छरितामृतसागराय नमः		जगत्कर्त्रे नमः	
छन्नत्रेगुण्यरूपाय नमः		जगत्साक्षिणे नमः	
छातेहाय नमः		जगत्प्रियाय नमः	
छिन्नसंशयाय नमः	२९०	जम्भारिवन्द्याय नमः	
छन्दोमयाय नमः		जयदाय नमः	
छन्दगामिने नमः		जगञ्जनमनोहराय नमः	
छिन्नपाशाय नमः		जगदानन्दजनकाय नमः	
छविश्छदाय नमः		जनजाड्यापहारकाय नमः	
जगद्धिताय नमः		जपाकुसुमसङ्काशाय नमः	३२०
जगत्पूज्याय नमः		जनलोचनशोभनाय नमः	
जगञ्चेष्ठाय नमः		जनेश्वराय नमः	
जगन्मयाय नमः		जितक्रोधाय नमः	
जनकाय नमः		जनजन्मनिबर्हणाय नमः	

षण्मुखसहस्रनामावलिः			405
जयदाय नमः		ढक्कानादप्रीतिकराय नमः	३५०
जन्तुतापघ्नाय नमः		ढालितासुरसङ्कुलाय नमः	
जितदैत्यमहाव्रजाय नमः		ढौकितामरसन्दोहाय नमः	
जितमायाय नमः		ढुण्ढिविघ्नेश्वरानुजाय नमः	
जितकोधाय नमः		तत्त्वज्ञाय नमः	
जितसङ्गाय नमः	३३०	तत्त्वगाय नमः	
जनप्रियाय नमः		तीव्राय नमः	
झञ्जानिलमहावेगाय नमः		तपोरूपाय नमः	
झरिताशेषपातकाय नमः		तपोमयाय नमः	
झर्झरीकृतदैत्यौघाय नमः		त्रयीमयाय नमः	
झहरीवाद्यसिम्प्रयाय नमः		त्रिकालज्ञाय नमः	३६०
ज्ञानमूर्तये नमः		त्रिमूर्तये नमः	
ज्ञानगम्याय नमः		त्रिगुणात्मकाय नमः	
ज्ञानिने नमः		त्रिदशेशाय नमः	
ज्ञानमहानिधये नमः		तारकारये नमः	
टङ्कारनृत्तविभवाय नमः	३४०	तापघ्राय नमः	
टङ्कवज्रध्वजाङ्किताय नमः		तापसप्रियाय नमः	
टङ्किताखिललोकाय नमः		तुष्टिदाय नमः	
टङ्कितैनस्तमोरवये नमः		तुष्टिकृते नमः	
डम्बरप्रभवाय नमः		तीक्ष्णाय नमः	
डम्भाय नमः		तपोरूपाय नमः	०७६
डम्बाय नमः		त्रिकालविदे नमः	
डमरुकप्रियाय नमः		स्तोत्रे नमः	
डमरोत्कटसन्नादाय नमः		स्तव्याय नमः	
डिम्बरूपस्वरूपकाय नमः		स्तवप्रीताय नमः	
		1	

षण्मुखसहस्रनामावलिः			406
स्तुतये नमः		दर्पणशोभिताय नमः	४००
स्तोत्राय नमः		दुर्धराय नमः	
स्तुतिप्रियाय नमः		दानशीलाय नमः	
स्थिताय नमः		द्वादशाक्षाय नमः	
स्थायिने नमः		द्विषङ्गजाय नमः	
स्थापकाय नमः	३८०	द्विषद्वर्णीय नमः	
स्थूलसूक्ष्मप्रदर्शकाय नमः		द्विषड्वाहवे नमः	
स्थविष्ठाय नमः		दीनसन्तापनाशनाय नमः	
स्थविराय नमः		दन्दशूकेश्वराय नमः	
स्थूलाय नमः		देवाय नमः	
स्थानदाय नमः		दिव्याय नमः	४१०
स्थैर्यदाय नमः		दिव्याकृतये नमः	
स्थिराय नमः		दमाय नमः	
दान्ताय नमः		दीर्घवृत्ताय नमः	
दयापराय नमः		दीर्घबाहवे नमः	
दात्रे नमः	३९०	दीर्घदृष्टये नमः	
दुरितघ्नाय नमः		दिवस्पतये नमः	
दुरासदाय नमः		दण्डाय नमः	
दर्शनीयाय नमः		दमयित्रे नमः	
दयासाराय नमः		दर्पाय नमः	
देवदेवाय नमः		देवसिंहाय नमः	४२०
दयानिधये नमः		दृढव्रताय नमः	
दुराधर्षाय नमः		दुर्लभाय नमः	
दुर्विगाह्याय नमः		दुर्गमाय नमः	
दक्षाय नमः		दीप्ताय नमः	
		-	

षण्मुखसहस्रनामावलिः			407
दुष्प्रेक्ष्याय नमः		धृतिमते नमः	४५०
दिव्यमण्डनाय नमः		धूतिकेल्बिषाय नमः	
दुरोदरघ्नाय नमः		धर्महेतवे नमः	
दुःखघ्नाय नमः		धर्मशूराय नमः	
दुरारिघ्नाय नमः		धर्मकृते नमः	
दिशाम्पतये नमः	४३०	धर्मविदे नमः	
दुर्जयाय नमः		ध्रुवाय नमः	
देवसेनेशाय नमः		धात्रे नमः	
दुर्ज्ञेयाय नमः		धीमते नमः	
दुरतिऋमाय नमः		धर्मचारिणे नमः	
दम्भाय नमः		धन्याय नमः	४६०
दप्ताय नमः		धुर्याय नमः	
देवर्षये नमः		धृतव्रताय नमः	
दैवज्ञाय नमः		नित्यसत्त्वाय नमः	
दैवचिन्तकाय नमः		नित्यतृप्ताय नमः	
धुरन्धराय नमः	४४०	निर्लेपाय नमः	
धर्मपराय नमः		निश्चलात्मकाय नमः	
धनदाय नमः		निरवद्याय नमः	
धृतवर्धनाय नमः		निराधाराय नमः	
धर्मेशाय नमः		निष्कलङ्काय नमः	
धर्मशास्त्रज्ञाय नमः		निरञ्जनाय नमः	०७४
धन्विने नमः		निर्ममाय नमः	
धर्मपरायणाय नमः		निरहङ्काराय नमः	
धनाध्यक्षाय नमः		निर्मोहाय नमः	
धनपतये नमः		निरुपद्रवाय नमः	
		•	

षण्मुखसहस्रनामाविः			408
नित्यानन्दाय नमः		पुलिन्दकन्यारमणाय नमः	५००
निरातङ्काय नमः		पुरुजिते नमः	•
निष्प्रपश्चाय नमः		परमप्रियाय नमः	
निरामयाय नमः		प्रत्यक्षमूर्तये नमः	
निरवद्याय नमः		प्रत्यक्षाय नमः	
निरीहाय नमः	०১४	परेशाय नमः	
निर्दर्शाय नमः		पूर्णपुण्यदाय नमः	
निर्मलात्मकाय नमः		पुण्याकराय नमः	
नित्यानन्दाय नमः		पुण्यरूपाय नमः	
निर्जरेशाय नमः		पुण्याय नमः	
निःसङ्गाय नमः		पुण्यपरायणाय नमः	५१०
निगमस्तुताय नमः		पुण्योदयाय नमः	
निष्कण्टकाय नमः		परअ्थोतिषे नमः	
निरालम्बाय नमः		पुण्यकृते नमः	
निष्प्रत्यूहाय नमः		पुण्यवर्धनाय नमः	
निरुद्भवाय नमः	४९०	परानन्दाय नमः	
नित्याय नमः		परतराय नमः	
नियतकल्याणाय नमः		पुण्यकीर्तये नमः	
निर्विकल्पाय नमः		पुरातनाय नमः	
निराश्रयाय नमः		प्रसन्नरूपाय नमः	
नेत्रे नमः		प्राणेशाय नमः	५२०
निधये नमः		पन्नगाय नमः	
नैकरूपाय नमः		पापनाशनाय नमः	
निराकाराय नमः		प्रणतार्तिहराय नमः	
नदीसुताय नमः		पूर्णाय नमः	
		ı	

षण्मुखसहस्रनामावलिः			409
पार्वतीनन्दनाय नमः		पावकाय नमः	५५०
प्रभवे नमः		पूज्याय नमः	
पूतात्मने नमः		पूर्णानन्दाय नमः	
पुरुषाय नमः		परात्पराय नमः	
प्राणाय नमः		पुष्कलाय नमः	
प्रभवाय नमः	५३०	प्रवराय नमः	
पुरुषोत्तमाय नमः		पूर्वाय नमः	
प्रसन्नाय नमः		पितृभक्ताय नमः	
परमस्पष्टाय नमः		पुरोगमाय नमः	
पराय नमः		प्राणदाय नमः	
परिवृढाय नमः		प्राणिजनकाय नमः	५६०
पराय नमः		प्रदिष्टाय नमः	
परमात्मने नमः		पावकोद्भवाय नमः	
प्रब्रह्मणे नमः		परब्रह्मस्वरूपाय नमः	
परार्थाय नमः		परमैश्वर्यकारणाय नमः	
प्रियदर्शनाय नमः	५४०	परर्धिदाय नमः	
पवित्राय नमः		पुष्टिकराय नमः	
पुष्टिदाय नमः		प्रकाशात्मने नमः	
पूर्तये नमः		प्रतापवते नमः	
पिङ्गलाय नमः		प्रज्ञापराय नमः	
पुष्टिवर्धनाय नमः		प्रकृष्टार्थाय नमः	400
पापहर्त्रे नमः		पृथवे नमः	
पाशधराय नमः		पृथुपराऋमाय नमः	
प्रमत्तासुरशिक्षकाय नमः		फणीश्वराय नमः	
पावनाय नमः		फणिवाराय नमः	

षण्मुखसहस्रनामावलिः			410
फणामणिविभूषणाय नमः		बहुप्रदाय नमः	६००
फलदाय नमः		बृहद्भानुतनूद्भूताय नमः	
फलहस्ताय नमः		बृहत्सेनाय नमः	
फुल्लाम्बुजविलोचनाय नमः		बिलेशयाय नमः	
फंडुचाटितपापौघाय नमः		बहुबाहवे नमः	
फणिलोकविभूषणाय नमः	५८०	बलश्रीमते नमः	
बाहुलेयाय नमः		बहुदैत्यविनाशकाय नमः	
बृहद्रूपाय नमः		बिलद्वारान्तरालस्थाय नमः	
बलिष्ठाय नमः		बृहच्छक्तिधनुर्धराय नमः	
बलवते नमः		बालार्कद्युतिमते नमः	
बलिने नमः		बालाय नमः	६१०
ब्रह्मेशविष्णुरूपाय नमः		बृहद्वक्षसे नमः	
बुद्धाय नमः		बृहद्धनुषे नमः	
बुद्धिमतां वराय नमः		भव्याय नमः	
बालरूपाय नमः		भोगीश्वराय नमः	
ब्रह्मगर्भाय नमः	५९०	भाव्याय नमः	
ब्रह्मचारिणे नमः		भवनाशाय नमः	
बुधप्रियाय नमः		भवप्रियाय नमः	
बहुश्रुताय नमः		भक्तिगम्याय नमः	
बहुमताय नमः		भयहराय नमः	
ब्रह्मण्याय नमः		भावज्ञाय नमः	६२०
ब्राह्मणप्रियाय नमः		भक्तसुप्रियाय नमः	
बलप्रमथनाय नमः		भुक्तिमुक्तिप्रदाय नमः	
ब्रह्मणे नमः		भोगिने नमः भगवते नमः	
बहुरूपाय नमः		भगवते नमः	
-		I	

षण्मुखसहस्रनामावलिः			411
भाग्यवर्धनाय नमः		भजनीयाय नमः	६५०
भ्राजिष्णवे नमः		भिषग्वराय नमः	
भावनाय नमः		महासेनाय नमः	
भर्त्रे नमः		महोदराय नमः	
भीमाय नमः		महाशक्तये नमः	
भीमपराऋमाय नमः	६३०	महाद्युतये नमः	
भूतिदाय नमः		महाबुद्धये नमः	
भूतिकृते नमः		महावीर्याय नमः	
भोक्रे नमः		महोत्साहाय नमः	
भूतात्मने नमः		महाबलाय नमः	
भुवनेश्वराय नमः		महाभोगिने नमः	६६०
भावकाय नमः		महामायिने नमः	
भीकराय नमः		मेधाविने नमः	
भीष्माय नमः		मेखलिने नमः	
भावकेष्टाय नमः		महते नमः	
भवोद्भवाय नमः	६४०	मुनिस्तुताय नमः	
भवतापप्रशमनाय नमः		महामान्याय नमः	
भोगवते नमः		महानन्दाय नमः	
भूतभावनाय नमः		महायशसे नमः	
भोज्यप्रदाय नमः		महोर्जिताय नमः	
भ्रान्तिनाशाय नमः		माननिधये नमः	०७३
भानुमते नमः		मनोरथफलप्रदाय नमः	
भुवनाश्रयाय नमः		महोदयाय नमः	
भूरिभोगप्रदाय नमः		महापुण्याय नमः	
भद्राय नमः		महाबलपराऋमाय नमः	
		I	

षण्मुखसहस्रनामावलिः			412
मानदाय नमः		यिमिने नमः	900
मतिदाय नमः		यतिसेव्याय नमः	
मालिने नमः		योगयुक्ताय नमः	
मुक्तामालाविभूषणाय नमः		योगविदे नमः	
मनोहराय नमः		योगसिद्धिदाय नमः	
महामुख्याय नमः	६८०	यन्त्राय नमः	
महर्द्धये नमः		यत्रिणे नमः	
मूर्तिमते नमः		यत्रज्ञाय नमः	
मुनये नमः		यन्नवते नमः	
महोत्तमाय नमः		यन्नवाहकाय नमः	
महोपाय नमः		यातनारहिताय नमः	७१०
मोक्षदाय नमः		योगिने नमः	
मङ्गलप्रदाय नमः		योगीशाय नमः	
मुदाकराय नमः		योगिनां वराय नमः	
मुक्तिदात्रे नमः		रमणीयाय नमः	
महाभोगाय नमः	६९०	रम्यरूपाय नमः	
महोरगाय नमः		रसज्ञाय नमः	
यशस्कराय नमः		रसभावनाय नमः	
योगयोनये नमः		रञ्जनाय नमः	
योगिष्ठाय नमः		रञ्जिताय नमः	
यमिनां वराय नमः		रागिणे नमः	७२०

रुचिराय नमः

रुद्रसम्भवाय नमः

रणप्रियाय नमः

रणोदाराय नमः

यशस्विने नमः

योग्याय नमः

योगनिधये नमः

योगपुरुषाय नमः

वण्मुखसहस्रनामावालः			413
रागद्वेषविनाशनाय नमः		लोकरक्षाय नमः	७५०
रत्नार्चिषे नमः		लोकशिक्षाय नमः	
रुचिराय नमः		लोकलोचनरञ्जिताय नमः	
रम्याय नमः		लोकबन्धवे नमः	
रूपलावण्यविग्रहाय नमः		लोकधात्रे नमः	
रत्नाङ्गदधराय नमः	०६ ७	लोकत्रयमहाहिताय नमः	
रत्नभूषणाय नमः		लोकचूडामणये नमः	
रमणीयकाय नमः		लोकवन्द्याय नमः	
रुचिकृते नमः		लावण्यविग्रहाय नमः	
रोचमानाय नमः		लोकाध्यक्षाय नमः	
रञ्जिताय नमः		लीलावते नमः	७६०
रोगनाशनाय नमः		लोकोत्तरगुणान्विताय नमः	
राजीवाक्षाय नमः		वरिष्ठाय नमः	
राजराजाय नमः		वरदाय नमः	
रक्तमाल्यानुलेपनाय नमः		वैद्याय नमः	
राजद्वेदागमस्तुत्याय नमः	०४०	विशिष्टाय नमः	
रजःसत्त्वगुणान्विताय नमः		विक्रमाय नमः	
रजनीशकलारम्याय नमः		विभवे नमः	
रत्नकुण्डलमण्डिताय नमः		विबुधाग्रचराय नमः	
रत्नसन्मौलिशोभाढ्याय नमः		वश्याय नमः	
रणन्मञ्जीरभूषणाय नमः		विकल्पपरिवर्जिताय नमः	०७७
लोकैकनाथाय नमः		विपाशाय नमः	
लोकेशाय नमः		विगतातङ्काय नमः	
ललिताय नमः		विचित्राङ्गाय नमः	
लोकनायकाय नमः		विरोचनाय नमः	
		I	

षण्मुखसहस्रनामावलिः			414
विद्याधराय नमः		वितभयाय नमः	۷00
विशुद्धात्मने नमः		वागीशाय नमः	
वेदाङ्गाय नमः		वासवार्चिताय नमः	
विबुधप्रियाय नमः		वीरध्वंसाय नमः	
वचस्कराय नमः		विश्वमूर्तये नमः	
व्यापकाय नमः	०८०	विश्वरूपाय नमः	
विज्ञानिने नमः		वरासनाय नमः	
विनयान्विताय नमः		विशाखाय नमः	
विद्वत्तमाय नमः		विमलाय नमः	
विरोधिघ्नाय नमः		वाग्मिने नमः	
वीराय नमः		विदुषे नमः	८१०
विगतरागवते नमः		वेदधराय नमः	
वीतभावाय नमः		वटवे नमः	
विनीतात्मने नमः		वीरचूडामणये नमः	
वेदगर्भाय नमः		वीराय नमः	
वसुप्रदाय नमः	७९०	विद्येशाय नमः	
विश्वदीप्तये नमः		विबुधाश्रयाय नमः	
विशालाक्षाय नमः		विजयिने नमः	
विजितात्मने नमः		विनयिने नमः	
विभावनाय नमः		वेत्रे नमः	
वेदवेद्याय नमः		वरीयसे नमः	८२०
विधेयात्मने नमः		विरजासे नमः	
वीतदोषाय नमः		वसवे नमः	
वेदविदे नमः		वीरघ्नाय नमः	
विश्वकर्मणे नमः		विज्वराय नमः	
		ı	

षण्मुखसहस्रनामावलिः			415
वेद्याय नमः		श्रेष्ठाय नमः	८५०
वेगवते नमः		शुद्धात्मने नमः	
वीर्यवते नमः		शङ्कराय नमः	
वशिने नमः		शिवाय नमः	
वरशीलाय नमः		शितिकण्ठात्मजाय नमः	
वरगुणाय नमः ८	३०	शूराय नमः	
विशोकाय नमः		शान्तिदाय नमः	
वज्रधारकाय नमः		शोकनाशनाय नमः	
शरजन्मने नमः		षाण्मातुराय नमः	
शक्तिधराय नमः		षण्मुखाय नमः	
शत्रुघ्नाय नमः		षङ्गुणैश्वर्यसंयुताय नमः	८६०
शिखिवाहनाय नमः		षद्गैऋस्थाय नमः	
श्रीमते नमः		षडूर्मिघ्नाय नमः	
शिष्टाय नमः		षडङ्गश्रुतिपारगाय नमः	
शुचये नमः		षङ्गावरहिताय नमः	
शुद्धाय नमः ८	४०	षद्काय नमः	
शाश्वताय नमः		षद्गास्त्रस्मृतिपारगाय नमः	
श्रुतिसागराय नमः		षड्वर्गदात्रे नमः	
शरण्याय नमः		षङ्गीवाय नमः	
शुभदाय नमः		षडरिघ्ने नमः	
शर्मणे नमः		षडाश्रयाय नमः	०७ऽ
शिष्टेष्टाय नमः		षद्भिरीटधराय श्रीमते नमः	
शुभलक्षणाय नमः		षडाधाराय नमः	
शान्ताय नमः		षद्रमाय नमः	
शूलधराय नमः		षद्बोणमध्यनिलयाय नमः	
	ı		

षण्मुखसहस्रनामावलिः			416
षण्डत्वपरिहारकाय नमः		सुधापतये नमः	९००
सेनान्ये नमः		स्वयञ्ज्योतिषे नमः	
सुभगाय नमः		स्वयम्भुवे नमः	
स्कन्दाय नमः		सर्वतोमुखाय नमः	
सुरानन्दाय नमः		समर्थाय नमः	
सतां गतये नमः	८८०	सत्कृतये नमः	
सुब्रह्मण्याय नमः		सूक्ष्माय नमः	
सुराध्यक्षाय नमः		सुघोषाय नमः	
सर्वज्ञाय नमः		सुखदाय नमः	
सर्वदाय नमः		सुहृदे नमः	
सुखिने नमः		सुप्रसन्नाय नमः	९१०
सुलभाय नमः		सुरश्रेष्ठाय नमः	
सिद्धिदाय नमः		सुशीलाय नमः	
सौम्याय नमः		सत्यसाधकाय नमः	
सिद्धेशाय नमः		सम्भाव्याय नमः	
सिद्धिसाधनाय नमः	८९०	सुमनसे नमः	
सिद्धार्थाय नमः		सेव्याय नमः	
सिद्धसङ्कल्पाय नमः		सकलागमपारगाय नमः	
सिद्धसाधवे नमः		सुव्यक्ताय नमः	
सुरेश्वराय नमः		सचिदानन्दाय नमः	
सुभुजाय नमः		सुवीराय नमः	९२०
सर्वदृशे नमः		सुजनाश्रयाय नमः	
साक्षिणे नमः		सर्वलक्षण्सम्पन्नाय नमः	
सुप्रसादाय नमः		सत्यधर्मपरायणाय नमः	
सनातनाय नमः		सर्वदेवमयाय नमः	
		•	

षण्मुखसहस्रनामावलिः			417
सत्याय नमः		हसिताननाय नमः	९५०
सदा मृष्टान्नदायकाय नमः		हेमभूषाय नमः	
सुधापिने नमः		हरिद्वर्णीय नमः	
सुमतये नमः		हृष्टिदाय नमः	
सत्याय नमः		हृष्टिवर्धनाय नमः	
सर्वविघ्नविनाशनाय नमः	९३०	हेमाद्रिभिदे नमः	
सर्वदुःखप्रशमनाय नमः		हंसरूपाय नमः	
सुकुमाराय नमः		हुङ्कारहतकिल्बिषाय नमः	
सुलोचनाय नमः		हिमाद्रिजातातनुजाय नमः	
सुग्रीवाय नमः		हरिकेशाय नमः	
सुधृतये नमः		हिरण्मयाय नमः	९६०
साराय नमः		हृद्याय नमः	
सुराराध्याय नमः		हृष्टाय नमः	
सुविक्रमाय नमः		हरिसखाय नमः	
सुरारिघ्ने नमः		हंसाय नमः	
स्वर्णवर्णाय नमः	९४०	हंसगतये नमः	
सर्पराजाय नमः		हविषे नमः	
सदाशुचये नमः		हिरण्यवर्णाय नमः	
सप्तार्चिर्भुवे नमः		हितकृते नमः	
सुरवराय नमः		हर्षदाय नमः	
सर्वायुधविशारदाय नमः		हेमभूषणाय नमः	९७०
हस्तिचर्माम्बरसुताय नमः		हरप्रियाय नमः	
हस्तिवाहनसेविताय नमः		हितकराय नमः	
हस्तचित्रायुधधराय नमः		हतपापाय नमः	
ह्ताघाय नमः		हरोद्भवाय नमः	
•			

990

8000

क्षेमदाय नमः

क्षेमकृते नमः क्षेम्याय नमः

क्षेत्रज्ञाय नमः

क्षामवर्जिताय नमः

क्षेत्रपालाय नमः ९८०

क्षमाधाराय नमः

क्षेमक्षेत्राय नमः क्षमाकराय नमः

क्षुद्रघ्नाय नमः

क्षान्तिदाय नमः

क्षेमाय नमः

क्षितिभूषाय नमः

क्षमाश्रयाय नमः

क्षालिताघाय नमः

क्षितिधराय नमः

क्षीणसंरक्षणक्षमाय नमः

क्षणभङ्गुरसन्नद्धघनशोभि-

कपर्दकाय नमः

क्षितिभृन्नाथतनयामुखपङ्कज-

भास्कराय नमः

क्षताहिताय नमः

क्षराय नमः

क्षत्रे नमः

क्षतदोषाय नमः

क्षमानिधये नमः

क्षपिताखिलसन्तापाय नमः

क्षपानाथसमाननाय नमः

॥इति श्रीस्कान्दे महापुराणे ईश्वरप्रोक्ते ब्रह्मनारदसंवादे षण्मुखसहस्रनामाविलः सम्पूर्णा॥

### ॥ फलश्रुतिः ॥

इति नाम्नां सहस्राणि षण्मुखस्य च नारद। यः पठेच्छुणुयाद्वाऽपि भक्तियुक्तेन चेतसा॥५॥

स सद्यो मुच्यते पापैर्मनोवाक्कायसम्भवैः। आयुर्वृद्धिकरं पुंसां स्थैर्यवीर्यविवर्धनम्॥६॥

वाक्येनैकेन वक्ष्यामि वाञ्छितार्थं प्रयच्छति। तस्मात्सर्वात्मना ब्रह्मन्नियमेन जपेत्सुधीः॥७॥

## ॥ सुब्रह्मण्याष्टोत्तरशतनामावलिः॥

स्कन्दाय नमः शक्तिधराय नमः गुहाय नमः कुमाराय नमः षण्मुखाय नमः ऋौश्चदारणाय नमः सेनानिने नमः फालनेत्रसुताय नमः प्रभवे नमः अग्रिजन्मने नमः पिङ्गलाय नमः विशाखाय नमः कृत्तिकासूनवे नमः शङ्करात्मजाय नमः 30 शिखिवाहाय नमः शिवस्वामिने नमः द्विषङ्गजाय नमः गणस्वामिने नमः द्विषण्णेत्राय नमः सर्वस्वामिने नमः १० शक्तिधराय नमः सनातनाय नमः अनन्तमूर्तये नमः पिशिताशप्रभञ्जनाय नमः तारकासुरसंहारिणे नमः अक्षोभ्याय नमः पार्वतीप्रियनन्दनाय नमः रक्षोबलविमर्दनाय नमः गङ्गास्ताय नमः मत्ताय नमः शरोद्भुताय नमः प्रमत्ताय नमः आहूताय नमः उन्मत्ताय नमः 80 सुरसैन्यसुरक्षकाय नमः पावकात्मजाय नमः देवसेनापतये नमः जुम्भाय नमः प्राज्ञाय नमः २० प्रजम्भाय नमः कुपालवे नमः उज्जम्भाय नमः कमलासनसंस्तुताय नमः भक्तवत्सलाय नमः एकवर्णाय नमः उमासुताय नमः

सुमनोहराय नमः चतुर्वर्णाय नमः परमेष्ठिने नमः 40 परब्रह्मणे नमः

पश्चवर्णाय नमः

प्रजापतये नमः अहस्पतये नमः

अग्रिगर्भाय नमः

शमीगर्भाय नमः विश्वरेतसे नमः

सुरारिघ्ने नमः हरिद्वर्णीय नमः

श्भकराय नमः वटवे नमः

पट्वेषभृते नमः पृष्णे नमः

गभस्तये नमः गहनाय नमः

चन्द्रवर्णाय नमः

मायाधराय नमः

कलाधराय नमः महामायिने नमः

कैवल्याय नमः

शङ्करात्मजाय नमः

विश्वयोनये नमः

E o

60

कारणातीत-विग्रहाय नमः

अनीश्वराय नमः अमृताय नमः

वेदगर्भाय नमः

विराद्भुताय नमः

चोरघ्राय नमः

रोगनाशनाय नमः

अनन्तमूर्तये नमः

कृतकेतनाय नमः

परमडम्भाय नमः

महाडम्भाय नमः

कारणोत्पत्ति-देहाय नमः

वृषाकपये नमः

डम्भाय नमः

आनन्दाय नमः शिखण्डिने नमः

पुलिन्दकन्याभर्त्रे नमः

महासारस्वतावृताय नमः

आश्रिताखिलदात्रे नमः

प्राणाय नमः

१०

प्राणायामपरायणाय नमः विरुद्धहन्त्रे नमः वीरघ्नाय नमः रक्तश्यामगलाय नमः १००

सुब्रह्मण्याय नमः गुहाय नमः प्रीताय नमः ब्रह्मण्याय नमः ब्राह्मणप्रियाय नमः वंशवृद्धिकराय नमः वेदवेद्याय नमः अक्षयफलप्रदाय नमः

॥इति श्री-सुब्रह्मण्याष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा॥

## ॥ वल्ली अष्टोत्तरशतनामाविलः॥

महावल्लये नमः
वन्द्याये नमः
वनवासाये नमः
वरलक्ष्म्ये नमः
वरप्रदाये नमः
वाणीस्तुताये नमः
वीतमोहाये नमः
वामदेवसुतप्रियाये नमः
वेकुण्ठतनयाये नमः
वर्याये नमः

वनेचरसमादतायै नमः दयापूर्णायै नमः दिव्यरूपायै नमः

दारिद्यभयनाशिन्यै नमः

देत्यहन्न्ये नमः दोषहीनाये नमः दयाम्बुधये नमः दुःखहन्न्ये नमः दुष्टदूराये नमः दुरितष्न्ये नमः दुरासदाये नमः नाशहीनाये नमः नागनुताये नमः नारदस्तुतवेभवाये नमः लवलीकुञ्जसम्भूताये नमः ललेताये नमः ललनोत्तमाये नमः

देवस्तुतायै नमः

शान्तदोषायै नमः		मल्लिकाकुसुमप्रियायै नमः	
शर्मदात्र्ये नमः	३०	चन्द्रवऋायै नमः	
शरजन्मकुटुम्बिन्यै नमः		चारुरूपायै नमः	
पद्मिन्यै नमः		चाम्पेयकुसुमप्रियायै नमः	
पद्मवदनायै नमः		गिरिवासायै नमः	
पद्मनाभसुतायै नमः		गुणनिधये नमः	
परायै नमः		गतावन्यायै नमः	६०
पूर्णरूपायै नमः		गुहप्रियायै नमः	
पुण्यशीलायै नमः		कलिहीनायै नमः	
प्रियङ्गुवनपालिन्यै नमः		कलारूपायै नमः	
सुन्दर्ये नमः		कृत्तिकासुतकामिन्यै नमः	
सुरसंस्तुतायै नमः	४०	गतदोषायै नमः	
सुब्रह्मण्यकुटुम्बिन्यै नमः		गीतगुणायै नमः	
मान्यायै नमः		गङ्गाधरसुतप्रियायै नमः	
मनोहरायै नमः		भद्ररूपाये नमः	
मायायै नमः		भगवत्यै नमः	
महेश्वरसुतप्रियायै नमः		भाग्यदायै नमः	90
कुमार्ये नमः		भवहारिण्यै नमः	
करुणापूर्णायै नमः		भवहीनायै नमः	
कार्त्तिकेयमनोहरायै नमः		भव्यदेहायै नमः	
पद्मनेत्रायै नमः		भवात्मजमनोहरायै नमः	
परानन्दायै नमः	५०	सौम्यायै नमः	
पार्वतीसुतवल्लभायै नमः		सर्वेश्वर्ये नमः	
महादेव्यै नमः		सत्यायै नमः	
महामायायै नमः		साध्यै नमः	
		•	

800

सिद्धसमर्चितायै नमः राज्यै नमः राजवरादृतायै नमः हानिहीनायै नमः हरिसुतायै नमः नीतिज्ञायै नमः हरसूनुमनःप्रियायै नमः निर्मलायै नमः नित्यायै नमः कल्याण्ये नमः नीलकण्ठसुतप्रियायै नमः कमलाये नमः शिवरूपायै नमः कल्यायै नमः कुमारसुमनोहरायै नमः सुधाकारायै नमः जन्महीनायै नमः शिखिवाहनवल्लभायै नमः जन्महन्त्र्ये नमः व्याधात्मजायै नमः जनार्दनसुतायै नमः व्याधिहन्त्र्ये नमः जयायै नमः विविधागमसंस्तुतायै नमः ९० हर्षदात्र्ये नमः रमायै नमः हरिभवायै नमः हरसूनुप्रियङ्गनायै नमः रामायै नमः

॥इति श्री-वल्ल्यष्टोत्तरशतनामाविलः सम्पूर्णा॥

# ॥ देवसेना अष्टोत्तरशतनामाविलः॥

देवसेनायै नमः देवलोकजनन्यै नमः दिव्यसुन्दर्ये नमः देवपूज्यायै नमः

रम्यरूपायै नमः

दयारूपायै नमः

दिव्याभरणभूषितायै नमः दारिद्यनाशिन्यै नमः देव्यै नमः

दिव्यपङ्कजधारिण्यै नमः दुःस्वप्ननाशिन्यै नमः

दुष्टशमन्यै नमः		ब्रह्मपूजितायै नमः	
दोषवर्जितायै नमः		कार्त्तिकेयप्रियायै नमः	
पीताम्बरायै नमः		कान्तायै नमः	
पद्मवासायै नमः		कामरूपायै नमः	
परानन्दायै नमः		कलाधरायै नमः	४०
परात्परायै नमः		विष्णुपूज्यायै नमः	
पूर्णायै नमः		विश्ववेद्यायै नमः	
परमकल्याण्ये नमः		वेदवेद्यायै नमः	
प्रकटायै नमः		वज्रिजातायै नमः	
पापनाशिन्यै नमः	२०	वरप्रदाये नमः	
प्राणेश्वर्ये नमः		विशाखकान्तायै नमः	
परायै शक्त्यै नमः		विमलायै नमः	
परमायै नमः		विशालाक्ष्यै नमः	
परमेश्वर्यै नमः		सत्यसन्धायै नमः	
महावीर्यायै नमः		सत्प्रभावायै नमः	५०
महाभोगायै नमः		सिद्धिदायै नमः	
महापूज्यायै नमः		स्कन्दवल्लभायै नमः	
महाबलायै नमः		सुरेश्वर्यै नमः	
माहेन्द्र्ये नमः		सर्ववन्द्यायै नमः	
महत्यै नमः	३०	सुन्दर्ये नमः	
मायायै नमः		साम्यवर्जितायै नमः	
मुक्ताहारविभूषितायै नमः		हतदैत्यायै नमः	
ब्रह्मानन्दायै नमः		हानिहीनायै नमः	
ब्रह्मरूपायै नमः		हर्षदात्र्ये नमः	
ब्रह्माण्ये नमः		हतासुरायै नमः	Ę٥
		•	

हितकर्र्ये नमः		शुभायै नमः	
होनदोषायै नमः		शुभप्रदायै नमः	
हेमाभायै नमः		शुद्धायै नमः	
हेमभूषणायै नमः		शरणागतवत्सलायै नमः	
लयहीनायै नमः		मयूरवाहनदयितायै नमः	
लोकवन्द्यायै नमः		महामहिमशालिन्यै नमः	९०
ललितायै नमः		मदहीनायै नमः	
ललनोत्तमायै नमः		मातृपूज्यायै नमः	
लम्बवामकरायै नमः		मन्मथारिसुतप्रियायै नमः	
लभ्यायै नमः	७०	गुणपूर्णायै नमः	
लञ्जाढ्यायै नमः		गणाराध्यायै नमः	
लाभदायिन्यै नमः		गौरीसुतमनःप्रियायै नमः	
अचिन्त्यशक्त्यै नमः		गतदोषायै नमः	
अचलायै नमः		गतावद्यायै नमः	
अचिन्त्यरूपायै नमः		गङ्गाजातकुटुम्बिन्यै नमः	
अक्षरायै नमः		चतुरायै नमः	१००
अभयायै नमः		चन्द्रवदनायै नमः	
अम्बुजाक्ष्यै नमः		चन्द्रचूडभवप्रियायै नमः	
अमराराध्यायै नमः		रम्यरूपायै नमः	
अभयदायै नमः	८०	रमावन्द्यायै नमः	
असुरभीतिदायै नमः		रुद्रसूनुमनःप्रियायै नमः	
शर्मदाये नमः		मङ्गलायै नमः	
शऋतनयायै नमः		मधुरालापायै नमः	
शङ्करात्मजवल्लभायै नमः		महेशतनयप्रियायै नमः	

॥इति श्री-देवसेना अष्टोत्तरशतनामावितः सम्पूर्णा॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः, नानाविध-परिमल-पत्र-पुष्पाणि समर्पयामि।

दशाङ्गं च पटीरं च एला-कुङ्कम-संयुतम्। धूपं गृहाण देवेश सुब्रह्मण्य नमोऽस्तु ते॥

श्री-वही-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः, धूपम् आघ्रापयामि।

इन्द्वर्कवह्निनेत्राय देवसेनापतये नमः। घृतवर्तिसुसंयुक्तं दीपोऽयम् अवलोक्यताम्॥

श्री-वही-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः, दीपं दर्शयामि। धूप-दीपानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

सत्पात्रसिद्धं सुहविर्विविधानेक-भक्षणम्। निवेदयामि देवेश सानुगाय गृहाण तत्॥

श्री-वह्नी-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः, () महानैवेद्यं निवेदयामि। मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि। हस्त-प्रक्षालनं समर्पयामि। गण्डूषं समर्पयामि। पुनः हस्त-प्रक्षालनं समर्पयामि। पाद-प्रक्षालनं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि।

पूगीफलसमायुक्तं नागवल्लीदलैर्युतम्। कर्पूरचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री-वही-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः, ताम्बूलं समर्पयामि।

नीराजनं देवदेव सूर्यकोटि-समप्रभ। अहं भक्त्या प्रदास्यामि स्वीकुरुष्व दयानिधे॥

श्री-वह्नी-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः, कर्पूर-नीराजनं दर्शयामि। पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। रक्षां धारयामि। सर्व-पापौघ-विध्वंस साक्षाद्धर्मस्वरूपक। पुष्पाञ्जलिं प्रदास्यामि गृहाण भुवनेश्वर॥

# श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः, मन्नपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। स्वर्णपुष्पं समर्पयामि।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण-पदे पदे॥

### प्रदक्षिणं कृत्वा।

षण्मुखं पार्वतीपुत्रं क्रौश्चशैलविमर्दनम्। देवसेनापतिं देवं स्कन्दं वन्दे शिवात्मजम्॥

तारकासुर-हन्तारं मयूरोपरि संस्थितम्। शक्तिपाणिं च देवेशं स्कन्दं वन्दे शिवात्मजम्॥

# श्री-वही-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः, प्रदक्षिण-नमस्कारान् समर्पयामि।

नमः केकिने शक्तये चापि तुभ्यं नमश्छाग तुभ्यं नमः कुक्कुटाय। नमः सिन्धवे सिन्धुदेशाय तुभ्यं पुनः स्कन्दमूर्ते नमस्ते नमोऽस्तु॥ जयाऽऽनन्दभूमन् जयापारधामन् जयामोघकीर्ते जयाऽऽनन्दमूर्ते। जयाऽऽनन्दसिन्धो जयाशेषबन्धो जय त्वं सदा मुक्तिदानेशसूनो॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः, प्रार्थनाः समर्पयामि। श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः, छत्रं समर्पयामि। चामरयुगलं वीजयामि। दर्पणं दर्शयामि। गीतं श्रावयामि। नृत्तं दर्शयामि। आन्दोलिकाम् आरोहयामि। गजम् आरोहयामि। अश्वम् आरोहयामि। रथम् आरोहयामि। समस्त-राजोपचार-देवोपचार-पूजाः समर्पयामि।

## ॥ अर्घ्यप्रदानम्॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम् स्कन्दषष्ठी-पुण्यकाले श्री-सुब्रह्मण्य-पूजान्ते अर्घ्यप्रदानं करिष्ये॥

दत्त्वाऽर्घ्यं कार्तिकेयाय स्थित्वा वै दक्षिणामुखः। दभ्गा घृतोदकेः पुष्पैर्मन्नेणानेन सुव्रत॥

सप्तर्षिदारज स्कन्द स्वाहापतिसमुद्भव। रुद्रार्यमाग्निज विभो गङ्गागर्भ नमोऽस्तु ते। प्रीयतां देवसेनानीः सम्पादयत् हृद्गतम्॥

श्री-वही-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः, इदमर्घ्यमिदमर्घ्यमिदमर्घ्यम्॥

दत्त्वा विप्राय चाऽऽत्मानं यच्चान्यदिप विद्यते। पश्चाद्भक्के त्वसौ रात्रौ भूमिं कृत्वा तु भाजनम्॥ [श्रीभविष्ये महापुराणे शतार्धसाहस्त्र्यां संहितायां ब्राह्मेपर्वणि पश्चमीकल्पे षष्ठीकल्पवर्णनं नाम एकोनचत्वारिंशोऽध्यायः॥]

अनेन अर्घ्यप्रदानेन भगवान् सर्वात्मकः श्री-वही-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिनः प्रीयन्ताम्।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अनन्तपुण्यफलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥ स्कन्दषष्ठी-पुण्यकाले अस्मिन् मया क्रियमाण श्री-सुब्रह्मण्यपूजायां यद्देयमुपायनदानं तत्प्रत्याम्नायार्थं हिरण्यं श्री-वक्षी-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिनः प्रीतिं कामयमानः मनसोद्दिष्टाय ब्राह्मणाय सम्प्रददे नमः न मम। अनया पूजया श्री-वक्षी-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिनः प्रीयन्ताम्।

> कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्। करोमि यद्यत् सकलं परस्मे नारायणायेति समर्पयामि॥

> > ॐ तत्सद्बह्मार्पणमस्तु।

# ॥ बृन्दावनपूजा (श्री-तुलसी–विष्णु-पूजा) ॥

॥ पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा॥

(आचम्य)

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुव्रोम्।

(अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा)

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा

श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः

अविघ्नेन परिसमास्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गुणपंति हवामहे कविं कवीनामुंपुमश्रंवस्तमम्। ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत् आ नः शृण्वत्रूतिभिः सीद् सादनम्॥

अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।

पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वस्रार्थमक्षतान् समर्पयामि।

यज्ञोपवीताभरणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।

गन्थस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि। पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

### ॥ अर्चना ॥

१. ॐ स्मुखाय नमः ९. ॐ धूमकेतवे नमः

२. ॐ एकदन्ताय नमः १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः

३. ॐ कपिलाय नमः ११. ॐ फालचन्द्राय नमः

४. ॐ गजकर्णकाय नमः १२. ॐ गजाननाय नमः

५. ॐ लम्बोदराय नमः १३. ॐ वऋतुण्डाय नमः

६. ॐ विकटाय नमः १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः

७. ॐ विघ्नराजाय नमः १५. ॐ हेरम्बाय नमः

८. ॐ विनायकाय नमः १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाघ्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वऋतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ। अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि। छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

# ॥ प्रधान-पूजा — तुलसी-पूजा॥

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविद्रोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

शुक्राम्बरधरं + शान्तये + श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं शुभे + तिथौ तुलसी महाविष्णु प्रसादसिद्धयर्थं तुलसी महाविष्णुपूजां करिष्ये। इति सङ्कल्प्य विघ्नेशमुद्वास्य कलशपूजां कृत्वा, तुलसीं विष्णुं च ध्यायेत्।

### ॥सङ्कल्पः॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते अद्य ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे किलयुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकाणां प्रभवादीनां षष्ट्याः संवत्सराणां मध्ये ( )-नाम संवत्सरे दक्षिणायने शरद्-ऋतौ तुला/वृश्चिक-मासे कार्तिक-शुक्र-पक्षे द्वादश्यां शुभितथौ ( )-वासरयुक्तायां ( )-नक्षत्रयुक्तायाम् ( )-योगयुक्तायां ( )-करणयुक्तायाम् एवं-गुण-विशेषण-विशिष्टायाम् अस्यां द्वादश्यां शुभितथौ

अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय-आयुरारोग्य-ऐश्वर्याभि-वृद्धर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्धर्थं पुत्रपौत्राभिवृद्धर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्धर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय-व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्य अपनोदनद्वारा सकल-पापक्षयार्थं श्रीमहाविष्णु-तुलसी-प्रीत्यर्थं यावच्छक्ति ध्यानावाहनादि षोडशोपचार-श्रीमहाविष्णु-तुलसी-पूजां करिष्ये। तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये। श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। (गणपति-प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

### ॥ आसन-पूजा ॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चासनं कुरु॥

### ॥ घण्टा-पूजा॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्। घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

### ॥ कलश-पूजा॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः। ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि। (अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्) आपो वा इद॰ सर्वं विश्वां भूतान्यापः प्राणा वा आपः पृशव् आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापृश्छन्दाः स्यापो ज्योतीः इष्यापो यजूः ध्यापः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भवः सुवराप ओम्॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥ कुक्षो तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः। अङ्गेश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च ह्रदा नदाः। आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥ ॐ भूर्भृवः सुवो भूर्भृवः सुवेः।

(इति कलशजलेन सर्वीपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

### ॥ आत्म-पूजा॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

१. ॐ आत्मने नमः ४. ॐ जीवात्मने नमः

२. ॐ अन्तरात्मने नमः ५. ॐ परमात्मने नमः

३. ॐ योगात्मने नमः ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः

### समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः। त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

### ॥ पीठ-पूजा ॥

१. ॐ आधारशक्त्ये नमः ८. ॐ रत्नवेदिकाये नमः

२. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः

३. ॐ आदिकूर्माय नमः १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः

४. ॐ आदिवराहाय नमः ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः

५. ॐ अनन्ताय नमः १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः

६. ॐ पृथिव्ये नमः १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः

७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः १४. ॐ योगपीठासनाय नमः

### ॥ गुरु-ध्यानम्॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

## ॥ षोडशोपचार-पूजा॥

ध्यायामि तुलसीं देवीं श्यामां कमललोचनाम्। प्रसन्नवदनाम्भोजां वरदाम् अभयप्रदाम्॥ अस्मिन् क्षुपे तुलसीं ध्यायामि।

ध्यायामि विष्णुं वरदं तुलसीप्रियवल्लभम्। पीताम्बरं पद्मनेत्रं वासुदेवं वरप्रदम्॥ अस्मिन् आमलक-स्कन्धे महाविष्णुं ध्यायामि।

वासुदेवप्रिये देवि सर्वदेवस्वरूपिणि। आगच्छ पूजाभवने सदा सन्निहिता भव॥ आगच्छाऽऽगच्छ देवेश तेजोराशे जगत्पते। क्रियमाणां मया पूजां वासुदेव गृहाण भोः॥

## तुलसीविष्णू आवाहयामि।

नानारत्नसमायुक्तं कार्तस्वरविभूषितम्। आसनं कृपया विष्णो तुलसि प्रतिगृह्यताम्॥ तुलसी-विष्णुभ्यां नमः, आसनं समर्पयामि।

नानानदीसमानीतं सुवर्णकलशस्थितम्। पाद्यं गृहाण तुलसि पापं मे विनिवारय॥ गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्यो वासुदेव मयाऽऽहृतम्। तोयमेतत्सुखस्पर्शं पाद्यार्थं प्रतिगृह्यताम्॥ तुलसी-विष्णुभ्यां नमः, पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यं गृहाण देवि त्वं अच्युतप्रियवल्लभे। अक्षतादिसमायुक्तं अक्षय्यफलदायिनि॥ नमस्ते देवदेवेश नमस्ते कमलापते। नमस्ते सर्वविनुत गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते॥ तुलसी-विष्णुभ्यां नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।

गृहाणाचमनार्थाय विष्णुवक्षः स्थलालये। स्वच्छं तोयमिदं देवि सर्वपापविनाशिनि॥ कर्पूरवासितं तोयं गङ्गादिभ्यः समाहृतम्। आचम्यतां जगन्नाथ मया दत्तं च भक्तितः॥ तुलसी-विष्णुभ्यां नमः, आचमनीयं समर्पयामि।

मधुपर्कं गृहाणेमं मधुसूदनवल्लभे। मधुदध्याज्यसंयुक्तं महापापविनाशिनि॥ दध्याज्यमधुसंयुक्तं मधुपर्कं मयाऽऽहृतम्। गृहाण विष्णो वरद लक्ष्मीकान्त नमोऽस्तु ते॥ तुलसी-विष्णुभ्यां नमः, मधुपर्कं समर्पयामि।

पश्चामृतं गृहाणेदं पश्चपातकनाशिनि। दिधक्षीरसमायुक्तं दामोदरकुटुम्बिनि॥ मध्वाज्यशर्करायुक्तं दिधक्षीरसमन्वितम्। पश्चामृतं गृहाणेदं भक्तानामिष्टदायक॥

### तुलसी-विष्णुभ्यां नमः, पश्चामृतं समर्पयामि।

गङ्गागोदावरीकृष्णातुङ्गादिभ्यः समाहृतम्। सिललं देवि तुलिस स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥ गङ्गा कृष्णा च यमुना नर्मदा च सरस्वती। तुङ्गा गोदावरी वेणी क्षिप्रा सिन्धुर्घटप्रभा॥ तापी पयोष्णी सरयूस्ताभ्यः स्नानार्थमाहृतम्। तोयमेतत्सुखस्पर्शं स्नानीयं गृह्यतां हरे॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः, स्नानं समर्पयामि।

पीताम्बरिमदं दिव्यं पातकव्रजनाशिनि। पीताम्बरिप्रये देवि परिधत्स्व परात्परे॥ सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलञ्जानिवारणे। वाससी प्रतिगृह्णातु लक्ष्मीजानिरधोक्षजः॥ तुलसी-विष्णुभ्यां नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

भूषणानि वरार्हाणि गृह्णीतं तुलसीश्वर। किरीटहारकेयूरकटकानि हरेऽमृते॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः, आभरणानि समर्पयामि।

चन्दनागरुकर्पूरकस्तूरीकुङ्कमान्वितम्। गन्धं स्वीकुरुतं देवौ रमेशहरिवल्लभे॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः, गन्धान् धारयामि।

मिल्लकाकुन्दमन्दारजाजीवकुलचम्पकैः। शतपत्रेश्च कह्लारैरर्चये तुलसीहरी॥ तुलसी-विष्णुभ्यां नमः, पुष्पाणि समर्पयामि।

### ॥ अङ्ग-पूजा ॥

बृन्दायै अच्युताय नमः - पादौ पूजयामि। तुलस्यै अनन्ताय नमः - गुल्फौ पूजयामि। जनार्दनप्रियायै तुलसीकान्ताय नमः- जङ्घे पूजयामि। जन्मनाशिन्यै गङ्गाधरपदाय नमः - जानुनी पूजयामि उत्तमायै - ऊरू पूजयामि। उत्तमाय नमः कमलाक्षाय नमः - कटिं पूजयामि। कमलाक्ष्यै नारायणाय नमः - नाभिं पूजयामि। नारायण्यै - उदरं पूजयामि। उन्नतायै उन्नताय नमः वरदायै - वक्षः पूजयामि। वरदाय नमः - स्तनौ कौस्तुभं पूजयामि। स्तव्यायै स्तव्याय नमः चतुर्भुजायै चतुर्भुजाय नमः - भुजान् पुजयामि। - कण्ठं पूजयामि। वनमालिने नमः कम्बुकण्ठ्ये - कर्णौ पूजयामि। कल्मषघ्रये कल्मषघ्वाय नमः मुनिप्रियायै मुनिप्रियाय नमः - नेत्रे पुजयामि शुभप्रदायै शुभप्रदाय नमः - शिरः पूजयामि। सर्वार्थदायिने नमः - सर्वाण्यङ्गानि पूजयामि। सर्वार्थदायिन्यै

## ॥ चतुर्विंशति नामपूजा॥

ζ.	ॐ कशवाय नमः	द. ॐ मधुसूदनाय नमः
₹.	ॐ नारायणाय नमः	७. ॐ त्रिविक्रमाय नमः
₹.	ॐ माधवाय नमः	८. ॐ वामनाय नमः
४.	ॐ गोविन्दाय नमः	९. ॐ श्रीधराय नमः
L	ॐ विषावे चमः	१० 🕉 हषीकेशाय नमः

११. ॐ पद्मनाभाय नमः १२. ॐ दामोदराय नमः

१३. ॐ सङ्कर्षणाय नमः १४. ॐ वासुदेवाय नमः

१५. ॐ प्रद्युमाय नमः

१६. ॐ अनिरुद्धाय नमः

१७. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः

१८. ॐ अधोक्षजाय नमः

१९. ॐ नृसिंहाय नमः

२०. ॐ अच्युताय नमः

२१. ॐ जनार्दनाय नमः

२२. ॐ उपेन्द्राय नमः

२३. ॐ हरये नमः

२४. ॐ श्रीकृष्णाय नमः

## ॥ तुलस्यष्टोत्तरशतनामावलिः॥

१०

तुलस्यै नमः पावन्यै नमः

पुज्यायै नमः

वृन्दावननिवासिन्यै नमः

ज्ञानदात्र्ये नमः

ज्ञानमय्यै नमः निर्मलायै नमः

सर्वपूजितायै नमः

सत्यै नमः

पतिव्रतायै नमः

वृन्दायै नमः

क्षीराब्धिमथनोद्भवायै नमः कृष्णवर्णायै नमः

कृष्णपणाय ननः रोगहन्त्र्ये नमः

त्रिवर्णायै नमः

सर्वकामदायै नमः लक्ष्मीसख्यै नमः

नित्यशुद्धायै नमः

सुदत्यै नमः

भूमिपावन्यै नमः

हरिद्रान्नैकनिरतायै नमः हरिपादकृतालयायै नमः

पवित्ररूपिण्यै नमः

धन्यायै नमः

सुगन्धिन्यै नमः

अमृतोद्भवायै नमः स्रूपायै आरोग्यदायै नमः

तुष्टायै नमः

शक्तित्रितयरूपिण्यै नमः

देव्यै नमः

٦.

3(2) (40) (1 (1 (1 11 11 11 11 1))			7-10
देवर्षिसंस्तुत्यायै नमः		चतुर्भुजायै नमः	
कान्तायै नमः		गरुत्मद्वाहनायै नमः	
विष्णुमनःप्रियायै नमः		शान्तायै नमः	
भूतवेतालभीतिष्ठ्यै नमः		दान्तायै नमः	
महापातकनाशिन्यै नमः		विघ्ननिवारिण्यै नमः	६०
मनोरथप्रदायै नमः		श्रीविष्णुमूलिकायै नमः	
मेधायै नमः		पुष्ट्ये नमः	
कान्त्ये नमः		त्रिवर्गफलदायिन्यै नमः	
विजयदायिन्यै नमः		महाशक्त्ये नमः	
शङ्खचऋगदापद्मधारिण्यै नमः	४०	महामायायै नमः	
कामरूपिण्यै नमः		लक्ष्मीवाणीसुपूजितायै नमः	
अपवर्गप्रदायै नमः		सुमङ्गल्यर्चनप्रीतायै नमः	
श्यामायै नमः		सौमङ्गल्यविवर्धिन्यै नमः	
कृशमध्यायै नमः		चातुर्मास्योत्सवाराध्यायै नमः	
सुकेशिन्यै नमः		विष्णुसान्निध्यदायिन्यै नमः	90
वैकुण्ठवासिन्यै नमः		उत्थानद्वादशीपूज्यायै नमः	
नन्दायै नमः		सर्वदेवप्रपूजितायै नमः	
बिम्बोष्ठ्ये नमः		गोपीरतिप्रदायै नमः	
कोकिलस्वरायै नमः		नित्यायै नमः	
कपिलायै नमः	५०	निर्गुणायै नमः	
निम्नगाजन्मभूम्यै नमः		पार्वतीप्रियायै नमः	
आयुष्यदायिन्यै नमः		अपमृत्युहरायै नमः	
वनरूपायै नमः		राधाप्रियायै नमः	
दुःखनाशिन्यै नमः		मृगविलोचनायै नमः	
अविकारायै नमः		अम्रानायै नमः	८०
		ı	

१०८

हंसगमनायै नमः कमलासनवन्दितायै नमः भूलोकवासिन्यै नमः शृद्धायै नमः रामकृष्णादिपूजितायै नमः सीतापूज्यायै नमः राममनःप्रियायै नमः नन्दनसंस्थितायै नमः सर्वतीर्थमय्यै नमः मुक्तायै नमः १० लोकसृष्टिविधायिन्यै नमः प्रातर्दृश्याये नमः ग्लानिहन्त्र्ये नमः वैष्णव्ये नमः

सर्वसिद्धिदायै नमः
नारायण्यै नमः
सन्तिदायै नमः
मूलमृद्धारिपावन्यै नमः
अशोकविनकासंस्थायै नमः
सीताध्यातायै नमः
१००
निराश्रयायै नमः
गोमतीसरयूतीररोपितायै नमः
कुटिलालकायै नमः
अपात्रभक्ष्यपापघ्रयै नमः
दानतोयविशुद्धिदायै नमः
शुभायै नमः

॥इति श्री-तुलस्यष्टोत्तरशतनामाविलः सम्पूर्णा॥ श्री-तुलसी-विष्णुभ्यां नमः, नानाविध-परिमल-पत्र-पुष्पाणि समर्पयामि।

सर्वेष्टदायिन्यै नमः

धूपं गृहाण वरदे दशाङ्गेन सुवासितम्। तुलस्यमृतसम्भूते धूतपापे नमोऽस्तु ते॥

दशाङ्गो गुग्गुलूपेतः सुगन्धः सुमनोहरः। श्रीवत्साङ्क हृषीकेश धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः, धूपम् आघ्रापयामि।

वर्तित्रययुतं दीप्तं गोघृतेन समन्वितम्। दीपं देवि गृहाणेमं दैत्यारिहृदयस्थिते॥

साज्यं त्रिवर्तिसंयुक्तं दीप्तं देव जनार्दन। गृहाण मङ्गलं दीपं त्रैलोक्यतिमिरं हर॥ तुलसी-विष्णुभ्यां नमः, दीपं दर्शयामि।

नानाभक्ष्यैश्च भोज्यैश्च फलैः क्षीरघृतादिभिः। नैवेद्यं गृह्यतां युक्तं नारायणमनःप्रिये॥ भोज्यं चतुर्विधं चोष्यभक्ष्यसूपफलैर्युतम्। दिधमध्वाज्यसंयुक्तं गृह्यतामम्बुजेक्षण॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः, महानैवेद्यं निवेदयामि।

कर्पूरचूर्णताम्बूलवल्लीपूगफलैर्युतम् । जगतः पितरावेतत्ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः, ताम्बूलं समर्पयामि।

नीराजनं गृहाणेदं कर्पूरैः कलितं मया। तुलस्यमृतसम्भूते गृहाण हरिवल्लभे॥ चन्द्रादित्यौ च नक्षत्रं विद्युदग्निस्त्वमेव च। त्वमेव सर्वज्योतींषि कुर्यां नीराजनं हरे॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः, कर्पूर-नीराजनं दर्शयामि।

प्रकृष्टपापनाशाय प्रकृष्टफलसिद्धये। युवां प्रदक्षिणी कुर्वे तुलसीशौ प्रसीदतम्॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः, प्रदक्षिणं समर्पयामि।

नमोऽस्तु पीयूषसमुद्भवायै नमोऽस्तु पद्माक्षमनः प्रियायै। नमोऽस्तु जन्माप्यय-भीतिहन्त्र्यै नमस्तुलस्यै जगतां जनन्यै॥ शङ्ख्यक्रगदापाणे द्वारकानिलयाच्युत। गोविन्द पुण्डरीकाक्ष रक्ष मां शरणागत(ता)म्॥ तुलसी-विष्णुभ्यां नमः, नमस्कारान् समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिं गृहाणेदं पङ्कजाक्षस्य वल्लभे। नमस्ते देवि तुलसि नताभीष्टफलप्रदे॥

मन्दारनीलोत्पलकुन्दजाती पुन्नागमल्लीकरवीरपद्मैः। पुष्पाञ्जलिं ते जगदेकबन्धो हरे त्वदङ्कौ विनिवेशयामि॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः, मन्नपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

आयुरारेग्यमतुलमैश्वर्यं पुत्रसम्पदः। देहि मे सकलान्कामान् तुलस्यमृतसम्भवे॥

नमो नमः सुखवरपूजिताङ्ग्र्ये नमो नमो निरुपममङ्गलात्मने। नमो नमो विपुलपदैकसिद्ध्ये नमो नमः परमदयानिधे हरे॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः, प्रार्थनाः समर्पयामि।

नमस्ते देवि तुलिस नमस्ते मोक्षदायिनि। इदमर्घ्यं प्रदास्यामि सुप्रीता वरदा भव॥ लक्ष्मीपते नमस्तुभ्यं तुलसीदामभूषण। इदमर्घ्यं प्रदास्यामि गृहाण गरुडध्वज॥

श्री-तुलस्यै महाविष्णवे च नमः, इदमर्घ्यमिदमर्घ्यमिदमर्घ्यम्।

नमस्ते देवि तुलिस माधवेन समन्विता। प्रयच्छ सकलान्कामान् द्वादश्यां पूजिता मया॥ अनेन पूजनेन श्री-तुलसी-विष्णू प्रीयेताम्।

## तुलसीविवाहविधिः

(इक्षुदण्डनिर्मिते पुष्पाद्यलङ्कृते मण्टपे विवाहः।

तुलसी हरिद्राचन्दनकुङ्कुमपुष्पाद्यालङ्कृता स्वीयवेद्यां प्रथमं पूज्यते।

शुक्लाम्बरधरं + परमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते + शुभतिथौ तुलस्याः विष्णुना सह विवाहोत्सवमाचरिष्ये।

(अप उपस्पृश्य)

विष्णुं विवाहार्थे वराई-वस्नालङ्करण-पुष्पमालादिभिः अलङ्कृत्य वाद्यघोषगीतपुरस् विवाहमण्टपमानीय कर्ता नारिकेल-कदलीफलताम्बूलादिभिः उपसृत्य मण्टपे आसने प्रतिष्ठाप्य प्रार्थयेत्।

> आगच्छ भगवन् देव अर्हयिष्यामि केशव। तुभ्यं ददामि तुलसीं प्रतीच्छन् कामदो भव॥

आसनमिदं, अलङ्कियताम्। पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यं समर्पयामि, आचमनीयं समर्पयामि। मधुपर्कं समर्पयामि। हरिद्रालेप-मङ्गलविधिं समर्पयामि। तैलाभ्यङ्गपूर्वकं मङ्गलस्नानं समर्पयामि। वस्नालङ्करणपुष्पमालाः समर्पयामि। गन्धान् धारयामि। गन्धोपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः, नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

(वधूवरौ परस्परमभिमुखौ स्थापयित्वा)

... गोत्रोद्भवां ... शर्मणः प्रपौत्रीं, ... शर्मणः पौत्रीं, ... शर्मणः पुत्रीं तुलसीनाम्नीम् इमां कन्यकां अजाय परब्रह्मणे श्री-विष्णवे वराय प्रतिपादयामि। (त्रिः उक्ता)

अनादिमध्यनिधन त्रैलोक्यप्रतिपालक। इमां गृहाण तुलसीं विवाहविधिनेश्वर॥

पार्वती-बीजसम्भूतां बृन्दाभस्मनि संस्थिताम्। अनादिमध्यनिधनां वल्लभां ते ददाम्यहम्॥

पयोघटैश्च सेवाभिः कन्यावद्वर्धितां मया। त्वत्प्रियां तुलसीं तुभ्यं ददामि त्वं गृहाण भोः॥

वाद्यघोष-वेदस्वस्तिवाचन-मङ्गलाशीर्भिः उभौ मेलयित्वा गीतादिभिः सन्तोषयेत्।

सायमपि पुनः पूजां कृत्वा स्त्रीधनं यथाशक्तिं दद्यात्। विवाहोत्सवपूर्तौ—

वैकुण्ठं गच्छ भगवन् तुलस्या सहितः प्रभो। मत्कृतं पूजनं गृह्य सन्तुष्टो भव सर्वदा॥

गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थानं परमेश्वर। यत्र ब्रह्मादयो देवाः तत्र गच्छ जनार्दन॥

इति उभौ अभ्यनुज्ञापयेत् मङ्गलारार्तिकेन सह। तुलसीं यथापूर्वं रक्षेत्।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्। करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्बह्मार्पणमस्तु।



# ॥ श्रीसूर्य-नमस्कारः ॥

# ॥ पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा॥

(आचम्य)

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवणं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुव्रोम्। (अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा) ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः अविघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गुणपंति र हवामहे कविं केवीनामुंपमश्रंवस्तमम्। ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत् आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद् सादनम्॥

अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।
ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।
पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरध्यं समर्पयामि।
आचमनीयं समर्पयामि।
ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।
स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।
वस्नार्थमक्षतान् समर्पयामि।
यज्ञोपवीताभरणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।
दिव्यपरिमलगन्थान् धारयामि।

गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

## पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

### ॥ अर्चना ॥

१. ॐ सुमुखाय नमः ९. ॐ धूमकेतवे नमः

२. ॐ एकदन्ताय नमः १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः

३. ॐ कपिलाय नमः ११. ॐ फालचन्द्राय नमः

४. ॐ गजकर्णकाय नमः १२. ॐ गजाननाय नमः

५. ॐ लम्बोदराय नमः १३. ॐ वऋतुण्डाय नमः

६. ॐ विकटाय नमः १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः

७. ॐ विघ्नराजाय नमः १५. ॐ हेरम्बाय नमः

८. ॐ विनायकाय नमः १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाघ्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वऋतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ। अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि। छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

## ॥ प्रधान-पूजा — श्री-सूर्यनारायण-पूजा॥

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवणं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविद्रोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुव्रोम्।

#### ॥ सङ्कल्पः॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते अद्य ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिके प्रभवादि षष्टिसंवत्सराणां मध्ये ( ) नाम संवत्सरे उत्तरायणे / दक्षिणायने ( )-ऋतौ ( ) मासे शुक्लपक्षे ( ) शुभतिथौ (इन्दु/भौम/बुध/गुरु/भृगु/स्थिर/भानु) वासरयुक्तायाम् ) नक्षत्रयुक्तायां ( )-योग ( )-करण-युक्तायां च एवं गुण-विशेषण-विशिष्टायाम् अस्याम् ( ) शुभितथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय-आयुरारोग्य-ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं धर्मार्थकाममोक्ष-चत्रविधफलपुरुषार्थसिद्धार्थं पुत्रपौत्राभिवृद्धार्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्धार्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहा-पातकचतुष्टय-व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्य अपनोदनद्वारा सकल-पापक्षयार्थं श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायणप्रीत्यर्थं श्री-सूर्यनारायण-प्रसाद-सिद्धर्थं श्री-सूर्यनारायण-पूजा-पुरस्सरं तृचकल्पेन अरुणप्रश्नेन च श्री-सूर्यनमस्कारान् करिष्ये। तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। (गणपति-प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

### ॥ आसन-पूजा॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चासनं कुरु॥

### ॥ घण्टा-पूजा॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्। घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

### ॥ कलश-पूजा॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः। ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि। (अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्) आपो वा इद॰ सर्वं विश्वां भूतान्यापः प्राणा वा आपः पृशव् आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापृश्छन्दाः स्यापो ज्योतीः इष्यापो यजूः ध्यापः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भवः सुवराप ओम्॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः। अङ्गश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥ सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च ह्रदा नदाः। आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥ ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवंः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

### ॥ आत्म-पूजा॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

१. ॐ आत्मने नमः ४. ॐ जीवात्मने नमः

२. ॐ अन्तरात्मने नमः ५. ॐ परमात्मने नमः

३. ॐ योगात्मने नमः ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः

### समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः। त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

### ॥ पीठ-पूजा॥

१. ॐ आधारशक्त्ये नमः ८. ॐ रत्नवेदिकाये नमः

२. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः

३. ॐ आदिकूर्माय नमः १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः

४. ॐ आदिवराहाय नमः ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः

५. ॐ अनन्ताय नमः १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः

६. ॐ पृथिव्ये नमः १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः

७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः १४. ॐ योगपीठासनाय नमः

### ॥ गुरु-ध्यानम्॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

# ॥ कुम्भे वरुण-सूर्य-नारायण-पूजा॥

ॐ। इमं में वरुण श्रुधी हर्वम्द्या चं मृडय। त्वामंवस्युराचंके॥ तत्त्वां यामि ब्रह्मणा वन्दंमान्स्तदाशांस्ते यजंमानो ह्विर्भिः। अहेंडमानो वरुणेह बोध्युरुंशरस् मा न आयुः प्रमोधीः॥

अस्मिन् कुम्भे सकल-तीर्थाधिपतिं वरुणं ध्यायामि। वरुणमावाहयामि। वरुणाय नमः। आसनं समर्पयामि।

पाद्यं, अर्घ्यं, आचमनीयं, स्नानं, स्नानानन्तरमाचमनीयं, वस्नं, उपवीतं, गन्धं, गन्धोपरि अक्षतान्, पुष्पाणि समर्पयामि।

वरुणाय नमः। प्रचेतसे नमः। सुरूपिणे नमः। अपां पतये नमः। मकरवाहनाय नमः। जलाधिपतये नमः। पाशहस्ताय नमः। वरुणाय नमः। नानाविधपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

वरुणाय नमः समस्तोपचारान् समर्पयामि।

ॐ। आ सत्येन रजंसा वर्तमानो निवेशयंत्रमृतं मर्त्यं च। हिर्ण्ययेन सविता रथेनाऽदेवो यांति भुवंना विपश्यन्।

> सूर्यं सुन्दरलोकनाथममृतं वेदान्तसारं शिवं ज्ञानं ब्रह्ममयं सुरेशममलं लोकैकचित्तं प्रभुम्। इन्द्रादित्यनराधिपं सुरगुरुं त्रैलोक्यचूडामणिं विष्णुब्रह्मशिवस्वरूपहृदयं वन्दे सदा भास्करम्॥

80

अस्मिन् कुम्भे श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायणं ध्यायामि। श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायणम् आवाहयामि।

आसनं समर्पयामि। पाद्यं समर्पयामि। अर्घ्यं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। मधुपर्कं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि। वस्नं समर्पयामि। उपवीतं समर्पयामि। आभरणम् समर्पयामि। गन्धान् धारयामि। गन्धस्योपिर हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयमि। अक्षतान् समर्पयामि। पुष्पाणि समर्पयामि।

### ॥ अर्चना ॥

१. ॐ मित्राय नमः

२. ॐ रवये नमः

३. ॐ सूर्याय नमः

४. ॐ भानवे नमः

५. ॐ खगाय नमः

६. ॐ पूष्णे नमः

७. ॐ हिरण्यगर्भाय नमः

८. ॐ मरीचये नमः

९. ॐ आदित्याय नमः

१०. ॐ सवित्रे नमः

११. ॐ अर्काय नमः

१२. ॐ भास्कराय नमः

# ॥ सूर्याष्टोत्तरशतनामाविलः॥

अरुणाय नमः

शरण्याय नमः

करुणारससिन्धवे नमः

असमानबलाय नमः

आर्तरक्षकाय नमः

आदित्याय नमः

आदिभूताय नमः

अखिलागमवेदिने नमः

अच्युताय नमः

अखिलज्ञाय नमः

अनन्ताय नमः

इनाय नमः

सूर्याष्टोत्तरशतनामावलिः		453
विश्वरूपाय नमः	रुग्धन्ने नमः	
इज्याय नमः	ऋक्षचऋचराय नमः	
इन्द्राय नमः	ऋजुस्वभावचित्ताय नमः	४०
भानवे नमः	नित्यस्तुत्याय नमः	
इन्दिरामन्दिराप्ताय नमः	ऋकारमातृकावर्णरूपाय नमः	
वन्दनीयाय नमः	उञ्चलतेजसे नमः	
ईशाय नमः	ऋक्षाधिनाथमित्राय नमः	
सुप्रसन्नाय नमः २०	पुष्कराक्षाय नमः	
सुशीलाय नमः	लुप्तदन्ताय नमः	
सुवर्चसे नमः	शान्ताय नमः	
वसुप्रदाय नमः	कान्तिदाय नमः	
वसवे नमः	घनाय नमः	
वासुदेवाय नमः	कनत्कनकभूषाय नमः	५०
उञ्चलाय नमः	खद्योताय नमः	
उग्ररूपाय नमः	लूनिताखिलदैत्याय नमः	
ऊर्ध्वगाय नमः	सत्यानन्दस्वरूपिणे नमः	
विवस्वते नमः	अपवर्गप्रदाय नमः	
उद्यत्किरणजालाय नमः ३०	आर्तशरण्याय नमः	
हृषीकेशाय नमः	एकाकिने नमः	
ऊर्जस्वलाय नमः	भगवते नमः	
वीराय नमः	सृष्टिस्थित्यन्तकारिणे नमः	
निर्जराय नमः	गुणात्मने नमः	
जयाय नमः	घृणिभृते नमः	६०
ऊरुद्वयाभावरूपयुक्तसारथये नमः	बृहते नमः	
ऋषिवन्द्याय नमः	ब्रह्मणे नमः	
	ı	

सूर्याष्टोत्तरशतनामाविलः

शर्वाय नमः

शौरये नमः

रवये नमः

हरये नमः

हरिदश्वाय नमः

दशदिक्सम्प्रकाशाय नमः भक्तवश्याय नमः ओजस्कराय नमः जयिने नमः 00 जगदानन्दहेतवे नमः जन्ममृत्युजराव्याधिवर्जिताय नमः औचस्थान-समारूढ-रथस्थाय नमः असुरारये नमः कमनीयकराय नमः अज्ञवल्लभाय नमः अन्तर्बहिः प्रकाशाय नमः अचिन्त्याय नमः आत्मरूपिणे नमः अच्युताय नमः अमरेशाय नमः परस्मै ज्योतिषे नमः अहस्कराय नमः

तरुणाय नमः वरेण्याय नमः ग्रहाणां पतये नमः भास्कराय नमः ९० आदिमध्यान्तरहिताय नमः सौख्यप्रदाय नमः सकलजगतां पतये नमः सूर्याय नमः कवये नमः नारायणाय नमः परेशाय नमः तेजोरूपाय नमः श्रीं हिरण्यगर्भाय नमः ह्रीं सम्पत्कराय नमः 800 ऐं इष्टार्थदाय नमः अं सुप्रसन्नाय नमः श्रीमते नमः श्रेयसे नमः सौख्यदायिने नमः दीप्तमूर्तये नमः निखिलागमवेद्याय नमः नित्यानन्दाय नमः १०८

॥इति श्री-सूर्याष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः नानाविध-परिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

### ॥ उत्तराङ्ग-पूजा॥

धूपमाघ्रापयामि। अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि। श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः नैवेद्यं निवेदयामि। निवेदनान्तरम् आचमनीयं समर्पयामि। श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि।

भास्करायं विदाहें महद्युतिकरायं धीमहि। तन्नों आदित्यः प्रचोदयाँत्।

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः समस्त-अपराध-क्षमापनार्थं कर्पूरनीराजनं दर्शयामि। कर्पूरनीराजनान-तरम् आचमनीयं समर्पयामि। रक्षां धारयामि। श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः वेदोक्तमन्त्रपृष्पाञ्जलिं समर्पयामि। स्वर्णपृष्पं समर्पयामि। श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः प्रदक्षिणनमस्काराः समर्पयामि।

#### ॥ न्यासः ॥

ओं अस्य श्रीसूर्यनमस्कार-महामन्नस्य, कण्वपुत्रः प्रस्कन्न ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीसूर्यनारायणो देवता।

हां बीजम्, हीं शक्तिः, हूं कीलकम्। श्रीसूर्यनारायण-प्रसाद-सिद्धार्थे नमस्कारे विनियोगः।

ह्रां अङ्गृष्ठाभ्यां नमः।

हीं तर्जेनीभ्यां नमः।

हूं मध्यमाभ्यां नमः।

हैं अनामिकाभ्यां नमः।

हों किनिष्ठिकाभ्यां नमः। हः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। हां हृदयाय नमः। हीं शिरसे स्वाहा। हूं शिखाये वषट्। हैं कवचाय हुम्। हों नेत्रत्रयाय वौषट्। हः अस्त्राय फट्। भूर्मुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः॥

### ॥ध्यानम्॥

उदयगिरिमुपेतं भास्करं पद्महस्तं सकलभुवननेत्रं नूतनरत्नोपधेयम्। तिमिरकरिमृगेन्द्रं बोधकं पद्मिनीनां सुरगुरुमभिवन्दे सुन्दरं विश्वरूपम्॥

लं-पृथिव्यात्मने गन्धं समर्पयामि। हं-आकाशात्मने पृष्पाणि समर्पयामि। यं-वाय्वात्मने धूपमाघ्रापयामि। रं-वह्न्यात्मने दीपं दर्शयामि। वं-अमृतात्मने अमृतोपहारं निवेदयामि। सं-सर्वात्मने सर्वोपचारान् समर्पयामि॥

#### ॥ नमस्काराः ॥

ॐ गुणानां त्वा गुणपंति हवामहे कविं केवीनामुप्मश्रंवस्तमम्। ज्येष्टराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत् आ नेः शृण्वन्नृतिभिः सीद् सादेनम्॥ ॐ महागणपतये नमः॥

> उमाकोमल-हस्ताज्ञ-सम्भावित-ललाटकम्। हिरण्यकुण्डलं वन्दे कुमारं पुष्करस्रजम्॥

ॐ श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्यस्वामिने नमः॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात्परं ब्रह्म तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

गुरवे सर्वलोकानां भिषजे भवरोगिणाम्। निधये सर्वविद्यानां दक्षिणामूर्तये नमः॥

विनतातनयो देवः कर्मसाक्षी सुरेश्वरः। सप्ताश्वः सप्तरज्जुश्च अरुणो मे प्रसीदतु॥

रज्जुवेत्रकशापाणिं प्रसन्नं कश्यपात्मजम्। सर्वाभरणदीप्ताङ्गमरुणं प्रणमाम्यहम्॥

ॐ कर्मसाक्षिणे अरुणाय नमः॥

अभिर्मीळे पुरोहितं यज्ञस्यं देवमृत्विजम्। होताँरं रत्न-धातंमम्॥ ऋग्वेदात्मने सूर्यनारायण-स्वामिने नमः॥

इषेत्वोर्जे त्वां वायवंः स्थो पायवंः स्थ देवो वंः सिवता प्रापंयतु श्रेष्ठंतमाय कर्मणे॥ यजुर्वेदात्मने सूर्यनारायण-स्वामिने नमः॥

अग्र आयांहि वीतयें गृणानो ह्व्यदांतये। नि होतां सध्सि बहिषिं॥ सामवेदात्मने सूर्यनारायण-स्वामिने नमः॥ शन्नों देवीर्भिष्टंय आपों भवन्तु पीतर्यें। शं योर्भिस्नंवन्तु नः॥ अथर्ववेदात्मने सूर्यनारायण-स्वामिने नमः॥

(तैत्तिरीयारण्यके प्रश्नः - १० (महानारयणोपनिषत्))

घृणिः सूर्यं आदित्यो न प्रभां वात्यक्षंरम्। मधुं क्षरन्ति तद्रंसम्। सृत्यं वै तद्रसमापो ज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः सुवरोम्॥ श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः॥

(तैत्तिरीयसंहितायां काण्डः १/प्रश्नः - ४)

त्रणिर्विश्वदंर्शतो ज्योतिष्कृदंसि सूर्य। विश्वमा भांसि रोचनम्॥ उपयामगृंहीतोऽसि सूर्याय त्वा भ्राजंस्वत एष ते योनिः सूर्याय त्वा भ्राजंस्वते॥३२॥ श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः॥

- 🕉 ह्राम्। उद्यन्नद्य मित्रमहः। मित्राय नमः॥
- ॐ हीम्। आरोहन्नुत्तंरां दिवम्ं। रवये नमः॥
- ॐ ह्रम्। हृद्रोगं ममं सूर्य। सूर्याय नमः॥
- 🕉 ह्रैम्। हरिमाणंं च नाशय। भानवे नमः॥
- ॐ ह्रौम्। शुकेषु मे हरिमाणम्। खगाय नमः॥
- ॐ हः। रोपणाकांसु दध्मसि॥ पूष्णे नमः॥
- ॐ ह्राम्। अथों हारिद्रवेषुं मे। हिरण्यगर्भाय नमः॥
- ॐ ह्रीम्। हरिमाणं नि दंध्मसि। मरीचये नमः॥
- ॐ ह्रम्। उदंगादयमांदित्यः। आदित्याय नमः॥
- 🕉 हैम्। विश्वेन सहंसा सुह। सवित्रे नमः॥

- ॐ ह्रौम्। द्विषन्तुं ममं रुन्धयन्। अर्काय नमः॥
- ॐ हः। मो अहं द्विष्तो रंधम्। भास्कराय नमः॥
- ॐ ह्रां ह्रीम्। उद्यन्नद्य मित्रमहः। आरोह्नुत्तंरां दिवम्ं। मित्र-रविभ्यां नमः॥
- ॐ हूं हैम्। हृद्रोगं ममं सूर्य। हृरिमाणं च नाशय। सूर्य-भानुभ्यां नमः॥
- ॐ ह्रौं हः। शुकेषु मे हरिमाणम्। रोपणाकांसु दध्मसि॥ खग-पूषभ्यां नमः॥
- ॐ ह्रां ह्रीम्। अथौं हारिद्रवेषुं मे। ह्रिमाणं नि दंध्मसि। हिरण्यगर्भ-मरीचिभ्यां नमः॥
- ॐ हूं हैम्। उदंगाद्यमांदित्यः। विश्वेन सहंसा सह। आदित्य-सवितृभ्यां नमः॥
- ॐ ह्रौं हः। द्विषन्तुं मर्म रन्धयन्। मो अहं द्विष्तो रिधम्। अर्क-भास्कराभ्यां नमः॥
- ॐ हां हीं हूं हैम्। उद्यन्नद्य मिन्नमहः। आरोह्नन्नत्तरां दिवम्। हृद्रोगं ममे सूर्य। हिर्माणं च नाशय। मिन्न-रिव-सूर्य-भानुभ्यो नमः॥
- ॐ हों हः हां हीम्। शुकेषु मे हिर्माणम्। रोप्णाकांसु दध्मसि॥ अथों हारिद्रवेषुं मे। हुरिमाणुं नि दंध्मसि। खग-पूष-हिरण्यगर्भ-मरीचिभ्यो नमः॥
- ॐ हूं हैं हों हः। उदंगाद्यमांदित्यः। विश्वेन सहंसा सह। द्विषन्तुं ममं रन्धयन्। मो अहं द्विषतो रंधम्। आदित्य-सवित्रर्क-भास्करेभ्यो नमः॥
- ॐ हां हीं हूं हैं हों हः। उद्यन्नद्य मित्रमहः। आरोह्नुत्तंरां दिवम्। हृद्रोगं ममं सूर्य। हृरिमाणं च नाशय। शुकेषु मे हिर्माणम्। रोपणाकांसु दध्मसि॥ मित्र-रवि-सूर्य-भानु-खग-पूषभ्यो नमः॥
- ॐ हां हीं हूं हैं हौं हः। अथों हारिद्रवेषुं मे। हरिमाणुं नि दंध्मिस।

उदंगाद्यमादित्यः। विश्वेन सहंसा सह। द्विषन्तं ममं रुन्थयन्। मो अहं द्विषतो रंधम्। हिरण्यगर्भ-मरीच्यादित्य-सवित्रर्क-भास्करेभ्यो नमः॥

(तैत्तिरीयब्राह्मणे अष्टकं - ३/प्रश्नः - ७/अनुवाकः - ६/ पश्चादयः ७६-७७)

ॐ हां हीं हूं हैं हों हः। ॐ हां हीं हूं हैं हों हः। उद्यन्नद्य मित्रमहः। आरोह्नुत्तंरां दिवम्ं। हृद्रोगं ममं सूर्य। हृरिमाणं च नाशय। शुकेषु मे हिरिमाणम्ं। रोपणाकांसु दध्मसि॥ अथों हारिद्रवेषुं मे। हृरिमाणां नि दंध्मसि। उदंगाद्यमादित्यः। विश्वेन सहंसा सह। द्विषन्तं ममं र्न्थयन्। मो अहं द्विषतो रंधम्। मित्र-रवि-सूर्य-भानु-खग-पूष-हिरण्यगर्भ-मरीच्यादित्य-सवित्रर्क-भास्करेभ्यो नमः॥

## ॥ आदित्यमण्डले परब्रह्मोपासनम्॥

(तैत्तिरीयारण्यके प्रश्नः - १० (महानारयणोपनिषत्))

आदित्यो वा एष एतन्मण्डलं तपंति तत्र ता ऋचस्तद्दचा मण्डल् स ऋचां लोकोऽथ य एष एतस्मिन्मण्डलेऽर्चिर्दीप्यते तानि सामानि स साम्नां मण्डल् स साम्नां लोकोऽथ य एष एतस्मिन्मण्डलेऽर्चिषि पुरुष्पस्तानि यजूर्षेषि स यज्ञेषा मण्डल् स यज्ञेषां लोकः सेषा त्र्य्येवं विद्या तपिति य एषो ऽन्तरादित्ये हिर्ण्मयः पुरुषः॥३१॥ श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः॥

## ॥ आदित्यपुरुषस्य सर्वात्मकत्वप्रदर्शनम्॥

(तैत्तिरीयारण्यके प्रश्नः - १० (महानारयणोपनिषत्))

आदित्यो वै तेज् ओजो बलं यश्रश्चक्षुः श्रोत्रंमात्मा मनों मृन्युर्मनुंर्मृत्युः सत्यो मित्रो वायुराकाशः प्राणो लोकपालः कः किं कं तथ्सत्यमन्नंममृतों जीवो विश्वः कत्मः स्वयम्भु ब्रह्मैतदमृत एष पुरुष एष भूतानामधिपतिर्ब्रह्मणः सायुंज्य सलोकतांमाप्रोत्येतासांमेव देवतांना सायुंज्य सायुंज्य सार्थिता र समानलोकर्तामाप्नोति य एवं वेदैत्युप्निषत्॥३२॥ श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः॥

### ॥ अरुणप्रश्नः॥

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयामं देवाः। भद्रं पंश्येमाक्षभिर्यजंत्राः। स्थिरेरङ्गैंस्तुष्टु-वार्श्संस्तुनूभिः। व्यशेम देवहितं यदायुः। स्वस्ति न इन्द्रों वृद्धश्रंवाः। स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः। स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

भुद्रं कर्णिभिः शृणुयामं देवाः। भुद्रं पंश्येमाक्षभिर्यजंत्राः। स्थिरैरङ्गैंस्तुष्टु-वाश्संस्तुनूभिः। व्यशेम देवहितं यदायुः। स्वस्ति न इन्द्रों वृद्धश्रंवाः। स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः। स्वस्ति नो बृहुस्पतिर्दधातु। आपमापामुपः सर्वाः। अस्मादस्मादितोऽमुतः॥१॥

अग्निर्वायुश्च सूर्यश्च। सह संश्वस्करिद्धंया। वाय्वश्वां रिम्पितयः। मरींच्यात्मानो अद्रुंहः। देवीर्भवनसूर्वरीः। पुत्रवत्वायं मे सुत। महानाम्नीर्महा-मानाः। महसो महसः स्वंः। देवीः पंजन्यसूर्वरीः। पुत्रवत्वायं मे सुत॥२॥

अपाश्चंिष्णम्पा रक्षः। अपाश्चंिष्णम्पा रघमं। अपाँघामपं चावर्तिम्। अपदेवीरितो हित। वर्ज्नं देवीरजीता ॥ भवंनं देवसूवंरीः। आदित्यानदितिं देवीम्। योनिनोर्ध्वमुदीषंत। शिवा नः शन्तंमा भवन्तु। दिव्या आप ओषंधयः। सुमुडीका सरंस्वति। मा ते व्योम सन्दर्शि॥३॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः। ॐ नमो नारायणाय॥ स्मृतिः प्रत्यक्षंमैतिह्यम्। अनुमानश्चतुष्ट्यम्। एतैरादित्यमण्डलम्। सर्वेरेव विधास्यते। सूर्यो मरीचिमादत्ते। सर्वस्माद्भवनाद्धि। तस्याः पाकविंशेषेण। स्मृतं कालविशेषणम्। नदीव प्रभवात्काचित्। अक्षय्याध्स्यन्दते यथा॥४॥

तां नद्योऽभि संमायन्ति। सो्रुः सतीं न निवंति। एवं नानासंमुत्थानाः। काृ्लाः संवथ्सर् श्रिताः। अणुशश्च महश्रश्च। सर्वे समव्यत्रितम्। सतैः स्वैः समाविष्टः। ऊरुः सन्न निवर्तते। अधिसंवथ्सरं विद्यात्। तदेवं लक्षणे॥५॥

अणुभिश्च महिद्धिश्च। समार्रूढः प्रदृश्यते। संवथ्सरः प्रत्यक्षेण। नाधिसंत्वः प्रदृश्यते। पटरो विक्लिधः पिङ्गः। एतद्वरणलक्षणम्। यत्रैतंदुपृदृश्यते। सहस्रं तत्र नीयते। एक १ हि शिरो नाना मुखे। कृथ्स्नं तंदतुलक्षणम्॥६॥

उभयतः सप्तेन्द्रियाणि। ज्ञिल्पतं त्वेव दिह्यंते। शुक्रकृष्णे संवंध्सर्स्य। दिक्षणवामयोः पार्श्वयोः। तस्यैषा भवंति। शुक्रं ते अन्यद्यंज्ञतं ते अन्यत्। विषुंरूपे अहंनी द्यौरिवासि। विश्वा हि माया अवंसि स्वधावः। भुद्रा ते पूषित्रह रातिरस्त्विति। नात्र भुवंनम्। न पूषा। न पृशवंः। नाऽऽदित्यः संवध्सर एव प्रत्यक्षेण प्रियतमं विद्यात्। एतद्वे संवध्सरस्य प्रियतमः रूपम्। योऽस्य महानर्थ उत्पथ्स्यमानो भ्वति। इदं पुण्यं कुरुष्वेति। तमाहरंणं द्द्यात्॥७॥ श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

ॐ नमो नारायणाय॥

साकुआनाई सप्तर्थमाहुरेकजम्। षडुंद्यमा ऋषंयो देवजा इतिं। तेषांमिष्टानि विहितानि धामुशः। स्थात्रे रेजन्ते विकृतानि रूपृशः। को नुं मर्या अमिथितः। सखा सखायमब्रवीत्। जहांको अस्मदींषते। यस्तित्याजं सखिविद्द सखायम्। न तस्यं वाच्यपि भागो अस्ति। यदीई शृणोत्यलकई शृणोति॥८॥ न हि प्रवेदं सुकृतस्य पन्थामितिं। ऋतुर्ऋतुना नुद्यमांनः। विनंनादा-भिधांवः। षष्टिश्च त्रि॰शंका वृल्गाः। शुक्लकृष्णौ च षाष्टिंकौ। साराग्वस्त्रेर्ज्र-दंक्षः। वसन्तो वसुंभिः सह। संवथ्सरस्यं सवितुः। प्रैष्कृतप्रंथमः स्मृतः। अमूनादयंतेत्यन्यान्॥९॥

अमू इश्चे परिरक्षेतः। एता वाचः प्रयुज्यन्ते। यत्रैतंदुपृदृश्यंते। एतदेव विजानीयात्। प्रमाणं कालपर्यये। विशेषणं तुं वक्ष्यामः। ऋतूनां तिन्नेबोधंत। शुक्रवासां रुद्रगणः। ग्रीष्मेणांऽऽवर्तते सह। निजहंन् पृथिवी स्वाम्॥१०॥

ज्योतिषाँ ऽप्रतिख्येनं सः। विश्वरूपाणिं वासार्सि। आदित्यानां निबोधंत। संवथ्सरीणं कर्म्फलम्। वर्षाभिदंदतार् सह। अदुःखों दुःखचंक्षुरिव। तद्मां ऽऽपीत इव दृश्यंते। शीतेनां व्यथंयन्निव। रुरुदंक्ष इव दृश्यंते। ह्रादयतें ज्वलंतश्चेव। शाम्यतंश्चास्य चक्षुंषी। या वै प्रजा भ्रं इश्यन्ते। संवथ्सरात्ता भ्रं इश्यन्ते। याः प्रतितिष्ठन्ति। संवथ्सरे ताः प्रतितिष्ठन्ति। वर्षाभ्यं इत्यर्थः॥११॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः। ॐ नमो नारायणाय॥

**.[**३

अक्षिदुःखोत्थितस्यैव। विप्रसन्ने क्नीनिके। आङ्के चार्न्नणं नास्ति। ऋभूणां तिन्नबोधित। कन्काभानिं वासार्श्ति। अहतानि निबोधित। अन्नमश्नीतं मृज्मीत। अहं वो जीवनप्रदः। एता वाचः प्रयुज्यन्ते। शरद्यंत्रोपदृश्यंते॥१२॥

अभिधून्वन्तोऽभिघ्नंन्त इव। वातवंन्तो मुरुद्गंणाः। अमुतो जेतुमिषुमुंखिम्व। सन्नद्धाः सह दंदश्चे ह। अपध्वस्तैवंस्तिवंणैरिव। विशिखासंः कपूर्दिनः। अन्नद्धस्य योथ्स्यंमान्स्य। ऋुद्धस्यंव लोहिनी। हेमतश्चक्षंषी विद्यात्। अक्षणयोः क्षिपणोरिव॥१३॥

दुर्भिक्षं देवलोकेषु। मनूनांमुदकं गृहे। एता वाचः प्रवदन्तीः। वैद्युतों यान्ति शैशिरीः। ता अग्निः पर्वमना अन्वैक्षत। इह जीविकामपरिपश्यन्। तस्यैषा भवंति। इहेह्नंवः स्वतपसः। मर्रुतः सूर्यत्वचः। शर्म सप्रथा आवृंणे॥१४॥ श्री-छोया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

ॐ नमो नारायणाय॥

अतिंताम्राणिं वासा १सि। अष्टिवंजिशतिष्ठिं च। विश्वे देवा विप्रंहरन्ति। अग्निजिंह्वा असर्श्वत। नैव देवों न मर्त्यः। न राजा वंरुणो विभुः। नाग्निर्नेन्द्रो न पंवमानः। मातृक्कंचन विद्यंते। दिव्यस्यैका धनुंरार्विः। पृथिव्यामपंरा श्रिता॥१५॥

तस्येन्द्रो विम्नेरूपेण। धनुर्ज्यामछिनथ्स्वयम्। तिर्देन्द्रधनुंरित्यज्यम्। अभ्रवंणेषु चक्षंते। एतदेव शंयोर्बार्हंस्पत्यस्य। एतर्बुद्रस्य धनुः। रुद्रस्यं त्वेव धनुंरार्बिः। शिर् उत्पिपेष। स प्रवर्ग्योऽभवत्। तस्माद्यः सप्रवर्ग्यणं यज्ञेन यजंते। रुद्रस्य स शिरः प्रतिंदधाति। नैन १ रुद्र आर्रुको भवति। य एवं वेदं॥१६॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

ॐ नमो नारायणाय॥

अत्यूर्ध्वाक्षोऽतिंरश्चात्। शिशिंरः प्रदृश्यंते। नैव रूपं नं वासा एसि। न चक्षुंः प्रतिदृश्यंते। अन्योन्यं तु नं हिङ्स्रातः। सतस्तंद्देवलक्षंणम्। लोहितोऽ-क्ष्णि शांरशीर्ष्णिः। सूर्यस्योदयनं प्रति। त्वं करोषिं न्यञ्जलिकाम्। त्वं करोषि निजानुंकाम्॥१७॥

निजानुका में न्यञ्जलिका। अमी वाचमुपासंतामिति। तस्मै सर्व ऋतवों नमन्ते। मर्यादाकरत्वात्प्रंपुरोधाम्। ब्राह्मणं आप्नोति। य एवं वेद। स खलु

संवथ्सर एतैः सेनानीभिः सृह। इन्द्राय सर्वान्कामानिभवृहति। स द्रफ्सः। तस्यैषा भवंति॥१८॥

अवंद्रफ्सो अर्श्शुमतीमतिष्ठत्। इयानः कृष्णो दशिमः सहस्रैः। आवृतीमन्द्रः शच्या धर्मन्तम्। उपस्नुहि तं नृमणामथंद्रामिति। एतयैवेन्द्रः सलावृंक्या सह। असुरान् पंरिवृश्चति। पृथिंव्यर्शुमंती। तामन्ववंस्थितः संवथ्सरो दिवं चं। नैवं विदुषाऽऽचार्यान्तेवासिनौ। अन्योन्यस्मैं द्रुह्याताम्। यो द्रुह्यति। भ्रश्यते स्वंर्गाल्लोकात्। इत्यृतुमंण्डलानि। सूर्यमण्डलान्याख्यायिकाः। अत ऊर्ध्वर संनिर्वचनाः॥१९॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः। ॐ नमो नारायणाय॥

.[६]

आरोगो भ्राजः पटरंः पत्ङ्गः। स्वर्णरो ज्योतिषीमान्ं विभासः। ते अस्मै सर्वे दिवमातपन्ति। ऊर्जं दुहाना अनपस्फुरंन्त इति। कश्यंपोऽष्ट्रमः। स महामेरुं न जहाति। तस्यैषा भवंति। यत्ते शिल्पं कश्यप रोचनावंत्। इन्द्रियावंत्पृष्कुलं चित्रभानु। यस्मिन्थ्सूर्या अर्पिताः सप्त साकम्॥२०॥

तस्मिन् राजानमधिविश्रयेमिमिति। ते अस्मै सर्वे कश्यपाज्यो-तिर्लभुन्ते। तान्थ्सोमः कश्यपादिधिनिर्धमिति। भ्रस्ताकर्मकृदिवैवम्। प्राणो जीवानीन्द्रियंजीवानि। सप्त शीर्षण्याः प्राणाः। सूर्या इंत्याचार्याः। अपश्यमहमेतान्थ्सप्त सूर्यानिति। पश्चकर्णो वाथ्स्यायनः। सप्तकर्णश्च प्राक्षिः॥२१॥

आनुश्रविक एव नौ कश्यंप इति। उभौ वेद्यिते। न हि शेकुमिव महामेंरुं गुन्तुम्। अपश्यमहमेथ्सूर्यमण्डलं परिवर्तमानम्। गार्ग्यः प्राणत्रातः। गच्छन्त महामेरुम्। एकं चाजहतम्। भ्राजपटरपतंङ्गा निहने। तिष्ठन्नांतपन्ति। तस्मांदिह तिर्त्रितपाः॥२२॥

अमुत्रेतरे। तस्मांदिहातित्रितपाः। तेषांमेषा भवंति। सप्त सूर्या दिव्मनुप्रविष्टाः। तान्-वेतिं पृथिभिदिक्षिणावान्। ते अस्मै सर्वे घृतमांतपुन्ति। ऊर्जं दुहाना अनपस्फुरंन्त इति। सप्तर्त्विजः सूर्या इंत्याचार्याः। तेषांमेषा भवंति। सप्त दिशो नानांसूर्याः॥२३॥

सप्त होतांर ऋत्विजः। देवा आदित्यां ये सप्ता तेभिः सोमाभी रक्षंण इति। तदंप्याम्रायः। दिग्भाज ऋतूँन् करोति। एतंयैवावृता सहस्रसूर्यताया इति वैशम्पायनः। तस्यैषा भवंति। यद्यावं इन्द्र ते शृत शृतं भूमीः। उतस्युः। नत्वां विज्ञिन्थ्सहस्र सूर्याः॥२४॥

अनु न जातमष्ट रोदंसी इति। नानालिङ्गत्वादतूनां नानांसूर्यत्वम्। अष्टौ तु व्यवसिता इति। सूर्यमण्डलान्यष्टांत ऊर्ध्वम्। तेषांमेषा भवंति। चित्रं देवानामुदंगादनीकम्। चक्षुंर्मित्रस्य वर्रुणस्याग्नेः। आऽप्रा द्यावांपृथिवी अन्तरिक्षम्। सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुंषश्चेति॥२५॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-सम्त-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

#### ॐ नमो नारायणाय॥

[<sub>0</sub>]\_

केदमभ्रं निविशते। क्वायर् संवथ्सरो मिथः। क्वाहः क्वयं देव रात्री। क्व मासा ऋतवः श्रिताः। अर्धमासां मुहूर्ताः। निमेषास्त्रंटिभिः सह। क्वमा आपो निविश्वन्ते। यदीतों यान्ति सम्प्रंति। काला अफ्सु निविश्वन्ते। आपः सूर्ये समाहिताः॥२६॥

अभ्राण्यपः प्रंपद्यन्ते। विद्युथ्सूर्ये समाहिता। अनवर्णे इंमे भूमी। इयं चां-ऽसौ च रोदंसी। किङ्स्विदत्रान्तरा भूतम्। येनेमे विधृते उभे। विष्णुनां विधृते भूमी। इति वंथ्सस्य वेदंना। इरांवती धेनुमती हि भूतम्। सूयवसिनी मनुषे दश्स्यै॥२७॥

व्यष्टभ्राद्रोदंसी विष्णंवेते। दाधर्थं पृथिवीम्भितों म्यूखैंः। किं तिह्रष्णोर्बल-माहुः। का दीप्तिः किं प्रायंणम्। एको युद्धारंयद्देवः। रेजतीं रोद्सी उंभे। वाताद्विष्णोर्बलमाहुः। अक्षराद्दीप्तिरुच्यंते। त्रिपदाद्धारंयद्देवः। यद्विष्णोरेक-मृत्तंमम्॥२८॥

अग्नयो वायंवश्चैव। एतदंस्य प्रायंणम्। एच्छामि त्वा पंरं मृत्युम्। अवमं मध्यमश्चंतुम्। लोकं च पुण्यंपापानाम्। एतत्पृच्छामि सम्प्रंति। अमुमाहुः पंरं मृत्युम्। प्वमानं तु मध्यंमम्। अग्निरेवावंमो मृत्युः। चन्द्रमांश्चतुरुच्यंते॥२९॥

अनाभोगाः परं मृत्युम्। पापाः संयन्ति सर्वदा। आभोगास्त्वेवं संयन्ति। यत्र पुण्यकृतो जनाः। ततो मध्यममायन्ति। चतुमंग्निं च सम्प्रति। पृच्छामि त्वां पापकृतः। यत्र यातयते यमः। त्वं नस्तद्वह्मन् प्रब्रूहि। यदि वैत्थाऽस्तो गृहान्॥३०॥

कृश्यपाद्दिताः सूर्याः। पापान्निर्प्नन्ति सर्वदा। रोदस्योन्तर्देशेषु। तत्र न्यस्यन्ते वास्रवैः। तेऽशरीराः प्रपद्यन्ते। यथाऽपुण्यस्य कर्मणः। अपाण्यपादंकेशासः। तृत्र तेऽयोनिजा जनाः। मृत्वा पुनर्मृत्युमापद्यन्ते। अद्यमानाः स्वकर्मभिः॥३१॥

आशातिकाः क्रिमंय इव। ततः पूयन्ते वास्रवैः। अपैतं मृत्युं ज्यिति। य एवं वेदं। स खल्वैवं विद्वाह्मणः। दीर्घश्रुंत्तमो भवंति। कश्यंपस्यातिथिः सिद्धगंमनः सिद्धागंमनः। तस्यैषा भवंति। आयस्मिन्थ्सप्त वांस्रवाः। रोहंन्ति पूर्व्या रुहंः॥३२॥

ऋषिंर्ह दीर्घश्रुत्तंमः। इन्द्रस्य घर्मो अतिंथिरिति। कश्यपः पश्यंको

भ्वति। यथ्सर्वं परिपश्यतीति सौक्ष्म्यात्। अथाग्नेरष्टपुंरुष्स्य। तस्यैषा भविति। अग्ने नयं सुपर्था राये अस्मान्। विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यंस्मञ्जंहराणमेनः। भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेमेति॥३३॥ श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

ॐ नमो नारायणाय॥

6

अग्निश्च जातंवेदाश्च। सहोजा अंजिराप्रभुः। वैश्वानरो नंर्यापाश्च। पङ्किरांधाश्च सप्तमः। विसर्पेवाऽष्टंमोऽग्नीनाम्। एतेऽष्टौ वसवः, क्षिंता इति। यथर्त्वेवाग्नेरर्चिर्वर्णंविशेषाः। नीलार्चिश्च पीतकांचिश्चेति। अथ वायोरेकादश-पुरुषस्यैकादशंस्त्रीकस्य। प्रभ्राजमाना व्यंवदाताः॥३४॥

याश्च वासुंकिवैद्युताः। रजताः पर्रुषाः श्यामाः। कपिला अंतिलोहिताः। ऊर्ध्वा अवपंतन्ताश्च। वैद्युत इंत्येकादश। नैनं वैद्युतों हिन्स्ति। य एवं वेद। स होवाच व्यासः पाराश्चर्यः। विद्युद्वधमेवाहं मृत्युमैंच्छिमिति। न त्वकांम श्हिन्त॥३५॥

य एवं वेद। अथ गन्धर्वगणाः। स्वानुभ्राट्। अङ्घारि्रविम्भारिः। हस्तः सुहंस्तः। कृशानुर्विश्वावंसुः। मूर्धन्वान्थ्सूर्यवर्चाः। कृतिरित्येकादश गन्धर्व-गणाः। देवाश्च महादेवाः। रश्मयश्च देवां गर्गिरः॥३६॥

नैनं गरों हिन्स्ति। य एवं वेद। गौरी मिंमाय सिल्लानि तक्षंती। एकंपदी द्विपदी सा चतुंष्पदी। अष्टापदी नवंपदी बभूवुषीं। सहस्राक्षरा परमे व्योमनिति। वाचों विशेषणम्। अथ निगदंव्याख्याताः। ताननुर्क्रमिष्यामः। व्राहवंः स्वतुपसः॥३७॥

विद्युन्मंहस्रो धूपंयः। श्वापयो गृहमेधाँश्चेत्येते। ये चेमेऽशिंमिविद्विषः। पर्जन्याः सप्त पृथिवीमभिवंर्षिन्ति। वृष्टिंभिरिति। एतयैव विभक्तिविंपरीताः। सप्तभिवीं तैंरुदीरिताः। अमूँश्लोकानभिवंर्षिन्ति। तेषांमेषा भवंति। सुमानमेत-

दुदंकम्॥३८॥

उचैत्यंव्चाहंभिः। भूमिं पूर्जन्या जिन्वंन्ति। दिवं जिन्वन्त्यग्नंय इति। यदक्षंरं भूतकृतम्। विश्वे देवा उपासंते। मृहर्षिमस्य गोप्तारम्। जमदंग्निमकुंर्वत। जमदंग्निराप्यांयते। छन्दोंभिश्चतुरुत्तरैः। राज्ञः सोमंस्य तृप्तासंः॥३९॥

ब्रह्मणा वीर्यावता। शिवा नंः प्रदिशो दिशंः। तच्छुं योरावृंणीमहे। गातुं यज्ञायं। गातुं यज्ञपंतये। दैवीं स्वस्तिरंस्तु नः। स्वस्तिर्मानुंषेभ्यः। ऊर्धं जिंगातु भेषजम्। शं नो अस्तु द्विपदें। शं चतुंष्पदे। सोमपा (३) असोमपा (३) इति निगदंव्याख्याताः॥४०॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः। ॐ नमो नारायणाय॥

[8]

सहस्रवृदियं भूमिः। प्रं व्योम सहस्रवृत्। अश्विनां भुज्यूंनास्त्या। विश्वस्यं जगतस्पंती। जाया भूमिः पंतिर्व्योम। मिथुनंन्ता अतुर्यंथुः। पुत्रो बृहस्पंती रुद्रः। स्रमां इतिं स्नीपुमम्। शुक्रं वांमन्यद्यंज्तं वांमन्यत्। विषुंरूपे अहंनी द्यौरिव स्थः॥४१॥

विश्वा हि माया अवंथः स्वधावन्तौ। भुद्रा वां पूषणाविह रातिरंस्तु। वासाँत्यौ चित्रौ जगंतो निधानौँ। द्यावांभूमी चरथः स् स् सखांयौ। तावृश्विनां रासभाँश्वा हवंं मे। शुभस्पती आगत सूर्ययां सह। त्युग्रोह भुज्युमंश्विनोदमेघे। र्यिं न कश्चिन्ममृवां (२) अवांहाः। तमूंहथुनींभिरात्मन्वतींभिः। अन्तरिक्षप्रिक्किरपोदकाभिः॥४२॥

तिस्रः, क्षप्स्त्रिरहांतिव्रजिद्धिः। नासंत्या भुज्युमूंहथुः पत्ङ्गेः। सुमुद्रस्य धन्वन्नार्द्रस्यं पारे। त्रिभीरथैः शुतपिद्धिः षडिश्वैः। सुवितार् वितन्वन्तम्। अर्नुबभ्नाति शाम्ब्रः। आपपूर्षम्बरिश्चैव। सुवितारिपुसोऽभवत्। त्य॰ सुतृप्तं विदित्वैव। बहुसोम गिरं वंशी॥४३॥

अन्वेति तुग्रो वंक्रियान्तम्। आयसूयान्थ्सोमंतृपस्षुषु। स सङ्ग्राम-स्तमोंद्योऽत्योतः। वाचो गाः पिपाति तत्। स तद्गोभिः स्तवांऽत्येत्यन्ये। रक्षसानिन्वताश्चं ये। अन्वेति परिवृत्याऽस्तः। एवमेतौ स्थों अश्विना। ते एते द्युंः पृथिव्योः। अहंरहर्गर्भं दधाथे॥४४॥

तयोरितौ वृथ्सावंहोरात्रे। पृथिव्या अहंः। दिवो रात्रिः। ता अविंसृष्टौ। दम्पंती एव भवतः। तयोरेतौ वृथ्सौ। अग्निश्चांऽऽदित्यश्चं। रात्रेर्वथ्सः। श्वेत आंदित्यः। अह्रोऽग्निः॥४५॥

ताम्रो अंरुणः। ता अविंसृष्टौ। दम्पंती एव भंवतः। तयोंरेतौ वृथ्सौ। वृत्रश्चं वैद्युतश्चं। अ्ग्रेर्वृत्रः। वैद्युतं आदित्यस्यं। ता अविंसृष्टौ। दम्पंती एव भंवतः। तयोंरेतौ वथ्सौ॥४६॥

उष्मा चं नीहारश्चं। वृत्रस्योष्मा। वैद्युतस्यं नीहारः। तौ तावेव प्रतिंपद्येते। सेय रात्रीं गुर्भिणीं पुत्रेण संवंसित। तस्या वा एतदुल्बणम्ं। यद्रात्रौं रृश्मयंः। यथा गोर्गुर्भिण्यां उल्बणम्ं। एवमेतस्यां उल्बणम्ं। प्रजियण्णः प्रजया च पशुर्भिश्च भवति। य एवं वेद। एतमुद्यन्तमिपयंन्तं चेति। आदित्यः पुण्यंस्य वृथ्सः। अथ पवित्राङ्गिरसः॥४७॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

### ॐ नमो नारायणाय॥

[66]

प्वित्रंवन्तः परिवाज्ञमासंते। पितैषां प्रत्नो अभिरंक्षति व्रतम्। महः संमुद्रं वर्रणस्तिरोदंधे। धीरां इच्छेकुर्धरुणेष्वारभम्। प्वित्रं ते वितंतं ब्रह्मणस्पते। प्रभुगीत्राणि पर्येषिविश्वतः। अतंप्ततनूर्न तदामो अश्रुते। शृतास्

इद्वहंन्तस्तथ्समांशत। ब्रह्मा देवानांम्। असंतः सद्ये ततंक्षुः॥४८॥

ऋषंयः स्प्तात्रिश्च यत्। सर्वेऽत्रयो अंगस्त्यश्च। नक्षेत्रैः शङ्कृंतोऽवसन्। अर्थ सिवतुः श्यावाश्वस्याऽवर्तिकामस्य। अमी य ऋक्षा निर्हितास उचा। नक्तं दर्दश्चे कुर्हचिद्दिवेयुः। अदंब्यानि वर्रुणस्य व्रतानि। विचाकशंचन्द्रमा नक्षेत्रमेति। तथ्संवितुर्वरेण्यम्। भर्गो देवस्यं धीमहि॥४९॥

धियो यो नंः प्रचोदयाँत्। तथ्संवितुर्वृणीमहे। वयं देवस्य भोर्जनम्। श्रेष्ठ र् सर्वधातमम्। तुरं भगस्य धीमहि। अपांगूहत सविता तृभीन्। सर्वांन्दिवो अन्धंसः। नक्तं तान्यंभवन्दृशे। अस्थ्यस्थ्रा सम्भविष्यामः। नाम् नामैव नाम मै॥५०॥

नपुरसंकं पुमा्ङ्स्र्यंस्मि। स्थावंरोऽस्म्यथ् जङ्गमः। युजेऽयि यष्टाहे चं। मयां भूतान्यंयक्षत। पृशवों ममं भूतानि। अनूबन्ध्योऽस्म्यंहं विभुः। स्त्रियंः स्तीः। ता उमे पुर्स आंहुः। पश्यंदक्षण्वान्नविचेतद्न्धः। कृविर्यः पुत्रः स इमा चिकेत॥५१॥

यस्ता विजानाथ्मंवितुः पितासंत्। अन्धो मणिमंविन्दत्। तमंनङ्गुलिरावंयत्। अग्रीवः प्रत्यंमुञ्चत्। तमजिह्वा असश्चंत। ऊर्ध्वमूलमंवाक्छाखम्। वृक्षं यो वेद सम्प्रंति। न स जातु जनः श्रद्दध्यात्। मृत्युर्मा मार्यादितिः। हसित १ रुदितं गीतम्॥५२॥

वीर्णापणव्लासितम्। मृतं जी्वं चे यत्किश्चित्। अङ्गानि स्नेव् विद्धिं तत्। अतृष्यु स्तृष्यंध्यायत्। अस्माञ्जाता में मिथू चरत्रं। पुत्रो निर्ऋत्यां वैदेहः। अचेतां यश्च चेतेनः। स तं मणिमंविन्दत्। सोऽनङ्गुलिरावंयत्। सोऽग्रीवः प्रत्यंमुञ्चत्॥५३॥

सोऽजिंह्वो असश्चंत। नैतमृषिं विदित्वा नगरं प्रविशेत्। यंदि प्रविशेत्।

मिथौ चरित्वा प्रविशेत्। तथ्सम्भवंस्य व्रतम्। आतमंग्ने र्थं तिष्ठ। एकांश्वमेक्योजंनम्। एकचक्रंमेक्ध्रम्। वात्रप्रांजिगतिं विंभो। न रिष्यतिं न व्यथते॥५४॥

नास्याक्षों यातु सञ्जंति। यच्छ्वेतांन् रोहिंताङ्श्चाग्नेः। रथे युंक्काऽधितिष्ठंति। एकया च दशभिश्चं स्वभूते। द्वाभ्यामिष्टये विर्श्वात्या च। तिसृभिश्च वहसे त्रिर्श्वाता च। नियुद्धिर्वायविह तां विमुश्च॥५५॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः। ॐ नमो नारायणाय॥

[88]

आतंनुष्व प्रतंनुष्व। उद्धमाऽऽधंम् सन्धंम। आदित्ये चन्द्रंवर्णानाम्। गर्भमाधेहि यः पुमान्। इतः सिक्तः सूर्यगतम्। चन्द्रमंसे रसं कृधि। वारादं जनयाग्रेऽग्निम्। य एको रुद्र उच्यंते। असङ्ख्याताः संहस्राणि। स्मर्यते न च दृश्यंते॥५६॥

पृवमेतं निंबोधत। आ मृन्द्रैरिंन्द्र हरिंभिः। याहि मयूरंरोमभिः। मा त्वा केचिन्नियेमुरिंन्न पाशिनः। दधन्वेव ता इंहि। मा मृन्द्रैरिंन्द्र हरिंभिः। यामि मयूरंरोमभिः। मा मा केचिन्नियेमुरिंन्न पाशिनः। नि्धन्वेव तां (२) इंमि। अणुभिश्च महिद्धिश्च॥५७॥

निघृष्वैरस्मायुंतैः। कालैर्हरित्वंमापृत्रैः। इन्द्राऽऽयांहि स्हस्रंयुक्। अग्निर्विभ्राष्टिंवसनः। वायुः श्वेतंसिकद्रुकः। स्व्यथ्सरो विषूवर्णैः। नित्यास्ते-ऽनुचंरास्त्व। सुब्रह्मण्यो सुब्रह्मण्यो सुब्रह्मण्यो सुंब्रह्मण्योम्। इन्द्राऽऽगच्छ हरिव आगच्छ मेधातिथेः। मेष वृषणश्वंस्य मेने॥५८॥

गौरावस्कन्दिन्नहल्यांये जार। कौशिकब्राह्मण गौतमंब्रुवाण। अरुणाश्वां इहागंताः। वसंवः पृथिविक्षितः। अष्टौदिग्वासंसोऽग्नयः। अग्निश्च जात- वेदाँश्चेत्येते। ताम्राश्वाँस्ताम्ररथाः। ताम्रवर्णांस्तथाऽसिताः। दण्डहस्ताः खादग्दतः। इतो रुद्राः पराङ्गताः॥५९॥

उक्त स्थानं प्रमाणं चं पुर् इत। बृह्स्पतिश्च सिवता चं। विश्वरूंपैरिहा-ऽऽगंताम्। रथेनोदक्वर्त्मना। अपसुषां इति तद्वंयोः। उक्तो वेषों वासार्धि च। कालावयवानामितः प्रतीच्या। वासात्यां इत्यश्विनोः। कोऽन्तिरक्षे शब्दं कंरोतीति। वासिष्टो रौहिणो मीमार्स्सां चुक्रे। तस्यैषा भवंति। वाश्रेवं विद्युदितिं। ब्रह्मण उदरंणमिस। ब्रह्मण उदीरणंमिस। ब्रह्मण आस्तरंणमिस। ब्रह्मण उपस्तरंणमिस॥६०॥

> श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः। ॐ नमो नारायणाय॥

> > -[१२]

## [अपंक्रामत गर्भिण्यंः]

अष्टयोनीम्ष्टपुंत्राम्। अष्टपंत्रीम्मां महींम्। अहं वेद् न में मृत्युः। न चामृत्युर्घाऽऽहंरत्। अष्टयोन्युष्टपुंत्रम्। अष्टपंदिदम्न्तरिक्षम्। अहं वेद् न में मृत्युः। न चामृत्युर्घाऽऽहंरत्। अष्टयोनीम्ष्टपुंत्राम्। अष्टपंत्रीम्मूं दिवम्॥६१॥

अहं वेद न में मृत्युः। न चामृंत्युर्घाऽऽहंरत्। सुत्रामांणं महीमू षु। अदितिर्द्यौरदितिर्न्तिरेक्षम्। अदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वे देवा अदितिः पश्चजनाः। अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्। अष्टौ पुत्रासो अदितेः। ये जातास्तन्वः परि। देवां (२) उपप्रैथ्सप्तभिः॥६२॥

प्रा मार्ताण्डमास्यंत्। सप्तिभिः पुत्रेरिदितिः। उप्रैत्पूर्व्यं युगम्। प्रजाये मृत्यवे तंत्। प्रा मार्ताण्डमाभरदिति। ताननुक्रीमध्यामः। मित्रश्च वर्रुणश्च। धाता चार्यमा च। अश्रशंश्च भगश्च। इन्द्रश्च विवस्वार्श्वश्चेत्येते। हिर्ण्यगर्भो ह्रसः श्रुंचिषत्। ब्रह्मंजज्ञानं तदित्पदिमिति। गर्भः प्रांजापत्यः। अथ पुरुषः

सप्त पुरुषः॥६३॥

[यथास्थानं गंर्भिण्यः]

-श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

### ॐ नमो नारायणाय॥

[१३]

योऽसौं तपत्रुदेति। स सर्वेषां भूतानां प्राणानादायोदेति। मा में प्रजाया मा पंशूनाम्। मा ममं प्राणानादायोदंगाः। असौ योंऽस्तमेति। स सर्वेषां भूतानां प्राणानादायास्तमेति। मा में प्रजाया मा पंशूनाम्। मा ममं प्राणानादायास्तं गाः। असौ य आपूर्यति। स सर्वेषां भूतानां प्राणेरापूर्यति॥६४॥

मा में प्रजाया मा पंशूनाम्। मा ममं प्राणैरापूरिष्ठाः। असौ योऽपक्षीयंति। स सर्वेषां भूतानां प्राणैरपंक्षीयति। मा में प्रजाया मा पंशूनाम्। मा ममं प्राणैरपंक्षेष्ठाः। अमूनि नक्षंत्राणि। सर्वेषां भूतानां प्राणैरपंप्रसर्पन्ति चोथ्संपन्ति च। मा में प्रजाया मा पंशूनाम्। मा ममं प्राणैरपंप्रसृपत् मोथ्सृंपत॥६५॥

ड्मे मासाँश्चार्थमासाश्चं। सर्वेषां भूतानां प्राणैरपंप्रसर्पन्ति चोथ्संपन्ति च। मा में प्रजाया मा पंशूनाम्। मा ममं प्राणैरपंप्रसृपत् मोथ्संपत। इम ऋतवंः। सर्वेषां भूतानां प्राणैरपंप्रसर्पन्ति चोथ्संपन्ति च। मा में प्रजाया मा पंशूनाम्। मा ममं प्राणैरपंप्रसृपत् मोथ्संपत। अय संवथ्सरः। सर्वेषां भूतानां प्राणैरपंप्रसर्पति चोथ्संपति च॥६६॥

मा में प्रजाया मा पंश्नाम्। मा ममं प्राणैरपंप्रसृप् मोथ्सृंप। इदमहंः। सर्वेषां भूतानां प्राणैरपंप्रसर्पति चोथ्संपीति च। मा में प्रजाया मा पंशूनाम्। मा ममं प्राणैरपंप्रसृप् मोथ्सृंप। इय॰ रात्रिः। सर्वेषां भूतानां प्राणैरपंप्रसर्पति चोथ्संपीत च। मा में प्रजाया मा पंशूनाम्। मा ममं प्राणैरपंप्रसृप् मोथ्संप। ॐ भूर्भुवः स्वंः। एतद्वो मिथुनं मा नो मिथुंन रिब्बम्॥६७॥ श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

ॐ नमो नारायणाय॥

[88]

अथाऽऽदित्यस्याष्टपुंरुष्स्य। वसूनामादित्यानाः स्थाने स्वतेजंसा भानि। रुद्राणामादित्यानाः स्थाने स्वतेजंसा भानि। आदित्यानामादित्यानाः स्थाने स्वतेजंसा भानि। सताः सत्यानाम्। आदित्यानाः स्थाने स्वतेजंसा भानि। अभिधून्वतांमभिष्नताम्। वातवंतां मुरुताम्। आदित्यानाः स्थाने स्वतेजंसा भानि। ऋभूणामादित्यानाः स्थाने स्वतेजंसा भानि। विश्वेषां देवानाम्। आदित्यानाः स्थाने स्वतेजंसा भानि। संवथ्सरंस्य स्वितुः। आदित्यस्य स्थाने स्वतेजंसा भानि। ॐ भूर्भुवः स्वंः। रश्मयो वो मिथुनं मा नो मिथुनः रिष्ठम्॥६८॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-सम्त-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

#### ॐ नमो नारायणाय॥

\_[१५

आरोगस्य स्थाने स्वतेजंसा भानि। भ्राजस्य स्थाने स्वतेजंसा भानि। पटरस्य स्थाने स्वतेजंसा भानि। पतङ्गस्य स्थाने स्वतेजंसा भानि। स्वर्णरस्य स्थाने स्वतेजंसा भानि। ज्योतिषीमतस्य स्थाने स्वतेजंसा भानि। विभासस्य स्थाने स्वतेजंसा भानि। कश्यपस्य स्थाने स्वतेजंसा भानि। ॐ भूर्भुवः स्वंः। आपो वो मिथ्नं मा नो मिथ्नं रिद्वम्॥६९॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

#### ॐ नमो नारायणाय॥

397

अथ वायोरेकादशपुरुषस्यैकादशंस्त्रीकस्य। प्रभ्राजमानानाः रुद्राणाः स्थाने स्वतेजंसा भानि। व्यवदातानाः रुद्राणाः स्थाने स्वतेजंसा भानि।

वासुकिवैद्युताना १ रुद्राणा १ स्थाने स्वते जंसा भानि। रजताना १ रुद्राणा १ स्थाने स्वते जंसा भानि। परुषाणा १ रुद्राणा १ स्थाने स्वते जंसा भानि। श्यामाना १ रुद्राणा १ स्थाने स्वते जंसा भानि। किपलाना १ रुद्राणा १ स्थाने स्वते जंसा भानि। अतिलोहिताना १ रुद्राणा १ स्थाने स्वते जंसा भानि। अधिलोहिताना १ रुद्राणा १ स्थाने स्वते जंसा भानि। अधिलोहिताना १ रुद्राणा १ स्थाने स्वते जंसा भानि। ७०॥

अवपतन्ताना र रुद्राणा इस्थाने स्वते जंसा भानि। वैद्युताना र रुद्राणा इस्थाने स्वते जंसा भानि। प्रभ्राजमानीना र रुद्राणीना इस्थाने स्वते जंसा भानि। व्यवदातीना र रुद्राणीना इस्थाने स्वते जंसा भानि। वासुिक वैद्युतीना र रुद्राणीना इस्थाने स्वते जंसा भानि। रजताना र रुद्राणीना इस्थाने स्वते जंसा भानि। परुषाणा र रुद्राणीना इस्थाने स्वते जंसा भानि। श्यामाना र रुद्राणीना इस्थाने स्वते जंसा भानि। अति लोहितीना र रुद्राणीना इस्थाने स्वते जंसा भानि। अति लोहितीना र रुद्राणीना इस्थाने स्वते जंसा भानि। अवपतन्तीना र रुद्राणीना इस्थाने स्वते जंसा भानि। अवपतन्तीना र रुद्राणीना इस्थाने स्वते जंसा भानि। वैद्युतीना र रुद्राणीना इस्थाने स्वते जंसा भानि। वैद्युतीना र रुद्राणीना इस्थाने स्वते जंसा भानि। अध्यान स्वते जंसा भानि। स्वते जंसा भानि। अध्यान स्वते जंसा भा

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः। ॐ नमो नारायणाय॥

-[१७]

अथाग्नेरष्टपुंरुष्स्य। अग्नेः पूर्विदिश्यस्य स्थाने स्वतेजंसा भानि। जातवेदस उपदिश्यस्य स्थाने स्वतेजंसा भानि। सहोजसो दक्षिणदिश्यस्य स्थाने स्वतेजंसा भानि। अजिराप्रभव उपदिश्यस्य स्थाने स्वतेजंसा भानि। वैश्वानरस्यापरदिश्यस्य स्थाने स्वतेजंसा भानि। नर्यापस उपदिश्यस्य स्थाने स्वतेजंसा भानि। पङ्किराधस उदग्दिश्यस्य स्थाने स्वतेजंसा भानि। विसर्पिण उपदिश्यस्य स्थाने स्वतेजंसा भानि। ॐ भूर्भुवः स्वंः। दिशो वो मिथुनं मा नो मिथुन र रीह्वम्॥७२॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

#### ॐ नमो नारायणाय॥

[१८]

दक्षिणपूर्वस्यां दिशि विसंपीं न्रकः। तस्मान्नः पंरिपाहि। दक्षिणापरस्यां दिश्यविसंपीं न्रकः। तस्मान्नः पंरिपाहि। उत्तरपूर्वस्यां दिशि विषांदी न्रकः। तस्मान्नः पंरिपाहि। उत्तरापरस्यां दिश्यविषांदी न्रकः। तस्मान्नः पंरिपाहि। आ यस्मिन्थ्सप्त वासवा इन्द्रियाणि शतक्रतंवित्येते॥७३॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

### ॐ नमो नारायणाय॥

[88]

इन्द्रघोषा वो वसुंभिः पुरस्तादुपंदधताम्। मनोजवसो वः पितृभिंदिक्षिणृत उपंदधताम्। प्रचेता वो रुद्रैः पृश्चादुपंदधताम्। विश्वकंमां व आदित्यैरुंत्तर्त उपंदधताम्। त्वष्टां वो रूपेरुपरिष्टादुपंदधताम्। संज्ञानं वः पंश्चादिति। आदित्यः सर्वोऽग्निः पृंथिव्याम्। वायुर्न्तिरक्षे। सूर्यो दिवि। चन्द्रमां दिक्षु। नक्षंत्राणि स्वलोके। पृवा ह्यंव। एवा ह्यंग्ने। एवा हि वायो। एवा हीन्द्र। एवा हि पूंषन्। एवा हि देवाः॥७४॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

#### ॐ नमो नारायणाय॥

[२०]

आपंमापाम्पः सर्वाः। अस्माद्स्माद्तितोऽम्तः। अग्निर्वायुश्च सूर्यश्च। सह संश्चस्क्ररिद्धंया। वाय्वश्वां रिष्म्पतंयः। मरींच्यात्मानो अद्गुहः। देवीर्भुवन्सूर्वरीः। पुत्रवृत्वायं मे सुत। महानाम्नीर्महामानाः। मृह्सो महसः स्वंः॥७५॥

देवीः पंर्जन्यसूवंरीः। पुत्रवत्वायं मे सुत। अपाश्चंिष्णम्पा रक्षः।

अपाश्चंिष्णम्पा रघम्। अपाँघामपंचावर्तिम्। अपंदेवीरितो हिंत। वर्ज्नं देवीरजीता इश्च। भुवंनं देवसूर्वरीः। आदित्यानदिंतिं देवीम्। योनिनोर्ध्वमुदीषंत॥ ७६॥

भुद्रं कर्णेभिः शृणुयामं देवाः। भुद्रं पंश्येमाक्षभिर्यजंत्राः। स्थिरेरङ्गैंस्तुष्टु-वारसंस्तुनूभिः। व्यशेम देवहितं यदायुः। स्वस्ति न इन्द्रों वृद्धश्रंवाः। स्वस्ति नः पूषा विश्ववंदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः। स्वस्ति नो बृह्स्पतिंद्धातु। केतवो अरुंणासश्च। ऋष्यो वातंरशृनाः। प्रतिष्ठार शृतधां हि। सुमाहितासो सहस्रधायंसम्। शिवा नः शन्तंमा भवन्तु। दिव्या आप् ओषंधयः। सुमृडीका सरंस्वति। मा ते व्योम सन्दर्शि॥७७॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

## ॐ नमो नारायणाय॥

-[२१]

योऽपां पुष्पं वेदं। पुष्पंवान् प्रजावाँन् पशुमान् भंवति। चन्द्रमा वा अपां पुष्पम्। पुष्पंवान् प्रजावाँन् पशुमान् भंवति। य एवं वेदं। योऽपामायतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। अग्निर्वा अपामायतंनम्। आयतंनवान् भवति। योँऽग्नेरायतंनं वेदं॥७८॥

आयतंनवान् भवति। आपो वा अग्नेरायतंनम्। आयतंनवान् भवति। य एवं वेदं। योऽपामायतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। वायुर्वा अपामायतंनम्। आयतंनवान् भवति। यो वायोरायतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति॥७९॥

आपो वै वायोरायतंनम्। आयतंनवान् भवति। य एवं वेदं। योऽपामायतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। असौ वै तपंत्रपामायतंनम्। आयतंनवान् भवति। योऽमुष्य तपंत आयतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। आपो वा अमुष्य तपंत आयतंनम्॥८०॥ आयतंनवान् भवति। य एवं वेदं। योऽपामायतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। चन्द्रमा वा अपामायतंनम्। आयतंनवान् भवति। यश्चन्द्रमंस आयतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। आपो वै चन्द्रमंस आयतंनम्। आयतंनवान् भवति॥८१॥

य एवं वेदे। योऽपामायतेनं वेदे। आयतेनवान् भवति। नक्षेत्राणि वा अपामायतेनम्। आयतेनवान् भवति। यो नक्षेत्राणामायतेनं वेदे। आयतेनवान् भवति। आपो वै नक्षेत्राणामायतेनम्। आयतेनवान् भवति। य एवं वेदे॥८२॥

योऽपामायतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। पूर्जन्यो वा अपामायतंनम्। आयतंनवान् भवति। यः पूर्जन्यंस्याऽऽयतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। आपो वै पूर्जन्यंस्याऽऽयतंनं भवति। य एवं वेदं। योऽपामायतंनं वेदं॥८३॥

आयतंनवान् भवति। संवृथ्सरो वा अपामायतंनम्। आयतंनवान् भवति। यः संवथ्सरस्याऽऽयतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। आपो वै संवथ्सरस्या-ऽऽयतंनम्। आयतंनवान् भवति। य एवं वेदं। योंऽपसु नावं प्रतिष्ठितां वेदं। प्रत्येव तिष्ठति॥८४॥

ड्मे वै लोका अपसु प्रतिष्ठिताः। तदेषाऽभ्यनूँक्ता। अपार रस्मुद्यरसन्। सूर्ये शुक्रर समाभृतम्। अपार रसंस्य यो रसः। तं वो गृह्णाम्युत्तममिति। इमे वै लोका अपार रसः। तेऽमुष्मिन्नादित्ये समाभृताः। जानुद्व्रीम्तरवेदीं खात्वा। अपां पूरियत्वा गुल्फद्व्रम्॥८५॥

पुष्करपर्णेः पुष्करदण्डैः पुष्करैश्चं सङ्स्तीर्य। तस्मिन्विह् यसे। अग्निं प्रणीयोपसमाधायं। ब्रह्मवादिनों वदन्ति। कस्मौत्प्रणीतेऽयम्गिश्चीयतें। साप्रणीतेऽयम्पस् ह्ययंं चीयतें। असौ भुवंनेऽप्यनांहिताग्निरेताः। तम्भितं एता अबीष्टंका उपद्याति। अग्निहोत्रे दर्शपूर्णमासयौः। पृशुबन्धे चांतुर्मास्येषुं॥८६॥

अथो आहुः। सर्वेषु यज्ञऋतुष्विति। एतर्छ स्मृ वा आहुः शण्डिलाः। कमृग्निं चिनुते। सृत्रियमृग्निं चिन्वानः। स्वथ्सरं प्रत्यक्षेण। कमृग्निं चिनुते। सावित्रमृग्निं चिन्वानः। अमुमादित्यं प्रत्यक्षेण। कमृग्निं चिनुते॥८७॥

नाचिकेतम् ग्निं चिन्वानः। प्राणान्प्रत्यक्षेण। कम् ग्निं चिन्ते। चातुर्होत्रिय-म् ग्निं चिन्वानः। ब्रह्मं प्रत्यक्षेण। कम् ग्निं चिन्ते। वैश्वसृजम् ग्निं चिन्वानः। शरीरं प्रत्यक्षेण। कम् ग्निं चिन्ते। उपानुवाक्यं माशुम् ग्निं चिन्वानः॥८८॥

ड्माँ श्लोकान्प्रत्यक्षेण। कम् ग्निं चिनुते। ड्ममांरुणकेतुकम् ग्निं चिन्वान इति। य एवासौ। इतश्चाऽमृतश्चाऽव्यतीपाती। तमिति। यौ ऽग्नेर्मिथूया वेदे। मिथुन्वान्भवति। आपो वा अग्नेर्मिथूयाः। मिथुन्वान्भवति। य एवं वेदे॥८९॥ श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

ॐ नमो नारायणाय॥

\_[२२<u>]</u>

आपो वा इदमांसन्थ्सिल्लमेव। स प्रजापंतिरेकः पुष्करपूर्णे समंभवत्। तस्यान्तुर्मनंसि कामः समंवर्तत। इद॰ सृजेयमिति। तस्माद्यत्पुरुषो मनंसा-ऽभिगच्छंति। तद्वाचा वंदति। तत्कर्मणा करोति। तदेषाऽभ्यनूँक्ता। कामस्तदग्रे समवर्त्ताधि। मनंसो रेतः प्रथमं यदासीत्॥९०॥

स्तो बन्धुमसंति निरंविन्दन्। हृदि प्रतीष्यां क्वयों मनी्षेति। उपैन्न्तदुपंनमित। यत्कांमो भवंति। य एवं वेदं। स तपोंऽतप्यत। स तपंस्तृत्वा। शरींरमधूनुत। तस्य यन्मा रसमासीत्। ततोंऽरुणाः केतवो वातंरशना ऋषंय उदंतिष्ठन्॥९१॥

ये नर्खाः। ते वैखानुसाः। ये वालाः। ते वालखिल्याः। यो रसः। सोऽपाम्। अन्तुरुतः कूर्मं भूत १ सर्पन्तम्। तमंब्रवीत्। ममु वैत्वङ्गारुसा। समंभूत्॥९२॥ नेत्यंब्रवीत्। पूर्वमेवाहिम्हास्मितिं। तत्पुरुंषस्य पुरुष्त्वम्। स स्हस्रंशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रंपात्। भूत्वोदंतिष्ठत्। तमंब्रवीत्। त्वं वै पूर्वर्षं समंभूः। त्विमदं पूर्वः कुरुष्वेतिं। स इत आदायाऽऽपः॥९३॥

अञ्चलिनां पुरस्तांदुपादंधात्। एवा ह्येवेतिं। ततं आदित्य उदंतिष्ठत्। सा प्राची दिक्। अथांरुणः केतुर्दक्षिणत उपादंधात्। एवा ह्यग्न इतिं। ततो वा अग्निरुदंतिष्ठत्। सा दंक्षिणा दिक्। अथांरुणः केतुः पृश्चादुपादंधात्। एवा हि वायो इतिं॥९४॥

ततों वायुरुदंतिष्ठत्। सा प्रतीची दिक्। अथांरुणः केतुरुत्तर्त उपादंधात्। पुवा हीन्द्रेतिं। ततो वा इन्द्र उदंतिष्ठत्। सोदींची दिक्। अथारुणः केतुर्मध्यं उपादंधात्। पुवा हि पूषन्नितिं। ततो वै पूषोदंतिष्ठत्। सेयं दिक्॥९५॥

अथांरुणः केतुरुपरिष्टादुपादंधात्। एवा हि देवा इतिं। ततों देवमनुष्याः पितरंः। गृन्धवांप्रसूरस्श्चोदंतिष्ठन्। सोध्वां दिक्। या विप्रुषों विपरांपतन्। ताभ्योऽसुंरा रक्षारंसि पिशाचाश्चोदंतिष्ठन्। तस्मात्ते परांभवन्। विप्रुद्ध्यो हि ते समंभवन्। तदेषाऽभ्यनूँक्ता॥९६॥

आपो ह् यह्नंहृतीर्गर्भमायत्रं। दक्षं दर्धाना जनयंन्तीः स्वयम्भुम्। ततं इमेध्यसृंज्यन्त सर्गाः। अद्भो वा इद समंभूत्। तस्मांदिद सर्वं ब्रह्मं स्वयम्भिवतिं। तस्मांदिद सर्वं शिथिंलिम्वाऽध्रुवंमिवाभवत्। प्रजापंतिर्वाव तत्। आत्मनाऽऽत्मानं विधायं। तदेवानुप्राविंशत्। तदेवाऽभ्यनूंक्ता॥९७॥

विधायं लोकान् विधायं भूतानिं। विधायं सर्वाः प्रदिशो दिशंश्च। प्रजापंतिः प्रथम्जा ऋतस्यं। आत्मनाऽऽत्मानंम्भि संविवेशेतिं। सर्वमेवेदमास्वा। सर्वमवुरुद्धां। तदेवानुप्रविशति। य एवं वेदं॥९८॥

### श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः। ॐ नमो नारायणाय॥

[२३]

चतुंष्टय्य आपों गृह्णाति। चत्वारि वा अपार रूपाणि। मेघों विद्युत्। स्तन्यिलुर्वृष्टिः। तान्येवावंरुन्थे। आतपंति वर्ष्यां गृह्णाति। ताः पुरस्तादुपंदधाति। एता वै ब्रंह्मवर्च्स्या आपंः। मुख्त एव ब्रंह्मवर्च्समवंरुन्थे। तस्मान्मुखतो ब्रंह्मवर्चसितंरः॥९९॥

कूप्यां गृह्णाति। ता देक्षिणत उपंदधाति। पृता वै तेंज्ञस्विनीरापंः। तेजं पृवास्यं दक्षिणतो दंधाति। तस्माद्दक्षिणोऽर्धस्तेज्ञस्वितंरः। स्थावरा गृंह्णाति। ताः पृश्चादुपंदधाति। प्रतिष्ठिता वै स्थांवराः। पृश्चादेव प्रतितिष्ठति। वहंन्तीर्गृह्णाति॥१००॥

ता उत्तर्त उपंदधाति। ओजंसा वा एता वहंन्तीरिवोद्गंतीरिव आकूजंतीरिव धावंन्तीः। ओजं एवास्योंत्तरतो दंधाति। तस्मादुत्तरोऽर्धं ओजस्वितंरः। सम्भार्या गृंह्णाति। ता मध्य उपंदधाति। इयं वै संम्भार्याः। अस्यामेव प्रतितिष्ठति। पुल्वल्या गृंह्णाति। ता उपरिष्टादुपादंधाति॥१०१॥

असौ वै पंत्व्याः। अमुष्यांमेव प्रतितिष्ठति। दिक्षूपंदधाति। दिक्षु वा आपंः। अन्नं वा आपंः। अन्नो वा अन्नं जायते। यदेवान्नोऽन्नं जायते। तदवंरुन्थे। तं वा पुतमंरुणाः केतवो वातंरश्ना ऋषंयोऽचिन्वन्। तस्मांदारुणकेतुकंः॥१०२॥

तदेषाऽभ्यनूँक्ता। केतवो अर्रुणासश्च। ऋषयो वातंरश्वनाः। प्रतिष्ठाः श्वतधां हि। समाहितासो सहस्रधायंसमिति। श्वतशंश्चेव सहस्रंशश्च प्रतितिष्ठति। य पुतम्भिं चिनुते। य उंचैनमेवं वेदं॥१०३॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

[૨૪]

#### ॐ नमो नारायणाय॥

जानुद्ग्नीमृत्तरवेदीं खात्वा। अपां पूरयित। अपार संवृत्वायं। पुष्करपूर्णर रुकां पुरुष्मित्युपंदधाति। तपो वै पुष्करपूर्णम्। सत्यर रुकाः। अमृतं पुरुषः। पुतावद्वा वौऽस्ति। यावंदेतत्। यावंदेवास्ति॥१०४॥

तदवंरुन्थे। कूर्ममुपंदधाति। अपामेव मेध्मवंरुन्थे। अथौं स्वर्गस्यं लोकस्य समेध्ये। आपंमापामपः सर्वाः। अस्माद्स्मादितोऽमुतः। अग्निर्वायुश्च सूर्यश्च। सह संश्चस्क्ररिद्धंया इतिं। वाय्वश्वां रिष्म्पितयः। लोकं पृणिच्छिद्रं पृण॥१०५॥

यास्तिस्रः पंरम्जाः। इन्द्रघोषा वो वसुंभिरेवाह्येवेतिं। पश्चचितंय उपंदधाति। पाङ्कोऽग्निः। यावानेवाग्निः। तं चिन्ते। लोकं पृणया द्वितीयामुपं-दधाति। पश्चं पदा वे विराट्। तस्या वा इयं पादः। अन्तरिक्षं पादः। द्यौः पादः। दिशः पादः। प्रोरंजाः पादः। विराज्येव प्रतितिष्ठति। य पृतमृग्निं चिनुते। य उंचैनमेवं वेदं॥१०६॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः। ॐ नमो नारायणाय॥

\_[२५]

अग्निं प्रणीयोपसमाधायं। तम्भित एता अबीष्टका उपंदधाति। अग्निहोत्रे देर्शपूर्णमासयौः। पृशुबन्धे चांतुर्मास्येषुं। अथो आहुः। सर्वेषु यज्ञकृतुष्विति। अथे ह स्माहारुणः स्वांयम्भुवंः। सावित्रः सर्वोऽग्निरित्यनंनुषङ्गं मन्यामहे। नाना वा एतेषां वीर्याणि। कम्ग्निं चिनुते॥१०७॥

स्त्रियम्भिं चिंन्वानः। कम्भिं चिंनुते। सावित्रम्भिं चिंन्वानः। कम्भिं चिंनुते। नाचिकेतम्भिं चिंन्वानः। कम्भिं चिंनुते। चातुर्होत्रियम्भिं चिंन्वानः। कम्भिं चिंनुते। वैश्वसृजम्भिं चिंन्वानः। कम्भिं चिंनुते॥१०८॥

उपानुवाकामाशुम् ग्रिं चिन्वानः। कम् ग्रिं चिनुते। इममारुणकेतुकमग्रिं चिंन्वान इतिं। वृषा वा अग्निः। वृषांणौ सङ्स्फांलयेत्। हन्येतांस्य यज्ञः। तस्मान्नानुषज्यंः। सोत्तंरवेदिषुं ऋतुषुं चिन्वीत। उत्तर्वेद्याः ह्यंग्निश्चीयतें। प्रजाकांमश्चिन्वीत॥१०९॥

प्राजापत्यो वा एषौँऽग्निः। प्राजापत्याः प्रजाः। प्रजावाँन् भवति। य एवं वेदं। पशुकामश्चिन्वीत। सुंज्ञानुं वा एतत् पंशूनाम्। यदापंः। पुशूनामेव सुंज्ञाने-ऽग्निं चिनुते। पशुमान् भेवति। य एवं वेदं ॥११०॥

वृष्टिंकामश्चिन्वीत। आपो वै वृष्टिंः। पर्जन्यो वर्षुंको भवति। य एवं वेदं। आमयावी चिन्वीत। आपो वै भेषजम्। भेषजमेवास्मै करोति। सर्वमायुरित। अभिचर ईश्चिन्वीत। वज्रो वा आपः॥१११॥

वर्ज्रमेव भ्रातृं व्येभ्यः प्रहंरति। स्तृणुत एनम्। तेर्जस्कामो यशंस्कामः। ब्रह्मवर्चसकामः स्वर्गकामश्चिन्वीत। एतावद्वा वाँऽस्ति। यावंदेतत्। यावदेवास्ति। तदवंरुन्थे। तस्यैतद्वतम्। वर्षिते न धांवेत्॥११२॥

अमृतं वा आपंः। अमृतस्यानंन्तरित्यै। नाफ्सु मूत्रंपुरीषं कुंर्यात्। न निष्ठीवेत्। न विवसंनः स्नायात्। गुह्यो वा एषौँ ऽग्निः। एतस्याग्नेरनितदाहाय। न पुष्करपर्णानि हिरंण्यं वाऽधितिष्ठेंत्। एतस्याग्नेरनंभ्यारोहाय। न कूर्मस्याश्रीयात्। नोदकस्याघातुंकान्येनंमोदकानिं भवन्ति। अघातुंका आपंः। य एतम्ग्निं चिनुते। य उंचैनमेवं वेदं॥११३॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः। ॐ नमो नारायणाय॥

इमानुंकं भुंवना सीषधेम। इन्द्रंश्च विश्वं च देवाः। यज्ञं च नस्तन्वं च प्रजां चं। आदित्यैरिन्द्रंः सह सीषधातु। आदित्यैरिन्द्रः सगंणो मुरुद्धिः।

अस्माकं भूत्विवता तुनूनांम्। आप्नंवस्व प्रप्नंवस्व। आण्डीभंवज् मा मुहुः। सुखादीन्दुंःखनिधनाम्। प्रतिमुश्चस्व स्वां पुरम्॥११४॥

मरींचयः स्वायम्भुवाः। ये शरीराण्यंकल्पयन्। ते ते देहं केल्पयन्तु। मा चे ते ख्यास्मं तीरिषत्। उत्तिष्ठत् मा स्वंप्त। अग्निमिंच्छध्वं भारताः। राज्ञः सोमंस्य तृप्तासः। सूर्येण स्युजोषसः। युवां सुवासाः। अष्टाचंक्रा नवंद्वारा॥११५॥

देवानां पूर्रयोध्या। तस्यार्थ हिरण्मयः कोशः। स्वर्गो लोको ज्योतिषाऽ-ऽवृंतः। यो वै तां ब्रह्मणो वेद। अमृतेनाऽऽवृतां पुरीम्। तस्मै ब्रह्म चे ब्रह्मा च। आयुः कीर्तिं प्रजां देदुः। विभ्राजमाना्थ हरिणीम्। यशसां सम्प्रीवृंताम्। पुर्थ हिरण्मेयीं ब्रह्मा॥११६॥

विवेशांऽप्राजिता। पराङेत्यंज्याम्यी। पराङेत्यंनाश्की। इह चांमुत्रं चान्वेति। विद्वान्देवासुरानुंभ्यान्। यत्कुंमारी मृन्द्रयंते। यद्योषिद्यत्पंतिव्रतां। अरिष्टुं यत्किं चं क्रियतें। अग्निस्तदनुंवेधति। अशृतांसः श्वंतास्श्र॥११७॥

युज्वानो येऽप्ययुज्वनंः। स्वयंन्तो नापैक्षन्ते। इन्द्रेम्गि चे ये विदुः। सिकंता इव स्यन्तिं। रृष्टिमिनिः समुदीरिताः। अस्माल्लोकादंमुष्माच। ऋषिभिरदातपृश्विभिः। अपंत वीत् वि चं सर्पतातः। येऽत्र स्थ पुंराणा ये च नूतंनाः। अहोभिरुद्भिरुत्तुभिर्व्यक्तम्॥११८॥

यमो दंदात्ववसानंमस्मै। नृ मुंणन्तु नृपात्वर्यः। अकृष्टा ये च कृष्टंजाः। कुमारीषु कुनीनीषु। जारिणीषु च ये हिताः। रेतः पीता आण्डंपीताः। अङ्गारेषु च ये हुताः। उभयान् पुत्रंपौत्रकान्। युवेऽहं यमराजंगान्। शतिमन्नु श्रदः॥११९॥

अदो यद्बह्मं विलुबम्। पितृणां चं यमस्यं च। वरुणस्याश्विनोरुग्नेः। मुरुतां

च विहायंसाम्। कामप्र्यवंणं मे अस्तु। स ह्यंवास्मिं स्नातंनः। इति नाको ब्रह्मिश्रवों रायो धनम्। पुत्रानापों देवीरिहाऽऽहिंत॥१२०॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

#### ॐ नमो नारायणाय॥

[26]

विशींणीं गृध्रंशीणीं च। अपेतों निर्ऋति हैथः। परिबाध ई श्वंतकुक्षम्। निजङ्क र्रं शबुलोदंरम्। स् तान् वाच्यायंया सह। अग्ने नाशंय सन्दर्शः। ईर्ष्यासूये बुंभुक्षाम्। मृन्युं कृत्यां चं दीधिरे। रथेन कि श्रुकावंता। अग्ने नाशंय सन्दर्शः॥१२१॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

## ॐ नमो नारायणाय॥

-[२८]

पूर्जन्यांय प्रगांयत। दिवस्पुत्रायं मीढुषें। स नो यवसंमिच्छतु। इदं वर्चः पूर्जन्यांय स्वराजें। हृदो अस्त्वन्तंरन्तद्युंयोत। मृयोभूर्वातों विश्वकृष्टयः सन्त्वस्मे। सुपिप्पुला ओषंधीर्देवगोपाः। यो गर्भमोषंधीनाम्। गर्वां कृणोत्यर्वताम्। पूर्जन्यः पुरुषीणाम्॥१२२॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

#### ॐ नमो नारायणाय॥

-[२९]

पुनंमामैत्विन्द्रियम्। पुन्रायुः पुन्भगः। पुन्क्राह्मणमैतु मा। पुन्द्रविणमैतु मा। यन्मेऽद्य रेतः पृथिवीमस्कान्। यदोषंधीर्प्यसंर्द्यदापः। इदं तत्पुन्रादंदे। दीर्घायुत्वाय वर्चसे। यन्मे रेतः प्रसिंच्यते। यन्म् आजांयते पुनः। तेनं माम्मृतं कुरु। तेनं सुप्रजसं कुरु॥१२३॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः। ॐ नमो नारायणाय॥

[३०]

अन्धस्तिरोऽधाऽजांयत। तवं वैश्रवणः संदा। तिरोऽधेहि सप्लान्नः। ये अपोऽश्रन्तिं केचन। त्वाष्ट्रीं मायां वैश्रवणः। रथर्ं सहस्रवन्धुंरम्। पुरुश्चऋरं सहस्राश्वम्। आस्थायायांहि नो बिलिम्। यस्मै भूतानिं बिलिमावंहन्ति। धनं गावो हस्ति हिरंण्यमश्वान्॥१२४॥

असाम सुमृतौ युज्ञियंस्य। श्रियं बिभृतोऽन्नंमुखीं विराजम्। सुद्र्शने चं क्रौश्चे चं। मैनागे चं मृहागिरौ। शृतद्वाट्टारंगम्नता। स्र्हार्यं नगरं तवं। इति मन्नाः। कल्पोऽत ऊर्ध्वम्। यदि बलिर् हरैत्। हिर्ण्यनाभये वितुदये कौबेरायायं बंलिः॥१२५॥

सर्वभूताधिपतये नंम इति। अथ बिल १ हत्वोपितिष्ठेत। क्षुत्रं क्षुत्रं वैश्विवणः। ब्राह्मणां वयु १ स्मः। नर्मस्ते अस्तु मा मां हि १ सीः। अस्मात्प्रविषयान्नंमद्धीति। अथ तमग्निमांदधीत। यस्मिन्नेतत्कर्म प्रयुश्चीत। तिरोऽधा भूः। तिरोऽधा भुवंः॥१२६॥

तिरोऽधाः स्वंः। तिरोऽधा भूर्भुवः स्वंः। सर्वेषां लोकानामाधिपत्यें सीदेति। अथ तमग्निंमिन्धीत। यस्मिन्नेतत्कर्म प्रयुश्चीत। तिरोऽधा भूः स्वाहाँ। तिरोऽधा भुवः स्वाहाँ। तिरोऽधाः स्वंः स्वाहाँ। तिरोऽधाः भूर्भुवः स्वंः स्वाहाँ। यस्मिन्नस्य काले सर्वा आहुतीर्हुतां भवेयुः॥१२७॥

अपि ब्राह्मणंमुखीनाः। तस्मिन्नहः काले प्रंयुञ्जीतः। परंः सुप्तजंनाद्वेपि। मास्म प्रमाद्यन्तंमाध्यापयेत्। सर्वार्थाः सिद्धान्ते। य एवं वेदः। क्षुध्यन्निदंम-जानताम्। सर्वार्था नं सिद्धान्ते। यस्ते विघातुंको भ्राता। ममान्तर्हृंदये श्रितः॥१२८॥

तस्मां इममग्रपिण्डं जुहोमि। स में ऽर्थान्मा विवंधीत्। मिय स्वाहाँ। राजाधिराजायं प्रसह्यसाहिनें। नमों वयं वैंश्रवणायं कुर्महे। स मे कामान्काम्कामाय मह्मम्। कामेश्वरो वैश्ववणो दंदातु। कुबेरायं वैश्ववणायं। महाराजाय नमंः। केतवो अरुंणासश्च। ऋषयो वातंरशनाः। प्रतिष्ठाः शतधां हि। समाहितासो सहस्र्धायंसम्। शिवा नः शन्तंमा भवन्तु। दिव्या आप् ओषंधयः। सुमृडीका सरस्विति। मा ते व्योम सन्दर्शि॥१२९॥ श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

ॐ नमो नारायणाय॥

[38]

संवथ्सरमेतंद्वतं चरेत्। द्वौं वा मासौ। नियमः संमासेन। तस्मिन्नियमं-विशेषाः। त्रिषवणमुदकोपस्पूर्शी। चतुर्थकालपानंभक्तः स्यात्। अहरहर्वा भैक्षंमश्रीयात्। औदुम्बरीभिः समिद्धिरग्निं परिचरेत्। पुनर्मामैत्विन्द्रियमि-त्येतेनानुंवाकेन। उद्धतपरिपूताभिरद्भिः कार्यं कुर्वीत॥१३०॥

अंसश्चयवान्। अग्नये वायवें सूर्याय। ब्रह्मणे प्रंजापृतये। चन्द्रमसे नेक्षत्रेभ्यः। ऋतुभ्यः संवंध्सराय। वरुणायारुणायेति व्रंतहोमाः। प्रवर्ग्यवंदादेशः। अरुणाः काण्डऋषयः। अरण्येऽधीयीरन्। भद्रं कर्णेभिरिति द्वें जपित्वा॥१३१॥

महानाम्नीभिरुदक र सं इस्पृश्यं। तमाचाँयों दृद्यात्। शिवा नः शन्तमेत्योषधीरालभते। सुमृडीकेति भूमिम्। एवमंपवृगे। धेनुर्दक्षिणा। करसं वासंश्च क्षौमम्। अन्यंद्वा शुक्रम्। यंथाशक्ति वा। एवइस्वाध्यायंधर्मेण। अरण्यंऽधीयीत। तपस्वी पुण्यो भवति तपस्वी पुण्यो भवति॥१३२॥ श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

ॐ नमो नारायणाय॥

[32]

भुद्रं कर्णेभिः शृणुयामं देवाः। भुद्रं पंश्येमाक्षभिर्यजंत्राः। स्थिरैरङ्गैंस्तुष्टु-वार्श्संस्तुनूभिः। व्यशेम देवहितं यदायुः। स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रंवाः। स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नुस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः। स्वस्ति नो बृहस्पतिंर्दधातु॥

॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥



### ॥ नवग्रहसूक्तम्॥

आ सत्येन रजंसा वर्तमानो निवेशयंत्रमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेनाऽदेवो यांति भुवंना विपश्यन्। अग्निं दूतं वृंणीमहे होतांरं विश्ववंदसम्। अस्य यज्ञस्यं सुऋतुम्॥ येषामीशे पशुपतिः पशूनां चतुंष्पदामुत चं द्विपदाँम्। निष्क्रीतोऽयं यज्ञियं भागमेतु रायस्पोषा यजंमानस्य सन्तु॥ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय आदित्याय नमः॥१॥ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपार रेतार्सस जिन्वति। स्योना पृंथिवि भवांऽनृक्षरा निवेशंनी। यच्छांनः शर्म सप्रथाः। क्षेत्रंस्य पतिंना वय १ हिते नेव जयामिस। गामर्थं पोषियत्वा स नो मृडाती दशे॥ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय अङ्गारकाय नमः॥२॥ प्र वंः शुक्रायं भानवें भरध्वः हव्यं मृतिं चाुग्नये सुपूतम्॥ यो दैव्यानि मानुषा जुनू इष्यन्तर्विश्वांनि विद्यना जिगाति॥ इन्द्राणीमास् नारिष् सुपर्लीमहमंश्रवम्। न ह्यंस्या अपरं चन जरसा मरंते पतिः॥ इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवांमहे जनैंभ्यः। अस्माकंमस्तु केवंलः॥ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय शुक्राय नमः॥३॥ आप्यांयस्व समेतु ते विश्वतः सोम् वृष्णियम्। भवा वार्जस्य सङ्गथे॥ अपसु मे सोमों अब्रवीदन्तर्विश्वांनि भेषजा। अग्निं चं विश्वशंम्भुवमापंश्च विश्वभेषजीः।

गौरी मिंमाय सलिलानि तक्षंती। एकंपदी द्विपदी सा चतुंष्पदी। अष्टापंदी नवंपदी बभूवुषीं। सहस्राक्षरा पर्मे व्योमन्। अधिदेवता प्रत्यिधेदेवता सहिताय सोमाय नमः॥४॥

उद्बंध्यस्वाग्ने प्रतिजागृह्येनिमष्टापूर्ते सर्मुजेथाम्यं चं। पुनः कृण्वश्स्त्वां पितरं युवानम्न्वातारं सीत्विय तन्तुंमेतम्॥ इदं विष्णुर्विचंक्रमे त्रेधा निदंधे पदम्। समूंढमस्यपार सुरे॥ विष्णों र्राटंमिस् विष्णोः पृष्ठमंसि विष्णोः श्रेष्रेंस्थो विष्णोः स्यूरंसि विष्णोंध्रुंवमंसि वैष्णवमंसि विष्णंवे त्वा। अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय बुधाय नमः॥५॥

बृहंस्पते अतियद्यों अहाँद्विमद्विभाति क्रतुंमुञ्जनंषु। यद्दीदयच्छवंसर्तप्रजात् तद्स्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ इन्द्रंमरुत्व इह पाहि सोमं यथां शार्याते अपिंबः सुतस्यं। तव प्रणीती तवं शूरशर्मृन्नाविवासन्ति क्वयंः सुयृज्ञाः॥ ब्रह्मंजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमृतः सुरुचो वेन आंवः। सबुध्नियां उपमा अंस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसंतश्च विवंः॥ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय बृहस्पतये नमः॥६॥

शं नों देवीरिभष्टंय आपों भवन्तु पीतयें। शंयोरिभस्रंवन्तु नः॥ प्रजांपते न त्वदेतान्यन्यो विश्वां जातानि परिता बंभूव। यत्कांमास्ते जुहुमस्तन्नों अस्तु वयः स्यांम् पत्रंयो रयीणाम्। इमं यंमप्रस्त्रमाहि सीदाऽङ्गिरोभिः पितृभिः संविदानः। आत्वा मन्नाः कविश्वस्ता वंहन्त्वेना रांजन् ह्विषां मादयस्व॥ अधिदेवता प्रत्यिधदेवता सहिताय शनैश्वराय नमः॥७॥

कयां नश्चित्र आभुंवदूती स्दावृंधः सखाँ। कया शचिंष्ठया वृता। आऽयङ्गौः पृश्लिंरऋमीदसंनन्मातरं पुनः। पितरं च प्रयन्थ्सुवंः। यत्तं देवी निर्ऋतिराब्बन्ध दामं ग्रीवास्वंविचर्त्यम्। इदं ते तिद्विष्याम्यायुंषो न मध्यादथांजीवः पितुमंद्धि प्रमुंक्तः॥

अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय राहवे नमः॥८॥

केतुं कृण्वन्नेकेतवे पेशों मर्या अपेशसें। समुषद्भिरजायथाः॥ ब्रह्मा देवानां पद्वीः केवीनामृषिर्विप्राणां मिह्षो मृगाणांम्। श्येनो गृध्राणाः स्विधितिर्वनांनाः सोमः पवित्रमत्येति रेभन्। (ऋक्) सर्चित्र चित्रं चितयन् तमस्मे चित्रंक्षत्र चित्रतंमं वयोधाम्। चन्द्रं र्यिं पुरुवीरं बृहन्तं चन्द्रंचन्द्राभिर्गृणते युवस्व॥

अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय केतवे नमः॥९॥ ॥ॐ आदित्यादि नवग्रहदेवंताभ्यो नमो नमंः॥ ॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

## ॥ प्रार्थना ॥

भानो भास्कर मार्तण्ड चण्डरश्मे दिवाकर। आयुरारोग्यमैश्वर्यं श्रियं पुत्रांश्च देहि मे॥

धृतपद्मद्वयं भानुं तेजोमण्डलमध्यगम्। सर्वाधिव्याधिशमनं छायाश्लिष्टतनुं भजे॥

सौरमण्डलमध्यस्थं साम्बं संसारभेषजम्। नीलग्रीवं विरूपाक्षं नमामि शिवमव्ययम्॥

ध्येयः सदा सवितृमण्डल-मध्यवर्ती नारायणः सरसि-जासन-सन्निविष्टः। केयूरवान् मकरकुण्डलवान् किरीटी हारी हिरण्मयवपुर्धृतशङ्खचकः॥

शङ्ख-चक्र-गदापाणे द्वारकानिलयाच्युत। गोविन्द पुण्डरीकाक्ष रक्ष मां शरणागतम्॥ आकाशात् पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम्। सर्वदेवनमस्कारः केशवं प्रतिगच्छति॥

श्री-केशवं प्रतिगच्छत्यों नम इति॥ कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्। करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥

अनेन पूजनेन सपरिवार-भगवान्-सूर्यः प्रीयताम्।

ॐ तत्सद्बह्मार्पणमस्तु।

# ॥ आदित्यहृदयम्॥

ततो युद्धपरिश्रान्तं समरे चिन्तया स्थितम्। रावणं चाग्रतो दृष्ट्वा युद्धाय समुपस्थितम्॥१॥ दैवतैश्च समागम्य द्रष्टुमभ्यागतो रणम्।

राम राम महाबाहो शृणु गुह्यं सनातनम्। येन सर्वानरीन् वत्स समरे विजयिष्यसि॥३॥

उपागम्याब्रवीद्रामम् अगस्त्यो भगवान् ऋषिः॥२॥

आदित्यहृदयं पुण्यं सर्वशत्रुविनाशनम्। जयावहं जपेन्नित्यम् अक्षय्यं परमं शिवम्॥४॥

सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्वपापप्रणाशनम्। चिन्ताशोकप्रशमनम् आयुर्वर्धनमुत्तमम्॥५॥

रश्मिमन्तं समुद्यन्तं देवासुरनमस्कृतम्। पूजयस्व विवस्वन्तं भास्करं भुवनेश्वरम्॥६॥ सर्वदेवात्मको ह्येष तेजस्वी रश्मिभावनः। एष देवासुरगणान् लोकान् पाति गभस्तिभिः॥७॥

एष ब्रह्मा च विष्णुश्च शिवः स्कन्दः प्रजापतिः। महेन्द्रो धनदः कालो यमः सोमो ह्यपां पतिः॥८॥

पितरो वसवः साध्या ह्यश्विनौ मरुतो मनुः। वायुर्विह्नः प्रजाप्राण ऋतुकर्ता प्रभाकरः॥९॥

आदित्यः सविता सूर्यः खगः पूषा गभस्तिमान्। सुवर्णसदृशो भानुर्विश्वरेता दिवाकरः॥१०॥

हरिदश्वः सहस्रार्चिः सप्तसप्तिर्मरीचिमान्। तिमिरोन्मथनः शम्भुस्त्वष्टा मार्तण्ड अंशुमान्॥११॥

हिरण्यगर्भः शिशिरस्तपनो भास्करो रविः। अग्निगर्भोऽदितेः पुत्रः शङ्खः शिशिरनाशनः॥१२॥

व्योमनाथस्तमोभेदी ऋग्यजुस्सामपारगः। घनवृष्टिरपां मित्रो विन्ध्यवीथीप्रवङ्गमः॥१३॥

आतपी मण्डली मृत्युः पिङ्गलः सर्वतापनः। कविर्विश्वो महातेजा रक्तः सर्वभवोद्भवः॥१४॥

नक्षत्रग्रहताराणाम् अधिपो विश्वभावनः। तेजसामपि तेजस्वी द्वादशात्मन् नमोऽस्तु ते॥१५॥

नमः पूर्वाय गिरये पश्चिमायाद्रये नमः। ज्योतिर्गणानां पतये दिनाधिपतये नमः॥१६॥

जयाय जयभद्राय हर्यश्वाय नमो नमः। नमो नमः सहस्रांशो आदित्याय नमो नमः॥१७॥ नम उग्राय वीराय सारङ्गाय नमो नमः। नमः पद्मप्रबोधाय मार्तण्डाय नमो नमः॥१८॥ ब्रह्मेशानाच्युतेशाय सूर्यायादित्यवर्चसे। भास्वते सर्वभक्षाय रौद्राय वपुषे नमः॥१९॥

तमोघ्नाय हिमघ्नाय शत्रुघ्नायामितात्मने। कृतघ्नघ्नाय देवाय ज्योतिषां पतये नमः॥२०॥

तप्तचामीकराभाय वह्नये विश्वकर्मणे। नमस्तमोऽभिनिघ्नाय रुचये लोकसाक्षिणे॥२१॥

नाशयत्येष वै भूतं तदेव सृजति प्रभुः। पायत्येष तपत्येष वर्षत्येष गभस्तिभिः॥२२॥

एष सुप्तेषु जागर्ति भूतेषु परिनिष्ठितः। एष एवाग्निहोत्रं च फलं चैवाग्निहोत्रिणाम्॥२३॥

वेदाश्च ऋतवश्चैव ऋतूनां फलमेव च। यानि कृत्यानि लोकेषु सर्व एष रविः प्रभुः॥२४॥

एनमापत्सु कृच्छ्रेषु कान्तारेषु भयेषु च। कीर्तयन् पुरुषः कश्चिन्नावसीदति राघव॥२५॥

पूजयस्वैनमेकाग्रो देवदेवं जगत्पतिम्। एतत् त्रिगुणितं जास्वा युद्धेषु विजयिष्यसि॥२६॥

अस्मिन् क्षणे महाबाहो रावणं त्वं वधिष्यसि। एवमुक्का तदाऽगस्त्यो जगाम च यथाऽऽगतम्॥२७॥

एतच्छुत्वा महातेजा नष्टशोकोऽभवत्तदा। धारयामास सुप्रीतो राघवः प्रयतात्मवान्॥२८॥

आदित्यं प्रेक्ष्य जम्वा तु परं हर्षमवाप्तवान्। त्रिराचम्य शुचिर्भूत्वा धनुरादाय वीर्यवान्॥२९॥ रावणं प्रेक्ष्य हृष्टात्मा युद्धाय समुपागमत्। सर्वयत्नेन महता वधे तस्य धृतोऽभवत्॥३०॥

अथ रविरवदन्निरीक्ष्य रामं मुदितमनाः परमं प्रहृष्यमाणः। निशिचरपतिसङ्क्षयं विदित्वा सुरगणमध्यगतो वचस्त्वरेति॥३१॥

॥इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये युद्धकाण्डे आदित्यहृदयं नाम सप्तोत्तरशततमः सर्गः॥

# ॥ द्वादशार्यासूर्यस्तुतिः॥

उद्यन्नद्य विवस्वानारोहन्नुत्तरां दिवं देवः। हृद्रोगं मम सूर्यो हरिमाणं चाऽऽशु नाशयतु॥१॥

निमिषार्धेनैकेन द्वे च शते द्वे सहस्रे द्वे। ऋममाण योजनानां नमोऽस्तु ते निलननाथाय॥२॥

कर्म-ज्ञान-ख-दशकं मनश्च जीव इति विश्व-सर्गाय। द्वादशधा यो विचरति स द्वादश-मूर्तिरस्तु मोदाय॥३॥

त्वं हि यजुर्ऋक् साम त्वमागमस्त्वं वषद्वारः। त्वं विश्वं त्वं हंसस्त्वं भानो परमहंसश्च॥४॥

शिवरूपाज्ज्ञानमहं त्वत्तो मुक्तिं जनार्दनाकारात्। शिखिरूपादैश्वर्यं त्वत्तश्चारोग्यमिच्छामि॥५॥

त्विच दोषा दृशि दोषा हृदि दोषा येऽखिलेन्द्रियज-दोषाः। तान् पूषा हतदोषः किश्चिद्रोषाग्निना दहतु॥६॥

धर्मार्थ-काम-मोक्ष-प्रतिरोधानुग्र-ताप-वेग-करान् । बन्दी-कृतेन्द्रिय-गणान् गदान् विखण्डयतु चण्डांशुः॥७॥

येन विनेदं तिमिरं जगदेत्य ग्रसति चरमचरमखिलम्। धृतबोधं तं नलिनीभर्तारं हर्तारमापदामीडे॥८॥ यस्य सहस्राभीशोरभीशु-लेशो हिमांशु-बिम्बगतः। भासयति नक्तमखिलं भेदयतु विपद्-गणानरुणः॥९॥

तिमिरमिव नेत्र-तिमिरं पटलिमवाशेष-रोग-पटलं नः। काशमिवाधि-निकायं कालिपता रोगयुक्ततां हरतात्॥१०॥

वाताश्मरी-गदार्शस्त्वग्-दोष-महोदर-प्रमेहांश्च । ग्रहणी-भगन्दराख्या महतीस्त्वं मे रुजो हंसि॥११॥

त्वं माता त्वं शरणं त्वं धाता त्वं धनं त्वमाचार्यः। त्वं त्राता त्वं हर्ता विपदामर्क प्रसीद मम भानो॥१२॥

इत्यार्या-द्वादशकं साम्बस्य पुरो नभःस्थलात् पतितम्। पठतां भाग्य-समृद्धिः समस्त-रोग-क्षयश्च स्यात्॥१३॥ ॥इति श्री-द्वादशार्यासूर्यस्तृतिः सम्पूर्णा॥



# ॥ शिवरात्रि-पूजा – याम-चतुष्टय-पूजा ॥

आचम्य।

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुव्रोम्।

### ॥ व्रत-सङ्कल्पः॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते अद्य ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकणां प्रभवादि षष्ट्याः संवत्सराणां मध्ये () ४८ नाम संवत्सरे उत्तरायणे शिशिर-ऋतौ कुम्भ-मासे कृष्ण-पक्षे त्र्योदश्यां/चतुर्दश्यां शुभितथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर / भान्) वासरयुक्तायाम् ( ) $^{89}$  नक्षत्र ( ) $^{9}$  नाम योग ( ) करण युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् (त्र्योदश्यां/चतुर्दश्यां) शुभितथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय-आयुरारोग्य-ऐश्वर्याभिवृद्धर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्धर्थं पुत्रपौत्राभि-वृद्धर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्धर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय-व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्य अपनोदनद्वारा सकल-पापक्षयार्थं श्री-साम्ब-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं शिवरात्रि-व्रतं करिष्ये।

<sup>&</sup>lt;sup>४८</sup>पृष्टं ६२१ पश्यताम्

<sup>&</sup>lt;sup>४९</sup>पृष्टं ६३१ पश्यताम्

५°पृष्टं ६३२ पश्यताम्

शिवरात्रिव्रतं ह्येतत्करिष्येऽहं महाफलम्। निर्विघ्नमस्तु मे चात्र त्वत्प्रसादाञ्जगत्पते॥

चतुर्दश्यां निराहारो भूत्वा शम्भो परेऽहिन। भोक्ष्येऽहं भुक्तिमुक्त्यर्थं शरणं मे भवेश्वर॥

# ॥ पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा॥

(आचम्य)

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवणं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुव्रोम्। (अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा) ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः अविघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गुणपंति ह्वामहे क्विं क्वीनामुंपमश्रंवस्तमम्। ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत् आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद् सादंनम्॥ अस्मिन् हिरद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि। ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि। पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरध्यं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि। वस्नार्थमक्षतान् समर्पयामि।

यज्ञोपवीताभरणार्थे अक्षतान् समर्पयामि। दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि। पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

### ॥ अर्चना ॥

१. ॐ सुमुखाय नमः

९. ॐ धूमकेतवे नमः

२. ॐ एकदन्ताय नमः

१०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः

३. ॐ कपिलाय नमः

११. ॐ फालचन्द्राय नमः

४. ॐ गजकर्णकाय नमः

१२. ॐ गजाननाय नमः

५. ॐ लम्बोदराय नमः

१३. ॐ वऋतृण्डाय नमः

६. ॐ विकटाय नमः

१४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः

७. ॐ विघ्नराजाय नमः १५. ॐ हेरम्बाय नमः

८. ॐ विनायकाय नमः

१६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाघ्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम।

ताम्बुलं समर्पयामि।

कर्प्रनीराजनं समर्पयामि।

कप्रनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वऋतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ। अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

# ॥ प्रधान-पूजा — साम्ब-परमेश्वर-पूजा (प्रथम-यामः)॥

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते अद्य ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकणां प्रभवादि षष्ट्याः संवत्सराणां मध्ये )<sup>५१</sup> नाम संवत्सरे **उत्तरायणे शिशिर-ऋतौ कुम्भ-**मासे **कृष्ण**-पक्षे त्र्योदश्यां/चतुर्दश्यां शुभितथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर / भानु) वासरयुक्तायाम् ( )  $^{42}$  नक्षत्र ( )  $^{43}$  नाम योग ( ) करण युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् (त्र्योदश्यां/चतुर्दश्यां) शुभितथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय-आयुरारोग्य-ऐश्वर्याभिवृद्धर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्धर्थं पुत्रपौत्राभि-वृद्धर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्धर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय-व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्य अपनोदनद्वारा सकल-पापक्षयार्थं शिवरात्रौ श्री-साम्ब-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं प्रथम-यामपूजां करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। (गणपति-प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

<sup>&</sup>lt;sup>५१</sup>पृष्टं ६२१ पश्यताम्

<sup>&</sup>lt;sup>५२</sup>पृष्टं ६३१ पश्यताम्

<sup>&</sup>lt;sup>५३</sup>पृष्टं ६३२ पश्यताम्

#### ॥ आसन-पूजा॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चासनं कुरु॥

### ॥ घण्टा-पूजा॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्। घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

#### ॥ कलश-पूजा॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः। ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाह्यामि। (अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्) आपो वा इद सर्वं विश्वां भूतान्यापः प्राणा वा आपः पृशव आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापृश्छन्दाः स्यापो ज्योतीः इष्यापो यजू इष्यापः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भवः स्वराप ओम्॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः। अङ्गश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥ सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च ह्रदा नदाः। आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥ ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवंः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

#### ॥ आत्म-पूजा॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

१. ॐ आत्मने नमः ४. ॐ जीवात्मने नमः

२. ॐ अन्तरात्मने नमः ५. ॐ परमात्मने नमः

३. ॐ योगात्मने नमः ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः

#### समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः। त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

### ॥ पीठ-पूजा ॥

१. ॐ आधारशक्त्ये नमः ८. ॐ रत्नवेदिकाये नमः

२. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः

३. ॐ आदिकूर्माय नमः १०. ॐ श्वेतच्छुत्राय नमः

४. ॐ आदिवराहाय नमः ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः

५. ॐ अनन्ताय नमः १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः

६. ॐ पृथिव्ये नमः १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः

७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः १४. ॐ योगपीठासनाय नमः

### ॥ गुरु-ध्यानम्॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

### ॥ षोडशोपचार-पूजा॥

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं रत्नाकल्पोञ्चलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्। पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पश्चवक्रं त्रिनेत्रम्॥

अस्मिन् बिम्बे श्री-साम्ब-परमेश्वरं ध्यायामि।

नमंस्ते रुद्र मृन्यवं उतो त् इषंवे नमंः। नमंस्ते अस्तु धन्वंने बाहुभ्यांमुत ते नमंः॥ ॐ हीं नमः शिवायं। सद्योजातं प्रंपद्यामि। आवाहयामि॥१॥ या त् इषुंः शिवतंमा शिवं बभूवं ते धनुंः। शिवा शंर्व्यां या तव तयां नो रुद्र मृहय॥ ॐ हीं नमः शिवायं। सद्योजाताय वै नमो नमंः। आसनं समर्पयामि॥२॥

या ते रुद्र शिवा तुनूरघोराऽपांपकाशिनी। तयां नस्तुनुवा शन्तंमया गिरिशन्ताभिचांकशीहि॥ ॐ हीं नुमः शिवायं। भवे भंवे नातिं भवे भवस्व माम्। पादयोः पाद्यं समर्पयामि॥३॥

यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभूष्यस्तेव। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हि सीः पुरुषं जगत्॥ ॐ हीं नमः शिवायं। भ्वोद्भवाय नमः॥ अर्घ्यं समर्पयामि॥४॥ शिवेन वर्चसा त्वा गिरिशाच्छांवदामिस। यथां नः सर्विमिञ्जगंदयक्ष्म स् सुमना असंत्॥ ॐ हीं नमः शिवायं। वामदेवाय नमः। आचमनीयं समर्पयामि॥५॥

अध्यंवोचदिधवृक्ता प्रंथमो दैव्यों भिषक्। अही ईश्च सर्वांश्चम्भय-स्थावंश्च यातुधान्यंः॥ ॐ हीं नमः शिवायं। ज्येष्ठाय नमंः। मधुपर्कं समर्पयामि॥६॥ असौ यस्ताम्रो अंग्रुण उत बुभुः सुमङ्गलंः। ये चेमा र रुद्रा अभितों दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषा हे हेर्ड ईमहे॥ ॐ हीं नमः शिवायं। श्रेष्ठाय नमंः। स्नानं समर्पयामि।

रुद्रम्। चमकम्। पुरुषसूक्तम्॥

स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि॥७॥

साक्षतजलेन तर्पणं कार्यम्॥

ॐ भवं देवं तर्पयामि। ॐ शर्वं देवं तर्पयामि। ॐ ईशानं देवं तर्पयामि। ॐ पशुपतिं देवं तर्पयामि। ॐ रुद्रं देवं तर्पयामि। ॐ उग्रं देवं तर्पयामि। ॐ भीमं देवं तर्पयामि। ॐ महान्तं देवं तर्पयामि॥

ॐ भवस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ शर्वस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ ईशानस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ रद्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ उग्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ भीमस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ महतो देवस्य पत्नीं तर्पयामि॥

असौ योंऽवसर्पति नीलंग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा अंदश्त्रदंशन्नुदहार्यः। उतैनं विश्वा भूतानि स दृष्टो मृंडयाति नः॥ ॐ हीं नुमः शिवायं। रुद्राय नर्मः। वस्रोत्तरीयं समर्पयामि॥८॥

नमों अस्तु नीलंग्रीवाय सहस्राक्षायं मीढुषें। अथो ये अंस्य सत्वांनोऽहं तेभ्योंऽकरं नमः॥ ॐ हीं नमः शिवायं। कालाय नमः। यज्ञोपवीताभरणानि समर्पयामि॥९॥

प्र मुंश्च धन्वंनुस्त्वमुभयोरार्हियो ज्याम्। याश्चं ते हस्त इषंवः परा ता भंगवो

80

वप॥ ॐ हीं नुमः शिवायं। कलंविकरणाय नर्मः। दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि अक्षतान् समर्पयामि॥१०॥

अवतत्य धनुस्त्व सहंस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य श्रुल्यानां मुखां शिवो नेः सुमनां भव॥ ॐ हीं नृमः शिवायं। बलंविकरणाय नर्मः। पुष्पैः पूजयामि॥११॥

ॐ भवाय देवाय नमः। ॐ शर्वाय देवाय नमः।
ॐ ईशानाय देवाय नमः। ॐ पशुपतये देवाय नमः।
ॐ रुद्राय देवाय नमः। ॐ उग्राय देवाय नमः।
ॐ भीमाय देवाय नमः। ॐ महते देवाय नमः॥
ॐ भवस्य देवस्य पल्यै नमः। ॐ शर्वस्य देवस्य पल्यै नमः।
ॐ ईशानस्य देवस्य पल्यै नमः। ॐ पशुपतेर्देवस्य पल्यै नमः।
ॐ रुद्रस्य देवस्य पल्यै नमः। ॐ उग्रस्य देवस्य पल्यै नमः।
ॐ भीमस्य देवस्य पल्यै नमः। ॐ महतो देवस्य पल्यै नमः॥

### ॥ शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः॥

शिवाय नमः
महेश्वराय नमः
शम्भवे नमः
पिनाकिने नमः
शशिशेखराय नमः
वामदेवाय नमः
विरूपाक्षाय नमः
कपर्दिने नमः
नीललोहिताय नमः

शङ्कराय नमः शूलपाणये नमः खट्वाङ्गिने नमः विष्णुवल्लभाय नमः शिपिविष्टाय नमः अम्बिकानाथाय नमः श्रीकण्ठाय नमः भक्तवत्सलाय नमः भवाय नमः

		506
	त्रयीमूर्तये नमः	
२०	अनीश्वराय नमः	
	सर्वज्ञाय नमः	
	परमात्मने नमः	
	सोमसूर्याग्निलोचनाय नमः	
	हविषे नमः	
	यज्ञमयाय नमः	५०
	सोमाय नमः	
	पश्चवऋाय नमः	
	सदाशिवाय नमः	
	विश्वेश्वराय नमः	
३०	वीरभद्राय नमः	
	गणनाथाय नमः	
	प्रजापतये नमः	
	हिरण्यरेतसे नमः	
	दुर्धर्षाय नमः	
	गिरीशाय नमः	६०
		२० अनीश्वराय नमः सर्वज्ञाय नमः परमात्मने नमः सोमसूर्याग्निलोचनाय नमः हिवषे नमः यज्ञमयाय नमः सोमाय नमः पञ्चवऋाय नमः सदाशिवाय नमः विश्वेश्वराय नमः विश्वेश्वराय नमः गणनाथाय नमः प्रजापतये नमः हिरण्यरेतसे नमः दुर्धर्षाय नमः

गिरिशाय नमः

अनघाय नमः

भर्गाय नमः

४० गिरिधन्वने नमः

भुजङ्गभूषणाय नमः

गिरिप्रियाय नमः

कृत्तिवाससे नमः पुरारातये नमः

कवचिने नमः

कठोराय नमः

वृषाङ्काय नमः

त्रिपुरान्तकाय नमः

वृषभारूढाय नमः

सामप्रियाय नमः

स्वरमयाय नमः

भस्मोद्धूलितविग्रहाय नमः

शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः			507
भगवते नमः		अजाय नमः	
प्रमथाधिपाय नमः	७०	पाशविमोचकाय नमः	९०
मृत्युअयाय नमः		मृडाय नमः	
सूक्ष्मतनवे नमः		पशुपतये नमः	
जगद्यापिने नमः		देवाय नमः	
जगद्गुरवे नमः		महादेवाय नमः	
व्योमकेशाय नमः		अव्ययाय नमः	
महासेनजनकाय नमः		हरये नमः	
चारुविक्रमाय नमः		पूषदन्तभिदे नमः	
रुद्राय नमः		अव्यग्राय नमः	
भूतपतये नमः		दक्षाध्वरहराय नमः	
स्थाणवे नमः	८०	हराय नमः	१००
अहये बुध्र्याय नमः		भगनेत्रभिदे नमः	
दिगम्बराय नमः		अव्यक्ताय नमः	
अष्टमूर्तये नमः		सहस्राक्षाय नमः	
अनेकात्मने नमः		सहस्रपदे नमः	
सात्त्विकाय नमः		अपवर्गप्रदाय नमः	
शुद्धविग्रहाय नमः		अनन्ताय नमः	

॥इति शाक्तप्रमोदे श्री-शिवाष्टोत्तरशतनामाविलः सम्पूर्णा॥

शाश्वताय नमः

खण्डपरशवे नमः

### ॥ उत्तराङ्ग-पूजा॥

विज्यं धर्नुः कपूर्दिनो विशंल्यो बार्णवा । उत्। अनेशन्नस्येषंव आभुरंस्य निषुङ्गर्थिः॥ ॐ हीं नुमः शिवाये। बलाय नर्मः। धूपमाघ्रापयामि॥१२॥

या ते हेतिर्मीं ढुष्टम् हस्ते बुभूवं ते धर्नुः। तयाऽस्मान् विश्वतस्त्वमंयक्ष्मया परिन्युज॥ ॐ हीं नृमः शिवायं। बलंप्रमथनाय नर्मः। अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि॥१३॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। + ब्रह्मणे स्वाहाँ। नमंस्ते अस्त्वायुंधायानांतताय धृष्णवेँ। उभाभ्यांमुत ते नमों बाहुभ्यां तव धन्वंने॥ ॐ हीं नमः शिवायं। सर्वभूतदमनाय नमंः। () निवेदयामि। मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि। अमृतापिधानमसि।

हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। पादप्रक्षालनं समर्पयामि। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि॥१४॥

परिं ते धन्वंनो हेतिर्स्मान्वृंणक्त विश्वतः। अथो य इंषुधिस्तवाऽऽरे अस्मन्नि धेहि तम्॥ ॐ हीं नमः शिवायं। मनोन्मंनाय नमः। कर्प्रताम्बूलं समर्पयामि॥१५॥

नर्मस्ते अस्तु भगवन् विश्वेश्वरायं महादेवायं त्र्यम्बकायं त्रिपुरान्तकायं त्रिकाग्निकालायं कालाग्निरुद्रायं नीलकण्ठायं मृत्युञ्जयायं सर्वेश्वरायं सदाशिवायं श्रीमन्महादेवायं नर्मः॥ कर्पूरनीराजनं दर्शयामि॥१६॥

#### ॥ रक्षा ॥

बृहथ्सामं क्षत्रभृद्घृद्ध वृंष्णियं त्रिष्टुभौजंः शुभितमुग्रवीरम्। इन्द्रस्तोमेन पश्चद्शेन् मध्यंमिदं वातेन् सगरेण रक्ष॥
रक्षां धारयामि॥

#### ॥ नमस्काराः ॥

- ॐ भवाय देवाय नमः।
- ॐ शर्वाय देवाय नमः।
- ॐ ईशानाय देवाय नमः।
- ॐ पशुपतये देवाय नमः।
- ॐ रुद्राय देवाय नमः।
- ॐ उग्राय देवाय नमः।
- ॐ भीमाय देवाय नमः।
- ॐ महते देवाय नमः॥

ईशानः सर्वविद्यानामिश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मां शिवो में अस्तु सदाशिवोम्॥ ॐ हीं नमः शिवायं। मन्नपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। शिवाय नमः। रुद्राय नमः। पशुपतये नमः। नीलकण्ठाय नमः। महेश्वराय नमः। हरिकेशाय नमः। विरूपाक्षाय नमः। पिनािकने नमः। त्रिपुरान्तकाय नमः। शम्भवे नमः। शूलिने नमः। महादेवाय नमः। इति द्वादशनामिर्द्वादशपुष्पाञ्जलीन् दत्त्वा॥

प्रदक्षिणनमस्कारान् कृत्वा॥

### ॥ अर्घ्यप्रदानम्॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम् शिवरात्रौ प्रथम-याम-पूजान्ते क्षीरार्घ्यप्रदानं करिष्ये॥

> शिवरात्रिव्रतं देव पूजाजपपरायणः। करोमि विधिवद्दत्तं गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते॥

### इत्यर्घ्यं दत्त्वा।

नमः शिवाय शान्ताय सर्वपापहराय च। शिवरात्रौ मया दत्तं गृहाणार्घ्यं मम प्रभो॥१॥

### ॥ पूजानिवेदनम्॥

नमो यज्ञजगन्नाथ नमस्त्रिभुवनेश्वर। पूजां गृहाण मे दत्तां महेश प्रथमे पदे॥१॥

यत्किश्चित् कुर्महे देव सदा सुकृतदुष्कृतम्। तन्मे शिवपदस्थस्य भुङ्क क्षपय शङ्कर॥

शिवो दाता शिवो भोक्ता शिवः सर्वमिदं जगत्। शिवो जयति सर्वत्र यः शिवः सोऽहमेव हि॥

इति प्रार्थ्य॥

देवहृदयस्थं पादस्थं च पुष्पमादाय प्रणम्य देवेन दत्तमिति ध्यात्वा॥

प्रपन्नं पाहि मामीश भीतमृत्युमहार्णवात्। त्वयोपभुक्त-स्रग्-गन्ध-वासो-लङ्कार-चर्चिताः। उच्छिष्टभोजिनो दासास्तव मायां जयेम हि॥

इति मूर्प्नि धृत्वा॥

मन्नहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं महेश्वर। यत्कृतं तु मया देव परिपूर्णं तदस्तु ते॥

अनेन पूजनेन साम्बसदाशिवः प्रीयताम्।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्। करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥ ॐ तत्सद्बह्मार्पणमस्तु।

# ॥ प्रधान-पूजा — साम्ब-परमेश्वर-पूजा (द्वितीय-यामः)॥

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवणं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविद्रोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते अद्य ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकणां प्रभवादि षष्ट्याः संवत्सराणां मध्ये )<sup>५४</sup> नाम संवत्सरे उत्तरायणे शिशिर-ऋतौ कुम्भ-मासे कृष्ण-पक्षे त्र्योदश्यां/चतुर्दश्यां शुभितथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर / भानु) वासरयुक्तायाम् ( )<sup>५५</sup> नक्षत्र ( )<sup>५६</sup> नाम योग ( ) करण युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् (त्र्योदश्यां/चतुर्दश्यां) शुभितथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय-आयुरारोग्य-ऐश्वर्याभिवृद्धर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्धर्थं पुत्रपौत्राभि-वृद्धर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्धर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय-व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्य अपनोदनद्वारा सकल-पापक्षयार्थं शिवरात्रौ श्री-साम्ब-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं द्वितीय-यामपूजां करिष्ये।

<sup>&</sup>lt;sup>५४</sup>पृष्टं ६२१ पश्यताम्

५५पृष्टं ६३१ पश्यताम्

<sup>&</sup>lt;sup>५६</sup>पृष्टं ६३२ पश्यताम्

### ॥ षोडशोपचार-पूजा॥

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं रत्नाकल्पोञ्चलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्। पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवऋं त्रिनेत्रम्॥

अस्मिन् बिम्बे श्री-साम्ब-परमेश्वरं ध्यायामि।

नमंस्ते रुद्र मृन्यवं उतो त् इषंवे नमंः। नमंस्ते अस्तु धन्वंने बाहुभ्यांमुत ते नमंः॥ ॐ हीं नमः शिवायं। सुद्योजातं प्रंपद्यामि। आवाहयामि॥१॥ या त् इषुंः शिवतंमा शिवं बुभूवं ते धनुंः। शिवा शंर्व्यां या तव तयां नो रुद्र मृडय॥ ॐ हीं नमः शिवायं। सुद्योजाताय वै नमो नमंः। आसनं समर्पयामि॥२॥

या ते रुद्र शिवा तुनूरघोराऽपांपकाशिनी। तयां नस्तुनुवा शन्तंमया गिरिशन्ताभिचांकशीहि॥ ॐ हीं नुमः शिवायं। भवे भवे नाति भवे भवस्व माम्। पादयोः पाद्यं समर्पयामि॥३॥

यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभूष्यस्तेव। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हि सीः पुरुषं जगत्॥ ॐ हीं नमः शिवायं। भ्वोद्भवाय नमः॥ अर्घ्यं समर्पयामि॥४॥ शिवेन वर्चसा त्वा गिरिशाच्छांवदामिस। यथां नः सर्विमिञ्जगंदयक्ष्म स् सुमना असंत्॥ ॐ हीं नमः शिवायं। वामदेवाय नमः। आचमनीयं समर्पयामि॥५॥ अध्यंवोचदिधवृक्ता प्रथमो दैव्यों भिषक्। अही ईश्च सर्वां श्वम्भय-न्थ्सर्वांश्च यातुधान्यः॥ ॐ हीं नमः शिवायं। ज्येष्ठाय नमः। मधुपर्कं समर्पयामि॥६॥ असौ यस्ताम्रो अंरुण उत ब्रभुः सुमङ्गलंः। ये चेमा रुद्रा अभितों दिश्च श्विताः सहस्रशोऽवैषा हेर्ड ईमहे॥ ॐ हीं नमः शिवायं। श्वेष्ठाय नमः। स्नानं

समर्पयामि।

### ॥महान्यासः॥

# ॥ पञ्चाङ्गरुद्रन्यासः रावणोक्ता पञ्चाङ्गप्रार्थना-सहितम्॥

ओङ्कारमन्त्रसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः। कामदं मोक्षदं तस्मै नकाराय नमो नमः॥१॥

नर्मस्ते रुद्र मृन्यवं उतो त् इषंवे नर्मः। नर्मस्ते अस्तु धन्वंने बाहुभ्यांमुत ते नर्मः॥ या त् इषुः शिवतंमा शिवं बभूवं ते धनुः। शिवा शंर्व्यां या तव तयां नो रुद्र मृडय॥

(EAST)

कं खं गं घं ङं। यरलवशषसहोम्। ॐ नमो भगवर्ते रुद्राय। पूर्वाङ्गरुद्राय नमः।

> महादेवं महात्मानं महापातकनाशनम्। महापापहरं वन्दे मकाराय नमो नमः॥२॥

अपैतु मृत्युर्मृतं न आगंन्वैवस्वतो नो अभंयं कृणोतु। पूर्णं वनस्पतेरिवाभिनंः शीयता १ रियः स चं तान्नः शचीपितः।

(SOUTH)

चं छं जं झं ञं। यरलवशषसहोम्। ॐ नमो भगवते रुद्राय। दक्षिणाङ्गरुद्राय नमः।

> शिवं शान्तं जगन्नाथं लोकानुग्रहकारणम्। शिवमेकं परं वन्दे शिकाराय नमो नमः॥३॥

ॐ। निधंनपतये नमः। निधंनपतान्तिकाय नमः। ऊर्ध्वाय नमः। ऊर्ध्वलिङ्गाय नमः। हिरण्याय नमः। हिरण्यलिङ्गाय नमः। सुवर्णाय नमः। सुवर्णलिङ्गाय नमः। दिव्याय नमः। दिव्यिलिङ्गाय नमः। भवाय नमः। भविलिङ्गाय नमः। शर्वाय नमः। शर्विलिङ्गाय नमः। शिवाय नमः। शिविलिङ्गाय नमः। ज्वलाय नमः। जवलिङ्गाय नमः। जवलिङ्गाय नमः। परमाय नमः। परमिलिङ्गाय नमः। परमाय नमः। परमिलिङ्गाय नमः। एतथ्सोमस्यं सूर्यस्य सर्विलिङ्गः स्थाप्यित् पाणिमन्नं पवित्रम्।

(WEST)

टं ठं डं ढं णं। यरलवशषसहोम्। ॐ नमो भगवते रुद्राय। पश्चिमाङ्गरुद्राय नमः।

वाहनं वृषभो यस्य वासुिकः कण्ठभूषणम्। वामे शक्तिधरं वन्दे वकाराय नमो नमः॥४॥

यो रुद्रो अग्नौ यो अपसु य ओषंधीषु यो रुद्रो विश्वा भुवनाऽऽविवेश तस्मैं रुद्राय नमो अस्तु॥

(NORTH)

तं थं दं धं नं। यरलवशषसहोम्। ॐ नमो भगवते रुद्राय। उत्तराङ्गरुद्राय नमः।

यत्र कुत्र स्थितं देवं सर्वव्यापिनमीश्वरम्। यिल्लङ्गं पूजयेत्रित्यं यकाराय नमो नमः॥५॥

प्राणानां ग्रन्थिरसि रुद्रो मां विशान्तकः। तेनान्नेनांप्यायुस्व॥ नमो रुद्राय विष्णवे मृत्युंर्मे पाहि।

(UPWARDS)

पं फं बं भं मं। यरलवशषसहोम्। ॐ नमो भगवते रुद्राय। ऊर्ध्वाङ्गरुद्राय नमः।

# ॥ पञ्चाङ्गमुखन्यासः रावणोक्ता पञ्चमुखप्रार्थना-सहितम्॥

तत्पुरुषाय विद्महें महादेवायं धीमहि। तन्नों रुद्रः प्रचोदयाँत्॥

संवर्ताग्नि-तिटत्प्रदीप्त-कनक-प्रस्पर्धि-तेजोरुणं गम्भीरध्वनि-सामवेदजनकं ताम्राधरं सुन्दरम्। अर्धेन्दुद्युति-लोल-पिङ्गल-जटाभार-प्रबोद्धोदकं वन्दे सिद्धसुरासुरेन्द्रनमितं पूर्वं मुखं शूलिनः॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय। पूर्वाङ्गमुखाय नमः। (EAST)

अघोरैभ्योऽथ् घोरैभ्यो घोरघोरंतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नर्मस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥

कालाभ्रभ्रमराञ्जन-द्युतिनिभं व्यावृत्तपिङ्गक्षणं कर्णोद्धासित-भोगिमस्तकमणि-प्रोद्धिन्नदंष्ट्राङ्कुरम्। सर्पप्रोतकपाल-शुक्तिशकल-व्याकीर्णताशेखरं वन्दे दक्षिणमीश्वरस्य वदनं चाथर्वनादोदयम्॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय। दक्षिणाङ्गमुखाय नमः। (SOUTH)

सुद्योजातं प्रंपद्यामि सुद्योजाताय वै नमो नर्मः। भवे भवे नाति भवे भवस्व माम्। भवोद्भवाय नर्मः॥

प्रालेयाचलिमन्दुकुन्द-धवलं गोक्षीरफेनप्रभं भस्माभ्यङ्गमनङ्गदेहदहन-ज्वालावली-लोचनम् । विष्णु-ब्रह्म-मरुद्गणार्चितपदं ऋग्वेदनादोदयं वन्देऽहं सकलं कलङ्करिहतं स्थाणोर्मुखं पश्चिमम्॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय। पश्चिमाङ्गमुखाय नमः। (WEST) वामदेवाय नमों ज्येष्ठाय नमेः श्रेष्ठाय नमों रुद्राय नमः कालाय नमः कलेविकरणाय नमो बलेविकरणाय नमो बलाय नमो बलंप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमों मुनोन्मनाय नमेः॥

गौरं कुङ्कुमपङ्कितं सुतिलकं व्यापाण्डुमण्डस्थलं भ्रूविक्षेप-कटाक्षवीक्षण-लसत्-संसक्तकर्णोत्पलम्। स्निग्धं बिम्बफलाधरं प्रहसितं नीलालकालङ्कृतं वन्दे याजुषवेदघोषजनकं वक्रं हरस्योत्तरम्॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय। उत्तराङ्गमुखाय नमः। (NORTH)

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिब्रह्मणोऽधिपतिब्रह्मां शिवो में अस्तु सदाशिवोम्॥

> व्यक्ताव्यक्तनिरूपितं च परमं षट्टिंशतत्त्वाधिकं तस्मादुत्तर-तत्त्वमक्षरमिति ध्येयं सदा योगिभिः। ओङ्कारादि समस्तमन्त्रजनकं सूक्ष्मातिसूक्ष्मं परं वन्दे पञ्चममीश्वरस्य वदनं खव्यापि तेजोमयम्॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय। ऊर्ध्वाङ्गमुखाय नमः। (UPWARDS)

# ॥ केशादिपादान्त (प्रथमो) न्यासः॥

या तें रुद्र शिवा तुनूरघोराऽपांपकाशिनी। तयां नस्तुनवा शन्तंमया गिरिशन्ताभिचांकशीहि॥ शिखाये नमः॥ (TUFT) अस्मिन् मंहृत्यंर्ण्वेंऽन्तरिक्षे भवा अधि। तेषा रे सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि॥ शिरसे नमः॥ (TOP OF HEAD)

सहस्रांणि सहस्रशो ये रुद्रा अधि भूम्यांम्। तेषार् सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि॥

ललाटाय नमः॥ (FOREHEAD)

ह्रसः शुंचिषद्वसुंरन्तरिक्षसद्धोतां वेदिषदतिंथिर्दुरोण्सत्। नृषद्वरसद्देतसद्धोमसद्जा गोजा ऋतजा अंद्रिजा ऋतं बृहत्॥ भुवोर्मध्याय नमः॥ (MIDDLE OF EYEBROWS)

त्र्यम्बकं यजामहे सुगृन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकिमेव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतौत्॥ नेत्राभ्यां नमः॥ (EYES)

नमः स्रुत्याय च पथ्याय च नमः काट्याय च नीप्याय च नमः सूद्याय च सर्स्याय च नमो नाद्यायं च वैश्नतायं च। कर्णाभ्यां नमः॥ (BARS)

मा नंस्तोके तनेये मा न आयुंषि मा नो गोषु मा नो अश्वेष रीरिषः। वीरान्मा नो रुद्र भामितोऽवंधीर्ह्विष्मंन्तो नमंसा विधेम ते॥ नासिकायै<sup>५७</sup> नमः॥ (NOSE)

अवृतत्य धनुस्त्व सहंस्राक्ष शतेषुधे॥ निशीर्य शृल्यानां मुखां शिवो नेः सुमनां भव। मुखाय नमः॥ (FACE)

नीलंग्रीवाः शितिकण्ठाः शूर्वा अधः, क्षंमाचराः। तेषार् सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि॥

<sup>&</sup>lt;sup>५७</sup>नासिकाभ्यां

कण्ठाय नमः॥ (NECK)

नीलंग्रीवाः शितिकण्ठा दिवरं रुद्रा उपश्रिताः। तेषारं सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि॥ उपकण्ठाय नमः॥ (LOWER NECK)

नर्मस्ते अस्त्वायुंधायानांतताय धृष्णवें। उभाभ्यांमृत ते नमों बाहुभ्यां तव धन्वंने॥ बाहुभ्यां नमः॥ (SHOULDERS)

या ते हेतिर्मीं ढुष्टम् हस्ते बुभूवं ते धर्नुः। तयाऽस्मान् विश्वतस्त्वमंयक्ष्मया परिञ्जुज॥ उपबाहुभ्यां नमः॥ (ELBOW TO WRIST)

परिं णो रुद्रस्यं हेतिर्वृंणक्तु परिं त्वेषस्यं दुर्मतिरंघायोः। अवं स्थिरा मुघवंद्र्यस्तनुष्व मीढ्वंस्तोकाय तनंयाय मृडय॥ मणिबन्धाभ्यां नमः॥ (WRISTS)

ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकावन्तो निष्क्षिणः। तेषार् सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥ हस्ताभ्यां नमः॥ (HANDS)

सुद्योजातं प्रपद्यामि सुद्योजाताय वै नमो नर्मः। भवे भवे नाति भवे भवस्व माम्। भवोद्भवाय नर्मः॥ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः॥ (ROLL RING FINGERS ON THUMBS)

वामदेवाय नमों ज्येष्ठाय नमेः श्रेष्ठाय नमों रुद्राय नमः कालांय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलांय नमो बलंप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमों मुनोन्मनाय नमः॥ तर्जनीभ्यां नमः॥ (ROLL THUMBS ON INDEX FINGERS)

अघोरैंभ्योऽथ घोरैंभ्यो घोरघोरंतरेभ्यः।

सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमंस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥

मध्यमाभ्यां नमः॥ (ROLL THUMBS ON MIDDLE FINGERS)

तत्पुरुंषाय विद्महें महादेवायं धीमहि।

तन्नों रुद्रः प्रचोदयांत्॥

अनामिकाभ्यां नमः॥ (ROLL THUMBS ON RING FINGERS)

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिब्रह्मणोऽधिपतिब्रह्मां शिवो में अस्तु सदाशिवोम्॥

कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥ (ROLL THUMBS ON LITTLE FINGERS)

नमो हिरण्यबाहवे हिरण्यवर्णाय हिरण्यरूपाय हिरण्यपतयेऽम्बिकापतय उमापतये पशुपतये नमो नमः॥

करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥(RUB PALMS OVER ONE ANOTHER, FRONT AND BACK)

नमों वः किर्िकेभ्यों देवाना ५ हृदयेभ्यः॥

हृदयाय नमः॥ (HEART)

नमों गुणेभ्यों गुणपंतिभ्यश्च वो नमंः॥

पृष्ठाय नमः॥ (BACK)

नमस्तक्षंभ्यो रथकारेभ्यंश्च वो नर्मः॥

कक्षाभ्यां नमः॥ (ARMPIT TO WAIST)

नमो हिरंण्यबाहवे सेनान्यें दिशां च पतंये नमंः॥

पार्श्वाभ्यां नमः॥ (TRUNK)

विज्यं धर्नुः कप्रदिनो विश्लयो बार्णवा । उत्।

अनेशन्नस्येषंव आभुरंस्य निष्क्षिंः॥

जठराय नमः॥ (STOMACH)

हिर्ण्यगर्भः समंवर्तताग्रे भूतस्यं जातः पित्रेकं आसीत्। सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मैं देवायं हिवषां विधेम॥ नाभ्ये नमः॥ (NAVEL)

मीढुंष्टम् शिवंतम शिवो नंः सुमनां भव। प्रमे वृक्ष आयुंधं निधाय कृत्तिं वसान् आ चर् पिनांकं बिभ्रदा गंहि॥ कट्यै नमः॥ (WAIST)

ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपूर्दिनः। तेषारं सहस्रयोज्नेऽवधन्वानि तन्मसि॥ गुह्याय नमः॥ (UPPER REPRODUCTIVE ORGANS)

ये अन्नेषु विविध्यंन्ति पात्रेषु पिबंतो जनान्। तेषा रे सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥ अण्डाभ्यां नमः॥ (LOWER REPRODUCTIVE ORGANS)

स शिरा जातवेदा अक्षरं पर्म प्दम्। वेदाना शिरंसि माता आयुष्मन्तं करोतु माम्॥ अपानाय नमः॥ (ANUS)

मा नो महान्तंमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षंन्तमुत मा नं उक्षितम्। मा नो वधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा नंस्तनुवो रुद्र रीरिषः॥ ऊरुभ्यां नमः॥ (THIGHS)

एष ते रुद्रभागस्तं जुंषस्व तेनांवसेनं पुरो मूर्जंवतोऽतीृह्यवंततधन्वा पिनांकहस्तः कृत्तिंवासाः॥ जानुभ्यां नमः॥ (KNEES) स्रमृष्ट्रजिथ्सोम्पा बांहुश्ध्यूर्ध्वधंन्वा प्रतिहिताभिरस्तां। बृहंस्पते परिदीया रथेन रक्षोहाऽमित्रार्थ अपुबाधंमानः॥ जङ्घाभ्यां नमः॥ (KNEE TO ANKLES)

विश्वं भूतं भुवंनं चित्रं बंहुधा जातं जायंमानं च यत्। सर्वो ह्येष रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु॥ गुल्फाभ्यां नमः॥ (ANKLES)

ये पृथां पंथिरक्षंय ऐलबृदा यृव्युर्धः। तेषा १ सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि॥ पादाभ्यां नमः॥ (FEET)

अध्यंवोचदिधवृक्ता प्रंथमो दैव्यों भिषक्। अही ईश्च सर्वां अम्भय-न्थ्सर्वांश्च यातुधान्यंः॥

कवचाय हुम्॥ (Cross hands across chest with tips of fingers touching shoulders)

नमों बिल्मिनें च कव्चिनें च नमः श्रुतायं च श्रुतसेनायं च॥ उपकवचाय हुम्॥ (REPEAT THE ABOVE AT ELBOW LEVEL)

नमों अस्तु नीलंग्रीवाय सहस्राक्षायं मीढुषें। अथो ये अस्य सत्वांनोऽहं तेभ्योऽकरं नमंः॥

नेत्रत्रयाय वौषट्॥ (TOUCH INDEX, MIDDLE, RING FINGERS ACROSS THE THREE EYES)

प्र मृंश्च धन्वंनस्त्वमुभयोरार्ह्नियोर्ज्याम्। याश्चं ते हस्त इषंवः परा ता भंगवो वप॥

अस्त्राय फट्॥ (slap index and middle fingers of right hand on left palm)

य पृतावंन्तश्च भूया रंसश्च दिशों रुद्रा विंतस्थिरे। तेषा रं सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि॥ इति दिग्बन्धः॥ (SNAP MIDDLE AND THUMB WITH CLICKING SOUNDS AROUND SELF)



# ॥ मूर्घादिपादान्त दशाक्षरी दशाङ्ग (द्वितीयो) न्यासः॥

ॐ मूर्प्ने नमः। नं नासिकाय<sup>५८</sup> नमः। मों ललाटाय नमः। भं मुखाय नमः। गं कण्ठाय नमः। वं हृदयाय नमः। तें दक्षिणहस्ताय नमः। रुं वामहस्ताय नमः। द्रां नाभ्यै नमः। यं पादाभ्यां नमः।

# ॥ पादादिमूर्घान्त पश्चाङ्ग (तृतीयो) न्यासः॥

सुद्योजातं प्रपद्यामि सुद्योजाताय वै नमो नर्मः। भवे भवे नाति भवे भवस्व माम्। भवोद्भवाय नर्मः॥ पादाभ्यां नमः॥

वामुदेवाय नमों ज्येष्ठाय नमेः श्रेष्ठाय नमों रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलप्य नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः॥

ऊरुभ्यां नमः॥

अघोरेंभ्योऽथ घोरेंभ्यो घोरघोरंतरेभ्यः।

सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभयो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥

हृदयाय नमः॥

तत्पुरुंषाय विद्महें महादेवायं धीमहि। तन्नों रुद्रः प्रचोदयात्॥

मुखाय नमः॥

<sup>&</sup>lt;sup>५८</sup>नासिकाभ्यां

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मां शिवो में अस्तु सदाशिवोम्॥ हंस हंस मूर्फ्ने नमः॥



### ॥ हंसगायत्री ॥

अस्य श्री-हंसगायत्री महामन्त्रस्य। अव्यक्त परब्रह्म ऋषिः। अव्यक्त गायत्री छन्दः। परमहंसो देवता॥ हंसां बीजम्। हंसीं शक्तिः। हंसूं कीलकम्॥ परमहंस-प्रसाद-सिद्धर्थे जपे विनियोगः॥

हंसां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। हंसीं तर्जनीभ्यां नमः। हंसूं मध्यमाभ्यां नमः। हंसैं अनामिकाभ्यां नमः। हंसीं किनिष्ठिकाभ्यां नमः। हंसः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। हंसां हृदयाय नमः। हंसीं शिरसे स्वाहा। हंसूं शिखाये वषट्। हंसैं कवचाय हुम्। हंसीं नेत्रत्रयाय वौषट्। हंसः अस्त्राय फट्। भूर्भवस्सुवरोम् इति दिग्बन्धः॥

#### **॥ध्यानम्॥**

गमागमस्थं गमनादिशून्यं चिद्रूपदीपं तिमिरापहारम्। पश्यामि ते सर्वजनान्तरस्थं नमामि हंसं परमात्मरूपम्॥ हंसहंसात् परमहंसः सोऽहं हंसः॥ हुंस् हुंसायं विद्महें परमहुंसायं धीमहि। तन्नों हंसः प्रचोदयांत्॥

(एवं त्रिः)

हंस हंसेति यो ब्रूयाद्धंसो नाम सदाशिवः। एवं न्यासविधिं कृत्वा ततः सम्पुटमारभेत्॥



### ॥दिक् सम्पुटन्यासः॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्। [ॐ] लं। त्रातारमिन्द्रमिवतारमिन्द्र५ हवेहवे सुहव५ शूरमिन्द्रम्। हुवे नु शुक्रं पुरुहृतमिन्द्रई स्वस्ति नो मुघवां धात्विन्द्रेः॥ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः। पूर्वदिग्भागे ललाटस्थाने लं इन्द्राय नमः। इन्द्रः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [इन्द्रः संरक्षत्॥] 11811 ॐ भूर्भुवः सुवरोम्। [नं] रं। त्वन्नों अग्ने वर्रणस्य विद्वान् देवस्य हेडोऽवं यासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वहितमः शोशुंचानो विश्वा द्वेषा रेसि प्रमुंमुग्ध्यस्मत्॥ [नं] रं भूर्भुवः सुवंः। अग्नये शक्तिहस्ताय तेजोऽधिपतयेऽजवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः। आग्नेयदिग्भागे नेत्रयोः स्थाने रं अग्नये नमः। अग्निः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [अग्निः संरक्षत्॥] II 2 II ॐ भूर्भुवः सुवरोम्। [मों] हं। सुगं नः पन्थामभंयं कृणोतु। यस्मिन्नक्षंत्रे यम एति राजाँ। यस्मिन्नेनमभ्यषिश्चन्त देवाः। तदंस्य चित्र हिवषां यजाम॥ [मों] हं भूर्भुवः सुवंः। यमाय दण्डहस्ताय धर्माधिपतये महिषवाहनाय साङ्गाय सायुधाय संशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः। दक्षिणदिग्भागे कर्णयोः स्थाने हं यमाय नमः। यमः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [यमः संरक्षत्॥] 11 \$ 11

||8||

ॐ भूर्भुवः सुव्रोम्।

[भं] षं। असुन्वन्त्मयंजमानिमच्छ स्तेनस्येत्यां तस्कर्स्यान्वेषि। अन्यम्स्मिदंच्छ् सा तं इत्या नमों देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥ [भं] षं भूर्भुवः सुवंः। निर्ऋतये खङ्गहस्ताय रक्षोधिपतये नरवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः। निर्ऋतिदिग्भागे मुखस्थाने षं निर्ऋतये नमः। निर्ऋतिः सुप्रीतो वरदो

ॐ भूर्भुवः सुव्रोम्।

भवत्॥ [निर्ऋतिः संरक्षत्॥]

[गं] वं। तत्त्वां यामि ब्रह्मणा वन्दंमान्स्तदा शाँस्ते यजंमानो ह्विर्भिः। अहंडमानो वरुणेह बोध्युरुशश्स मा न आयुः प्रमोंषीः॥
[गं] वं भूर्भुवः सुवंः। वरुणाय पाशहस्ताय जलाधिपतये मकरवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

पश्चिमदिग्भागे बाह्वोः स्थाने वं वरुणाय नमः। वरुणः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [वरुणः संरक्षतु॥] ॥५॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[वं] यं। आ नों नियुद्धिः शतिनींभिरध्वरम्। सहस्रिणींभिरुपंयाहि यज्ञम्। वायों अस्मिन् ह्विषिं मादयस्व। यूयं पात स्वस्तिभिः सदां नः॥ [वं] यं भूर्भुवः सुवंः। वायवे साङ्क्ष्राध्वजहस्ताय प्राणाधिपतये मृगवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

वायव्यदिग्भागे नासिकास्थाने ५९ यं वायवे नमः। वायुः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [वायुः संरक्षतु॥] ॥६॥

<sup>&</sup>lt;sup>५९</sup>नासिकयोः स्थाने

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[तें] सं। वयर सोम व्रते तर्व। मनस्तनूषु बिभ्रंतः।

प्रजावंन्तो अशीमहि॥

[तें] सं भूर्भृवः सुर्वः। सोमाय अमृतकलशहस्ताय नक्षत्राधिपतये अश्ववाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

उत्तरदिग्भागे हृदयस्थाने सं सोमाय नमः। सोमः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [सोमः संरक्षतु॥]॥७॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[रुं] शं। (ऋक्) तमीशाँनं जर्गतस्त्रस्थुष्स्पतिम्। धियं जिन्वमवंसे हूमहे वयम्।

पूषा नो यथा वेदंसामसंद्वृधे रंक्षिता पायुरदंब्धः स्वस्तये॥

[रुं] शं भूर्भुवः सुर्वः। ईशानाय त्रिशूलहस्ताय भूताधिपतये वृषभवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

ईशानदिग्भागे नाभिस्थाने शं ईशानाय नमः। ईशानः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [ईशानः संरक्षतु॥]॥८॥

ॐ भूर्भुवः सुव्रोम्।

[द्रां] खं। (ऋक्) अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरंहूतौ सजोषाः। यः शंसंते स्तुवते धार्यि पुज्र इन्द्रंज्येष्ठा अस्माँ अवन्तु देवाः॥ [द्रां] खं भूर्भुवः सुवंः। ब्रह्मणे पद्महस्ताय विद्याधिपतये हंसवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः। ऊर्ध्वदिग्भागे मूर्घ्निस्थाने खं ब्रह्मणे नमः। ब्रह्मा सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [ब्रह्मा संरक्षतु॥]

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[यं] हीं। स्योना पृंथिवि भवांऽनृक्षरा निवेशंनी।

यच्छांनः शर्म सप्रथाः॥

[यं] हीं भूर्भुवः सुवंः। विष्णवे चऋहस्ताय नागाधिपतये गरुडवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः। अधोदिग्भागे पादयोः स्थाने हीं विष्णवे नमः। विष्णुः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [विष्णुः संरक्षतु॥]



# ॥ षोडशाङ्गरौद्रीकरणम्॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतराय च॥

ॐ अं। विभूरंसि प्रवाहंणो रौद्रेणानींकेन पाहि माँउग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ अं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। शिखास्थाने रुद्राय नमः॥१॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतराय च॥

ॐ आं। वह्लिंरिस हव्यवाहिनो रौद्रेणानीकेन पाहि माँउग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ आं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। शिरस्थाने रुद्राय नमः॥२॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥

ॐ इं। श्वात्रोंऽसि प्रचेता रौद्रेणानींकेन पाहि माँउग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ इं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। मूर्प्निस्थाने रुद्राय नमः॥३॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं

च नमः शिवायं च शिवतंराय च॥

ॐ ईं। तुथोंऽसि विश्ववेंदा रौद्रेणानींकेन पाहि माँउग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ ईं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। ललाटस्थाने रुद्राय नमः॥४॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। नर्मः शम्भवं च मयोभवं च नर्मः शङ्करायं च मयस्करायं च नर्मः शिवायं च शिवतंराय च॥

ॐ उं। उशिगंसि कवी रौद्रेणानींकेन पाहि माँ उग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ उं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। नेत्रयोः६० स्थाने रुद्राय नमः॥५॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। नर्मः शम्भवं च मयोभवं च नर्मः शङ्करायं च मयस्क्रायं च नर्मः शिवायं च शिवतंराय च॥

ॐ ऊं। अङ्घारिरसि बम्भारी रौद्रेणानींकेन पाहि माँउग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ ऊं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। कर्णयोः स्थाने रुद्राय नमः॥६॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतराय च॥

ॐ ऋं। अवस्युरंसि दुवंस्वान् रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ ऋं [ॐ] भूर्भुवः सुव्रोम्। मुखस्थाने रुद्राय नमः॥७॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। नर्मः शम्भवं च मयोभवं च नर्मः शङ्करायं च मयस्करायं च नर्मः शिवायं च शिवतराय च॥

ॐ ऋं। शुन्थ्यूरंसि मार्जालीयो रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा हि॰सीः॥ ऋं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। कण्ठस्थाने रुद्राय नमः॥८॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। नर्मः शम्भवं च मयोभवं च नर्मः शङ्करायं च मयस्क्रायं च नर्मः शिवायं च शिवतंराय च॥

<sup>—</sup> <sup>६°</sup>भू

ॐ लं। सम्राडंसि कृशानू रौद्रेणानींकेन पाहि माँउग्ने पिपृहि मा मा मां हि रसीः॥ लं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। बाह्वोः स्थाने रुद्राय नमः॥९॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥

ॐ ॡं। परिषद्योऽसि पर्वमानो रौद्रेणानींकेन पाहि माँउग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ ॡं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। हृदयस्थाने रुद्राय नमः॥१०॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥

ॐ एं। प्रतकांऽसि नर्भस्वान् रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ एं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। नाभिस्थाने रुद्राय नमः॥११॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतराय च॥

ॐ ऐं। असंम्मृष्टोऽसि हव्यसूदो रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा हि॰सीः॥ ऐं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। कटिस्थाने रुद्राय नमः॥१२॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। नर्मः शम्भवे च मयोभवे च नर्मः शङ्करायं च मयस्करायं च नर्मः शिवायं च शिवतराय च॥

ॐ ॐ। ऋतधांमाऽसि सुवंर्ज्योती रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ ॐ [ॐ] भूर्भवः सुवरोम्। ऊरुस्थाने रुद्राय नमः॥१३॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥

ॐ औं। ब्रह्मंज्योतिरसि सुवंधामा रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ औं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। जानुस्थाने रुद्राय नमः॥१४॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥ ॐ अं। अजौंऽस्येकंपाद्रौद्रेणानींकेन पाहि मांऽग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ अं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। जङ्घास्थाने रुद्राय नमः॥१५॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतराय च॥

ॐ अः। अहिंरिस बुंध्नियो रौद्रेणानींकेन पाहि माँउग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ अः [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। पादयोः स्थाने रुद्राय नमः॥१६॥

त्वगस्थिगतैः सर्वपापैः प्रमुच्यते। सर्वभूतेष्वपराजितो भवति। ततो भूत-प्रेत-पिशाच-ब्रह्मराक्षस-यक्ष-यमदूत-शािकनी-डािकनी-सर्प-श्वापद-वृश्चिक-तस्कराद्युपद्रवाद्युपघाताः। सर्वे ज्वलन्तं पश्यन्तु। मां रक्षन्तु। यजमानं रक्षन्तु। सर्वान् महाजनान् रक्षन्तु॥

## ॥ गुह्यादि मस्तकान्तं षडङ्ग (चतुर्थो) न्यासः॥

मनो ज्योतिर्जुषतामाज्यं विच्छित्रं यज्ञ समिमं देधातु। या इष्टा उषसो निम्रुचंश्च ताः सन्देधामि ह्विषां घृतेनं॥ गृह्याय नमः॥१॥ अबौध्यग्निः समिधा जनानां प्रति धेनुमिवाऽऽयतीमुषासम्। यह्वा इंव प्रवयामुज्जिहांनाः प्रभानवंः सिस्रते नाकमच्छं॥ नाभ्यै नमः॥२॥ अग्निर्मूर्धा दिवः कुकुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपार रेतारंसि जिन्वति॥ हृदयाय नमः॥३॥ मूर्धानं दिवो अंर्तिं पृथिव्या वैश्वान्रमृतायं जातमृग्निम्। कृवि सम्राज्मितिथें जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः॥ कण्ठाय नमः॥४॥

मर्माणि ते वर्मभिश्छादयामि सोमंस्त्वा राजाऽमृतेनाभिवंस्ताम्। उरोर्वरीयो वरिवस्ते अस्तु जयंन्तं त्वामन् मदन्तु देवाः॥ मुखाय नमः॥५॥ जातवेदा यदि वा पावकोऽसिं। वैश्वानरो यदि वा वैद्युतोऽसिं। शं प्रजाभ्यो यर्जमानाय लोकम्। ऊर्जं पृष्टिं ददंदभ्यावंवृथ्स्व॥ शिरसे नमः॥६॥



### ॥ आत्मरक्षा॥

(तैत्तिरीयब्राह्मणे अष्टकं - २/प्रश्नः - ३/अनुवाकः - ११)

ब्रह्मौत्मन्वदंसृजत। तदंकामयत। समात्मनां पद्येयेतिं। आत्मन्नात्मन्नित्यामंत्रयत। तस्मैं दश्म १ हृतः प्रत्यंशृणोत्। स दशंहूतोऽभवत्। दशंहूतो हु वै नामैषः। तं वा पृतं दशंहूत १ सन्तम्। दशंहोतेत्याचंक्षते प्रोक्षेण। प्रोक्षंप्रिया इव हि देवाः॥

आत्मुन्नात्मुन्नित्यामंत्रयत। तस्मै सप्तम हूतः प्रत्यंश्वणोत्। स सप्तहूंतोऽभवत्। सप्तहूंतो हु वै नामैषः। तं वा एत स्प्तहूंतु सन्तम्। सप्तहोतेत्याचंक्षते पुरोक्षेण। पुरोक्षंप्रिया इव हि देवाः॥

आत्मन्नात्मन्नित्यामंत्रयत। तस्मै षष्ठ हूतः प्रत्यंश्वणोत्। स षड्ढंतोऽभवत्। षड्ढंतो हु वै नामैषः। तं वा एत १ षड्ढंतु १ सन्तम्। षड्ढोतेत्याचंक्षते प्रोक्षंण। प्रोक्षंप्रिया इव हि देवाः॥

आत्मन्नात्मन्नित्यामंत्रयत। तस्मै पश्चम १ हूतः प्रत्यंश्वणोत्। स पश्चंहूतोऽभवत्। पश्चंहूतो हु वै नामैषः। तं वा एतं पश्चंहूत् सन्तम्। पश्चंहोतेत्याचंक्षते पुरोक्षेण। पुरोक्षंप्रिया इव हि देवाः॥ आत्मन्नात्मन्नित्यामंत्रयत। तस्मै चतुर्थ १ हूतः प्रत्यंशृणोत्। स चतुंर्हूतोऽभवत्। चतुंर्हूतो हु वै नामैषः। तं वा एतं चतुंर्हूत सन्तम्। चतुंर्ह्तित्याचंक्षते प्रोक्षेण। प्रोक्षंप्रिया इव हि देवाः॥ तमंत्रवीत्। त्वं वै मे नेदिष्ठ १ हूतः प्रत्यंश्रोषीः। त्वयैनानाख्यातार् इतिं। तस्मान्नु हैना इश्चतुंर्होतार् इत्याचंक्षते। तस्मांच्छुश्रूषः पुत्राणा १ हृद्यंतमः। नेदिष्ठो हृद्यंतमः। नेदिष्ठो हृद्यंतमः। नेदिष्ठो ह्रद्यंतमः। नेदिष्ठो ह्रद्यंतमः। अत्मने नमः॥

### ॥ शिवसङ्कल्पः॥

येन्दं भूतं भुवंनं भिवष्यत् परिगृहीतम्मृतेन् सर्वम्। येनं यज्ञस्त्रायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥१॥ येन कर्माणि प्रचरेन्ति धीरा यतो वाचा मनसा चारु यन्ति। यथ्सम्मितमनुंसंयन्तिं प्राणिनस्तन्मे मनेः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२॥ येन कर्मांण्यपसों मनीषिणों यज्ञे कृण्वन्तिं विदर्थेषु धीराः। यदंपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनेः शिवसंङ्कल्पमस्तु॥३॥ यत्प्रज्ञानंमुत चेतो धृतिश्च यज्योतिरन्तर्मृतं प्रजासुं। यस्मान्न ऋते किं च न कर्म क्रियते तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥४॥ सुषारथिरश्वांनिव यन्मंनुष्यांन्नेनीयतेऽभीशुंभिर्वाजिनं इव। हत्प्रतिष्ठं यदंजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥५॥ यस्मिनृचः साम यजू ५ षि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविंवाराः। यस्मि इश्चित्त र सर्वमोर्त प्रजानां तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥६॥

यदत्रं षष्ठं त्रिशत र सुवीरं यज्ञस्यं गुह्यं नवनावमाय्यम्। दशं पश्च त्रिर्शतं यत्परं च तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥७॥

यञ्जाग्रंतो दूरमुदैति दैवं तद्ं सुप्तस्य तथैवैतिं। दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥८॥

येनेदं विश्वं जगंतो बुभूव ये देवापि मह्तो जातवेदाः। तदेवाग्निस्तमंसो ज्योतिरेकं तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥९॥

येन द्यौः पृथिवी चान्तरिक्षं च ये पर्वताः प्रदिशो दिशंश्च। येनेदं जग्द्याप्तं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥१०॥ ये मनो हृदंयं ये चं देवा ये दिव्या आपो ये सूर्यर्शिमः। ते श्रोत्रे चक्षुंषी सञ्चरंन्तं तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥११॥

अचिन्त्यं चाप्रमियं च व्यक्ताव्यक्तंपरं च यत्। सूक्ष्मांथ्सूक्ष्मतंरं ज्ञेयं तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥१२॥

एको च द्रश शृतं चे सहस्रं चायुतं च नियुतं च प्रयुतं चार्बुदं च न्यंर्बुदं च समुद्रश्च मध्यं चान्तंश्च परार्धश्च तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमस्तु॥१३॥

ये पंश्च पृश्चाद्श शृत सहस्रम्युतं न्यंर्बुदं च। ते अग्निचित्येष्टंकास्त स्शरींरं तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥१४॥

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवंण् तमंसः परंस्तात्। यस्य योनिं परिपश्यंन्ति धीरास्तन्मे मनः शिवसंङ्काल्पमंस्तु॥१५॥

यस्येदं धीराः पुनन्तिं क्वयों ब्रह्माणमेतं त्वां वृणत् इन्दुंम्। स्थावरं जङ्गमं द्यौरांकाशं तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥१६॥

पराँत्परतंरं चैव यत्पराँचैव यत्परम्। यत्पराँत्परतो ज्ञेयं तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥१७॥

परौत्परतंरो ब्रह्मा तृत्परौत्परतो हंरिः। तृत्परोत्परतोऽधीशस्तन्मे मनः शिवसंङ्काल्पमस्तु॥१८॥

या वेंदादिषुं गायत्री सूर्वव्यांपी महेश्वंरी। ऋग्यजुंः सामांथर्वेश्च तन्मे मनंः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥१९॥

यो वै देवं महादेवं प्रणवं पर्मेश्वरम्। यः सर्वे सर्ववेदेश्च तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२०॥

प्रयंतः प्रणंवोङ्कारं प्रणवं पुरुषोत्तंमम्। ओङ्कारं प्रणंवात्मानं तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२१॥

योऽसौं सर्वेषुं वेदेषु पठ्यतें ह्यज् इश्वंरः। अकायों निर्गुणो ह्यात्मा तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२२॥

गोभिर्जुष्टं धर्नेन् ह्यायुंषा च बलेन च। प्रजयां पृशुभिः पुष्कराक्षं तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२३॥

कैलांस्शिखंरे रम्ये शङ्करंस्य शिवालंये। देवतांस्तत्रं मोदन्ते तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२४॥

विश्वतंश्वक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोहस्त उत विश्वतंस्पात्। सं बाहुभ्यां नमंति सम्पतंत्रैर्द्यावापृथिवी जनयंन्देव एकस्तन्मे मनेः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२५॥

त्र्यम्बकं यजामहे सुगुन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्वारुकमिव बन्धेनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्तन्मे मनेः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२६॥

चतुरों वेदानंधीयीत सर्वशास्त्रम्यं विंदुः। इतिहासपुराणानां तन्मे मनेः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२७॥ मा नो महान्तंमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षंन्तमुत मा नं

मा नो मुहान्तमुत मा नो अभेक मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्। .

मा नो वधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा नंस्तन्वो रुद्र रीरिष्स्तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२८॥ मा नंस्तोके तनये मा न आयुंषि मा नो गोषु मा नो अश्वेष रीरिषः।

वीरान्मा नो रुद्र भामितोऽवंधीर्ह्विष्मंन्तो नर्मसा विधेम ते तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२९॥

> ऋतः सत्यं पेरं ब्रह्म पुरुषं कृष्णपिङ्गंलम्। ऊर्ध्वरेतं विरूपाक्षं विश्वरूपाय वै नमो नमुस्तन्मे मनेः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥३०॥

कद्रुद्राय प्रचेतसे मी्दुष्टंमाय तव्यंसे। वो चेम शन्तंम हदे।

सर्वो ह्येष रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥३१॥

ब्रह्मंजज्ञानं प्रंथमं पुरस्ताद्विसीमृतः सुरुचो वेन आवः। सबुध्नियां उपमा अस्य विष्ठाः सृतश्च योनिमसंतश्च विवस्तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥३२॥

यः प्राणितो निमिषतो मंहित्वैक इद्राजा जगतो बुभूवं।

य ईशें अस्य द्विपद्श्वतुंष्पदः कस्मैं देवायं हविषां विधेम् तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥३३॥ य औत्मदा बंलदा यस्य विश्वं उपासंते प्रशिषं यस्यं देवाः। यस्यं छायाऽमृतं यस्यं मृत्युः कस्मै देवायं हविषां विधेम् तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥३४॥ यो रुद्रो अग्नौ यो अपसु य ओषंधीषु यो रुद्रो विश्वा भुवनाऽऽविवेश तस्मैं रुद्राय नमों अस्तु तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥३५॥ गुन्धद्वारां दुंराध्र्षां नित्यपुंष्टां करीषिणींम्। ईश्वरी १ सर्वभूतानां तामिहोपंह्वये श्रियं तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥३६॥ य इद॰ शिवंसङ्कल्प॰ सुदा ध्यायंन्ति ब्राह्मणाः। ते परं मोक्षं गमिष्यन्ति तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥ हृदयाय नमः॥



### ॥ पुरुषसूक्तम्॥

ॐ सहस्रंशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रंपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वा। अत्यंतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥ पुरुष एवेद॰ सर्वम्। यद्भूतं यच्च भव्यम्। उतामृतत्वस्येशांनः। यदन्नेनातिरोहंति॥ एतावांनस्य महिमा। अतो ज्याया ईश्च पूर्रषः।

पादौंऽस्य विश्वां भूतानिं। त्रिपादंस्यामृतंं दिवि॥ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुंषः।

पादौँऽस्येहाऽऽभंवात्पुनंः। ततो विश्वङ्कांऋामत्। साश्वनान्श्वने अभि॥ तस्माँद्विराडंजायत। विराजो अधि पूर्रुषः। स जातो अत्यंरिच्यत। पृक्षाद्भमिमथों पुरः॥

यत्पुरुषेण हिविषां। देवा यज्ञमतंन्वत। वसन्तो अंस्यासीदाज्यम्ं। ग्रीष्म इध्मः श्ररद्धविः॥ सप्तास्यांऽऽसन्परिधयंः। त्रिः सप्त स्पिधंः कृताः। देवा यद्यज्ञं तंन्वानाः। अबंधन्पुरुषं पृश्म्॥ तं यज्ञं बर्हिष् प्रौक्षन्ं। पुरुषं जातमंग्रतः। तेनं देवा अयंजन्त। साध्या ऋषंयश्च ये॥ तस्मांद् यज्ञाथ्संर्वहृतंः। सम्भृतं पृषदाज्यम्। पृशू १ स्ता १ श्चेत्रे वायव्यान्ं। आरुण्यान्ग्राम्याश्च ये॥ तस्मांद् यज्ञाथ्संर्वहृतंः। ऋचः सामांनि जिज्ञरे। छन्दा १ सि जिज्ञरे तस्मांत्।

यजुस्तस्मादजायत॥ तस्मादश्वां अजायन्त। ये के चीभ्यादेतः। गावीं ह जिज्ञेरे तस्मात्। तस्माजाता अजावयः॥ यत्पुरुषं व्यद्धुः। कृतिधा व्यंकल्पयन्। मुखं किमंस्य कौ बाहू। कावूरू पादांवुच्येते॥ ब्राह्मणौऽस्य मुखंमासीत्। बाहू राजन्यः कृतः।

ऊरू तर्दस्य यद्वैश्यः। पुद्धाः शूद्रो अंजायतः। चन्द्रमा मनसो जातः। चक्षोः सूर्यो अजायतः। मुखादिन्द्रेश्चाग्निश्चं। प्राणाद्वायुरंजायतः। नाभ्यां आसीदन्तरिक्षम्। शीष्णो द्यौः समेवर्ततः। पुद्धां भूमिर्दिशः श्रोत्रातः। तथां लोकाः अंकल्पयन्॥

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवंण् तमंसुस्तु पारे॥ सर्वाणि रूपाणि विचित्य धीरंः। नामानि कृत्वाऽभिवदन् यदास्ते॥ धाता पुरस्ताद्यमुंदाज्ञहारं। श्राकः प्रविद्वान्प्रदिश्श्चतंस्रः। तमेवं विद्वानमृतं इह भंवति। नान्यः पन्था अयंनाय विद्यते॥ युज्ञेनं युज्ञमंयजन्त देवाः। तानि धर्माणि प्रथमान्यांसन्। ते हु नाकं महिमानः सचन्ते। यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥

शिरसे स्वाहा॥



### ॥ उत्तरनारायणम्॥

अद्धः सम्भूतः पृथिव्ये रसाँच। विश्वकंर्मणः समंवर्त्ताधि। तस्य त्वष्टां विदधंद्रूपमेति। तत्पुरुंषस्य विश्वमाजांनमग्रे॥ वेदाहम्तं पुरुंषं महान्तम्। आदित्यवंणं तमंसः परंस्तात्। तमेवं विद्वानमृतं इह भंवति। नान्यः पन्थां विद्यतेयंऽनाय॥ प्रजापंतिश्चरित् गर्भे अन्तः। अजायंमानो बहुधा विजायते। तस्य धीराः परिजानन्ति योनिम्। मरींचीनां पदिमंच्छन्ति वेधसंः॥ यो देवेभ्य आतंपित। यो देवानां पुरोहिंतः। पूर्वो यो देवेभ्यो जातः। नमो रुचाय ब्राह्मंये॥ रुचं ब्राह्मं जनयंन्तः। देवा अग्रे तदंब्रुवन्। यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात्। तस्यं देवा असन् वशे॥ हीश्चं ते लक्ष्मीश्च पत्यौं। अहोरात्रे पार्श्वे। नक्षंत्राणि रूपम्। अश्विनौ व्यात्तम्। इष्टं मंनिषाण। अमुं मंनिषाण। सर्वं मनिषाण॥ शिखायै वषट्॥



### ॥ अप्रतिरथम्॥

(तैत्तिरीयसंहितायां काण्डः - ४/प्रश्नः - ६/अनुवाकः - ४)

आशुः शिशांनो वृष्भो न युध्मो घंनाघनः क्षोभंणश्चर्षणीनाम्। सङ्कन्दंनो-ऽनिमिष एंकवीरः शतः सेनां अजयत् साकिमिन्द्रः। सङ्कन्दंनेनानिमिषेणं जिष्णुनां युत्कारेणं दुश्च्यवनेनं धृष्णुनां। तिदन्द्रेण जयत् तथ्संहध्वं युधो नर् इषुंहस्तेन् वृष्णां। स इषुंहस्तैः सिनंषङ्गिभेर्वशी सङ्स्रंष्टा स युध् इन्द्रो गुणेनं। सूर्सृष्टुजिथ्सोम्पा बांहुशुध्यूर्ध्वधंन्वा प्रतिंहिताभिरस्तां। बृहंस्पते पिरं दीया रथंन रक्षोहाऽमित्रा अपबार्धमानः। प्रभुञ्जन्थ्सेनाः प्रमृणो युधा जयंत्रस्माकंमेध्यविता रथांनाम्। गोत्रिभिदं गोविदं वर्ज्ञबाहुं जयंन्तमर्ज्मं प्रमृणन्तमोर्ज्ञसा। इम संजाता अनं वीरयध्विमन्द्र सखायोऽनु स रंभध्वम्। बलविज्ञायः स्थविरः प्रवीरः सहंस्वान् वाजी सहंमान उग्रः। अभिवीरो अभिसंत्त्वा सहोजा जैत्रंमिन्द्र रथमा तिष्ठ गोवित्। अभि गोत्राणि सहंसा गाहंमानोऽदायो वीरः शतमंन्युरिन्द्रः।

दुश्चवनः पृंतनाषाडंयुध्यों ऽस्माक् सेनां अवतु प्र युथ्सु। इन्द्रं आसां नेता बृह्स्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एंतु सोमः। देवसेनानांमिभिभञ्जतीनां जयंन्तीनां मुरुतों यन्त्वग्रें। इन्द्रंस्य वृष्णो वर्रुणस्य राज्ञं आदित्यानां मुरुता शर्ध उग्रम्। महामेनसां भुवनच्यवानां घोषों देवानां जयंतामुदंस्थात्। अस्माक्मिन्द्रः समृतेषु ध्वजेष्वस्माकं या इषंवस्ता जयन्तु।

अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्त्वस्मानं देवा अवता हवेषु। उद्धेर्षय मघवन्नायुंधान्युत् सत्त्वंनां मामकानां महा स्सि। उद्घंत्रहन् वाजिनां वाजिनान्युद्रथानां जयंतामेतु घोषंः। उप प्रेत् जयंता नरः स्थिरा वंः सन्तु बाहवंः। इन्द्रों वः शर्म यच्छत्त्वनाधृष्या यथाऽसंथ। अवंसृष्टा परां पत् शरंव्ये ब्रह्मंस शिता।

गच्छामित्रान् प्रविश् मैषां कं चनोच्छिषः। मर्माणि ते वर्मभिश्छादयामि सोमस्त्वा राजाऽमृतेनाभिवस्ताम्। उरोवरीयो वरिवस्ते अस्तु जयन्तं त्वामनु मदन्तु देवाः। यत्रं बाणाः सम्पतंन्ति कुमारा विशिखा इंव। इन्द्रो नस्तत्रं वृत्रहा विश्वाहा शर्म यच्छतु॥ कवचाय हुम्॥

### ॥ प्रतिपूरुषम् (सं०)॥

(तैत्तिरीयसंहितायां काण्डः - १/प्रश्नः - ८/अनुवाकः - ६)

प्रतिपूरुषमेकंकपालानिर्वंपत्येक्मितिरिक्तं यावंन्तो गृह्याः स्मस्तेभ्यः कर्मकरं पश्नाः शर्मासि शर्म् यजंमानस्य शर्म मे युच्छैकं एव रुद्रो न द्वितीयांय तस्थ आखुस्ते रुद्र पशुस्तं जुंषस्वैष ते रुद्र भागः सह स्वस्नाऽम्बिकया तं जुंषस्व भेषजं गवेऽश्वांय पुरुषाय भेषजमथो अस्मभ्यं भेषजः सुभेषजं यथाऽसंति। सुगं मेषायं मेष्यां अवाम्ब रुद्रमंदिमृह्यवं देवं त्र्यम्बकम्। यथां नः श्रेयंसः कर्द्यथां नो वस्यंसः कर्द्यथां नः पशुमतः कर्द्यथां नो व्यवसाययात्। त्र्यम्बकं यजामहे सुग्न्धिं पृष्टिवर्धनम्। उर्वारुकिमिव बन्धनान्मृत्योमुंक्षीय माऽमृतात्॥ एष ते रुद्रभागस्तं जुंषस्व तेनांवसेनं परो मूजंवतोऽती्ह्यवंतत्रधन्वा पिनांकहस्तः कृत्तिंवासाः॥

## ॥ प्रतिपूरुषम् (ब्रा०) ॥

(तैत्तिरीयब्राह्मणे अष्टकं - १/प्रश्नः - ६/अनुवाकः - १०)

प्रतिपूरुषमेकंकपालान्निर्वपति। जाता एव प्रजा रुद्रान्निरवंदयते। एकमितं-रिक्तम्। जुनिष्यमाणा एव प्रजा रुद्रान्निरवंदयते। एकंकपाला भवन्ति। एक्धैव रुद्रं निरवंदयते। नाभिघांरयति। यदंभिघारयेत्। अन्तर्वचारिण ई रुद्रं कुर्यात्। एकोल्मुकेनं यन्ति। तिष्क रुद्रस्यं भागधेयम्। इमां दिशं यन्ति। एषा वै रुद्रस्य दिक्। स्वायांमेव दिशि रुद्रं निरवंदयते। रुद्रो वा अंपशुकांया आहंत्यै नातिष्ठत। असौ तें पशुरिति निर्दिशेद्यं द्विष्यात्। यमेव द्वेष्टिं। तमंस्मै पशुं निर्दिशति। यदि न द्विष्यात्। आखुस्ते पशुरितिं ब्रूयात्। न ग्राम्यान् पशून् हिनस्ति। नार्ण्यान्। चतुष्पथे जुंहोति। एष वा अंग्रीनां पड्ढींशो नामं। अग्निवत्येव जुंहोति। मध्यमेनं पर्णेनं जुहोति। सुग्येषा। अथो खलुं। अन्तुमेनैव होत्यम्। अन्तुत एव रुद्रं निरवंदयते। एष ते रुद्र भागः सह स्वसाऽम्बिक्येत्याह। शुरद्वा अस्याम्बिका स्वसा। तया वा एष हिनस्ति। यर हिनस्ति। तयैवैनर् सह शंमयति। भेषजं गव इत्याह। यावंन्त एव ग्राम्याः पशवंः। तेभ्यों भेषुजं करोति। अवामब रुद्रमंदिम्हीत्यांह। आशिषंमेवैतामाशास्ते। त्र्यम्बकं यजामह इत्यांह। मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतादिति वावैतदांह। उत्किंरन्ति। भगंस्य लीफ्सन्ते। मूतें कृत्वाऽऽसंजन्ति। यथा जर्नं यतेंऽवसं करोतिं। तादगेव तत्। एष तें रुद्र भाग इत्यांह निरवंत्ये। अप्रतीक्षमायंन्ति। अपः परिषिश्चति। रुद्रस्यान्तर्हित्ये। प्र वा एतें स्माल्लोकाच्यंवन्ते। ये त्र्यंम्बकैश्चरंन्ति। आदित्यं चरुं पुनरेत्य निर्वपति। इयं वा अदितिः। अस्यामेव प्रतितिष्ठन्ति। नेत्रत्रयाय वौषट्॥



## ॥ शतरुद्रीयम् (सं०)॥

(तैत्तिरीयसंहितायां काण्डः - १/प्रश्नः - ३/अनुवाकः - १४)

त्वमंग्ने रुद्रो असुंरो महो दिवस्त्व शर्धो मारुतं पृक्ष ईशिषे। त्वं वातैररुणैर्यास शङ्घयस्त्वं पूषा विधतः पांसि नु त्मना। आ वो राजानमध्वरस्यं रुद्र होतार सत्ययज् रेरोदंस्योः। अग्निं पुरा तंनिय्वोर्चित्ता द्धिरंण्यरूपमवंसे कृणुध्वम्। अग्निरहोता नि षंसादा यजीयानुपस्थं मातुः सुरुभावं लोके। युवां कविः पुरुनिष्ठ ऋतावां धर्ता कृष्टीनामुत मध्यं इद्धः।

साध्वीमंकर्देववीतिं नो अद्य यज्ञस्यं जिह्वामंविदाम् गुह्यांम्। स आयुराऽ-गाँथ्सुरभिर्वसानो भद्रामंकर्देवहंतिं नो अद्य। अर्ऋन्ददग्निः स्तनयंत्रिव द्यौः क्षामा रेरिहद्वीरुधं समुञ्जन्। सुद्यो जंजानो वि हीमिद्धो अख्यदा रोदंसी भानुनां भात्यन्तः। त्वे वसूंनि पुर्वणीक होतर्दोषा वस्तोरेरिरे यज्ञियांसः। क्षामेव विश्वा भुवंनानि यस्मिन्थ्स सौभंगानि दिधरे पांवके। तुभ्यं ता अंङ्गिरस्तम् विश्वाः सुक्षितयः पृथंक्। अग्रे कार्माय येमिरे। अश्याम् तं कार्ममग्ने तवोत्यंश्यामं र्यिः रंयिवः सुवीरम्। अश्याम् वाजंम्भि वाजयंन्तोऽश्यामं द्युम्नमंजराऽजरंन्ते। श्रेष्ठं यविष्ठ भारताऽग्नें द्युमन्तुमा भंर। वसो पुरुस्पृह ई र्यिम्। स श्वितानस्तंन्यतू रोचन्स्था अजरेभिनानंदद्भिर्यविष्ठः। यः पावकः पुरुतमः पुरूणि पृथून्यग्निरेनुयाति भर्वत्रं। आयुष्टे विश्वतो दधदयमग्निर्वरेंण्यः। पुनस्ते प्राण आयंति परा यक्ष्मर् सुवामि ते। आयुर्दा अंग्ने हिवषों जुषाणो घृतप्रंतीको घृतयोंनिरेधि। घृतं पी्त्वा मधु चारु गर्व्यं पितेवं पुत्रमभिरंक्षतादिमम्।

तस्मै ते प्रतिहर्यते जातंवेदो विचंर्षणे। अग्ने जनांमि सुष्टुतिम्। दिवस्परि प्रथमं जंज्ञे अग्निर्स्मिद्धितीयं परि जातवेदाः। तृतीयंमपस् नृमणा अजंस्रमिन्धांन एनं जरते स्वाधीः। शुचिः पावक् वन्द्योऽग्ने बृहद्विरोचसे। त्वं घृतेभिराहुंतः। दृशानो रुका उर्व्या व्यंद्यौद्दुर्मर्षमायुः श्रिये रुचानः। अग्निर्मृतो अभवद्वयोभिर्यदेनं द्यौरजंनयथ्सुरेताः।

आ यदिषे नृपतिं तेज आन्द्भृचि रेतो निषिक्तं द्यौर्भीकैं। अग्निः शर्धमनवद्यं युवांन इस्वाधियं जनयथ्सूदयं स्वाधियं जनयथ्सूदयं स्वाधियं जनयथ्सूदयं स्वाधियं प्राप्ते स्वप्त्यस्यं शिक्षोः। अग्ने रायो नृतंमस्य प्रभूतौ भूयामं ते सुष्टुतयंश्च वस्वः। अग्ने सहंन्तमा भेर द्युम्नस्यं प्राप्तहां रियम्।

विश्वा यश्चर्षणीर्भ्यांसा वाजेषु सासहंत्। तमंग्ने पृतना सह रं र्यिर संहस्व आ भेर। त्वर हि सत्यो अद्भंतो दाता वाजंस्य गोमंतः। उक्षान्नांय वृशान्नांय सोमंपृष्ठाय वृधसें। स्तोमैंविंधेमाृग्नयें। वृद्या हि सूनो अस्यंद्यसद्वां चृके अग्निर्जनुषाऽज्माऽन्नम्। स त्वं नं ऊर्जसन् ऊर्जं धा राजेव जेरवृके क्षेष्यन्तः। अग्न आयूर्षेष पवस् आ सुवोर्जमिषं च नः। आरे बांधस्व दुच्छुनांम्। अग्ने पवंस्व स्वपां अस्मे वर्चः सुवीर्यम्। दधत्योषर् र्यिं मियं। अग्ने पावक रोचिषां मन्द्रयां देव जिह्नयां। आ देवान् विश्व यिक्षं च। स नंः पावक दीदिवोऽग्ने देवार इहाऽऽवंह। उपं यृज्ञर हिवश्चं नः। अग्निः शृचिं व्रततमः शृचिर्विपः शृचिं कविः। शृचीं रोचत् आहुंतः। उदंग्ने शृचंयस्तवं श्रुक्ता भाजंन्त ईरते। तव ज्योतीः ध्र्ष्यचयंः॥

## ॥ शतरुद्रीयम् (ब्रा०)॥

(तैत्तिरीयब्राह्मणे काठके प्रश्नः - २/अनुवाकः - २)

त्वमंग्रे रुद्रो असुरो महो दिवः। त्व॰ शर्धो मार्रुतं पृक्ष ईशिषे। त्वं वातैररुणैर्यासि शङ्गयः। त्वं पूषा विधृतः पासि नु त्मनां। देवां देवेषुं श्रयध्वम्। प्रथंमा द्वितीयेषु श्रयध्वम्। द्वितीयास्तृतीयेषु श्रयध्वम्। तृतीयाश्चतुर्थेषुं श्रयध्वम्। चतुर्थाः पश्चमेषुं श्रयध्वम्। पश्चमाः षृष्ठेषुं श्रयध्वम्॥ षृष्ठाः सप्तमेषुं श्रयध्वम्। सप्तमा अष्टमेषुं श्रयध्वम्। अष्टमा नंवमेषुं श्रयध्वम्। नवमा दंशमेषुं श्रयध्वम्। दशमा एंकादशेषुं श्रयध्वम्। एकादशा द्वांदशेषुं श्रयध्वम्। द्वादशास्त्रयोदशेषुं श्रयध्वम्। त्रयोदशाश्चंतुर्दशेषुं श्रयध्वम्। चतुर्दशाः पंश्वदशेषुं श्रयध्वम्। पश्चदशाः षोंडशेषुं श्रयध्वम्॥ षोडशाः संप्तदशेषुं श्रयध्वम्। सप्तदशा अंष्टादशेषुं श्रयध्वम्। अष्टादशा एंकान्नवि १ शेषुं श्रयध्वम्। एकान्नवि १ शा विरशेषुं श्रयध्वम्। विरशा एंकविरशेषुं श्रयध्वम्। एकविरशा द्वांविरशेषुं श्रयध्वम्। द्वाविरशास्त्रयोविरशेषु श्रयध्वम्। त्रयोविरशाश्चेतुर्विरशेषु श्रयध्वम्। चतुर्वि २ शाः पेश्ववि २ शेषुं श्रयध्वम्। पश्चवि २ शाः षेड्वि २ शेषुं श्रयध्वम्॥ षड्वि १शाः संप्तवि १शेषुं श्रयध्वम्। सप्तवि १शा अष्टावि १शेषुं श्रयध्वम्। अष्टावि रशा एंकान्नति रशेषुं श्रयध्वम्। एकान्नति रशास्त्रि रशेषुं श्रयध्वम्। त्रि शा एकित्रि शेषुं श्रयध्वम्। एकित्र शा द्वांत्रि शेषुं श्रयध्वम्। द्वातिरशास्त्रंयस्त्रिरशेषुं श्रयध्वम्। देवास्त्रिरेकादशास्त्रिस्त्रंयस्त्रिरशाः। उत्तरे भवतः उत्तरवर्त्मान् उत्तरसत्वानः। यत्काम इदं जुहोमि। तन्मे समृध्यताम्। वय इस्याम पत्यो रयीणाम्। भूर्भुवः स्वंः स्वाहा॥ ॐ भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः॥ अस्त्राय फट्॥

### ॥पञ्चाङ्गम्॥

ह्र्सः श्रुंचिषद्वस्रं रन्तिरक्षसद्धोतां वेदिषदितिथिर्दुरोण्सत्।
नृषद्वं रसदंत्सद्धोमसद्जा गोजा ऋत्जा अद्रिजा ऋतं बृहत्॥
प्रतिद्वष्णुंः स्तवते वीर्याय। मृगो न भीमः कुंचरो गिरिष्ठाः।
यस्योरुषुं त्रिषु विक्रमणेषु। अधिक्षियन्ति भवनानि विश्वां॥
त्र्यम्बकं यजामहे सुग्न्धिं पृष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकिमिव बन्धनान्मृत्योमुक्षीय माऽमृतांत्॥
तथ्सवितुर्वृणीमहे। वयं देवस्य भोजनम्।
श्रेष्ठर्थं सर्वधातमम्। तुरं भगस्य धीमहि॥
विष्णुर्योनिं कल्पयतु। त्वष्टां रूपाणिं पिर्शतु।
आसिंश्चतु प्रजापंतिः। धाता गर्भं दधातु ते॥

### ॥ अष्टाङ्ग-नमस्काराः॥

हिर्ण्यगर्भः समेवर्तताग्रें भूतस्यं जातः पित्रेकं आसीत्। सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मैं देवायं हिवर्षां विधेम॥ [उरसा] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥१॥

यः प्राणितो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगेतो बुभूवं। य ईशे अस्य द्विपद्श्चतुंष्पदः कस्मै देवायं ह्विषां विधेम॥ [शिरसा] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥२॥

ब्रह्मंजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमृतः सुरुची वेन आवः। सबुध्रियां उपमा अस्य विष्ठाः सृतश्च योनिमस्तश्च विवंः॥१॥ [दृष्ट्या] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥३॥ मही द्यौः पृथिवी चं न इमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतान्नो भरीमभिः॥ [मनसा] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥४॥

उपश्वासय पृथिवीमुत द्यां पुंरुत्रा ते मनुतां विष्ठितं जगंत्। स दुन्दुभे सजूरिन्द्रेण देवैर्दूराद्दवीयो अपंसेध शत्रून्॥ [वचसा] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥५॥

अग्ने नयं सुपर्था राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मञ्जंहराणमेनो भूयिष्ठां ते नमं उक्तिं विधेम॥ [पद्माम्] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥६॥

या ते अग्ने रुद्रिया तनूस्तयां नः पाहि तस्याँस्ते स्वाहाँ॥ [कराभ्याम्] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥७॥

ड्रमं यंमप्रस्त्रमाहि सीदाऽङ्गिरोभिः पितृभिः संविदानः। आत्वा मन्नाः कविशस्ता वंहन्त्वेना राजन् ह्विषां मादयस्व॥ [कर्णाभ्याम्] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥८॥



## ॥ लघुन्यासे श्री-रुद्रध्यानम्॥

अथाऽऽत्मानं शिवात्मानं श्री-रुद्र रूपं ध्यायेत्।

शुद्धस्फटिकसङ्काशं त्रिनेत्रं पश्चवऋकम्। गङ्गाधरं दशभुजं सर्वाभरणभूषितम्॥

नीलग्रीवं शशाङ्काङ्कं नागयज्ञोपवीतिनम्। व्याघ्रचर्मोत्तरीयं च वरेण्यमभयप्रदम्॥ कमण्डल्बक्षसूत्राणां धारिणं शूलपाणिनम्। ज्वलन्तं पिङ्गलजटाशिखामुद्योतधारिणम्॥

वृषस्कन्धसमारूढम् उमादेहार्धधारिणम्। अमृते नाप्नुतं शान्तं दिव्यभोगसमन्वितम्॥

दिग्देवता समायुक्तं सुरासुरनमस्कृतम्। नित्यं च शाश्वतं शुद्धं ध्रुवमक्षरमव्ययम्॥

सर्वव्यापिनमीशानं रुद्रं वै विश्वरूपिणम्। एवं ध्यात्वा द्विजः सम्यक् ततो यजनमारभेत्॥

अथातो रुद्र स्नानार्चनाभिषेकविधिं व्याख्यास्यामः। आदित एव तीर्थे स्नात्वा उदेत्य शुचिः प्रयतो ब्रह्मचारी शुक्कवासा ईशानस्य प्रतिकृतिं कृत्वा तस्य दक्षिणप्रत्यग्देशे देवाभिमुखः स्थित्वा आत्मनि देवताः स्थापयेत्॥

# ॥ लघुन्यासे देवता-स्थापनम्॥

प्रजनने ब्रह्मा तिष्ठतु। पादयोर्विष्णुस्तिष्ठतु। हस्तयोर्हरस्तिष्ठतु। बाह्वोरिन्द्रस्-तिष्ठतु। जठरे अग्निस्तिष्ठतु। हृदये शिवस्तिष्ठतु। कण्ठे वसवस्तिष्ठन्तु। वक्रे सरस्वती तिष्ठतु। नासिकयोर्वायुस्तिष्ठतु। नयनयोश्चन्द्रादित्यौ तिष्ठेताम्। कर्णयोरिश्वनौ तिष्ठेताम्। ललाटे रुद्रास्तिष्ठन्तु। मूर्ध्र्यादित्यास्तिष्ठन्तु। शिरिस् महादेवस्तिष्ठतु। शिखायां वामदेवस्तिष्ठतु। पृष्ठे पिनाकी तिष्ठतु। पुरतः शूली तिष्ठतु। पार्श्वयोः शिवाशङ्करौ तिष्ठेताम्। सर्वतो वायुस्तिष्ठतु। ततो बहिः सर्वतोऽग्निज्वीलामाला-परिवृतस्तिष्ठतु। सर्वेष्वङ्गेषु सर्वा देवता यथास्थानं तिष्ठन्तु। मां रक्षन्तु। [सर्वान् महाजनान् सकुटुम्बं रक्षन्तु॥]

अग्निर्मे वाचि श्रितः। वाग्घृदंये। हृदंयं मियं। अहम्मृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (जिह्वा) वायुर्में प्राणे श्रितः। प्राणो हृदंये। हृदंयं मियं। अहम्मृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (नासिका)

सूर्यो मे चक्षुंषि श्रितः। चक्षुर्हदेये। हृदेयं मिया अहम्मृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (नेत्रे)

चन्द्रमां मे मनिसि श्रितः। मनो हृदये। हृदयं मिये। अहम्मृते। अमृतं ब्रह्मणि। (वक्षः)

दिशों में श्रोत्रें श्रिताः। श्रोत्र्रं हृदंये। हृदंयं मियं। अहम्मृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (श्रोत्रे)

आपों में रेतंसि श्रिताः। रेतो हृदंये। हृदंयं मिया अहम्मृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (गृह्मम्)

पृथिवी मे शरीरे श्रिता। शरीर् हदेये। हदेयं मिये। अहम्मृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (शरीरम्)

ओृष्धिवनस्पतयों मे लोमंसु श्रिताः। लोमांनि हृदये। हृदयं मयि। अहम्मृतैं। अमृतं ब्रह्मणि। (लोमानि)

इन्द्रों में बलें श्रितः। बलु हदये। हदयं मिया। अहम्मृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (बाहू)

पुर्जन्यों मे मूर्प्नि श्रितः। मूर्धा हृदंये। हृदंयं मियं। अहम्मृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (शिरः)

ईशांनो मे मृन्यौ श्रितः। मृन्युर्ह्दये। हृदयं मियं। अहम्मृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (हृदयम्)

आत्मा मं आत्मिनं श्रितः। आत्मा हृदंये। हृदंयं मियं। अहम्मृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (हृदयम्) पुनंर्म आत्मा पुन्रायुरागाँत्। पुनंः प्राणः पुन्राकूंत्मागाँत्। वैश्वान्रो रिष्मिर्भिर्वावृधानः। अन्तस्तिष्ठत्वमृतंस्य गोपाः॥ (सर्वाण्यङ्गानि संस्पृश्य स्थापनं कृत्वा मानसैराराधयेत्॥)



### ॥ आत्मपूजा ॥

आराधितो मनुष्यैस्त्वं सिद्धैर्देवासुरादिभिः। आराधयामि भक्त्या त्वाऽनुग्रहाण महेश्वर॥

# ॥कलशेषु साम्बपरमेश्वर ध्यानम्॥

ध्यायेन्निरामयं वस्तुं सर्गस्थितिलयादिकम्। निर्गुणं निष्कलं नित्यं मनोवाचामगोचरम्॥१॥

गङ्गाधरं शशिधरं जटामकुटशोभितम्। श्वेतभूतित्रिपुण्ड्रेण विराजितललाटकम्॥२॥

लोचनत्रयसम्पन्नं स्वर्णकुण्डलशोभितम्। स्मेराननं चतुर्बाहुं मुक्ताहारोपशोभितम्॥३॥

अक्षमालां सुधाकुम्भं चिन्मयीं मुद्रिकामपि। पुस्तकं च भुजैर्दिव्यैर्दधानं पार्वतीपतिम्॥४॥

श्वेताम्बरधरं श्वेतं रत्नसिंहासनस्थितम्। सर्वाभीष्टप्रदातारं वटमूलनिवासिनम्॥५॥

वामाङ्कसंस्थितां गौरीं बालार्कायुतसन्निभाम्। जपाकुसुमसाहस्रसमानश्रियमीश्वरीम् । सुवर्णरत्नखचितमकुटेन विराजिताम्॥६॥ ललाटपट्टसंराजत्संलग्नतिलकाश्चिताम् । राजीवायतनेत्रान्तां नीलोत्पलदलेक्षणाम्॥७॥

सन्तप्तहेमखचित-ताटङ्काभरणान्विताम्। ताम्बूलचर्वणरतरक्तजिह्वाविराजिताम्॥८॥

पताकाभरणोपेतां मुक्ताहारोपशोभिताम्। स्वर्णकङ्कणसंयुक्तैश्चतुर्भिर्बाहुभिर्युताम् ॥९॥

सुवर्णरत्नखचित-काश्चीदामविराजिताम् । कदलीललितस्तम्भ-सन्निभोरुयुगान्विताम्॥१०॥

श्रिया विराजितपदां भक्तत्राणपरायणाम्। अन्योन्याश्लिष्टहृद्धाह् गौरीशङ्करसंज्ञकम्॥११॥

सनातनं परं ब्रह्म परमात्मानमव्ययम्। आवाहयामि जगतामीश्वरं परमेश्वरम्॥१२॥

मङ्गलायतनं देवं युवानमति सुन्दरम्। ध्यायेत्कल्पतरोर्मूले सुखासीनं सहोमया॥१३॥

आगच्छाऽऽगच्छ भगवन् देवेश परमेश्वर। सचिदानन्द भूतेश पार्वतीश नमोऽस्तु ते॥१४॥



### ॥ प्रदक्षिणम्॥

द्रापे अन्धंसस्पते दरिंद्रज्ञीलंलोहित। एषां पुरुषाणामेषां पंशूनां मा भेर्माऽरो मो एषां किं चनाऽऽमंमत्॥ या तें रुद्र शिवा तनूः शिवा विश्वाहंभेषजी। शिवा रुद्रस्यं भेषुजी तयां नो मृड जीवसें॥ इमार रुद्रायं तवसे कपर्दिनें क्षयद्वीराय प्रभेरामहे मतिम्॥ यथां नः शमसंद्विपदे चतुंष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामें अस्मिन्ननांतुरम्॥ मृडा नों रुद्रोत नो मयंस्कृधि क्षयद्वींराय नर्मसा विधेम ते। यच्छं च योश्च मनुरायुजे पिता तदंश्याम् तवं रुद्व प्रणीतौ॥ मा नो महान्तंम्त मा नो अर्भुकं मा न उक्षंन्तमुत मा न उक्षितम्। मा नों वधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा नंस्तनुवों रुद्र रीरिषः॥ मा नंस्तोक तनंये मा न आयुंषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। वीरान्मा नो रुद्र भामितोऽवंधीर्हविष्मंन्तो नमंसा विधेम ते॥ आरात्तं गोघ्न उत पूरुषघ्ने क्षयद्वीराय सुम्रमुस्मे ते अस्तु। रक्षां च नो अधि च देव ब्रूह्यधां च नः शर्म यच्छ द्विबर्हाः॥ स्तुहि श्रुतं गेर्तुसद् युवानं मृगं न भीमम्पह्लुमुग्रम्। मृडा जंरित्रे रुंद्र स्तवांनो अन्यन्ते अस्मन्निवंपन्तु सेनाः॥ परिणो रुद्रस्यं हेतिर्वृणक्तु परि त्वेषस्य दुर्मतिरंघायोः। अवं स्थिरा मुघवं ग्रास्तनुष्व मीह्वंस्तोकाय तनयाय मृडय। मीढुंष्टम् शिवंतम शिवो नंः सुमनां भव। पुरमे वृक्ष आयुंधं निधाय कृत्तिं वसान आ चर पिनांकं बिभ्रदा गंहि॥ विकिरिद विलोंहित नमंस्ते अस्तु भगवः। यास्ते सहस्र १ हेतयोऽन्यमस्मन्निवंपन्तु ताः॥ सहस्रांणि सहस्रधा बांहुवोस्तवं हेतयंः। तासामीशांनो भगवः पराचीना मुखां कृधि॥ प्रदक्षिणं कृत्वा॥

#### ॥ नमस्काराः ॥

सहस्राणि सहस्रशो ये रुद्रा अधि भूम्याँम्। तेषा १ सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि। श्री-महादेवादिभ्यो नमः॥१॥

अस्मिन् मंहृत्यंर्णवेंऽन्तरिक्षे भवा अधि। तेषार्ं सहस्रयोज्नेऽवधन्वांनि तन्मसि। श्री-महादेवादिभ्यो नमः॥२॥

नीलंग्रीवाः शितिकण्ठाः शूर्वा अधः, क्षंमाचराः। तेषार् सहस्रयोज्ने-ऽवधन्वांनि तन्मसि। श्री-महादेवादिभ्यो नमः॥३॥

नीलंग्रीवाः शितिकण्ठा दिवर्षं रुद्रा उपंश्रिताः। तेषार्षं सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि। श्री-महादेवादिभ्यो नमः॥४॥

ये वृक्षेषुं सस्पिञ्जर्ं नीलंग्रीवा विलोहिताः। तेषार् सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि। श्री-महादेवादिभ्यो नमः॥५॥

ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपूर्दिनः। तेषा र सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि। श्री-महादेवादिभ्यो नमः॥६॥

ये अन्नेषु विविध्यंन्ति पात्रेषु पिबंतो जनान्। तेषा सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि। श्री-महादेवादिभ्यो नमः॥७॥

ये पृथां पंथिरक्षंय ऐलबृदा यृव्युधंः। तेषा १ सहस्रयोज्नेऽवधन्वांनि तन्मसि। श्री-महादेवादिभ्यो नमः॥८॥

ये तीर्थानिं प्रचरंन्ति सृकावंन्तो निषङ्गिणंः। तेषा र सहस्रयोज्नेऽवधन्वांनि तन्मसि। श्री-महादेवादिभ्यो नमः॥९॥

य एतावंन्तश्च भूया ५ सश्च दिशों रुद्रा विंतस्थिरे। तेषा ५ सहस्रयोज्ने-ऽवधन्वांनि तन्मसि। श्री-महादेवादिभ्यो नमः॥१०॥

नमों रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येषामन्नमिषंवस्तेभ्यो दश प्राचीर्दशं दक्षिणा दशं

प्रतीचीर्दशोदींचीर्दशोर्ध्वास्तेभ्यो नम्स्ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्चं नो द्वेष्टि तं वो जम्भे दधामि। श्री-महादेवादिभ्यो नमः॥११॥

नमों रुद्रेभ्यो येंऽन्तरिक्षे येषां वात् इषंवस्तेभ्यो दश् प्राचीर्दशं दक्षिणा दशं प्रतीचीर्दशोर्दीचीर्दशोर्ध्वास्तेभ्यो नम्स्ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्चं नो द्वेष्टि तं वो जम्भे दधामि। श्री-महादेवादिभ्यो नमः॥१२॥

नमों रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्षमिषंवस्तेभ्यो दश प्राचीर्दशं दक्षिणा दशं प्रतीचीर्दशोदींचीर्दशोध्वस्तिभ्यो नमस्ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्चं नो द्वेष्टि तं वो जम्भे दधामि। श्री-महादेवादिभ्यो नमः॥१३॥ नमस्कारान् कृत्वा॥



# ॥ चमकानुवाकैः प्रार्थना॥

अग्नांविष्णू स्जोषंसेमा वंधन्तु वां गिरंः। द्युम्नैर्वाजेंभिरागंतम्॥ वार्जश्च मे प्रस्वश्चं मे प्रयंतिश्च मे प्रसितिश्च मे धीतिश्चं मे ऋतुंश्च मे स्वरंश्च मे श्लोकंश्च मे श्रावश्चं मे श्रुतिश्च मे ज्योतिश्च मे सुवंश्च मे प्राणश्चं मेऽपानश्चं मे व्यानश्च मेऽसुंश्च मे चित्तं चं म आधीतं च मे वार्कं मे मनंश्च मे चक्षुंश्च मे श्लोतं च मे वार्कं मे मनंश्च मे चक्षुंश्च मे श्लोतं च मे दक्षंश्च मे बलं च म ओजंश्च मे सहंश्च म आयुंश्च मे ज्ञरा चं म आत्मा चं मे तुन्श्चं मे शर्मं च मे वर्मं च मेऽङ्गांनि च मेऽस्थानिं च मे परूरंषि च मे शरीराणि च मे॥१॥

ज्यैष्ठ्यं च म् आधिपत्यं च मे मृन्युश्चं मे भामश्च मेऽमंश्च मेऽम्भंश्च मे जेमा चं मे मिह्मा चं मे विर्मा चं मे प्रिथमा चं मे वृष्मी चं मे द्राघुया चं मे वृद्धं चं मे वृद्धिंश्च मे सृत्यं चं मे श्रुद्धा चं मे जगंच मे धनं च मे वर्शश्च मे त्विषिश्च मे कीडा चं मे मोदंश्च मे जातं चं मे जिन्ष्यमाणं च मे सूक्तं चं मे सुकृतं चं मे वित्तं चं मे वेद्यं च मे भूतं चं मे भिवष्यचं मे सुगं चं मे सुपथं च म ऋद्धं चं मृ ऋद्धिंश्च मे क्रुप्तं चं मे क्रुप्तिंश्च मे मृतिश्चं मे सुमृतिश्चं मे॥२॥

शं चं में मयंश्व में प्रियं चं मेऽनुकामश्चं में कामंश्व में सौमन्सर्श्व में भूद्रं चं में श्रेयंश्व में वस्यंश्व में यशंश्व में भगंश्व में द्रविणं च में यन्ता चं में धर्ता चं में क्षेमंश्व में धृतिश्व में विश्वं च में महंश्व में स्विचं में ज्ञात्रं च में सूर्श्व में प्रसूर्श्व में सीरं च में लयश्चं म ऋतं चं मेऽमृतं च मेऽयक्ष्मं च मेऽनामयच में जीवातुंश्व में दीर्घायुत्वं चं मेऽनिमृत्रं च मेऽभंयं च में सुगं चं में शयंनं च में सूषा चं में सुदिनंं च मे॥३॥

ऊर्क मे सूनृतां च मे पर्यक्ष मे रसंश्व मे घृतं चं मे मधुं च मे सिधिश्व मे सपीतिश्व मे कृषिश्वं मे वृष्टिश्व मे जैत्रं च म औद्भिंद्यं च मे रियश्वं मे रायश्व मे पुष्टं चं मे पुष्टिश्व मे विभ चं मे प्रभ चं मे बहु चं मे भूयश्व मे पूर्णं चं मे पूर्णतरं च मेऽक्षितिश्व मे कूयंवाश्व मेऽत्रं च मेऽक्षिच मे वीहर्यश्व मे यवाश्व मे माषाश्च मे तिलाश्च मे मुद्राश्चं मे खुल्वाश्च मे गोधूमाश्च मे मसुराश्च मे प्रियङ्गंवश्च मेऽणंवश्च मे श्यामाकाश्च मे नीवाराश्च मे॥४॥

अश्मां च में मृत्तिका च में गि्रयंश्च में पर्वताश्च में सिकंताश्च में वनस्पतियश्च में हिरंण्यं च मेऽयंश्च में सीसं च में त्रपृश्च में श्यामं च में लोहं च मेऽग्निश्चं म आपंश्च में वी्रधंश्च म ओषंधयश्च में कृष्टपच्यं च मेऽकृष्टपच्यं च में ग्राम्याश्चं में प्शव आर्ण्याश्चं युज्ञेन कल्पन्तां वित्तं च में वित्तिश्च में भूतं च में भूतिश्च में वस्तुं च में वस्तिश्चं में कर्म च में शक्तिश्च मेऽर्थश्च म एमंश्च म इतिश्च में गतिश्च मे॥५॥ अग्निश्चं म् इन्द्रंश्च मे सोमंश्च म् इन्द्रंश्च मे सिवता चं म् इन्द्रंश्च मे सरंस्वती च म् इन्द्रंश्च मे पूषा चं म् इन्द्रंश्च मे बृह्स्पतिश्च म् इन्द्रंश्च मे मित्रश्चं म् इन्द्रंश्च मे वरुणश्च म् इन्द्रंश्च मे त्वष्टां च म् इन्द्रंश्च मे धाता चं म् इन्द्रंश्च मे विष्णुंश्च म् इन्द्रंश्च मेऽिश्वनौं च म् इन्द्रंश्च मे म्रुतंश्च म् इन्द्रंश्च मे विश्वं च मे देवा इन्द्रंश्च मे पृथिवी चं म् इन्द्रंश्च मेऽन्तिरिक्षं च म् इन्द्रंश्च मे द्रोश्च म् इन्द्रंश्च मे पूर्णा चं म् इन्द्रंश्च मे प्रजापंतिश्च म् इन्द्रंश्च मे॥६॥

अन्शुश्चं मे रिश्मिश्च मेऽदाँभ्यश्च मेऽधिंपतिश्च म उपान्शुश्चं मेऽन्तर्यामश्चं म ऐन्द्रवायवश्चं मे मैत्रावरुणश्चं म आश्विनश्चं मे प्रतिप्रस्थानश्च मे शुक्तश्चं मे मन्थी च म आग्रयणश्चं मे वैश्वदेवश्चं मे ध्रुवश्चं मे वैश्वान्रश्चं म ऋतुग्रहाश्चं मेऽतिग्राह्यांश्च म ऐन्द्राग्नश्चं मे वैश्वदेवश्चं मे मरुत्वतीयांश्च मे माहेन्द्रश्चं म आदित्यश्चं मे सावित्रश्चं मे सारस्वतश्चं मे पौष्णश्चं मे पात्रीवतश्चं मे हारियोजनश्चं मे॥७॥

इध्मश्चं मे बहिश्चं मे वेदिश्च मे धिष्णियाश्च मे स्रुचंश्च मे चम्साश्चं मे ग्रावाणश्च मे स्वरंवश्च म उपर्वाश्चं मेऽधिषवंणे च मे द्रोणकलुशश्चं मे वायव्यांनि च मे पूतभृचं म आधवनीयंश्च म् आग्नींग्नं च मे हिव्धानं च मे गृहाश्चं मे सदेश्च मे पुरोडाशांश्च मे पचताश्चं मेऽवभृथश्चं मे स्वगाका्रश्चं मे॥८॥

अग्निश्चं मे घर्मश्चं मेऽर्कश्चं मे सूर्यश्च मे प्राणश्चं मेऽश्वमेधश्चं मे पृथिवी च मेऽदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्चं मे शर्करीर्ङ्गुलयो दिशंश्च मे यज्ञेनं कल्पन्तामृश्चं मे सामं च मे स्तोमश्च मे यज्ञेश्च मे दीक्षा चं मे तपश्च म ऋतुश्चं मे व्रतं चं मेऽहोरात्रयौर्वृष्ट्या बृहद्रथन्तरे चं मे य्ज्ञेनं कल्पेताम्॥९॥

गर्भाश्व मे वृथ्साश्च मे त्र्यविश्व मे त्र्यवी च मे दित्यवार्च मे दित्यौही च मे पश्चाविश्व मे पश्चावी च मे त्रिवृथ्सश्च मे त्रिवृथ्सा च मे तुर्यवार्च मे तुर्यौही च

मे पष्टवार्च मे पष्टौही चं म उक्षा चं मे वृशा चं म ऋष्भश्चं मे वेहर्च मेऽनृड्वां चं मे धेनुश्चं म् आयुंर्यज्ञेनं कल्पतां प्राणो यज्ञेनं कल्पतामपानो यज्ञेनं कल्पतां व्यानो यज्ञेनं कल्पतां चक्षुंर्यज्ञेनं कल्पतां ् श्लोत्रं यज्ञेनं कल्पतां मनो यज्ञेनं कल्पतां वाग्यज्ञेनं कल्पतामात्मा यज्ञेनं कल्पतां यज्ञोनं कल्पतामात्मा यज्ञेनं कल्पतां यज्ञोनं कल्पतामाश्रा

एकां च मे तिस्रश्चं मे पश्चं च मे स्प्ता चं मे नवं च म एकांदश च मे त्रयोंदश च मे पश्चंदश च मे स्प्तादंश च मे नवंदश च म एकंवि शिक्ष मे त्रयोंवि शिक्ष मे पश्चंवि शिक्ष मे स्प्तावि शिक्ष मे नवंवि शिक्ष मे प्रवंवि स्वावि शिक्ष मे प्रवंवि स्वावि स्ववि स्वावि स्वावि

महादेवादिभ्यो नमः॥ समस्तोपचारान् समर्पयामि॥

इडां देवहूर्मनुंर्यज्ञनीर्बृह्स्पतिंरुक्थाम्दानिं शश्सिष्द्विश्वेदेवाः सूँक्तवाचः पृथिवि मात्मां मां हिश्सीर्मधुं मनिष्ये मधुं जनिष्ये मधुं वक्ष्यामि मधुं विद्यामि मधुं विद्यामि मधुंमतीं देवेभ्यो वाचंमुद्यासश् शुश्रूषेण्यां मनुष्येभ्यस्तं मां देवा अवन्तु शोभाये पितरोऽनुंमदन्तु॥

॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

अघोरैभ्योऽथ घोरैभ्यो घोरघोरंतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमंस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवायं धीमहि। तन्नों रुद्रः प्रचोदयांत्॥

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिब्रह्मणोऽधिपतिब्रह्मां शिवो में अस्तु सदाशिवोम्॥

तत्पुरुषाय विद्महें महादेवायं धीमहि। तन्नों रुद्रः प्रचोदयाँत्॥ (दशवारं जपेत्।)

महादेवादिभ्यो नमः॥ समस्तोपचारान् समर्पयामि॥



## ॥ प्रार्थना ॥



### ॥श्रीरुद्रजपः॥

अस्य श्री-रुद्राध्याय-प्रश्न-महामन्नस्य। अघोर ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। सङ्कर्षणमूर्तिस्वरूपो योऽसावादित्यः परमपुरुषः स एष रुद्रो देवता॥

नमः शिवायेति बीजम्। शिवतरायेति शक्तिः। महादेवायेति कीलकम्। श्री-साम्बसदाशिवप्रसादसिद्धार्थे जपे विनियोगः॥ ॥करन्यासः॥

ॐ अग्निहोत्रात्मने अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। दर्शपूर्णमासात्मने तर्जनीभ्यां नमः। चातुर्मास्यात्मने मध्यमाभ्यां नमः। निरूढपशुबन्धात्मने अनामिकाभ्यां नमः। ज्योतिष्टोमात्मने कनिष्ठिकाभ्यां नमः। सर्वऋत्वात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। ॥अङ्गन्यासः॥

अग्निहोत्रात्मने हृदयाय नमः। दर्शपूर्णमासात्मने शिरसे स्वाहा। चातुर्मास्यात्मने शिखायै वषट्। निरूढपशुबन्धात्मने कवचाय हुं। ज्योतिष्टोमात्मने नेत्रत्रयाय वौषट्। सर्वक्रत्वात्मने अस्त्राय फट्। भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः।

#### ॥ध्यानम्॥

आपाताल-नभः-स्थलान्त-भुवन-ब्रह्माण्डमाविस्फुरत् ज्योतिः स्फाटिक-लिङ्ग-मौलि-विलसत्-पूर्णेन्दु-वान्तामृतैः। अस्तोकाप्नुतमेकमीशमनिशं रुद्रानुवाकान् जपन् ध्यायेदीप्सितसिद्धये ध्रुवपदं विप्रोऽभिषिश्चेच्छिवम्॥

ब्रह्माण्ड-व्याप्त-देहा भिसत-हिमरुचा भासमाना भुजङ्गेः कण्ठे कालाः कपर्दा-कलित-शिश-कलाश्चण्ड-कोदण्ड-हस्ताः। त्र्यक्षा रुद्राक्षमालाः प्रकटित-विभवाः शाम्भवा मूर्तिभेदाः रुद्राः श्रीरुद्रसूक्त-प्रकटित-विभवा नः प्रयच्छन्तु सौख्यम्॥ ॥पञ्चपुजा॥

लं पृथिव्यात्मने गन्धं समर्पयामि। हं आकाशात्मने पूष्पैः पूजयामि। यं वाय्वात्मने धूपमाघ्रापयामि। रं अग्र्यात्मने दीपं दर्शयामि। वं अमृतात्मने अमृतं महानैवेद्यं निवेदयामि। सं सर्वात्मने सर्वोपचारपूजां समर्पयामि।

ॐ गृणानां त्वा गृणपंति हवामहे कविं केवीनामुंप्मश्रंवस्तमम्। ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत् आ नंः शृण्वन्नृतिभिः सीद् सादेनम्॥ ॐ महागणपतये नमंः॥

शं चं में मयंश्व में प्रियं चं मेऽनुकामश्चं में कामंश्व में सौमनुसर्श्वं में भूद्रं चं में श्रेयंश्व में वस्यंश्व में यशंश्व में भगंश्व में द्रविणं च में यन्ता चं में धूर्ता चं में क्षेमंश्व में धृतिश्व में विश्वं च में महंश्व में सुंविचं में ज्ञात्रं च में सूर्श्व में प्रसूर्श्व में सीरं च में ल्यश्वं म ऋतं चं मेऽनृतं च मेऽयक्ष्मं च मेऽनामयच में जीवातृश्व में दीर्घायुत्वं च मेऽनिमृत्रं च मेऽभंयं च में सूर्ण चं में सूर्पनं च में सूर्ण चं में सूर्पनं च में श्रान्तिः शान्तिः॥

560

#### ॥ रुद्रप्रश्नः॥

ॐ नमो भगवतें रुद्राय॥ नमंस्ते रुद्र मुन्यवं उतो त इषवे नमंः। ... अभिषेकः—प्रथमं गन्धतोयं च

त्र्यम्बकं यजामहे सुगुन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्वारुकमिव बन्धंनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतांत्॥

अग्नांविष्णू स्जोषंसेमा वंधन्तु वां गिरंः। द्युम्नैर्वाजेंभिरागंतम्॥ वार्जश्च मे प्रस्वश्चं मे प्रयंतिश्च मे प्रसितिश्च मे धीतिश्चं मे ऋतुंश्च मे स्वरंश्च मे श्लोकंश्च मे श्रावश्चं मे श्रुतिश्च मे ज्योतिश्च मे सुवंश्च मे प्राणश्चं मेऽपानश्चं मे व्यानश्च मेऽसुंश्च मे चित्तं चं म आधीतं च मे वार्क्च मे मनश्च मे चक्षुंश्च मे श्लोतं च मे दक्षंश्च मे बलं च म ओजंश्च मे सहंश्च म आयुंश्च मे ज्रा चं म आत्मा चं मे त्नूश्चं मे शर्मं च मे वर्मं च मेऽङ्गांनि च मेऽस्थानिं च मे परूरंषि च मे शरीराणि च मे॥१॥

धूपम्। दीपम्। नैवेद्यम्। कर्पूरताम्बूलम्। नीराजनम्—

यो देवानां प्रथमं पुरस्ताद्विश्वाधियों रुद्रो महर्षिः। हिर्ण्यगर्भं पंश्यत जायंमान् स्म नो देवः शुभया स्मृत्याः संयुनक्तु॥ अनेन प्रथम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः महादेवः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥१॥



ॐ नमो भगवर्ते रुद्राय॥ नमंस्ते रुद्र मुन्यवं उतो तु इषवे नमंः। ... अभिषेकः—द्वितीयं पश्चगव्यकम्।

त्र्यंम्बकं यजामहे सुगुन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकिमीव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

ज्येष्ठ्यं च म् आधिपत्यं च मे मृन्युश्चं मे भामंश्च मेऽमंश्च मेऽम्भंश्च मे जेमा चं मे मिह्मा चं मे विर्मा चं मे प्रिथमा चं मे वृष्मा चं मे द्राघुया चं मे वृद्धं चं मे वृद्धिंश्च मे सृत्यं चं मे श्रद्धा चं मे जगंच मे धनं च मे वर्शश्च मे त्विषिश्च मे कीडा चं मे मोदंश्च मे जातं चं मे जिन्ष्यमाणं च मे सूक्तं चं मे सुकृतं चं मे वित्तं चं मे वेद्यं च मे भूतं चं मे भविष्यचं मे सुगं चं मे सुपर्थं च म ऋद्धं चं मृ ऋद्धिंश्च मे क्रुप्तं चं मे क्रुप्तिंश्च मे मृतिश्चं मे सुमृतिश्चं मे॥२॥

> धूपम्। दीपम्। नैवेद्यम्। कर्पूरताम्बूलम्। नीराजनम्—

यस्मात्परं नापंरमस्ति किश्चिद्यस्मान्नाणीयो न ज्यायौँऽस्ति कश्चित्। वृक्ष इंव स्तब्धो दिवि तिष्ठत्येकस्तेनेदं पूर्णं पुरुषेण सर्वम्॥ अनेन **द्वितीय**-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः

शिवः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥२॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥ नमंस्ते रुद्र मुन्यवं उतो तु इषवे नमंः। ... अभिषेकः—पश्चामृतं तृतीयं स्यात्

. . .

त्र्यम्बकं यजामहे सुगुन्धिं पृष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मृक्षीय माऽमृतात्॥

शं चं में मयंश्च में प्रियं चं मेऽनुकामश्चं में कामंश्च में सौमन्सर्श्वं में भूद्रं चं में श्रेयंश्च में वस्यंश्च में यशंश्च में भगंश्च में द्रविणं च में यन्ता चं में धर्ता चं में क्षेमंश्च में धृतिश्च में विश्वं च में महंश्च में स्विचं में ज्ञात्रं च में सूर्श्च में प्रसूर्श्च में सीरं च में लयर्श्च म ऋतं चं मेऽमृतं च मेऽयक्ष्मं च मेऽनामयच में जीवातृश्च में दीर्घायुत्वं चं मेऽनिमृत्रं च मेऽभंयं च में सुगं चं में शर्यनं च में सूषा चं में सुदिनंं च मे॥३॥

> धूपम्। दीपम्। नैवेद्यम्। कर्पूरताम्बूलम्। नीराजनम्—

न कर्मणा न प्रजया धर्नेन त्यागेनैके अमृत्त्वमांन्शुः। परेण नाकं निहितं गुहांयां विभ्राजंदेतद्यतंयो विशन्ति॥ अनेन **तृतीय**-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः श्री-रुद्रः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥३॥



ॐ नमो भगवते रुद्राय॥ नमंस्ते रुद्र मुन्यवं उतो तु इषवे नमंः। ... अभिषेकः—घृतस्नानं चतुर्थकम्॥

त्र्यम्बकं यजामहे सुगुन्धिं पृष्टिवर्धनम्। उर्वारुकिमीव बन्धनान्मृत्योर्मृक्षीय माऽमृतात्॥

ऊर्क मे सूनृतां च मे पयंश्व मे रसंश्व मे घृतं चं मे मधुं च मे सिधंश्व मे सिपीतिश्व मे कृषिश्वं मे वृष्टिश्व मे जैत्रं च म औद्धिंद्यं च मे रियश्वं मे रायंश्व मे पुष्टं चं मे पुष्टिंश्व मे विभु चं मे प्रभु चं मे बहु चं मे भूयंश्व मे पूर्णं चं मे पूर्णतंरं च मेऽक्षितिश्व मे कूयंवाश्व मेऽत्रं च मेऽक्षंच मे वीहरयंश्व मे यवांश्व मे माषांश्व मे तिलांश्व मे मुद्राश्वं मे खुल्वांश्व मे गोधूमांश्व मे मुस्रांश्व मे प्रियङ्गंवश्व मेऽणंवश्व मे श्यामकांश्व मे नीवारांश्व मे॥४॥

धूपम्। दीपम्। नैवेद्यम्। कर्पूरताम्बूलम्। नीराजनम्— वेदान्त्विज्ञानसुनिश्चितार्थाः सन्त्यांस योगाद्यतंयः शुद्धसत्त्वाः। ते ब्रह्मलोके तु परान्तकाले परामृतात्परिमुच्यन्ति सर्वे॥ अनेन चतुर्थ-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः <u>शङ्करः</u> सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥४॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥ नमंस्ते रुद्र मुन्यवं उतो त इषवे नमंः। ... अभिषेकः—पश्चमं पयसा स्नानं

. . .

त्र्यम्बकं यजामहे सुगृन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

अश्मां च में मृत्तिंका च में गि्रयंश्च में पर्वताश्च में सिकंताश्च में वनस्पतियश्च में हिरंण्यं च मेऽयंश्च में सीसं च में त्रपृश्च में श्यामं च में लोहं च मेऽग्निश्चं म आपंश्च में वी्रुधंश्च म ओषंधयश्च में कृष्टपच्यं च मेऽकृष्टपच्यं च में ग्राम्याश्चं में प्शव आर्ण्याश्चं युज्ञेन कल्पन्तां वित्तं च में वित्तिश्च में भूतं च में भूतिश्च में वस्तुं च में वस्तिश्चं में कर्म च में शक्तिश्च मेऽर्थश्च म एमंश्च म इतिश्च में गितिश्च मे॥५॥

> धूपम्। दीपम्। नैवेद्यम्। कर्पूरताम्बूलम्। नीराजनम्— दुहुं विपापं पुरमें ऽश्मभूतं यत्पुंण्डरीकं पुरमध्यस् श्रूस्थम्। तृत्रापि दुहुं गुगनंं विशोकस्तस्मिन् यदन्तस्तदुपांसितव्यम्॥ अनेन पश्चम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः नीललोहितः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥५॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥ नमंस्ते रुद्र मुन्यवं उतो तु इषेवे नमः। ... अभिषेकः—दिधस्नानं तु षष्ठकम्।

त्र्यम्बकं यजामहे सुगुन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकिमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

अग्निश्चं म् इन्द्रंश्च मे सोमंश्च म् इन्द्रंश्च मे सिवृता चं म् इन्द्रंश्च मे सरंस्वती च म् इन्द्रंश्च मे पूषा चं म् इन्द्रंश्च मे बृह्स्पतिंश्च म् इन्द्रंश्च मे मित्रश्चं म् इन्द्रंश्च मे वरुणश्च म् इन्द्रंश्च मे त्वष्टां च म् इन्द्रंश्च मे धाता चं म् इन्द्रंश्च मे विष्णुंश्च म् इन्द्रंश्च मेऽश्विनौं च म् इन्द्रंश्च मे म्फतंश्च म् इन्द्रंश्च मे विश्वं च मे देवा इन्द्रंश्च मे पृथिवी चं म् इन्द्रंश्च मेऽन्तिरिक्षं च म् इन्द्रंश्च मे द्वांश्च म् इन्द्रंश्च मे पूर्धा चं म् इन्द्रंश्च मे प्रजापंतिश्च म् इन्द्रंश्च मे॥६॥

धूपम्। दीपम्। नैवेद्यम्। कर्पूरताम्बूलम्। नीराजनम्— यो वेदादौ स्वंरः प्रोक्तो वेदान्तं च प्रतिष्ठिंतः। तस्यं प्रकृतिंलीनस्य यः परंः स महेश्वंरः॥ अनेन षष्ठम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः **ईशानः** सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥६॥

ॐ नमो भगवर्ते रुद्राय॥ नमंस्ते रुद्र मुन्यवं उतो तु इषवे नमंः। ... अभिषेकः—सप्तमं मधुना स्नानम्

. . .

त्र्यम्बकं यजामहे सुगृन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

अर्शुश्चं मे रिश्मिश्च मेऽदाँभ्यश्च मेऽधिपितिश्च म उपार्शुश्चं मेऽन्तर्यामश्चं म ऐन्द्रवायवश्चं मे मैत्रावरुणश्चं म आश्विनश्चं मे प्रतिप्रस्थानश्च मे शुक्तश्चं मे मन्थी च म आग्रयणश्चं मे वैश्वदेवश्चं मे ध्रुवश्चं मे वैश्वान्रश्चं म ऋतुग्रहाश्चं मेऽतिग्राह्यांश्च म ऐन्द्राग्नश्चं मे वैश्वदेवश्चं मे मरुत्वतीयांश्च मे माहेन्द्रश्चं म आदित्यश्चं मे सावित्रश्चं मे सारस्वतश्चं मे पौष्णश्चं मे पात्नीवतश्चं मे हारियोजनश्चं मे॥७॥

> धूपम्। दीपम्। नैवेद्यम्। कर्पूरताम्बूलम्। नीराजनम्— सुद्योजातं प्रंपद्यामि सुद्योजाताय वै नमो नर्मः। भवे भवे नाति भवे भवस्व माम्। भवोद्भंवाय नर्मः॥ अनेन सप्तम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः विजयः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥७॥

567

### ॥ रुद्रप्रश्नः॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥ नमंस्ते रुद्र मुन्यवं उतो तु इषवे नमंः। ... अभिषेकः—इक्षुसारमथाष्टमम्॥

त्र्यम्बकं यजामहे सुगुन्धिं पृष्टिवर्धनम्। उर्वारुकिमिव बन्धनान्मृत्योर्मृक्षीय माऽमृतात्॥

इध्मश्चं मे बर्हिश्चं मे वेदिश्च मे धिष्णियाश्च मे स्रुचंश्च मे चम्साश्चं मे ग्रावांणश्च मे स्वरंवश्च म उपर्वाश्चं मेऽधिषवंणे च मे द्रोणकलुशश्चं मे वायव्यांनि च मे पूतभृचं म आधवनीयंश्च म् आग्नींग्नं च मे हिव्धानं च मे गृहाश्चं मे सदंश्च मे पुरोडाशांश्च मे पचताश्चं मेऽवभृथश्चं मे स्वगाका्रश्चं मे॥८॥

> धूपम्। दीपम्। नैवेद्यम्। कर्पूरताम्बूलम्। नीराजनम्—

वामदेवाय नमों ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमों रुद्राय नमः कालाय नमः कलंविकरणाय नमो बलंविकरणाय नमो बलाय नमो बलंप्रमथनाय नमः

सर्वभूतदमनाय नमों मनोन्मनाय नमेः॥ अनेन अष्टम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः भीमः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥८॥



ॐ नमो भगवर्ते रुद्राय॥ नमंस्ते रुद्र मृन्यवं उतो त इषवे नमंः। ... अभिषेकः—नवमं फलसारं च

. . .

त्र्यम्बकं यजामहे सुगृन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

अग्निश्चं मे घर्मश्चं मेऽर्कश्चं मे सूर्यंश्च मे प्राणश्चं मेऽश्वमेधश्चं मे पृथिवी च मेऽदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्चं मे शर्करीर्ङ्गलयो दिशंश्च मे यज्ञेनं कल्पन्तामृक्चं मे सामं च मे स्तोमंश्च मे यज्ञंश्च मे दीक्षा चं मे तपंश्च म ऋतुश्चं मे वृतं चं मेऽहोरात्रयौंर्वृष्ट्या बृंहद्रथन्तुरे चं मे युज्ञेनं कल्पेताम्॥९॥

> धूपम्। दीपम्। नैवेद्यम्। कर्पूरताम्बूलम्। नीराजनम्— अघोरेंभ्योऽथ् घोरेंभ्यो घोर्घोरंतरेभ्यः। सर्वेंभ्यः सर्वृशर्वेंभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥ अनेन नवम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः देवदेवः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥९॥

> > **\*\*\***

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥ नमस्ते रुद्र मुन्यवं उतो त इषवे नमः। ... अभिषेकः—दशमं नाळिकेरकम्।

त्र्यम्बकं यजामहे सुगुन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकिमीव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

गर्भांश्व मे वृथ्साश्चं मे त्र्यविश्व मे त्र्युवी चं मे दित्युवाचं मे दित्यौही चं मे पश्चांविश्व मे पश्चांवी चं मे त्रिवृथ्सश्चं मे त्रिवृथ्सा चं मे तुर्युवाचं मे तुर्योही चं मे पष्टुवाचं मे पष्टुवाचं मे पष्टुवाचं मे पष्टुवाचं मे प्रश्चाही चं म उक्षा चं म वृशा चं म ऋष्भश्चं मे वृहचं मेऽनृङ्वां चं मे धेनुश्चं म् आयुर्यज्ञेनं कल्पतां प्राणो यज्ञेनं कल्पतामपानो यज्ञेनं कल्पतां व्यानो यज्ञेनं कल्पतां चक्षुंर्यज्ञेनं कल्पतां श्रोतं यज्ञेनं कल्पतां मनो यज्ञेनं कल्पतां वाग्यज्ञेनं कल्पतामात्मा यज्ञेनं कल्पतां यज्ञोनं कल्पतामात्मा यज्ञेनं कल्पतामाश्०॥

धूपम्। दीपम्। नैवेद्यम्। कर्पूरताम्बूलम्। नीराजनम्— तत्पुरुंषाय विदाहें महादेवायं धीमहि। तन्नों रुद्रः प्रचोदयाँत्॥ अनेन **दशम**-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः भवोद्भवः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥१०॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥ नमंस्ते रुद्र मृन्यवं उतो तु इषवे नमंः। ... अभिषेकः—एकादशं गन्धतोयं द्वादशं तीर्थमुच्यते॥

त्र्यंम्बकं यजामहे सुगृन्धिं पुंष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतांत्॥

यो रुद्रो अग्नौ यो अपसु य ओषंधीषु यो रुद्रो विश्वा भुवंनाऽऽविवेश तस्मैं रुद्राय नमों अस्तु॥ तमुंष्टुहि यः स्विषुः सुधन्वा यो विश्वंस्य क्षयंति भेषजस्यं। (ऋक्) यक्ष्वांमहे सौंमन्सायं रुद्रं नमोंभिर्देवमसुंरं दुवस्य॥ अयं मे हस्तो भगंवान्यं मे भगंवत्तरः। अयं में विश्वभेषजोऽयं शिवाभिमर्शनः॥

ये ते सहस्रंम्युतं पाशा मृत्यो मर्त्यांय हन्तेवे। तान् यज्ञस्यं मायया सर्वानवं यजामहे। मृत्यवे स्वाहां मृत्यवे स्वाहां॥ ओं नमो भगवते रुद्राय विष्णवे मृत्युंर्मे पाहि। प्राणानां ग्रन्थिरिस रुद्रो मां विशान्तकः। तेनान्नेनांप्यायस्व॥ नमो रुद्राय विष्णवे मृत्युंर्मे पाहि॥

एकां च मे तिस्रश्चं मे पश्चं च मे स्प्ता चं मे नवं च म एकांदश च मे त्रयोंदश च मे पश्चंदश च मे स्प्तादंश च मे नवंदश च म एकंवि शिक्ष मे त्रयोंवि शिक्ष मे पश्चंवि शिक्ष मे स्प्तावि शिक्ष मे नवंवि शिक्ष मे प्रवंवि शिक्ष भेवनश्च भेवनश्च भेवनश्च भेवनश्च भेवनश्च भेवनश्च शिक्ष ॥११॥

## धूपम्। दीपम्। नैवेद्यम्। कर्पूरताम्बूलम्। नीराजनम्—

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मां शिवो में अस्तु सदाशिवोम्॥

अनेन एकादश-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः

आदित्यात्मकः श्री-रुद्रः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥११॥

[इडां देवहूर्मनुंर्यज्ञनीर्बृह्स्पतिंरुक्थामदानिं शश्सिष्द्विश्वेंदेवाः सूँक्तवाचः पृथिंवि मात्मां मां हिश्सीर्मधुं मनिष्ये मधुं जनिष्ये मधुं वक्ष्यामि मधुं विष्यामि मधुं विष्यामि मधुंमतीं देवेभ्यो वाचंमुद्यासश् शुश्रूषेण्यां मनुष्येभ्यस्तं मां देवा अंवन्तु शोभाये पितरोऽनुंमदन्तु॥]

॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि॥७॥ साक्षतजलेन तर्पणं कार्यम्॥

ॐ भवं देवं तर्पयामि। ॐ शर्वं देवं तर्पयामि। ॐ ईशानं देवं तर्पयामि। ॐ पशुपतिं देवं तर्पयामि। ॐ रुद्रं देवं तर्पयामि। ॐ उग्रं देवं तर्पयामि। ॐ भीमं देवं तर्पयामि। ॐ महान्तं देवं तर्पयामि॥

ॐ भवस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ शर्वस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ ईशानस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ उग्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ उग्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ भीमस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ महतो देवस्य पत्नीं तर्पयामि॥

असौ योंऽवसर्पति नीलंग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा अंदश्तृद्धशत्रुदहार्यः। उतैनं विश्वा भूतानि स दृष्टो मृंडयाति नः॥ ॐ हीं नुमः शिवायं। रुद्राय नर्मः। वस्रोत्तरीयं समर्पयामि॥८॥

नमों अस्तु नीलंग्रीवाय सहस्राक्षायं मीढुषें। अथो ये अस्य सत्वांनोऽहं तेभ्योंऽकरं नमंः॥ ॐ हीं नमः शिवायं। कालाय नमंः। यज्ञोपवीताभरणानि समर्पयामि॥९॥

प्र मृंश्च धन्वंनस्त्वमुभयोरार्लियोर्ज्याम्। याश्चं ते हस्त इषंवः परा ता भंगवो वप॥ ॐ हीं नमः शिवायं। कलंविकरणाय नमः। दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि अक्षतान् समर्पयामि॥१०॥

अवृतत्य धनुस्त्व सहंस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य शृल्यानां मुखां शिवो नंः सुमनां भव॥ ॐ हीं नृमः शिवायं। बलंविकरणाय नमंः। पुष्पेः पूजयामि॥११॥

ॐ भवाय देवाय नमः। ॐ शर्वाय देवाय नमः।

ॐ ईशानाय देवाय नमः। ॐ पशुपतये देवाय नमः।

ॐ रुद्राय देवाय नमः। ॐ उग्राय देवाय नमः।

ॐ भीमाय देवाय नमः। ॐ महते देवाय नमः॥

ॐ भवस्य देवस्य पत्यै नमः। ॐ शर्वस्य देवस्य पत्यै नमः।

ॐ ईशानस्य देवस्य पत्र्ये नमः। ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्र्ये नमः।

ॐ रुद्रस्य देवस्य पत्र्ये नमः। ॐ उग्रस्य देवस्य पत्र्ये नमः।

🕉 भीमस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ महतो देवस्य पत्न्यै नमः॥

## ॥श्रीरुद्रनाम त्रिशती॥

नमो हिरंण्यबाहवे नर्मः। सेनान्यें नर्मः। दिशां च पत्रये नर्मः। नर्मो वृक्षेभ्यो नर्मः। हरिकेशेभ्यो नर्मः। पुशूनां पतेये नर्मः। नमः सस्पिञ्जराय नमः। त्विषीमते नमः। पृथीनां पतंये नर्मः। नर्मा बसुशाय नर्मः। विव्याधिने नर्मः। अन्नानां पतंये नर्मः। नमो हरिकेशाय नमंः। उपवीतिने नमंः। पुष्टानां पतंये नर्मः। नर्मा भुवस्यं हेत्यै नर्मः। जर्गतां पतिये नर्मः। नर्मो रुद्राय नर्मः। आतताविने नर्मः। क्षेत्राणां पर्तये नर्मः। नर्मः सूताय नर्मः। अहन्त्याय नर्मः। वनानां पतंये नमंः। नमो रोहिंताय नमंः। स्थपतेये नर्मः। वृक्षाणां पतेये नर्मः। नमों मन्त्रिणे नमंः। वाणिजाय नमंः। कक्षाणां पतिये नर्मः। नर्मो भुवन्तये नर्मः। वारिवस्कृताय नर्मः। ओषंधीनां पर्तये नर्मः। नमं उच्चेघोंषाय नमंः। आऋन्दयंते नमंः। पत्तीनां पतेये नर्मः। नर्मः कृथ्स्नवीताय नर्मः। धावते नर्मः। सत्त्वनां पत्तेये नर्मः॥ नमः सहंमानाय नमः। निव्याधिने नमः। आव्याधिनीनां पतेये नर्मः। नर्मः ककुभाय नर्मः। निषक्षिणे नर्मः। स्तेनानां पत्ये नर्मः।

नमों निष्ङ्गिणे नमंः। इषुधिमते नमंः। तस्कराणां पत्तेये नर्मः। नमो वश्चेते नर्मः। परिवर्श्वते नर्मः। स्तायूनां पत्रेये नर्मः। नमों निचेरवे नमंः। परिचराय नमंः। अरंण्यानां पतिये नर्मः। नर्मः सृकाविभ्यो नर्मः। जिघा रसद्भो नर्मः। मुष्णुतां पत्ये नर्मः। नमोऽसिमन्द्यो नर्मः। नक्तं चरन्द्र्यो नर्मः। प्रकृन्तानां पत्तेये नर्मः। नर्म उष्णीषिने नर्मः। गिरिचराय नर्मः। कुलुश्चानां पतेये नर्मः। नम् इषुंमज्ञ्यो नमः। धन्वाविभ्यंश्च नमः। वो नमः। नमं आतन्वानेभ्यो नमंः। प्रतिदर्धानेभ्यश्च नमंः। वो नमंः। नमं आयच्छंन्द्यो नमंः। विसृजन्द्यंश्च नमंः। वो नमंः। नमोऽस्यंन्चो नर्मः। विर्ध्यन्नश्च नर्मः। वो नर्मः। नम आसींनेभ्यो नर्मः। शयांनेभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नर्मः स्वपद्धो नर्मः। जाग्रद्धश्च नर्मः। वो नर्मः। नमस्तिष्ठं स्रो नर्मः। धावं स्रश्च नर्मः। वो नर्मः। नमः सभाभ्यो नमः। सभापंतिभ्यश्च नमः। वो नमः। नमो अर्श्वेभ्यो नर्मः। अर्श्वपतिभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः॥ नमं आव्याधिनींभ्यो नमंः। विविध्यंन्तीभ्यश्च नमंः। वो नमंः। नम् उगंणाभ्यो नमः। तृर्हतीभ्यंश्च नमः। वो नमः। नमों गृथ्सेभ्यो नर्मः। गृथ्सपंतिभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नमो व्रातेंभ्यो नमंः। व्रातंपतिभ्यश्च नमंः। वो नमंः। नमों गुणेभ्यो नमंः। गणपंतिभ्यश्च नमंः। वो नमंः। नमो विरूपेभ्यो नर्मः। विश्वरूपेभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः।

नमों महद्यो नमंः। क्षुष्ठकेभ्यंश्च नमंः। वो नमंः। नमों रथिभ्यो नर्मः। अरथेभ्यंश्च नर्मः। वो नर्मः। नमो रथेंभ्यो नर्मः। रथंपतिभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नमः सेनांभ्यो नमः। सेनानिभ्यंश्च नमः। वो नमः। नमः क्षुत्तृभ्यो नमः। सुङ्गहीतृभ्यंश्च नमः। वो नमः। नमस्तक्षेभ्यो नर्मः। रथकारेभ्यंश्च नर्मः। वो नर्मः। नमः कुलालेभ्यो नर्मः। कुमरिभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नर्मः पुञ्जिष्टैभ्यो नर्मः। निषादेभ्यंश्च नर्मः। वो नर्मः। नमं इषुकृज्यो नमः। धुन्वकृज्यंश्च नमः। वो नमः। नमों मृगयुभ्यो नमंः। श्वनिभ्यंश्च नमंः। वो नमंः। नमः श्वभ्यो नर्मः। श्वपंतिभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः॥ नमों भवायं च नमंः। रुद्रायं च नमेः। नमः श्वायं च नमः। पशुपतये च नमः। नमो नीलंग्रीवाय च नमंः। शितिकण्ठांय च नमंः। नमः कप्दिने च नमः। व्युप्तकेशाय च नमः। नमः सहस्राक्षायं च नमः। शतधंन्वने च नमः। नमों गिरिशायं च नमंः। शिपिविष्टायं च नमंः। नमों मी्दुष्टंमाय च नमंः। इषुंमते च नमंः। नमों ह्रस्वायं च नमंः। वामनायं च नमंः। नमों बृहते च नमंः। वर्षीयसे च नमंः। नमों वृद्धायं च नमंः। संवृध्वेने च नमंः। नमो अग्नियाय च नमंः। प्रथमायं च नमंः। नमं आशवें च नमंः। अजिरायं च नमंः। नमः शीघ्रियाय च नमः। शीभ्याय च नमः।

नमं अर्म्याय च नमंः। अवस्वन्याय च नमंः। नर्मः स्रोतस्याय च नर्मः। द्वीप्याय च नर्मः॥ नमों ज्येष्ठायं च नमंः। कनिष्ठायं च नमंः। नमः पूर्वजायं च नमः। अपुरुजायं च नमः। नमों मध्यमायं च नमंः। अपगल्भायं च नमंः। नमों जघन्यांय च नमंः। बुध्नियाय च नमंः। नर्मः सोभ्याय च नर्मः। प्रतिसर्याय च नर्मः। नमो याम्याय च नमः। क्षेम्याय च नमः। नमं उर्वयाय च नमंः। खल्याय च नमंः। नमः श्लोक्याय च नमः। अवसान्याय च नमः। -नमो वन्यांय च नमंः। कक्ष्यांय च नमंः। नमः श्रवायं च नमः। प्रतिश्रवायं च नमः। नमं आशुषेणाय च नमंः। आशुरंथाय च नमंः। नमः शूराय च नमः। अवभिन्दते च नमः। नमों वर्मिणे च नमंः। वरूथिने च नमंः। नमों बिल्मिने च नमंः। कवचिने च नमंः। नमः श्रुतायं च नमः। श्रुत्सेनायं च नमः॥ नमों दुन्दुभ्याय च नमः। आहुनुन्याय च नमः। नमों धृष्णवें च नमंः। प्रमृशायं च नमंः। नमों दूतायं च नमंः। प्रहिंताय च नमंः। नमों निष्क्रिणें च नमंः। इष्धिमतें च नमंः। नमंस्तीक्ष्णेषंवे च नमंः। आयुधिनं च नमंः। नमः स्वायुधायं च नमः। सुधन्वने च नमः।

नमः स्रुत्याय च नमः। पथ्याय च नमः। नर्मः काट्याय च नर्मः। नीप्याय च नर्मः। नमः सूद्याय च नमः। सरस्याय च नमः। नमों नाद्यायं च नमंः। वैशुन्तायं च नमंः। नमः कूप्याय च नमः। अवट्याय च नमः। नमो वर्ष्याय च नमः। अवर्ष्यायं च नमः। नमों मेध्याय च नमंः। विद्युत्याय च नमंः। नमं ईध्रियांय च नमंः। आतप्यांय च नमंः। नमो वात्यांय च नमंः। रेष्मियाय च नमंः। नमों वास्तव्याय च नमः। वास्तुपायं च नमः॥ नमः सोर्माय च नर्मः। रुद्रायं च नर्मः। नर्मस्ताम्रायं च नर्मः। अरुणायं च नर्मः। नर्मः शुङ्गायं च नर्मः। पृशुपतंये च नर्मः। नमं उग्रायं च नमंः। भीमायं च नमंः। नमों अग्रेवधायं च नमंः। दूरेवधायं च नमंः। नमों हन्ने च नमंः। हनीयसे च नमंः। नमों वृक्षेभ्यो नमंः। हरिकेशेभ्यो नमंः। नर्मस्ताराय नर्मः। नर्मः शम्भवे च नर्मः। मयोभवे च नर्मः। नर्मः शङ्करायं च नर्मः। मयस्करायं च नर्मः। नर्मः शिवायं च नर्मः। शिवतंराय च नमंः। नमस्तीर्थ्याय च नमंः। कूल्याय च नर्मः। नर्मः पार्याय च नर्मः। अवार्याय च नर्मः। नर्मः प्रतरंणाय च नर्मः।

उत्तरंणाय च नर्मः। नर्म आतार्याय च नर्मः। आलाद्याय च नर्मः। नमः शष्याय च नर्मः। फेन्याय च नर्मः। नर्मः सिकत्याय च नर्मः। प्रवाह्यांय च नमंः॥ नमं इरिण्याय च नमंः। प्रपथ्याय च नमंः। नमः कि शिलायं च नमः। क्षयंणाय च नमः। नमः कपर्दिने च नमः। पुलुस्तये च नमः। नमो गोष्ठ्यांय च नर्मः। गृह्यांय च नर्मः। नमस्तल्प्याय च नमंः। गेह्याय च नमंः। नर्मः काट्याय च नर्मः। गृह्वरेष्ठायं च नर्मः। नमौं ह्रदय्याय च नमः। निवेष्याय च नमः। नर्मः पारसव्याय च नर्मः। रजस्याय च नर्मः। नमः शुष्क्याय च नमः। हरित्याय च नमः। नमो लोप्याय च नर्मः। उलप्याय च नर्मः। नमं ऊर्व्याय च नमंः। सूर्म्याय च नमंः। नर्मः पर्ण्याय च नर्मः। पर्णशद्याय च नर्मः। नमों ऽपगुरमांणाय च नमंः। अभिघ्नते च नमंः। नमं आख्खिदते च नमंः। प्रख्खिदते च नमंः। नमों वो नमंः। किरिकेभ्यो नर्मः। देवाना ह हदयेभ्यो नर्मः। नमों विक्षीणकेभ्यो नमं। नमों विचिन्वत्केभ्यो नमं। नमं आनिर्हतेभ्यो नमंः। नम् आमीवत्केभ्यो नमंः। ॥इति श्री-श्रीरुद्रनाम त्रिशती सम्पूर्णा॥

# ॥ शिवाष्टोत्तरशतनामाविलः॥

कपालिने नमः शिवाय नमः कामारये नमः महेश्वराय नमः शम्भवे नमः अन्धकास्रस्दनाय नमः पिनाकिने नमः गङ्गाधराय नमः शशिशेखराय नमः ललाटाक्षाय नमः वामदेवाय नमः कालकालाय नमः विरूपाक्षाय नमः कृपानिधये नमः 30 कपर्दिने नमः भीमाय नमः परशुहस्ताय नमः नीललोहिताय नमः मृगपाणये नमः शङ्कराय नमः १० शूलपाणये नमः जटाधराय नमः खट्वाङ्गिने नमः कैलासवासिने नमः कवचिने नमः विष्णुवल्लभाय नमः शिपिविष्टाय नमः कठोराय नमः अम्बिकानाथाय नमः त्रिपुरान्तकाय नमः श्रीकण्ठाय नमः वृषाङ्काय नमः वृषभारूढाय नमः भक्तवत्सलाय नमः 80 भस्मोद्धलितविग्रहाय नमः भवाय नमः सामप्रियाय नमः शर्वाय नमः त्रिलोकीशाय नमः २० स्वरमयाय नमः शितिकण्ठाय नमः त्रयीमूर्तये नमः शिवाप्रियाय नमः अनीश्वराय नमः सर्वज्ञाय नमः उग्राय नमः

श्वाष्टात्तरशतनामावालः			580
परमात्मने नमः		सूक्ष्मतनवे नमः	
सोमसूर्याग्निलोचनाय नमः		जगद्यापिने नमः	
हविषे नमः		जगद्गुरवे नमः	
यज्ञमयाय नमः	५०	व्योमकेशाय नमः	
सोमाय नमः		महासेनजनकाय नमः	
पश्चवऋाय नमः		चारुविऋमाय नमः	
सदाशिवाय नमः		रुद्राय नमः	
विश्वेश्वराय नमः		भूतपतये नमः	
वीरभद्राय नमः		स्थाणवे नमः	८०
गणनाथाय नमः		अहये बुध्र्याय नमः	
प्रजापतये नमः		दिगम्बराय नमः	
हिरण्यरेतसे नमः		अष्टमूर्तये नमः	
दुर्धर्षाय नमः		अनेकात्मने नमः	
गिरीशाय नमः	६०	सात्त्विकाय नमः	
गिरिशाय नमः		शुद्धविग्रहाय नमः	
अनघाय नमः		शाश्वताय नमः	
भुजङ्गभूषणाय नमः		खण्डपरशवे नमः	
भर्गाय नमः		अजाय नमः	
गिरिधन्वने नमः		पाशविमोचकाय नमः	90
गिरिप्रियाय नमः		मृडाय नमः	
कृत्तिवाससे नमः		पशुपतये नमः	
पुरारातये नमः		देवाय नमः	
भगवते नमः		महादेवाय नमः	
प्रमथाधिपाय नमः	90	अव्ययाय नमः हरये नमः	
मृत्युञ्जयाय नमः		हरये नमः	
		•	

पृषदन्तभिदे नमः अव्यग्राय नमः

दक्षाध्वरहराय नमः

हराय नमः

भगनेत्रभिदे नमः

अव्यक्ताय नमः

सहस्राक्षाय नमः

सहस्रपदे नमः

अपवर्गप्रदाय नमः

अनन्ताय नमः

तारकाय नमः परमेश्वराय नमः

॥इति शाक्तप्रमोदे श्री-शिवाष्टोत्तरशतनामाविलः सम्पूर्णा॥

## ॥ उत्तराङ्ग-पूजा ॥

विज्यं धर्नुः कप्रदिनो विशंल्यो बार्णवा उत। अनेशन्नस्येषंव आभुरंस्य निषुङ्गिथिः॥ ॐ हीं नमः शिवाय। बलाय नमः। धूपमाघ्रापयामि॥१२॥

या ते हेतिमीं दुष्टम् हस्ते बुभूवं ते धनुः। तया ऽस्मान् विश्वतुस्त्वमंयुक्ष्मया परिंब्युज॥ ॐ हीं नुमः शिवायं। बलप्रमथनाय नर्मः। अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि॥१३॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। + ब्रह्मणे स्वाहाँ। नर्मस्ते अस्त्वायुंधायानांतताय धृष्णवें। उभाभ्यामुत ते नमी बाहुभ्यां तव धन्वने॥ ॐ हीं नुमः शिवायं। सर्वभूतदमनाय नर्मः। () निवेदयामि। मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि। अमृतापिधानमसि।

हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। पादप्रक्षालनं समर्पयामि। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि॥१४॥

परिं ते धन्वनो हेतिरुस्मान्वृणक्त विश्वतः। अथो य इंषुधिस्तवाऽऽरे अस्मन्नि धेहि तम्॥ ॐ हीं नुमः शिवाये। मुनोन्मेनाय नर्मः। कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि॥१५॥

नमंस्ते अस्तु भगवन् विश्वेश्वरायं महादेवायं त्र्यम्बकायं त्रिपुरान्त्कायं त्रिकाग्निकालायं कालाग्निरुद्रायं नीलकृण्ठायं मृत्युञ्जयायं सर्वेश्वरायं सदाशिवायं श्रीमन्महादेवायं नमंः॥ कर्पूरनीराजनं दर्शयामि॥१६॥

#### ॥ रक्षा॥

बृहथ्सामं क्षत्रभृद्घृद्ध वृंष्णियं त्रिष्टुभौजंः शुभितमुग्रवीरम्। इन्द्रस्तोमेन पश्चद्शेन् मध्यंमिदं वातेन् सगेरेण रक्ष॥ रक्षां धारयामि॥

#### ॥ नमस्काराः ॥

- ॐ भवाय देवाय नमः।
- ॐ शर्वाय देवाय नमः।
- ॐ ईशानाय देवाय नमः।
- ॐ पशुपतये देवाय नमः।
- ॐ रुद्राय देवाय नमः।
- ॐ उग्राय देवाय नमः।
- ॐ भीमाय देवाय नमः।
- ॐ महते देवाय नमः॥

ईशानः सर्वविद्यानामिश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मां शिवो में अस्तु सदाशिवोम्॥ ॐ हीं नमः शिवायं। मन्नपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। शिवाय नमः। रुद्राय नमः। पशुपतये नमः। नीलकण्ठाय नमः। महेश्वराय नमः। हिरकेशाय नमः। विरूपाक्षाय नमः। पिनािकने नमः। त्रिपुरान्तकाय नमः। शम्भवे नमः। शूलिने नमः। महादेवाय नमः। इति

द्वादशनामभिर्द्वादशपुष्पाञ्जलीन् दत्त्वा॥ प्रदक्षिणनमस्कारान् कृत्वा॥

## ॥ अर्घ्यप्रदानम्॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम् शिवरात्रौ द्वितीय-याम-पूजान्ते क्षीरार्घ्यप्रदानं करिष्ये॥

> शिवरात्रिव्रतं देव पूजाजपपरायणः। करोमि विधिवद्दत्तं गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते॥

इत्यर्घ्यं दत्त्वा।

मया कृतान्यनेकानि पापानि हर शङ्कर। गृहाणार्घ्यमुमाकान्त शिवरात्रौ प्रसीद मे॥२॥

## ॥ पूजानिवेदनम्॥

पूर्वे नन्दि महाकालौ गणभृङ्गी च दक्षिणे। वृषस्कन्दौ पश्चिमे ते देशकालौ तथोत्तरे। गङ्गा च यमुना पार्श्वे पूजां गृह्ण नमोऽस्तुते॥२॥

यत्किश्चित् कुर्महे देव सदा सुकृतदुष्कृतम्। तन्मे शिवपदस्थस्य भुङ्क्ष क्षपय शङ्कर॥

शिवो दाता शिवो भोक्ता शिवः सर्वमिदं जगत्। शिवो जयति सर्वत्र यः शिवः सोऽहमेव हि॥

### इति प्रार्थ्य॥

देवहृदयस्थं पादस्थं च पुष्पमादाय प्रणम्य देवेन दत्तमिति ध्यात्वा॥

प्रपन्नं पाहि मामीश भीतमृत्युमहार्णवात्। त्वयोपभुक्त-स्रग्-गन्ध-वासो-लङ्कार-चर्चिताः। उच्छिष्टभोजिनो दासास्तव मायां जयेम हि॥ इति मूर्प्नि धृत्वा॥

मन्नहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं महेश्वर। यत्कृतं तु मया देव परिपूर्णं तदस्तु ते॥

अनेन पूजनेन साम्बसदाशिवः प्रीयताम्।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्। करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्बह्मार्पणमस्तु।

# ॥ प्रधान-पूजा — साम्ब-परमेश्वर-पूजा (तृतीय-यामः) ॥

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवणं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुव्रोम्।

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते अद्य ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे किलयुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकणां प्रभवादि षष्ट्याः संवत्सराणां मध्ये ( ) विशे नाम संवत्सरे उत्तरायणे शिशिर-ऋतौ कुम्भ-मासे कृष्ण-पक्षे त्र्योदश्यां/चतुर्दश्यां शुभितिथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर / भान्) वासरयुक्तायाम् ( ) विशे नक्षत्र ( ) विशे नाम योग ( ) करण

६१पृष्टं ६२१ पश्यताम्

<sup>&</sup>lt;sup>६२</sup>पृष्टं ६३१ पश्यताम्

६३ पृष्टं ६३२ पश्यताम्

युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् (त्र्योदश्यां/चतुर्दश्यां) शुभितथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय-आयुरारोग्य-ऐश्वर्याभिवृद्धर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्धर्थं पुत्रपौत्राभिवृद्धर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्धर्थम् मम इहजन्मिन पूर्वजन्मिन जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय-व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्य अपनोदनद्वारा सकल-पापक्षयार्थं शिवरात्रौ श्री-साम्ब-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं तृतीय-यामपूजां करिष्ये।

# ॥ षोडशोपचार-पूजा॥

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं रत्नाकल्पोञ्चलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्। पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पश्चवक्रं त्रिनेत्रम्॥

अस्मिन् बिम्बे श्री-साम्ब-परमेश्वरं ध्यायामि।

नर्मस्ते रुद्र मृन्यवं उतो त् इषंवे नर्मः। नर्मस्ते अस्तु धन्वंने बाहुभ्यांमुत ते नर्मः॥ ॐ हीं नृमः शिवायं। सुद्योजातं प्रंपद्यामि। आवाहयामि॥१॥

या त इषुं शिवतंमा शिवं बुभूवं ते धर्नुः। शिवा शंर्व्यां या तव तयां नो रुद्र मृडय॥ ॐ हीं नुमः शिवायं। सद्योजाताय वै नमो नर्मः। आसनं समर्पयामि॥२॥

या ते रुद्र शिवा तुनूरघोराऽपांपकाशिनी। तयां नस्तुनुवा शन्तंमया गिरिशन्ताभिचांकशीहि॥ ॐ हीं नुमः शिवायं। भवे भवे नाति भवे भवस्व माम्। पादयोः पाद्यं समर्पयामि॥३॥

यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभुष्यस्तेवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हि सीः पुरुषं जगत्॥ ॐ हीं नुमः शिवायं। भवोद्भवाय नर्मः॥ अर्घ्यं समर्पयामि॥४॥

शिवन् वर्चसा त्वा गिरिशाच्छांवदामिस। यथां नः सर्विमिञ्जगंदयक्ष्म र सुमना असंत्॥ ॐ हीं नमः शिवायं। वामदेवाय नमः। आचमनीयं समर्पयामि॥५॥ अध्यंवोचदिधवृक्ता प्रथमो दैव्यों भिषक्। अही ईश्च सर्वांश्चम्य-न्थ्सर्वांश्च यातुधान्यः॥ ॐ हीं नमः शिवायं। ज्येष्ठाय नमः। मधुपर्कं समर्पयामि॥६॥ असौ यस्ताम्रो अंरुण उत बुभुः सुंमङ्गलः। ये चेमार रुद्रा अभितों दिश्च श्रिताः सहस्रशोऽवैषार् हेर्ड ईमहे॥ ॐ हीं नमः शिवायं। श्रेष्ठाय नमः। स्नानं समर्पयामि।

रुद्रम्। चमकम्। पुरुषसूक्तम्॥

स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि॥७॥

साक्षतजलेन तर्पणं कार्यम्॥

ॐ भवं देवं तर्पयामि। ॐ शर्वं देवं तर्पयामि। ॐ ईशानं देवं तर्पयामि। ॐ पशुपतिं देवं तर्पयामि। ॐ रुद्रं देवं तर्पयामि। ॐ उग्रं देवं तर्पयामि। ॐ भीमं देवं तर्पयामि। ॐ महान्तं देवं तर्पयामि॥

ॐ भवस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ शर्वस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ ईशानस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ रुद्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ उग्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ भीमस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ महतो देवस्य पत्नीं तर्पयामि॥

असौ योऽवसर्पति नीलंग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा अंदश्त्रदंशन्नुदहार्यः। उतैनं विश्वां भूतानि स दृष्टो मृंडयाति नः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवायं। रुद्राय नमंः। वस्रोत्तरीयं समर्पयामि॥८॥

नमों अस्तु नीलंग्रीवाय सहस्राक्षायं मीढुषें। अथो ये अंस्य सत्वांनोऽहं तेभ्योऽकरं नमंः॥ ॐ हीं नुमः शिवायं। कालाय नमंः। यज्ञोपवीताभरणानि समर्पयामि॥९॥

प्र मृंश्च धन्वंनस्त्वमुभयोरार्लियोज्याम्। याश्चं ते हस्त इषंवः परा ता भंगवो वप॥ ॐ हीं नमः शिवायं। कलंविकरणाय नमः। दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि अक्षतान् समर्पयामि॥१०॥

अवतत्य धनुस्त्व सहंस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य श्रुल्यानां मुखां शिवो नेः सुमनां भव॥ ॐ हीं नृमः शिवायं। बलंविकरणाय नर्मः। पुष्पैः पूजयामि॥११॥

ॐ भवाय देवाय नमः। ॐ शर्वाय देवाय नमः।
ॐ ईशानाय देवाय नमः। ॐ पशुपतये देवाय नमः।
ॐ रुद्राय देवाय नमः। ॐ उग्राय देवाय नमः।
ॐ भीमाय देवाय नमः। ॐ महते देवाय नमः॥
ॐ भवस्य देवस्य पत्यै नमः। ॐ शर्वस्य देवस्य पत्यै नमः।
ॐ ईशानस्य देवस्य पत्यै नमः। ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्यै नमः।
ॐ रुद्रस्य देवस्य पत्यै नमः। ॐ उग्रस्य देवस्य पत्यै नमः।
ॐ भीमस्य देवस्य पत्यै नमः। ॐ महतो देवस्य पत्यै नमः॥

## ॥ शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः॥

शिवाय नमः
महेश्वराय नमः
शम्भवे नमः
पिनाकिने नमः
शिशेखराय नमः
वामदेवाय नमः

विरूपाक्षाय नमः कपर्दिने नमः नीललोहिताय नमः शङ्कराय नमः शूलपाणये नमः खट्ठाङ्गिने नमः

शिवाष्टोत्तरशतनामाविलः			588
विष्णुवस्रभाय नमः		त्रिपुरान्तकाय नमः	
शिपिविष्टाय नमः		वृषाङ्काय नमः	
अम्बिकानाथाय नमः		वृषभारूढाय नमः	४०
श्रीकण्ठाय नमः		भस्मोद्धृलितविग्रहाय नमः	
भक्तवत्सलाय नमः		सामप्रियाय नमः	
भवाय नमः		स्वरमयाय नमः	
शर्वाय नमः		त्रयीमूर्तये नमः	
त्रिलोकीशाय नमः	२०	अनीश्वराय नमः	
शितिकण्ठाय नमः		सर्वज्ञाय नमः	
शिवाप्रियाय नमः		परमात्मने नमः	
उग्राय नमः		सोमसूर्याग्निलोचनाय नमः	
कपालिने नमः		हविषे नमः	
कामारये नमः		यज्ञमयाय नमः	५०
अन्धकासुरसूदनाय नमः		सोमाय नमः	
गङ्गाधराय नमः		पञ्चवऋाय नमः	
ललाटाक्षाय नमः		सदाशिवाय नमः	
कालकालाय नमः		विश्वेश्वराय नमः	
कृपानिधये नमः	३०	वीरभद्राय नमः	
भीमाय नमः		गणनाथाय नमः	
परशुहस्ताय नमः		प्रजापतये नमः	
मृगपाणये नमः		हिरण्यरेतसे नमः	
जटाधराय नमः		दुर्धर्षाय नमः	
कैलासवासिने नमः		गिरीशाय नमः	६०
कवचिने नमः		गिरिशाय नमः	
कठोराय नमः		अनघाय नमः	
		I	

भुजङ्गभूषणाय नमः		शुद्धविग्रहाय नमः	
भर्गाय नमः		शाश्वताय नमः	
गिरिधन्वने नमः		खण्डपरशवे नमः	
गिरिप्रियाय नमः		अजाय नमः	
कृत्तिवाससे नमः		पाशविमोचकाय नमः	९०
पुरारातये नमः		मृडाय नमः	
भगवते नमः		पशुपतये नमः	
प्रमथाधिपाय नमः	७०	देवाय नमः	
मृत्युञ्जयाय नमः		महादेवाय नमः	
सूक्ष्मतनवे नमः		अव्ययाय नमः	
जगद्यापिने नमः		हरये नमः	
जगद्गुरवे नमः		पूषदन्तभिदे नमः	
व्योमकेशाय नमः		अव्यग्राय नमः	
महासेनजनकाय नमः		दक्षाध्वरहराय नमः	
चारुविक्रमाय नमः		हराय नमः	१००
रुद्राय नमः		भगनेत्रभिदे नमः	
भूतपतये नमः		अव्यक्ताय नमः	
स्थाणवे नमः	८०	सहस्राक्षाय नमः	
अहये बुध्र्याय नमः		सहस्रपदे नमः	
दिगम्बराय नमः		अपवर्गप्रदाय नमः	
अष्टमूर्तये नमः		अनन्ताय नमः	
अनेकात्मने नमः		तारकाय नमः	
सात्त्विकाय नमः		परमेश्वराय नमः	

## ॥ उत्तराङ्ग-पूजा॥

विज्यं धर्नुः कप्रदिनो विशंल्यो बार्णवा । उत्। अनेशन्नस्येषंव आभुरंस्य निषुङ्गर्थिः॥ ॐ हीं नुमः शिवाये। बलाय नर्मः। धूपमाघ्रापयामि॥१२॥

या तें हेतिर्मीं ढुष्टम् हस्तें बुभूवं ते धर्नुः। तयाऽस्मान् विश्वतस्त्वमंयक्ष्मया परिञ्जा ॐ हीं नमः शिवायं। बलंप्रमथनाय नर्मः। अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि॥१३॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। + ब्रह्मणे स्वाहाँ। नमंस्ते अस्त्वायुंधायानांतताय धृष्णवेँ। उभाभ्यांमुत ते नमों बाहुभ्यां तव धन्वंने॥ ॐ हीं नमः शिवायं। सर्वभूतदमनाय नमंः। () निवेदयामि। मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि। अमृतापिधानमसि।

हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। पादप्रक्षालनं समर्पयामि। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि॥१४॥

परिं ते धन्वंनो हेतिर्स्मान्वृंणक्त विश्वतः। अथो य इंषुधिस्तवाऽऽरे अस्मन्नि धेहि तम्॥ ॐ हीं नमः शिवायं। मनोन्मंनाय नमः। कर्प्रताम्बूलं समर्पयामि॥१५॥

नर्मस्ते अस्तु भगवन् विश्वेश्वरायं महादेवायं त्र्यम्बकायं त्रिपुरान्तकायं त्रिकाग्निकालायं कालाग्निरुद्रायं नीलकण्ठायं मृत्युञ्जयायं सर्वेश्वरायं सदाशिवायं श्रीमन्महादेवायं नर्मः॥ कर्पूरनीराजनं दर्शयामि॥१६॥

#### ॥ रक्षा ॥

बृहथ्सामं क्षत्रभृद्घृद्ध वृंष्णियं त्रिष्टुभौजंः शुभितमुग्रवीरम्। इन्द्रस्तोमेन पश्चद्शेन् मध्यंमिदं वातेन् सगरेण रक्ष॥
रक्षां धारयामि॥

#### ॥ नमस्काराः॥

- ॐ भवाय देवाय नमः।
- ॐ शर्वाय देवाय नमः।
- ॐ ईशानाय देवाय नमः।
- ॐ पशुपतये देवाय नमः।
- ॐ रुद्राय देवाय नमः।
- ॐ उग्राय देवाय नमः।
- ॐ भीमाय देवाय नमः।
- ॐ महते देवाय नमः॥

ईशानः सर्वविद्यानामिश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मां शिवो में अस्तु सदाशिवोम्॥ ॐ हीं नमः शिवायं। मन्नपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। शिवाय नमः। रुद्राय नमः। पशुपतये नमः। नीलकण्ठाय नमः। महेश्वराय नमः। हरिकेशाय नमः। विरूपाक्षाय नमः। पिनािकने नमः। त्रिपुरान्तकाय नमः। शम्भवे नमः। शूलिने नमः। महादेवाय नमः। इति द्वादशनामिर्द्वादशपुष्पाञ्जलीन् दत्त्वा॥

प्रदक्षिणनमस्कारान् कृत्वा॥

## ॥ अर्घ्यप्रदानम्॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम् शिवरात्रौ तृतीय-याम-पूजान्ते क्षीरार्घ्यप्रदानं करिष्ये॥

> शिवरात्रिव्रतं देव पूजाजपपरायणः। करोमि विधिवद्दत्तं गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते॥

### इत्यर्घ्यं दत्त्वा।

शिवरात्रिव्रतं देव पूजाजपपरायणः। करोमि विधिवद्दत्तं गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते॥निशीथे॥

दुःखदारिद्यभारैश्च दग्धोऽहं पार्वतीपते। त्रायस्व मां महादेव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते॥३॥

## ॥ पूजानिवेदनम्॥

नमोऽव्यक्ताय सूक्ष्माय नमस्ते त्रिपुरान्तक। पूजां गृहाण देवेश यथाशक्त्युपपादिताम्॥३॥

यत्किश्चित् कुर्महे देव सदा सुकृतदुष्कृतम्। तन्मे शिवपदस्थस्य भुङ्क्ष क्षपय शङ्कर॥

शिवो दाता शिवो भोक्ता शिवः सर्वमिदं जगत्। शिवो जयति सर्वत्र यः शिवः सोऽहमेव हि॥

### इति प्रार्थ्य॥

देवहृदयस्थं पादस्थं च पुष्पमादाय प्रणम्य देवेन दत्तमिति ध्यात्वा॥

प्रपन्नं पाहि मामीश भीतमृत्युमहार्णवात्। त्वयोपभुक्त-स्रग्-गन्ध-वासो-लङ्कार-चर्चिताः। उच्छिष्टभोजिनो दासास्तव मायां जयेम हि॥

## इति मूर्प्नि धृत्वा॥

मन्नहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं महेश्वर। यत्कृतं तु मया देव परिपूर्णं तदस्तु ते॥

अनेन पूजनेन साम्बसदाशिवः प्रीयताम्।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्। करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्बह्मार्पणमस्तु।

# ॥ प्रधान-पूजा — साम्ब-परमेश्वर-पूजा (चतुर्थ-यामः) ॥

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवणं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुव्रोम्।

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते अद्य ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे किलयुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकणां प्रभवादि षष्ट्याः संवत्सराणां मध्ये ( ) व्याप्त वर्तमाने व्यावहारिकणां प्रभवादि षष्ट्याः संवत्सराणां मध्ये ( ) व्याप्त वर्त्त वर्त्तमाने वर्त्त वर्त्तमाने क्षिण-पक्षे व्योदश्यां/चतुर्दश्यां शुभितथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर / भानु) वासरयुक्तायाम् ( ) वर्षि नक्षत्र ( ) वर्षि नाम योग ( ) करण युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् (त्र्योदश्यां/चतुर्दश्यां) शुभितथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय-आयुरारोग्य-ऐश्वर्याभिवृद्धर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्धर्थं पुत्रपौत्राभिवृद्धर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्धर्थम् मम इहजन्मिन पूर्वजन्मिन जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय-व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां

<sup>&</sup>lt;sup>६४</sup>पृष्टं ६२१ पश्यताम्

६५ पृष्टं ६३१ पश्यताम्

६६ पृष्टं ६३२ पश्यताम्

प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्य अपनोदनद्वारा सकल-पापक्षयार्थं शिवरात्रौ श्री-साम्ब-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं चतुर्थ-यामपूजां करिष्ये।

# ॥ षोडशोपचार-पूजा॥

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं रत्नाकल्पोञ्चलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्। पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्रं त्रिनेत्रम्॥

अस्मिन् बिम्बे श्री-साम्ब-परमेश्वरं ध्यायामि।

नर्मस्ते रुद्र मृन्यवं उतो तृ इषंवे नर्मः। नर्मस्ते अस्तु धन्वंने बाहुभ्यांमुत ते नर्मः॥ ॐ हीं नृमः शिवायं। सुद्योजातं प्रंपद्यामि। आवाहयामि॥१॥ या तृ इषुः शिवतंमा शिवं बुभूवं ते धनुः। शिवा शंर्व्यां या तव तयां नो रुद्र मृडय॥ ॐ हीं नृमः शिवायं। सुद्योजाताय वै नमो नर्मः। आसनं समर्पयामि॥२॥

या तें रुद्र शिवा तुनूरघोराऽपांपकाशिनी। तयां नस्तुनुवा शन्तंमया गिरिंशन्ताभिचांकशीहि॥ ॐ हीं नुमः शिवायं। भवे भवे नातिं भवे भवस्व माम्। पादयोः पाद्यं समर्पयामि॥३॥

यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभूष्यस्तेव। शिवां गिरित्र तां कुंरु मा हिर्सीः पुरुषं जगत्॥ ॐ हीं नमः शिवायं। भ्वोद्भवाय नमः॥ अर्ध्यं समर्पयामि॥४॥ शिवेन वर्चसा त्वा गिरिशाच्छांवदामिस। यथां नः सर्वमिञ्जगंदयक्ष्म र सुमना असंत्॥ ॐ हीं नमः शिवायं। वामदेवाय नमः। आचमनीयं समर्पयामि॥५॥ अध्यंवोचदिधवृक्ता प्रथमो दैव्यों भिषक्। अही ईश्च सर्वांश्चम्भय-न्थ्सर्वांश्च यातुधान्यः॥ ॐ हीं नमः शिवायं। ज्येष्ठाय नमः। मधुपर्कं समर्पयामि॥६॥

असौ यस्ताम्रो अंरुण उत बुभुः सुंमुङ्गलंः। ये चेमा॰ रुद्रा अभितों दिक्षु श्रिताः संहस्रशोऽवैषा॰ हेर्ड ईमहे॥ ॐ हीं नुमः शिवायं। श्रेष्ठाय नमंः। स्नानं समर्पयामि।

रुद्रम्। चमकम्। पुरुषसूक्तम्॥

स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि॥७॥

साक्षतजलेन तर्पणं कार्यम्॥

ॐ भवं देवं तर्पयामि। ॐ शर्वं देवं तर्पयामि। ॐ ईशानं देवं तर्पयामि। ॐ पशुपतिं देवं तर्पयामि। ॐ रुद्रं देवं तर्पयामि। ॐ उग्रं देवं तर्पयामि। ॐ भीमं देवं तर्पयामि। ॐ महान्तं देवं तर्पयामि॥

ॐ भवस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ शर्वस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ ईशानस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ रुद्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ उग्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ भीमस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ महतो देवस्य पत्नीं तर्पयामि॥

असौ योंऽवसर्पति नीलंग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा अंदश्त्रदंशन्नुदहार्यः। उतैनं विश्वा भूतानि स दृष्टो मृंडयाति नः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवायं। रुद्राय नमंः। वस्रोत्तरीयं समर्पयामि॥८॥

नमों अस्तु नीलंग्रीवाय सहस्राक्षायं मीढुषें। अथो ये अस्य सत्वांनोऽहं तेभ्योंऽकरं नमंः॥ ॐ हीं नमः शिवायं। कालाय नमंः। यज्ञोपवीताभरणानि समर्पयामि॥९॥

प्र मृंश्च धन्वंनस्त्वमुभयोरार्लियोज्याम्। याश्चं ते हस्त इषंवः परा ता भंगवो वप॥ ॐ हीं नमः शिवायं। कलंविकरणाय नमः। दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि अक्षतान् समर्पयामि॥१०॥

अवृतत्य धनुस्त्व सहंस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य श्लयानां मुखां शिवो नंः सुमनां भव॥ ॐ हीं नृमः शिवायं। बलंविकरणाय नमंः। पुष्पैः पूजयामि॥११॥

ॐ भवाय देवाय नमः। ॐ शर्वाय देवाय नमः।
ॐ ईशानाय देवाय नमः। ॐ पशुपतये देवाय नमः।
ॐ रुद्राय देवाय नमः। ॐ उग्राय देवाय नमः॥
ॐ भीमाय देवाय नमः। ॐ महते देवाय नमः॥
ॐ भवस्य देवस्य पत्यै नमः। ॐ शर्वस्य देवस्य पत्यै नमः।
ॐ ईशानस्य देवस्य पत्यै नमः। ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्यै नमः।
ॐ रुद्रस्य देवस्य पत्यै नमः। ॐ उग्रस्य देवस्य पत्यै नमः।
ॐ भीमस्य देवस्य पत्यै नमः। ॐ महतो देवस्य पत्यै नमः॥

## ॥ शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः॥

खट्वाङ्गिने नमः शिवाय नमः विष्णुवल्लभाय नमः महेश्वराय नमः शम्भवे नमः शिपिविष्टाय नमः पिनाकिने नमः अम्बिकानाथाय नमः शशिशेखराय नमः श्रीकण्ठाय नमः वामदेवाय नमः भक्तवत्सलाय नमः विरूपाक्षाय नमः भवाय नमः कपर्दिने नमः शर्वाय नमः नीललोहिताय नमः त्रिलोकीशाय नमः २० शितिकण्ठाय नमः शङ्कराय नमः श्लपाणये नमः शिवाप्रियाय नमः

शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः			597
उग्राय नमः		सोमसूर्याग्निलोचनाय नमः	
कपालिने नमः		हविषे नमः	
कामारये नमः		यज्ञमयाय नमः	५०
अन्धकासुरसूदनाय नमः		सोमाय नमः	
गङ्गाधराय नमः		पञ्चवऋाय नमः	
ललाटाक्षाय नमः		सदाशिवाय नमः	
कालकालाय नमः		विश्वेश्वराय नमः	
कृपानिधये नमः	३०	वीरभद्राय नमः	
भीमाय नमः		गणनाथाय नमः	
परशुहस्ताय नमः		प्रजापतये नमः	
मृगपाणये नमः		हिरण्यरेतसे नमः	
जटाधराय नमः		दुर्धर्षाय नमः	
कैलासवासिने नमः		गिरीशाय नमः	६०
कवचिने नमः		गिरिशाय नमः	
कठोराय नमः		अनघाय नमः	
त्रिपुरान्तकाय नमः		भुजङ्गभूषणाय नमः	
वृषाङ्काय नमः		भर्गाय नमः	
वृषभारूढाय नमः	४०	गिरिधन्वने नमः	
भस्मोद्धूलितविग्रहाय नमः		गिरिप्रियाय नमः	
सामप्रियाय नमः		कृत्तिवाससे नमः	
स्वरमयाय नमः		पुरारातये नमः	
त्रयीमूर्तये नमः		भगवते नमः	
अनीश्वराय नमः		प्रमथाधिपाय नमः	90
सर्वज्ञाय नमः		मृत्युञ्जयाय नमः	
परमात्मने नमः		सूक्ष्मतनवे नमः	
		ı	

800

जगद्धापिने नमः जगद्गुरवे नमः

व्योमकेशाय नमः महासेनजनकाय नमः

चारुविक्रमाय नमः

रुद्राय नमः

भूतपतये नमः स्थाणवे नमः

अहये बुध्याय नमः

विगम्बराय नमः

अष्टमूर्तये नमः

अनेकात्मने नमः सात्त्विकाय नमः

शुद्धविग्रहाय नमः

शाश्वताय नमः

खण्डपरशवे नमः

अजाय नमः

पाशविमोचकाय नमः

काय नमः ९

मृडाय नमः

पशुपतये नमः

देवाय नमः

महादेवाय नमः

अव्ययाय नमः हरये नमः

पूषदन्तभिदे नमः

अव्यग्राय नमः

दक्षाध्वरहराय नमः

हराय नमः भगनेत्रभिदे नमः

अव्यक्ताय नमः

सहस्राक्षाय नमः सहस्रपदे नमः

अपवर्गप्रदाय नमः

अनन्ताय नमः

तारकाय नमः

परमेश्वराय नमः

॥इति शाक्तप्रमोदे श्री-शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा॥

60

## ॥ उत्तराङ्ग-पूजा॥

विज्यं धर्नुः कप्रदिनो विशंल्यो बार्णवा । उत्। अनेशन्नस्येषंव आभुरंस्य निषुङ्गर्थिः॥ ॐ हीं नुमः शिवाये। बलाय नर्मः। धूपमाघ्रापयामि॥१२॥

या ते हेतिर्मीं ढुष्टम् हस्ते बुभूवं ते धर्नुः। तयाऽस्मान् विश्वतस्त्वमंयक्ष्मया परिन्युज॥ ॐ हीं नृमः शिवायं। बलंप्रमथनाय नर्मः। अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि॥१३॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। + ब्रह्मणे स्वाहाँ। नमंस्ते अस्त्वायुंधायानांतताय धृष्णवेँ। उभाभ्यांमुत ते नमों बाहुभ्यां तव धन्वंने॥ ॐ हीं नमः शिवायं। सर्वभूतदमनाय नमंः। () निवेदयामि। मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि। अमृतापिधानमसि।

हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। पादप्रक्षालनं समर्पयामि। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि॥१४॥

परिं ते धन्वंनो हेतिर्स्मान्वृंणक्त विश्वतः। अथो य इंषुधिस्तवाऽऽरे अस्मन्नि धेहि तम्॥ ॐ हीं नमः शिवायं। मनोन्मंनाय नमः। कर्प्रताम्बूलं समर्पयामि॥१५॥

नर्मस्ते अस्तु भगवन् विश्वेश्वरायं महादेवायं त्र्यम्बकायं त्रिपुरान्तकायं त्रिकाग्निकालायं कालाग्निरुद्रायं नीलकण्ठायं मृत्युञ्जयायं सर्वेश्वरायं सदाशिवायं श्रीमन्महादेवायं नर्मः॥ कर्पूरनीराजनं दर्शयामि॥१६॥

#### ॥ रक्षा ॥

बृहथ्सामं क्षत्रभृद्वृद्ध वृंष्णियं त्रिष्टुभौजंः शुभितमुग्रवीरम्। इन्द्रस्तोमेन पश्चद्रशेन मध्यंमिदं वातेन सगरेण रक्ष॥
रक्षां धारयामि॥

#### ॥ नमस्काराः ॥

- ॐ भवाय देवाय नमः।
- ॐ शर्वाय देवाय नमः।
- ॐ ईशानाय देवाय नमः।
- ॐ पशुपतये देवाय नमः।
- ॐ रुद्राय देवाय नमः।
- 🕉 उग्राय देवाय नमः।
- ॐ भीमाय देवाय नमः।
- ॐ महते देवाय नमः॥

ईशानः सर्वविद्यानामिश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मां शिवो में अस्तु सदाशिवोम्॥ ॐ हीं नमः शिवायं। मन्नपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। शिवाय नमः। रुद्राय नमः। पशुपतये नमः। नीलकण्ठाय नमः। महेश्वराय नमः। हरिकेशाय नमः। विरूपाक्षाय नमः। पिनािकने नमः। त्रिपुरान्तकाय नमः। शम्भवे नमः। शूलिने नमः। महादेवाय नमः। इति द्वादशनामिर्द्वादशपुष्पाञ्जलीन् दत्त्वा॥

प्रदक्षिणनमस्कारान् कृत्वा॥

## ॥ अर्घ्यप्रदानम्॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम् शिवरात्रौ चतुर्थ-याम-पूजान्ते क्षीरार्घ्यप्रदानं करिष्ये॥

> शिवरात्रिव्रतं देव पूजाजपपरायणः। करोमि विधिवद्दत्तं गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते॥

### इत्यर्घ्यं दत्त्वा।

किं न जानासि देवेश त्विय भक्तिं प्रयच्छ मे। स्वपादाग्रतले देव दास्यं देहि जगत्पते॥४॥

## ॥ पूजानिवेदनम्॥

बद्धोऽहं विविधेः पाशैः संसारभयबन्धनैः। पतितं मोहजाले मां त्वं समुद्धर शङ्कर॥४॥

यत्किश्चित् कुर्महे देव सदा सुकृतदुष्कृतम्। तन्मे शिवपदस्थस्य भुङ्क क्षपय शङ्कर॥

शिवो दाता शिवो भोक्ता शिवः सर्वमिदं जगत्। शिवो जयति सर्वत्र यः शिवः सोऽहमेव हि॥

इति प्रार्थ्य॥

देवहृदयस्थं पादस्थं च पुष्पमादाय प्रणम्य देवेन दत्तमिति ध्यात्वा॥

प्रपन्नं पाहि मामीश भीतमृत्युमहार्णवात्। त्वयोपभुक्त-स्रग्-गन्ध-वासो-लङ्कार-चर्चिताः। उच्छिष्टभोजिनो दासास्तव मायां जयेम हि॥

इति मूर्प्नि धृत्वा॥

मन्नहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं महेश्वर। यत्कृतं तु मया देव परिपूर्णं तदस्तु ते॥

अनेन पूजनेन साम्बसदाशिवः प्रीयताम्।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्। करोमि यद्यत् सकलं परस्मे नारायणायेति समर्पयामि॥

### ॐ तत्सद्बह्मार्पणमस्तु।

## ॥ उत्तरस्मिन् दिने पारणम्॥

संसारक्लेशदग्धस्य व्रतेनानेन शङ्कर। प्रसीद सुमुखो नाथ ज्ञानदृष्टिप्रदो भव॥



# ॥ श्री-सावित्री-व्रतम् – कामाक्षी-पूजा ॥

## ॥ पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा॥

(आचम्य)

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवणं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुव्रोम्। (अप उपस्पृश्य, पृष्पाक्षतान् गृहीत्वा) ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः अविघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गणानां त्वा गणपंति हवामहे कविं केवीनामुंपमश्रंवस्तमम्। ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत् आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद् सादनम्॥

अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।
ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।
पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरघ्यं समर्पयामि।
आचमनीयं समर्पयामि।
ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।
स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।
वस्नार्थमक्षतान् समर्पयामि।
यज्ञोपवीताभरणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।
दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।
गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

## पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

#### ॥ अर्चना ॥

१. ॐ सुमुखाय नमः

९. ॐ धूमकेतवे नमः

२. ॐ एकदन्ताय नमः

१०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः

३. ॐ कपिलाय नमः

११. ॐ फालचन्द्राय नमः

४. ॐ गजकर्णकाय नमः

१२. ॐ गजाननाय नमः

५. ॐ लम्बोदराय नमः

१३. ॐ वऋतुण्डाय नमः

६. ॐ विकटाय नमः

१४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः

७. ॐ विघ्नराजाय नमः १५. ॐ हेरम्बाय नमः

८. ॐ विनायकाय नमः

१६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाघ्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्प्रनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वऋतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ। अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि। छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

## ॥ प्रधान-पूजा — श्रीकामाक्षी-पूजा॥

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवणं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

#### ॥सङ्कल्पः॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते अद्य ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे किलयुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकाणां प्रभवादीनां षष्ट्याः संवत्सराणां मध्ये () १७ नाम संवत्सरे उत्तरायणे शिशिर-ऋतौ (कुम्भ)-मासे ()पक्षे () शुभितथौ ()-वासरयुक्तायाम् () १० नक्षत्र () १० नाम योग () १० करणयुक्तायां च एवं-गुण-विशेषण-विशिष्टायाम् अस्याम् () शुभितथौ ममोपात्त-समस्त-दुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वर-प्रीत्यर्थं कामाक्ष्याः प्रीत्यर्थं कामाक्ष्याः प्रसादेन मम दीर्घ सौमाङ्गल्य-अवास्यर्थं मम भर्तृश्च अन्योन्यप्राप्त्यर्थम् अवियोगार्थं श्रीकामाक्षी पूजां करिष्ये। तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। शोभनार्थे क्षेमाय पुनरागमनाय च। (गणपति-प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

<sup>६७</sup>पृष्टं ६२१ पश्यताम्

<sup>&</sup>lt;sup>६८</sup>पृष्टं ६३१ पश्यताम्

<sup>&</sup>lt;sup>६९</sup>पृष्टं ६३२ पश्यताम्

७°पृष्टं ६३३ पश्यताम्

#### ॥ आसन-पूजा॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चासनं कुरु॥

#### ॥ घण्टा-पूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्। घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

#### ॥ कलश-पूजा॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः। ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाह्यामि। (अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्) आपो वा इद सर्वं विश्वां भूतान्यापः प्राणा वा आपः पृशव आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापृश्छन्दाः स्यापो ज्योतीः इष्यापो यजू इष्यापः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भवः सुवराप ओम्॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः। अङ्गेश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥ सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च ह्रदा नदाः। आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥ ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवंः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

#### ॥ आत्म-पूजा॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

१. ॐ आत्मने नमः

४. ॐ जीवात्मने नमः

२. ॐ अन्तरात्मने नमः

५. ॐ परमात्मने नमः

३. ॐ योगात्मने नमः

६. ॐ ज्ञानात्मने नमः

#### समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः। त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

## ॥ पीठ-पूजा॥

१. ॐ आधारशक्त्ये नमः

८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः

२. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः

९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः

३. ॐ आदिकूर्माय नमः

१०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः

४. ॐ आदिवराहाय नमः

११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः

५. ॐ अनन्ताय नमः

१२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः

६. ॐ पृथिव्यै नमः

१३. ॐ सितचामराभ्यां नमः

७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः

१४. ॐ योगपीठासनाय नमः

#### ॥ गुरु-ध्यानम्॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

#### ध्यानम्—

एकाम्रनाथ-दियतां कामाक्षीं भुवनेश्वरीम्। ध्यायामि हृदये देवीं वाञ्छितार्थप्रदायिनीम्॥

#### कामाक्षीं ध्यायामि।

सर्वमङ्गल-माङ्गल्ये शिवे सर्वार्थदायिनि। आवाहयामि कुम्भेऽस्मिन् मम माङ्गल्य-सिद्धये॥

### कामाक्षीं आवाहयामि।

कामाक्षि वरदे देवि काश्चनेन विनिर्मितम्। भक्त्या दास्ये स्वीकुरुष्व वरदा भव चासनम्॥

कामाक्ष्यै नमः, आसनं समर्पयामि।

गङ्गादि-सर्व-तीर्थेभ्यः नदीभ्यश्च समाहृतम्। पाद्यं सम्प्रददे देवि गृहाण त्वं शिवप्रिये॥ कामाक्ष्ये नमः, पाद्यं समर्पयामि।

कामाक्षि स्वर्ण-कलशेनाहृतं च मया शिवे। मधुकैटभ-हन्नि त्वं ददाम्यर्घ्यं गृहाण भोः॥ कामाक्ष्ये नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।

आचम्यतां महादेवि एलोशीर-सुवासितम्। ददामि तीर्थममलं गृहीत्वा लोकरक्षके॥

#### कामाक्ष्यै नमः, आचमनीयं समर्पयामि।

मधुपर्कं मया देवि काश्चीपुर-निवासिनि। स्वीकृत्य दयया देहि चिरं मह्यं तु मङ्गलम्॥ कामाक्ष्ये नमः, मधुपर्कं समर्पयामि।

पश्चामृतिमदं दिव्यं पश्चपातक-नाशनम्। पश्चभूतात्मके देवि पाहि स्वीकृत्य शङ्करि॥ कामाक्ष्ये नमः, पश्चामृत-स्नानं समर्पयामि।

स्नास्यतां पापनाशाय या प्रवृत्ता सुरापगा। मयाऽर्पिता त्वं गृह्णीष्व प्रीता भव दयानिधे॥

कामाक्ष्यै नमः, स्नानं समर्पयामि।

दुकूलान्यम्बराणीह वस्त्राणि विविधानि च। ददामि हरदेवीशि विद्याधिष्टान-पीठिके॥ कामाक्ष्यै नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

उपवीतं मया प्रीत्यै काश्चनेन विनिर्मितम्। गृहीत्वा तव मे भक्तिं प्रयच्छ करुणानिधे॥ कामाक्ष्यै नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

गन्धं सुवासितं रत्नं कुङ्कमान्वितम् अम्बिके। गङ्गानुजे देहि मह्यं दीर्घमङ्गल-सूत्रकम्॥

कामाक्ष्यै नमः, गन्धान् धारयामि। हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि।

कार्पास-सूत्रं दास्यामि सुवर्णमणि-संयुतम्। भूषणार्थं मयाऽऽनीतं देहि मे वरमुत्तमम्॥

#### कामाक्ष्यै नमः, मङ्गलसूत्रं समर्पयामि।

जातीचम्पक-पुन्नाग-केतकी-वकुलानि च। मयाऽर्पितानि सुभगे गृहाण जननि मम॥

## कामाक्ष्ये नमः, पुष्पाणि समर्पयामि।

### अङ्ग-पूजा

कामाक्ष्यै नमः कल्मषद्रयै नमः विद्याप्रदायिन्यै नमः

करुणामृत-सागरायै नमः

वरदायै नमः

काश्चीनगर-वासिन्यै नमः

कन्दर्प-जनन्यै नमः

पुरमथन-पुण्यकोट्यै नमः

महाज्ञान-दायिन्यै नमः

लोकमात्रे नमः

मायायै नमः

मधुरवेणी-सहोदर्ये नमः एकाम्र-नाथाये नमः

कामकोटि-निलयायै नमः

कामेश्वर्ये नमः

कामितार्थ-दायिन्यै नमः

कामाक्ष्ये नमः

पादौ पूजयामि

गुल्फौ पूजयामि

जङ्घे पूजयामि

जानुनी पूजयामि

ऊरू पूजयामि

कटिं पूजयामि

नाभिं पूजयामि

वक्षः पूजयामि

स्तनौ पूजयामि

कण्ठं पूजयामि

नेत्रे पूजयामि

ललाटं पूजयामि

कर्णौ पूजयामि

शिरः पूजयामि चिकुरं पूजयामि

धम्मिल्लं पूजयामि

सर्वाण्यङ्गानि पूजयामि

### श्री कामाक्ष्यष्टोत्तरशतनामाविलः

कालकण्ठ्ये नमः त्रिपुरायै नमः बालायै नमः मायायै नमः त्रिपुरसुन्दर्ये नमः सुन्दर्ये नमः सौभाग्यवत्यै नमः क्रीङ्कार्ये नमः सर्वमङ्गलाये नमः ऐङ्कार्ये नमः स्कन्दजनन्ये नमः परायै नमः पश्चदशाक्षर्ये नमः त्रैलोक्यमोहनाधीशायै नमः सर्वाशापूरवल्लभायै नमः सर्वसङ्गोभणाधीशायै नमः सर्वसौभाग्यवल्लभाये नमः सर्वार्थसाधकाधीशायै नमः सर्वरक्षाकराधिपायै नमः सर्वरोगहराधीशायै नमः सर्वसिद्धिप्रदाधिपायै नमः सर्वानन्दमयाधीशायै नमः योगिनीचऋनायिकायै नमः

भक्तानुरक्तायै नमः रक्ताङ्गी नमः शङ्करार्धशरीरिण्यै नमः पुष्पबाणेक्षुकोदण्डपाशाङ्कुशकरायै नमः उज्वलायै नमः सिचदानन्दलहर्ये नमः श्रीविद्यायै नमः ₹0 परमेश्वर्ये नमः अनङ्गकुसुमोद्यानायै नमः 80 चक्रेश्वर्ये नमः भुवनेश्वर्ये नमः गुप्तायै नमः गुप्ततरायै नमः नित्यायै नमः नित्यक्लिन्नायै नमः मदद्रवाये नमः मोहिन्यै नमः 80 परमानन्दाये नमः कामेश्यै नमः २० तरुणीकलायै नमः श्रीकलावत्यै नमः भगवत्यै नमः

श्री कामाक्ष्यष्टोत्तरशतनामावलिः			612
पद्मरागकिरीटायै नमः		विशुद्धिचऋनिलयायै नमः	
रक्तवस्रायै नमः		आज्ञापद्मनिवासिन्यै नमः	
रक्तभूषायै नमः		अष्टत्रिंशत्कलामूर्त्ये नमः	
रक्तगन्धानुलेपनायै नमः		सुषुम्नाद्वारमध्यकायै नमः	
सौगन्धिकलसद्वेण्यै नमः	५०	योगीश्वरमनोध्येयायै नमः	
मन्त्रिण्यै नमः		परब्रह्मस्वरूपिण्यै नमः	
तन्नरूपिण्ये नमः		चतुर्भुजायै नमः	
तत्वमय्यै नमः		चन्द्रचूडायै नमः	
सिद्धान्तपुरवासिन्यै नमः		पुराणागमरूपिण्यै नमः	
श्रीमत्यै नमः		ओङ्कार्यै नमः	८०
चिन्मय्यै नमः		विमलायै नमः	
देव्यै नमः		विद्यायै नमः	
कौलिन्यै नमः		पश्चप्रणवरूपिण्यै नमः	
परदेवतायै नमः		भूतेश्वर्ये नमः	
कैवल्यरेखायै नमः	६०	भूतमय्यै नमः	
वशिन्यै नमः		पञ्चाशत्पीठरूपिण्यै नमः	
सर्वेश्वर्ये नमः		षोडान्यासमहारूपिण्यै नमः	
सर्वमातृकायै नमः		कामाक्ष्यै नमः	
विष्णुस्वस्रे नमः		दशमातृकायै नमः	
वेदमय्यै नमः		आधारशत्त्रये नमः	९०

अरुणायै नमः

त्रिपुरभैरव्यै नमः

रहःपूजासमालोलायै नमः

रहोयन्रस्वरूपिण्यै नमः

लक्ष्म्यै नमः

90

सर्वसम्पत्प्रदायिन्यै नमः

किङ्करीभूतगीर्वाण्यै नमः

सुतवापिविनोदिन्यै नमः

मणिपूरसमासीनायै नमः

अनाहताज्जवासिन्यै नमः

त्रिकोणमध्यनिलयायै नमः वृत्तत्रयवासिन्यै नमः

बिन्दुमण्डलवासिन्यै नमः चतुरस्रस्वरूपास्यायै नमः

वसुकोणपुरावासायै नमः नवचऋस्वरूपिण्यै नमः

दशारद्वयवासिन्यै नमः महानित्यायै नमः

चतुर्दशारचऋस्थायै नमः १०० विजयायै नमः

वसुपद्मनिवासिन्यै नमः श्रीराजराजेश्वर्यै नमः १०८

स्वराज्जपत्रनिलयायै नमः

एकाम्रनाथ-दियते काश्चीपुर-निवासिनि। धूपं गृहाण देवि त्वं सर्वाभीष्ट-प्रदायिनि॥ कामाक्ष्ये नमः, धूपम् आघ्रापयामि।

घृतवर्ति-समायुक्तं सर्वलोक-प्रकाशकम्। दीपं गृह्णीष्व सुभगे वाञ्छितार्थ-प्रदायिनि॥

कामाक्ष्यै नमः, दीपं सन्दर्शयामि।

गुडापूपत्रयं देवि साढकं प्रददाम्यहम्। नवनीतयुतं देवि मोदकापूपसंयुतम्॥

पायसं सघृतं दद्यां सफलं लड्डुकान्वितम्। मम भर्तुस्सदा देवि गृहीत्वा प्रीतिदा भव॥

कामाक्ष्यै नमः, नैवेद्यं निवेदयामि।

पूगीफल-समायुक्तं नागविल्लदिलैर्युतम्। कर्पूरचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

कामाक्ष्यै नमः, कर्पूरताम्बूलं निवेदयामि।

कर्पूरदीपं सुभगे सर्वमङ्गल-वर्धनम्। सर्वव्याधिहरं देवि गृह्यताम् अम्बिके शिवे॥

कामाक्ष्यै नमः, मम दीर्घसौमाङ्गल्यता-सिद्धार्थं कर्पूर-नीराञ्जनं सन्दर्शयामि।

कान्ता कामद्घा करीन्द्रगमना कामारिवामाङ्कगा कल्याणी कलितावतारसुभगा कस्तूरिकाचर्चिता। कम्पातीररसालमूलनिलया कारुण्यकल्लोलिनी कल्याणानि करोतु मे भगवती काश्चीपुरीदेवता॥

> मङ्गले मङ्गलाधारे माङ्गलये मङ्गलप्रदे। मङ्गलाढ्ये मङ्गलेशे मङ्गलं देहि मे भवे॥

नमो देव्यै महादेव्यै लोकमात्रे नमो नमः। शिवायै शिवरूपिण्यै भक्ताभीष्टप्रदा भव॥

कामाक्षि काश्चिनिलये मम माङ्गल्यवृद्धये। नमस्करोमि देवेशि मह्यं कुरु दयां शिवे॥

कामाक्ष्यै नमः, अनन्तकोटि-प्रदक्षिण-नमस्कारान् समर्पयामि।

कामाक्षी स्वरूपस्य ब्राह्मणस्य इदमासनम् — सकलाराधनैः स्वर्चितम्।

कामाक्षी काम-वृद्धर्थं मम माङ्गल्य-सिद्धये। उपायनं प्रदास्यामि ददामोघं वरं मम॥

इदं हिरण्यं सदक्षिणाकं सताम्बूलं कामाक्षी-स्वरूपाय ब्राह्मणाय सम्प्रददे न मम॥

#### ॥ दोर-बन्धनम्॥

दोरं गृह्णामि सुभगे सहारिद्रं धराम्यहम्। भर्तुरायुष्य-सिद्धार्थं सुप्रीता भव सर्वदा॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्धात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्। करोमि यद्यत् सकलं परस्मे नारायणायेति समर्पयामि।॥



## श्री-कामाक्षी-चूर्णिका

श्री-चन्द्र-मौलीश्वराय नमः। श्री-कामाक्षी-देव्यै नमः।

जय जय श्री-काम-गिरीन्द्र-निलये!

जय जय श्री-कामकोटि-पीठ-स्थिते!

जय जय श्री-त्रिचत्वारिंशत्-कोण-श्रीचक्रान्तराल-बिन्दु-पीठोपरि-लसत्-पञ्च-ब्रह्म-मय-मञ्च-मध्य-स्थ-श्री-शिव-कामेश-वामाङ्क-निलये!

जय जय श्री-विधि-हरि-हर-सुर-गण-वन्दित-चरणारविन्द-युगले!

जय जय श्री-रमा-वाणीन्द्राणी-प्रमुख-रमणी-कर-कमल-समर्पित-चरण-कमले!

जय जय श्री-निखिल-निगमागम-सकल-संवेद्यमान-विविध-वस्त्रालङ्कृत- हेम-निर्मित-अनर्घ-भूषण-भूषित-दिव्य-मूर्ते!

जय जय श्रीमद्-अनवरताभिषेक-धूप-दीप-नैवद्यादि-नाना-विधोपचारैः परिशोभिते!

जय जय श्री-काश्ची-नगर्यां द्वात्रिंशद्-धर्म-प्रतिपादनार्थ-स्थापित-हेम-ध्वजालङ्कृते!

जय जय श्री-सकल-मन्न-तन्न-यन्न-मय-परा-बिलाकाश-स्वरूपे!

जय जय श्री-काश्ची-नगर्यां कामाक्षीति प्रख्यात-नामाङ्किते!

जय जय श्री-महात्रिपुरसुन्दरि बहु पराक्!

शुभम्॥





# ॥ सङ्क्रमण-पुण्यकाल-स्नान-सङ्कल्पः॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥ प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवृरोम्। आचमनम्। शुक्लाम्बरधरं + शान्तये। प्राणायामः।

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव। विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपतेरङ्क्षियुगं स्मरामि॥

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थागतोऽपि वा। यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

मानसं वाचिकं पापं कर्मणा समुपार्जितम्। श्रीरामः स्मरणेनैव व्यपोहति न संशयः॥

श्रीराम राम राम।

तिथिर्विष्णुस्तथा वारो नक्षत्रं विष्णुरेव च। योगश्च करणं चैव सर्वं विष्णुमयं जगत्॥ श्रीहरे गोविन्द गोविन्द गोविन्द।

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम्, अद्य – श्रीभगवतः विष्णोः नारायणस्य अचिन्त्यया अपरिमितया शक्त्या भ्रियमाणस्य महाजलौघस्य मध्ये परिभ्रमताम् अनेककोटिब्रह्माण्डा-नाम् एकतमे पृथिवी-अप्-तेजो-वायु-आकाश-अहङ्कार-महद्-अव्यक्तैः आवरणैः आवृते अस्मिन् महति ब्रह्माण्डकरण्डमध्ये चतुर्दशभुवनान्तर्गते भूमण्डले जम्बू-प्रक्ष-शाक-शाल्मलि-कुश-कौश्च-पृष्कराख्य-सप्तद्वीपमध्ये

जम्बूद्वीपे भारत-किम्पुरुष-हिर-इलावृत-रम्यक-हिरण्मय-कुरु-भद्राश्व-केतुमाल-नववर्षमध्ये भारतवर्षे इन्द्र-चेरु-ताम्र-गभस्ति-नाग-सौम्य-गन्धर्व-चारण-भरत-नवखण्डमध्ये भरतखण्डे सुमेरु-निषद-हेमकूट-हिमाचल-माल्यवत्-पारियात्रक-गन्धमादन-कैलास-विन्ध्याचलादि-अनेकपुण्यशैलानां मध्ये दण्डकारण्य-चम्पकारण्य-विन्ध्यारण्य-वीक्षारण्य-श्वेतारण्य-वेदारण्यादि-अनेकपुण्यारण्यानां मध्ये कर्मभूमौ रामसेतुकेदारयोः मध्ये भागीरथी-यमुना-नर्मदा-त्रिवेणी-मलापहारिणी-गौतमी-कृष्णवेणी-तुङ्गभद्रा-कावेर्यादि-अनेकपुण्यनदी-विराजिते इन्द्रप्रस्थ-यमप्रस्थ-अवन्तिकापुरी-हस्तिनापुरी-अयोध्यापुरी-द्वारका-मथुरापुरी-मायापुरी-काशीपुरी-काश्चीपुर्यादि-अनेकपुण्य-पुरी-विराजिते –

सकलजगत्म्रष्टुः परार्धद्वयजीविनः **ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे** पश्चाशद्-अब्दादौ प्रथमे वर्षे प्रथमे मासे प्रथमे पक्षे प्रथमे दिवसे अहि द्वितीये यामे तृतीये मुहूर्ते स्वायम्भुव-स्वारोचिष-उत्तम-तामस-रैवत-चाक्षुषाख्येषु षद्घु मनुषु अतीतेषु सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे पादे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकाणां प्रभवादीनां षष्ट्याः संवत्सराणां मध्ये

( )<sup>७१</sup> नाम संवत्सरे उत्तरायणे / दक्षिणायने (ग्रीष्म / वर्ष / शरद् / हेमन्त / शिशिर / वसन्त) ऋतौ (मेष / वृषभ / मिथुन / कर्कटक / सिंह / कन्या / तुला / वृश्चिक / धनुर् / मकर / कुम्भ / मीन) मासे (शुक्र / कृष्ण) पक्षे ( ) शुभितिथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर

/ भानु) वासरयुक्तायाम् ( )<sup>७२</sup> नक्षत्र ( )<sup>७३</sup> नाम योग ( ) करण

युक्तायां च

एवंगुणविशेषणविशिष्टायाम् अस्याम् ( ) शुभतिथौ-

<sup>&</sup>lt;sup>७१</sup>पृष्टं ६२१ पश्यताम्

<sup>&</sup>lt;sup>७२</sup>पृष्टं ६३१ पश्यताम्

<sup>&</sup>lt;sup>७३</sup>पृष्टं ६३२ पश्यताम्

अनादि-अविद्या-वासनया प्रवर्तमाने अस्मिन् महित संसारचक्रे विचित्राभिः कर्मगितिभिः विचित्रासु योनिषु पुनःपुनः अनेकधा जिनत्वा केनापि पुण्यकर्मविशेषेण इदानीन्तन-मानुष-द्विजजन्म-विशेषं प्राप्तवतः मम — जन्माभ्यासात् जन्मप्रभृति एतत्क्षणपर्यन्तं बाल्ये कौमारे यौवने मध्यमे वयसि वार्धके च जागृत्-स्वप्र-सुषुप्ति-अवस्थासु मनो-वाक्-कायाख्य-त्रिकरणचेष्टया कर्मेन्द्रिय-ज्ञानेन्द्रिय-व्यापारैः सम्भावितानाम् इह जन्मिन जन्मान्तरे च ज्ञानाज्ञानकृतानां महापातकानां महापातक-अनुमन्तृत्वादी-नां समपातकानाम् उपपातकानां मिलनीकरणानां गर्ह्यधन-आदान-उपजीवनादीनाम् अपात्रीकरणानां ज्ञातिभ्रंशकराणां विहितकर्मत्याग-निन्दितसमाचरणादीनां ज्ञानतः सकृत् कृतानाम् अज्ञानतः असकृत् कृतानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनार्थं — महागणपत्यादिसमस्तवैदिकदेवतासन्निधौ

( )-पुण्यकाल-स्नानमहं करिष्ये। अप उपस्पृश्य।

गङ्गा गङ्गेति यो ब्रूयाद्योजनानां शतैरपि। मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

अतिकूर महाकाय कल्पान्तदहनोपम। भैरवाय नमस्तुभ्यम् अनुज्ञां दातुम् अर्हसि॥ (प्रोक्षण-मन्नाः/स्नान-मन्नाः)

स्नात्वा वस्नं धृत्वा कुलाचारवत् पुण्ड्धारणं च कृत्वा आचम्य।



विभागः २

उपाङ्गाः

## ॥ संवत्सर-नामानि ॥

प्रभवो विभवः शुक्रः प्रमोदोऽथ प्रजापितः। अङ्गिराः श्रीमुखो भावो युवा धाता तथैव च॥१॥

ईश्वरो बहुधान्यश्च प्रमाथी विक्रमो वृषः। चित्रभानुः सुभानुश्च तारणः पार्थिवो व्ययः॥२॥

सर्वजित्सर्वधारी च विरोधी विकृतिः खरः। नन्दनो विजयश्चेव जयो मन्मथदुर्मुखौ॥३॥

हेमलम्बो विलम्बोऽथ विकारी शार्वरी प्रवः। शुभकृच्छोभनः क्रोधी विश्वावसुपराभवौ॥४॥

प्रवङ्गः कीलकः सौम्यः साधारणविरोधिकृत्। परिधावी प्रमादी च आनन्दो राक्षसो नलः॥५॥

पिङ्गलः कालयुक्तश्च सिद्धार्थी रौद्रदुर्मती। दुन्दुभी रुधिरोद्गारी रक्ताक्षी क्रोधनः क्षयः॥६॥

१. प्रभवः

२. विभवः

३. शुक्रः

४. प्रमोदः

५. प्रजापतिः

६. अङ्गिराः

७. श्रीमुखः

८. भावः

९. युवा

१०. धाता

११. ईश्वरः

१२. बहुधान्यः

१३. प्रमाथी

१४. विक्रमः

१५. वृषः

१६. चित्रभानुः

१७. सुभानुः

१८. तारणः

१९. पार्थिवः	४०. पराभवः
२०. व्ययः	४१. प्रवङ्गः
२१. सर्वजित्	४२. कीलकः
२२. सर्वधारी	४३. सौम्यः
२३. विरोधी	४४. साधारणः
२४. विकृतिः	४५. विरोधिकृत्
२५. खरः	४६. परितापी
२६. नन्दनः	४७. प्रमादी
२७. विजयः	४८. आनन्दः
२८. जयः	४९. राक्षसः
२९. मन्मथः	५०. नलः
३०. दुर्मुखः	५१. पिङ्गलः
३१. हेमलम्बः	५२. कालयुक्तिः
३२. विलम्बः	५३. सिद्धार्थी
३३. विकारी	५४. रौद्रः
३४. शार्वरी	५५. दुर्मतिः
३५. प्रवः	५६. दुन्दुभिः
३६. शुभकृत्	५७. रुधिरोद्गारी
३७. शोभनः	५८. रक्ताक्षः
३८. क्रोधी	५९. ऋोधनः
३९. विश्वावसुः	६०. क्षयः

## ॥ संवत्सर-श्लोका देवताश्च॥

[१] संवत्सरः—प्रभवः, देवता—कमलजः अक्षाद्यङ्कि-पाणि-पद्ममभयं चिन्मुद्रिका हस्तयोः बिभ्राणं चतुराननं प्रविलसत् पद्मासने सुस्थितम्। वक्षोभाग-विराजमान-विशद-श्री-ब्रह्मसूत्रोज्ञम् वन्देऽहं प्रभवाभिधं कमलजं श्रेयोऽभिवृद्धिप्रदम्॥१॥

[२] संवत्सरः—विभवः, देवता—रमेशः

भास्वत् किरीटं दरचऋ-शार्ङ्ग-गदाभिरामैः सहितं चतुर्भिः। करैरनन्तासन-सन्निविष्टम् ध्यायेद् रमेशं विभवाभिधानम्॥२॥

[३] संवत्सरः—शुक्रः, देवता—शूलपाणिः

जिटलम् उरग-भूषाभूषिताङ्गं त्रिनेत्रं शशिधर-मकुटाग्रं व्याघ्र-चर्मोत्तरीयम्। वृषवरकृतवाहं शुक्लसंज्ञं गिरीशं नमदमरमुनीन्द्रं शूलपाणिं भजेऽहम्॥३॥

[४] संवत्सरः—प्रमोदः, देवता—गणेशः करीन्द्रवऋं कनदेकदन्तोञ्चलं प्रमोदेति कृताभिधानम्। प्रत्यूह-शान्तिप्रदमाखुसंस्थं ध्यायेद्धृदज्जे सततं गणेशम्॥४॥

[५] संवत्सरः—प्रजापतिः, देवता—शक्तिः

दन्तीन्द्र-वऋाज्ज-गतां च शक्तिं चतुर्भुजां चन्द्र-कलावतंसाम्। भक्तेष्टपाथोनिधि-चन्द्रभासं वन्दे प्रजापत्यभिधान-देवीम्॥५॥

[६] संवत्सरः—अङ्गिराः, देवता—षण्मुखः

शत्त्वयुक्षतेकबाहुं शशिधरमकुटं मयूरमारूढम्। अङ्गिरसं नाम्ना तं षण्मुखमीडे अमरेन्द्र-सेनान्यम्॥६॥

[७] संवत्सरः—श्रीमुखः, देवता—वल्ली चन्द्रमुखीं चारुदशं कुक्कुटवाहां गुहादतम् अनिशम्। श्रीमुखसंज्ञा वल्लीं श्रेयो वृद्धिप्रदां कलये॥७॥

[८] संवत्सरः—भावः, देवता—गौरी गौरी गिरीन्द्रतनयां वृषवरसंस्थां कलाधरां शशिनः। भावाख्याम् अहमीडे भवकुतुकाम्भोधि-पूर्ण-चन्द्र-कलाम्॥८॥

[९] संवत्सरः—युवा, देवता—ब्राह्मी युव संज्ञाम् अहमीडे ब्राह्मीं ब्रह्मादि वन्दितां शक्तिम्। हंसवरारूढां तां शम्भु-मनोहारि-रूप-सौभाग्याम्॥९॥

[१०] संवत्सरः—धाता, देवता—माहेश्वरी माहेश्वरी हृदज्जे विलसतु सततं च धातु संज्ञां मे। चन्द्रावतंसमहिता श्रेयोवृद्धिप्रदा शम्भोः॥१०॥

[११] संवत्सरः—ईश्वरः, देवता—कौमारी कौमारीम् अहमीडे सम्पद्दात्रीं सदा शुकारूढाम्। तामीश्वराभिधानां शङ्कर-तोष-प्रदां स्वरूपेण॥११॥

[१२] संवत्सरः—बहुधान्यः, देवता—वैष्णवी बहुधान्य नामधेयां सततं हृदयेन वैष्णवीं कलये। शङ्कर-वामाङ्कस्थां नमताम् इष्टार्थ-दायिनीम् अनिशम्॥१२॥

[१३] संवत्सरः—प्रमाथी, देवता—वाराही वाराहीं प्रणमामो धूर्जिटि-हर्षाब्धि-पूर्ण-चन्द्र-कलाम्। श्रेयोभिवृद्धि कर्त्री कृतनिजनाम्नीं प्रमाथीति॥१३॥

[१४] संवत्सरः—विक्रमः, देवता—माहेन्द्री

माहेन्द्रीं कलयामो विक्रम-संज्ञां वृषासनारूढाम्। भासुर-चन्द्र-किरीटां भक्ताभीष्टप्रदां शान्त्यै॥१४॥

[१५] संवत्सरः—वृषः, देवता—चामुण्डा चामुण्डां चारुतनूम् अहमिह वन्दे वृषासनारूढाम्। वृषनाम्नीं सुरवन्द्यां दैत्यकुल-ध्वंसकारिणीम् अनिशम्॥१५॥

[१६] संवत्सरः—चित्रभानुः, देवता—आरोगः

आरोगाह्वयमीडेऽहं चित्रभानुं सदा मुदे। तुरङ्गमवरारूढं मकुटोख्चल मस्तकम्॥१६॥

(तुरङ्गवरमारूढं?)

[१७] संवत्सरः—सुभानुः, देवता—भ्राजः

आरोग्य-सिद्धिदं नॄणां स्वभानुं भ्राज-संज्ञितम्। गजारूढं लसत्-खङ्ग-खेट-हस्तं नमाम्यहम्॥१७॥

[१८] संवत्सरः—तारणः, देवता—पटरः

अन्तर्हृदङो सततं भावये पटराह्वयम्। तारणं सूर्यनामानं शूलोद्भासि-कराम्बुजम्॥१८॥

[१९] संवत्सरः—पार्थिवः, देवता—पतङ्गः

पतङ्गं पदभारूढं पार्थिवाह्वयम् आश्रये। शङ्ख-चऋ-धरं दिव्य-पीताम्बर-महोञ्चलम्॥१९॥

[२०] संवत्सरः —व्ययः, देवता —स्वर्णरः

स्वर्णरं कोकिलारूढं व्यय-संज्ञकम् आश्रये। चन्द्रावतंसं जटिलं त्रिनेत्रं शूलभासुरम्॥२०॥

[२१] संवत्सरः—सर्वजित्, देवता—ज्योतिषीमान् सर्वजित् संज्ञकं वन्दे ज्योतिमन्तिमष्टदम्। भुसुण्ठी पाशहस्ताज्ञं व्याघ्रारूढं त्रिलोचनम्॥२१॥ [२२] संवत्सरः—सर्वधारी, देवता—विभासः

विभास-नामकं भानुं सर्वधारि-कृताह्वयम्। इष्टप्राप्त्ये सदा वन्दे सप्ताश्व-रथमास्थितम्॥२२॥

[२३] संवत्सरः—विरोधी, देवता—कश्यपः

मेरु-शृङ्ग-समारूढं विरोधिकृत-नामकम्। कश्यपं पश्चवदनं दशहस्तं नमाम्यहम्॥२३॥

[२४] संवत्सरः—विकृतिः, देवता—रविः

रविं विकृतनामानं त्रिशीर्षं षङ्गुजं भजे। पन्नगेश्वरमारूढं चारु-पीताम्बरावृतम्॥२४॥

[२५] संवत्सरः—खरः, देवता—सूर्यः

सूर्यं खराभिधं वन्दे चतुर्वऋाष्ट-हस्तकम्। खगवर्यं समारूढं नीलाम्बर-समावृतम्॥२५॥

[२६] संवत्सरः—नन्दनः, देवता—भानुः

भानुं नन्दन-नामानं हरन्तं चक्षुरोजसा। मृगेन्द्र-वाहनं पश्च-वक्रं दशभुजं भजे॥२६॥

[२७] संवत्सरः—विजयः, देवता—खगः

षण्मुखं द्वादश-भुजं व्याघ्र-वाहनमाश्रितम्। व्याघ्र-चर्माम्बरं वन्दे खगं विजय-संज्ञकम्॥२७॥

[२८] संवत्सरः—जयः, देवता—पूषा

पूषणं जय-नामानं जयदं भक्त-सन्ततेः। शङ्ख-चक्राङ्कित-कर-द्वन्द्वं हृदि समाश्रये॥२८॥

[२९] संवत्सरः मन्मथः, देवता हिरण्यगर्भः

हंसवर्याधिरूढं तं वीणामण्डित-हस्तकम्। हिरण्यगर्भं वन्देऽहं मन्मथाह्वयम् इष्टदम्॥२९॥ [३०] संवत्सर:--दुर्मुखः, देवता--मरीचिः

मरीचिं दुर्मुखाख्यानं मन्यु मर्कटमाश्रितम्। विवृतास्यं जगद्गीति-दायकं संश्रये मुदे॥३०॥

[३१] संवत्सरः—हेमलम्बः, देवता—आदित्यः

आदित्यं तेजसां स्थानं हेमलम्ब-कृताह्वयम्। सप्त-सप्ति-समारूढं जगतां नेत्रमाश्रये॥३१॥

[३२] संवत्सरः—विलम्बः, देवता—सविता विलम्ब-संज्ञं मनसा सवितारं स्मराम्यहम्। चाप-बाणधरं दोभ्याः तुरङ्गवरवाहनम्॥३२॥

[३३] संवत्सरः—विकारी, देवता—अर्कः अर्कं विकारि-नामानं कर्कशं क्रकचायुधम्। क्रूर-व्याघ्र-समारूढम् एकनेत्रं नमाम्यहम्॥३३॥

[३४] संवत्सरः—शार्वरी, देवता—भास्करः भास्करं शार्वराभिख्यं भासा पूरितदिङ्गुखम्। चक्रोञ्चलकरं वन्दे भास्वद्रथ-समाश्रयम्॥३४॥

[३५] संवत्सरः—प्लवः, देवता—अग्निः अग्निं नमामि सततं ज्वालामालं तमोपहम्। अजारूढं चतुर्हस्तं द्विशीर्षं प्लव-संज्ञकम्॥३५॥

[३६] संवत्सरः—शुभकृत्, देवता—जातवेदसः जातवेदसमीडेऽहं शुभकृन्नामकं सदा। आन्दोलिका-समारूढं खङ्ग-खेटक-धारिणम्॥३६॥

[३७] संवत्सरः—शोभनः, देवता—सहोजसः सहोजसं शोभकतं नणाम इष्टर

सहोजसं शोभकृतं नृणाम् इष्टदमाश्रये। शिबिका-वाहनारूढं चामरद्वय-पाणिकम्॥३७॥

- [३८] संवत्सरः—क्रोधी, देवता—अजिराप्रभुः अजिराप्रभुमीडेऽहं क्रोधीति कृतनामकम्। गोरथारूढम् अनिशं कुन्तोञ्चल-कराम्बुजम्॥३८॥
- [३९] संवत्सरः—विश्वावसुः, देवता—वैश्वानरः वैश्वानरं भजे नित्यं विश्वावसु-कृताह्वयम्। नर-वाहनमारूढं खङ्ग-खेट-धरं विभुम्॥३९॥
- [४०] संवत्सरः—पराभवः, देवता—नर्यापसः पराभवाह्वयं वन्दे नर्यापसम् उदर्चिषम्। उत्तुङ्ग-तुरगारूढं परशूञ्चल-पाणिकम्॥४०॥
- [४१] संवत्सरः—प्रवङ्गः, देवता—पङ्किराधसः पङ्किराधसमीडेऽग्निं प्रवङ्गाख्यं बहुश्रुतम्। श्वेताश्व-वाहनारूढं बाण-बाणास-धारिणम्॥४१॥
- [४२] संवत्सरः—कीलकः, देवता—विसर्पिणः विसर्पिणं हुतवहं कीलकाह्वयम् आश्रये। उत्तुङ्ग-गजमारूढं शूलोख्नल-कराश्चलम्॥४२॥
- [४३] संवत्सरः—सौम्यः, देवता—मत्स्यमूर्तिः हरिः मत्स्य-मूर्तिं हरिं वन्दे शिरसा सौम्य-संज्ञकम्। शङ्ख-चऋोञ्चल-करं भक्ताभीष्ट-प्रदायकम्॥४३॥
- [४४] संवत्सरः—साधारणः, देवता—कूर्ममूर्तिः हरिः कूर्माकृतिं हरिं वन्दे मन्दराचलधारिणम्। कौमोदकी-शार्ङ्ग-हस्तं साधारण-कृताह्वयम्॥४४॥
- [४५] संवत्सरः—विरोधिकृत्, देवता—आदिवराहः दंष्ट्रारूढ-महीभाजम् आदिक्रोडमभीष्टदम्। वराभयकरं वन्दे विरोधिकृदिति श्रुतम्॥४५॥

[४६] संवत्सरः—परितापी, देवता—नरसिंहः सकेसरिणं वन्दे हरिं स्तम्भ-विदारिणम्। प्रह्लाद-हर्ष-दातारं परिधाविकृताह्वयम्॥४६॥

(परितापिकृताह्वयम्?)

[४७] संवत्सरः—प्रमादी, देवता—वामनः कमण्डलु-छन्नधरं हरिं वामन-रूपिणम्। बलि-प्रातारकं वन्दे प्रमादीति कृताह्वयम्॥४७॥

[४८] संवत्सरः—आनन्दः, देवता—परशुरामः कुठार-प्रोञ्चलकरं जटामण्डल-मण्डितम्। भार्गवं राममीडेऽहम् आनन्दाह्वयमद्भुतम्॥४८॥

[४९] संवत्सरः—राक्षसः, देवता—श्रीरामः जगदानन्दजनकं सीता-वल्ल्लभमाश्रये। रामं राक्षस-नामानं धृतकोदण्डमार्गणम्॥४९॥

[५०] संवत्सरः—नलः, देवता—बलरामः सीरोद्भासि कराम्भोजं नीलाम्बर-समावृतम्। बलरामं मुसलिनं नलाह्वयमहं भजे॥५०॥

[५१] संवत्सरः—पिङ्गलः, देवता—श्रीकृष्णः कृष्णं-पिङ्गल-नामानं बर्हिबर्होञ्चलाङ्गकम्। नवनीतोञ्चलकरं हृदि पीताम्बरं भजे॥५१॥

[५२] संवत्सरः—कालयुक्तिः, देवता—कल्किः म्रेच्छावलि-कृतद्वेषं कालयुक्त-कृताह्वयम्। आश्रयेऽश्व-समारूढं धनुर्बाण-धरं सदा॥५२॥

(कालयुक्ति-कृताह्वयम्?)

[५३] संवत्सरः—सिद्धार्थी, देवता—बुद्धः

सिद्धार्थकृत-नामानं बुद्धाकृतिम् अहं भजे। नग्नं सुरूप-वपुष स्त्री-प्रधर्षण-कारणम्॥५३॥

(सिद्धार्थि-कृत?)

[५४] संवत्सरः—रौद्रः, देवता—दुर्गा दुर्गां विपद्विधुतये रौद्रनाम्नीं समाश्रये। सर्व-दैवत्य-निहन्त्रीं तां रक्तास्वादन-तत्पराम्॥५४॥

[५५] संवत्सरः—दुर्मितिः, देवता—यातुधानः यातुधानं वक्रमुखम् एकाक्षं दारुणाकृतिम्। वन्दे दुर्मित-नामानं सर्वारिष्ट-निवृत्तये॥५५॥

[५६] संवत्सरः—दुन्दुभिः, देवता—भैरवः देवं दुन्दुभि-नामानं समस्त-रिपु-भैरवम्। भैरवाश्व-वरारूढं दिगम्बरमुपाश्रये॥५६॥

[५७] संवत्सरः—रुधिरोद्गारी, देवता—हनुमान् हनूमन्तं वायुसुतं रुधिरोगारि-संज्ञकम्। समुद्र-लङ्घन-पटुं सर्व-रक्षोहरं भजे॥५७॥

[५८] संवत्सरः—रक्ताक्षः, देवता—सरस्वती सरस्वती भासमान-वीणोञ्चल-कराम्बुजाम्। रक्ताक्ष-संज्ञिकां देवीं प्रपद्ये वाग्विभूतिदाम्॥५८॥

[५९] संवत्सरः—क्रोधनः, देवता—दाक्षायणी दाक्षायणीं क्रोधनाख्या दक्ष-क्रतु-हर-प्रियाम्। शुकारूढां शूलधरीं भजेऽभीष्टस्य सिद्धये॥५९॥

[६०] संवत्सरः—क्षयः, देवता—लक्ष्मीः क्षय-नाम्नीं प्रपद्येऽहं लक्ष्मीं क्षीराब्यि-कन्यकाम्। हंसारूढाम् इन्दुमुखीं पाणिद्वय-धृता-म्बुजाम्॥६०॥

# ॥ नक्षत्र-नामानि ॥

अश्विनी भरणी चैव कृत्तिका रोहिणी मृगः। आर्द्रा पुनर्वसुः पुष्यस्ततोऽश्रेषा मघास्तथा॥१॥

पूर्वफाल्गुनिका तस्मादुत्तराफल्गुनी ततः। हस्तश्चित्रा ततः स्वाती विशाखा तदननतरम्॥२॥

अनूराधा ततो जयेष्ठा ततो मूलं निगद्यते। पूर्वाषाढोतराषाढा त्वभिजिछुवणस्ततः॥३॥

धनिष्ठा शतताराख्य पूर्वा भाद्रपदा ततः। उत्तरा भाद्रपदा चैव रेवत्येतानि भानि च॥४॥

- १. अश्विनी
- २. अपभरणी
- ३. कृत्तिका
- ४. रोहिणी
- ५. मृगशीर्षम्
- ६. आर्द्री
- ७. पुनर्वसुः
- ८. पुष्यः
- ९. आश्रेषा
- १०. मघा
- ११. पूर्वफल्गुनी
- १२. उत्तरफल्गुनी
- १३. हस्तः
- १४. चित्रा

- १५. स्वाती
- १६. विशाखा
- १७. अनूराधा
- १८. ज्येष्ठा
- १९. मूला
- २०. पूर्वाषाढा
- २१. उत्तराषाढा
- २२. श्रवणम्
- २३. श्रविष्ठा
- २४. शतभिषक्
- २५. पूर्वप्रोष्ठपदा
- २६. उत्तरप्रोष्ठपदा
- २७. रेवती

## ॥ योग-नामानि ॥

विष्कम्भः प्रीतिरायुष्मान् सौभाग्यं शोभनस्तथा। अतिगण्डः सुकर्मा च धृतिः शूलस्तथैव च॥

गण्डो वृद्धिर्धुवश्चैव व्याघातो हर्षणस्तथा। वज्रः सिद्धिर्व्यतीपातो वरीयान् परिघः शिवः। सिद्धः साध्यः शुभः शुभ्रो ब्राह्मो माहेन्द्र-वैधृती॥

- १. विष्कम्भः
- २. प्रीतिः
- ३. आयुष्मान्
- ४. सौभाग्यम्
- ५. शोभनः
- ६. अतिगण्डः
- ७. सुकर्म
- ८. धृतिः
- ९. शूलः
- १०. गण्डः
- ११. वृद्धिः
- १२. ध्रुवः
- १३. व्याघातः
- १४. हर्षणः

- १५. वज्रः
- १६. सिद्धिः
- १७. व्यतीपातः
- १८. वरीयान्
- १९. परिघः
- २०. शिवः
- २१. सिद्धः
- २२. साध्यः
- २३. शुभः
- २४. शुभ्रः
- २५. ब्राह्मः
- २६. माहेन्द्रः
- २७. वैधृतिः

## ॥ करण-नामानि ॥

बवश्च बालवश्चेव कौलवस्तैतिलस्तथा। गरश्च वणिजश्चापि विष्टिश्च शकुनिस्तथा। चतुष्पाचापि नागश्च किंस्तुघ्न इति कीर्तितम्॥८२॥

—श्रीब्रह्मवैवर्त-महापुराणे श्रीकृष्णजन्मखण्डे उत्तरार्धे नारदनारायणसंवादे राधोद्धवसंवादे कालनिरूपणं नाम षण्णविततमेऽध्याये

#### चराणि सप्त

१. बवम् २. बालवम् ३. कौलवम् ४. तैतिलम् ५. गरजा ६. वणिजा ७. भद्रा

#### स्थिराणि चत्वारि

१. शकुनिः २. चतुष्पात् ३. नागवान् ४. किंस्तुघ्नम्

## ॥ तिथीनां पूर्वोत्तरार्ध-करणानि॥

	तिथिः	पूर्वार्ध-करणम्	उत्तरार्ध-करणम्
۶.	शुक्र-प्रथमा	किंस्तुघ्नम्	बवम्
٦.	शुक्र-द्वितीया	बालवम्	कौलवम्
₹.	शुक्र-तृतीया	तैतिलम्	गरजा
٧.	शुक्र-चतुर्थी	वणिजा	भद्रा
۷.	शुक्र-पश्चमी	बवम्	बालवम्
€.	शुक्र-षष्ठी	कौलवम्	तैतिलम्
<b>9</b> .	शुक्र-सप्तमी	गरजा	वणिजा
۷.	शुक्र-अष्टमी	भद्रा	बवम्
۶.	शुक्र-नवमी	बालवम्	कौलवम्
१०.	शुक्र-दशमी	तैतिलम्	गरजा
११.	शुक्र-एकादशी	वणिजा	भद्रा
१२.	शुक्र-द्वादशी	बवम्	बालवम्
१३.	शुक्र-त्रयोदशी	कौलवम्	तैतिलम्

	तिथिः	पूर्वार्ध-करणम्	उत्तरार्ध-करणम्
१४.	शुक्र-चतुर्दशी	गरजा	वणिजा
१५.	पौर्णमासी	भद्रा	बवम्
१६.	कृष्ण-प्रथमा	बालवम्	कौलवम्
१७.	कृष्ण-द्वितीया	तैतिलम्	गरजा
१८.	कृष्ण-तृतीया	वणिजा	भद्रा
१९.	कृष्ण-चतुर्थी	बवम्	बालवम्
२०.	कृष्ण-पश्चमी	कौलवम्	तैतिलम्
२१.	कृष्ण-षष्ठी	गरजा	वणिजा
२२.	कृष्ण-सप्तमी	भद्रा	बवम्
२३.	कृष्ण-अष्टमी	बालवम्	कौलवम्
२४.	कृष्ण-नवमी	तैतिलम्	गरजा
२५.	कृष्ण-दशमी	वणिजा	भद्रा
२६.	कृष्ण-एकादशी	बवम्	बालवम्
२७.	कृष्ण-द्वादशी	कौलवम्	तैतिलम्
२८.	कृष्ण-त्रयोदशी	गरजा	वणिजा
२९.	कृष्ण-चतुर्दशी	भद्रा	शकुनिः
<b>३</b> ۰.	अमावास्या	चतुष्पात्	नागवान्